देशप्राण

बुधवार
रांची, 5 नवंबर, 2025

अब मतदाताओं की परीक्षा

बिहार विधानसभा चुनावों का घमासान का प्रथम चरण अब थम चुका है। 121 सीटों पर चुनाव प्रचार मंगलवार की शाम बंद हो गया। 6 तारीख को इन सीटों पर वोट डेल जायेंगे। । सत्ताधारी एनडीए को अपने कई बार के आजमाए सेनापति मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की साख और लोकप्रियता पर पूरा भरोसा है तो साथ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चुनावी करिश्मे की ताकत और भाजपा के सबसे बड़े रणनीतिकार गृह मंत्री अमित शाह चतुर सुजान रणनीति और अध्यक्ष जेपी नड्डा की संगठन क्षमता की ताकत से उसके समर्थकों और कार्यकताओं का हौसला बढ़ा हुआ है। मुकाबले में राजद कांग्रेस समेत पांच दलों का गठजोड़ इंडिया महागठबंधन के पास युवा तेजस्वी यादव का चेहरा, राहुल गांधी का सामाजिक न्याय, वामदलों हर विधानसभा क्षेत्र में एक निश्चित जनाधार, मुकेश सहनी और आईपी गुप्ता जैसे पिछड़े और अति पिछड़े वर्गों के नेताओं के दलों का पूरा वैचारिक शस्त्रागार मौजूद हैं। इनके बीच में नए महारथी प्रशांत किशोर की पिछले करीब तीन साल की कड़ी मेहनत की परीक्षा भी है। पिछले करीब 20 साल से बिहार की सत्ता पर काबिज एनडीए और नीतीश कुमार के पास अपने शासन की तमाम उपलब्धियां गिनाने को तो हैं, लेकिन इस अवधि की अपनी विफलताओं और जनता की ओर से उठने वाले सवालों का जवाब देने के लिए कोई नया नारा, नया सपना या नया नैरेटिव नहीं है। इसलिए एनडीए ने एक बार फिर बिहार में अपने कई बार सफल हो चुके लालू राज के जंगल राज बनाम नीतीश सरकार के सुशासन राज का नारा आगे बढ़ाया है। लेकिन विपक्षी महागठबंधन ने बिहार में बड़े पैमाने पर व्याप्त बेरोजगारी और यहां के पुरुषों और नौजवानों का काम धंधे और शिक्षा के लिए राज्य के बाहर दूर दराज दूसरे राज्यों में बढ़ते पलायन को अपना मुख्य मुद्दा बनाकर एनडीए के जंगल राज के मुद्दे के राजनीतिक भयादोहन की काट करने में जुटा है। कुल मिलाकर बिहार में चुनाव हकीकत और उम्मीद के बीच का मुकाबला है। नीतीश कुमार अगर बिहार की राजनीति की वर्तमान हकीकत हैं तो तेजस्वी यादव और प्रशांत किशोर बिहार की राजनीति में नई उम्मीद जगा रहे हैं। नीतीश कुमार अपने बीस साल के शासन में बिहार को जितना दे सकते थे दे चुके हैं, जबकि तेजस्वी बिहार के लोगों में भविष्य की उम्मीद जगा रहे हैं। नतीजे बताएंगे कि हकीकत और उम्मीद के इस मुकाबले में कौन किस पर भारी पड़ेगा और जनता हकीकत के साथ बंधी रहेगी या फिर उम्मीद को हकीकत में बदलने का मौका देगी।

किसी महाभारत से कम नहीं है बिहार चुनाव

प्रेमकुमार मणि

(वरिष्ठ साहित्यकार)

भारतीय वांग्मय में रामायण और महाभारत कथाओं का जोर सर्वाधिक है। इन कथाओं को लेकर जाने कितने काव्य और कथा-साहित्य रचे गए। ए के रामानुजन का चर्चित लेख 'थ्री हंड्रेड रामयनाज' बताती है कि रामकथा के कितने रूप हैं। महाभारत की कथा में इतना वैविध्य नहीं है। लेकिन यह तो कहा जाएगा कि जितनी जटिल महाभारत कथा है, उतनी रामायण नहीं है। रामकथा एक सीधी लकीर की तरह है। अयोध्या के राजा दशरथ की तीन पत्नियां और चार बेटे हैं। चारों लगभग समवयस्क हैं, क्योंकि एक ही यज्ञ के प्रसाद से इनके जन्म हुए थे। बावजूद इसके बड़े-छोटे का एक क्रम है, जिसमें राम बड़े हैं। राम और लक्ष्मण की शिक्षा पूरब के गुरु विश्वमित्र के आश्रम में हुई है जब कि भरत और शत्रुघ्न की पश्चिम के गुरु वशिष्ट की छत्र-छाया में। ऐसा प्रतीत होता है राज्यारोहण के पूर्व एक षडयंत्र रच कर वशिष्ट अपने शिष्य भरत को राजपद दिलाने में सफल होते हैं। राम को चौदह वर्ष के वनवास का दण्ड भी झेलना पड़ता है। इस वनवास-काल में उनकी पत्नी का लंकेश रावण द्वारा अपहरण होता है और फिर राजा रावण से वनवासी राम का युद्ध होता है।

रावण रथी है और राम विरथ। एक संसाधनों से पूर्ण और दूसरा सर्व-हारा। लेकिन जीत राम की होती है। राम अयोध्या से कोई मदद हासिल नहीं करते। उनका संकल्प ही सब कुछ है। वे वनवासियों की मदद जरूर लेते है और असंभव को संभव करते हैं। रामकथा के दूसरे परिवर्तन में राम अयोध्या अधिपति बनते हैं। राजा बनते ही राम धीरे-धीरे राजपद-प्रवृत्तियों से घिरने लगते हैं। सीता के लिए संघर्ष करने वाले राम उसी सीता को वनवास देते हैं और भील कन्या शबरी के जूठे बेर खाने वाले राम एक भील तपस्वी शम्बूक की धर्म-चर्चा को अपराध मान उसे मार डालते हैं। ठीक इसी अवधि में उनके बेटे लव और कुश अभावों के बीच अपनी माता के साथ जंगल में सयाने हो रहे हैं।

सत्ता के एक पड़ाव पर राम अश्वमेध यज्ञ करते हैं, जिस में खुली चुनौती के साथ एक घोड़ा खुला छोड़ा जाता है कि क्या कोई है जो इसकी लगाम थाम सके? राम इस बात से अनभिज्ञ हैं कि इस बार भी प्रतिपक्ष वनवासियों के बीच ही विकसित हो रहा है।

राम के ही वनवासी बेटे चुनौती स्वीकार करते हैं। रामराज के प्रतीक घोड़े को पकड़ लेते हैं। एक बार फिर राजा और वनवासी, रथी और विरथ आमने-सामने है। इस बार रथी राम और विरथ लव-कुश के बीच संग्राम होता है, जिसमें राम बुरी तरह अपने पुत्रों के हाथ ही पराजित होते हैं। इस तरह रामायण कथा अभिमानी बेलगाम सत्ताओं के निरंतर मान-मर्दन अथवा पराजय की कथा गढ़ती है। इसके साथ ही इस नैसर्गिक सत्य का उद्घोष करती है कि सत्ता किसी को भी भ्रष्ट करती है, वह चाहे रावण हों या राम। राजपद के अभिमान से भरते ही उनका पतन होता है। इस रूप में रामायण एक अद्भुत काव्य-कथा है, जो सदैव प्रासंगिक रहेगी।

महाभारत कथा जटिल है। यह भी एक परिवार की कथा है। संयुक्त अथवा बड़े परिवार की। इस कथा में दक्षिण भारत नहीं आता। पूरब से पश्चिम तक का भारत और कुल मिलाकर उत्तर भारत है। चचेरे भाइयों की आपसी लड़ाई में लगभग सभी राजे-रजवाड़े इस या उस पक्ष में खड़े हो जाते हैं। एक अंधा धृतराष्ट्र हस्तिनापुर का राजा है। उसके सौ बेटे हैं। उसका बड़ा भाई पाण्डु रोग से ग्रस्त था इसलिए राजा बनने से अनिच्छा दिखाई और जंगल चला गया। उसके पांच बेटे हैं। पाण्डु मर चुका है। धृतराष्ट्र का बड़ा बेटा दुर्योधन है जो अपने चचेरे भाइयों को कुछ भी देने को तैयार नहीं है। उसका कहना है ये सभी मेरी चाचा की औलाद नहीं हैं। खानगी हैं।

दूर द्वारका में बैठा कृष्ण सब देख रहा है। वह पाण्डु पुत्रों के समर्थन में खड़ा होता है, जो संख्या में कुल पांच हैं। बहुत थोड़े से लोग इनके समर्थन में हैं। स्वयं कृष्ण द्वारा संगठित अठारह अक्षौहिणी सेना कौरवों के पक्ष में जा खड़ी होती है। कर्ण, द्रोण, भीष्म जैसे वीर-बाँकुरे उधर ही हैं। सैन्य दृष्टि से नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर नकारा हैं। भीम बली है, लेकिन विवेकवान नहीं। अर्जुन अपने समय का माना हुआ शूटर है,लेकिन संशय में है कि युद्ध करे या न करे। विचित्र असंतुलन की स्थिति है। कृष्ण युद्ध और हिंसा का विरोधी है। उसने हथियार न ग्रहण की प्रतिज्ञा और वीतराग भाव के साथ युद्ध में कदम रखा है। प्रश्न न्याय का है। पाण्डु पुत्रों को उनका अधिकार मिलना चाहिए या नहीं? कृष्ण संशय में पड़े अर्जुन को समझाता है। युद्ध क्षेत्र में धर्म की व्याख्या करता है। महाभारत के इस युद्ध को वह धर्मयुद्ध घोषित करता है। 'यतो धर्मस्ततो जयः' जहाँ धर्म है, अच्छे विचार हों, वहां जीत होगी। हुई भी। जीत आखिरकार अच्छाई, सच्चाई और न्याय की ही होती है।

महाभारत पढ़ते हुए यह तय करना मुश्किल होता है कि इसमें परम पवित्र जैसा क्या कोई है ? आप मुश्किल में पड़ जायेंगे। कृष्ण भी छल करते हैं। मुश्किल में पड़े कर्ण को मारने का हुक्म अर्जुन को देते हैं। अर्जुन को लगता है कि यह गलत है। लेकिन कृष्ण की आज्ञा है। वह उन्हें वचन दे चुका है। अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो कह कर युधिष्ठिर अपनी सत्यवादिता की रक्षा करना चाहता है। कृष्ण शंख ध्वनि कर के उसकी आवाज को दबा देते हैं। गुरु द्रोण को भ्रम होता है कि उनका बेटा ही मारा गया। वह शिथिल हो जाते हैं। और शोकाकुल अपने गुरु को अपने धर्मगुरु कृष्ण के आदेश से अर्जुन मार डालता है। कृष्ण का कहना है धर्म वह नहीं जो तुम सोचते हो, बल्कि वह है जो मैं कहता हूँ। यतः कृष्णस्ततो धर्मो। जहाँ कृष्ण है, वहीं धर्म है। जो सत्यवादिता, ईमानदारी और धर्म अन्याय और गलत के पक्ष में है वह स्वांग और ढोंग के सिवा कुछ नहीं है। धर्म एकायामी नहीं, बहुआयामी है। इसके सभी आयामों को मैं देख रहा हूं, तुम इसके सांसारिक यानी प्रचलित अर्थों को ही देखते हो। माना कि कर्ण धर्मनिष्ठ, भीष्म वंदनीय पितामह और द्रोण गुरुदेव हैं; लेकिन इस धर्मयुद्ध में कुविचार अथवा अधर्म के पक्ष में खड़े हैं। उन्हें मिटना ही चाहिए।

अब आप अपनी दुनिया देखिए।

बिहार में चुनाव हो रहा है। आप भी एक महाभारत के बीच खड़े हैं। इस चुनाव के महाभारत में इन काव्य ग्रंथों पर सोचिए। निर्णय लीजिए कि क्या करना है। धर्म अपने लिखित या प्रचलित रूप में नहीं, आपके विवेक में बैठा है। हिंसक, अपराधी, बलात्कारी, पाखंडी, बाहुबली, थैलीशाह सब किस्म के लोग आपके सामने उम्मीदवार बन कर उपस्थित हैं। जाति, धर्म, धन और लोभ के दाने आपके पास फेंके जा रहे हैं। आप अपने कीमती समय से कुछ समय निकाल कर लोकतंत्र और राजनीति पर विचार करें। राजनीति आज का धर्म है। आपके वोट से किसी को आपकी कमाई की तिजोरी (ट्रेज़री) संभालने का अधिकार मिलेगा। आज की राजसत्ता आपके वोट से तय होती है। आप अपने अधिकार और कर्तव्य पर भली-भांति सोचें। जात-पात, परिवार और पार्टी मत देखिए। अनासक्त हो, कर्तव्य-धर्म का पालन करते हुए योग्य उम्मीदवार को वोट दीजिए। योग्य उम्मीदवार न मिले तो नोटा पर बटन दबाइये, लेकिन अपने मताधिकार का प्रयोग जरूर कीजिए। नोटा में पड़ा हुआ वोट भी भविष्य की राजनीति तय करेगा।

भारतीय महिला क्रिकेटः नई उड़ान को सलाम

ललित गर्ग

(वरिष्ठ स्तंभकार)

2 नवंबर 2025 का रविवार भारतीय खेल जगत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया। यह वह दिन था जब नवी मुंबई का डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स अकेडमी मैदान न केवल एक विश्व कप का साक्षी बना, बल्कि भारतीय महिला शक्ति की अजेय प्रतिभा और जज्बे का भी प्रमाण देखा। शेफाली वर्मा ने 87 रन की पारी खेल कर विश्वकप को भारत के नाम कराने में अमूल्य योगदान दिया। शेफाली की यह पारी आत्मविश्वास से भरी होने के साथ-साथ सनसनीखेज पारी रही। इसी के साथ स्मृति मंधाना ने अपना सर्वश्रेष्ठ देते हुए भारत के लिये सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी बनी। उनकी टाइमिंग एवं कंवर ड्राइव ने सबका दिल जीत लिया। वैसे टीम का हर खिलाड़ी इस आश्चर्यकारी जीत के लिये बधाई का पात्र है। निश्चित ही भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने आईसीसी महिला विश्व कप 2025 अपने नाम कर ऐसा इतिहास रचा, जो न केवल खेल का अध्याय है बल्कि सामाजिक परिवर्तन और नारी सशक्तिकरण की प्रेरक गाथा भी है। विश्व विजेता बनने के बाद भारतीय महिला क्रिकेट की टीम की चर्चा दुनिया के हर कोने में हो रही है।

यह जीत केवल एक ट्रॉफी भर नहीं, बल्कि उस नारी शक्ति का उद्घोष है जो वर्षों से अपने अस्तित्व को साबित करने में लगी थी। भारतीय बेटियों ने मैदान में यह दिखा दिया कि अब ह्लखेलह्व सिर्फ पुरुषों का क्षेत्र नहीं रहा, यह वह मंच है जहां नारी की प्रतिभा, रणनीति, धैर्य और आत्मविश्वास अपनी सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति पा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर टीम को बधाई देते हुए कहा कि यह केवल क्रिकेट की जीत नहीं, बल्कि भारत की नारी शक्ति, परिश्रम और आत्मविश्वास की जीत है। सच भी यही है कि यह विजय भारत की नई

महिला चेतना का प्रतीक है, वह चेतना जो अब हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रही है। अब भारतीय महिलाओं को हाशिया नहीं, पूरा पृष्ठ चाहिए और यह बात उन्होंने इस ऐतिहासिक जीत को हासिल करके साबित किया है। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार महिला वनडे विश्व कप अपने नाम कर ऐतिहासिक जीत हासिल की है।

भारत और दक्षिण-अफ्रीका का फाइनल विश्व कप मैच सदा के लिए इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों के साथ अतीत के पन्नों में दर्ज हो गई है। हरमनप्रीत की कप्तानी में महिला क्रिकेट टीम ने यह यादगार जीत हासिल की है। इससे पहले मिताली राज की कप्तानी में महिला क्रिकेट टीम 2005 और 2017 में फाइनल तक पहुंची थी, लेकिन यहां आकर ट्रॉफी हाथ से फिसल गई थी। भारतीय महिला टीम ने टॉस हारने के बाद भी बल्लेबाजी के लिए उतरी और 298 रन बनाए। साउथ अफ्रीक की टीम इस आंकड़े को छू नहीं पाई, भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर 47 साल के इंतजार को खत्म किया।

इस महान सफलता के पीछे आईसीसी अध्यक्ष जय शाह की दूरदर्शी नीतियों और नेतृत्व का भी बड़ा योगदान है। उनके कार्यकाल में महिला क्रिकेट को वह सम्मान और अवसर मिले जिसकी वह वर्षों से हकदार थी। जय शाह ने न केवल संरचनात्मक सुधार किए बल्कि महिला क्रिकेट के लिए आधारभूत ढांचे, सुविधाओं और प्रोत्साहन योजनाओं को नई दिशा दी। उन्होंने यह साबित कर दिया कि जब नेतृत्व में दृष्टि होती है, तो इतिहास बदलता है। इस विश्व कप में भारतीय खिलाड़ियों ने अपने खेल से दुनिया को चकित किया। कप्तान हरमनप्रीत कौर ने जिस साहस और सूझबूझ से टीम का नेतृत्व किया, वह प्रेरणा का विषय है। उनके बल्ले से निकले हर रन ने नारी शक्ति की धुन गाई। स्मृति मंधाना की क्लासिकल बल्लेबाजी ने विपक्षी गेंदबाजों को बेहाल कर दिया, जबकि युवा खिलाड़ी शैफाली वर्मा की आक्रामकता ने नई पीढ़ी की ऊर्जा को स्वर दिया।

गेंदबाजी में रेणुका ठाकुर और पूजा वस्त्राकर की सटीक लाइन-लेंथ ने टीम को हर मुश्किल समय में संभाला, वहीं स्पिनर दीप्ति शर्मा ने अपनी जादुई गेंदों से विरोधियों के हौसले पस्त किए। इस टूनार्मेंट में भारत की फील्डिंग और फिटनेस भी अप्रतिम रही, जो यह दशार्ती है कि अब भारतीय महिला क्रिकेट केवल तकनीक नहीं, बल्कि रणनीति और समर्पण के सर्वोच्च मानकों पर खड़ी है। महिला क्रिकेट खिलाड़ी नवीन क्षमताओं की नई उड़ान भरते हुए हर मन की मुराद पूरी कर रही है। यह जीत केवल एक उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय खेल संस्कृति में परिवर्तन की दिशा का प्रतीक है। आज भारत की बेटियां छोटे कस्बों और गाँवों से निकलकर विश्व मंच पर चमक रही हैं। यह उस सामाजिक परिवर्तन का परिणाम है जिसमें परिवार, समाज और सरकार ने नारी खेल प्रतिभा को अवसर देना शुरू किया है।

महिला विश्व कप 2025 ने यह सिद्ध कर दिया कि अब भारत में खेल सिर्फ मैदान तक सीमित नहीं, यह राष्ट्रीय चेतना और गौरव का हिस्सा बन चुका है। यह नारी स्वाभिमान, श्रम और संघर्ष की कहानी है। क्रिकेट अब केवल पुरुषों की लोकप्रियता का प्रतीक नहीं रहा, बल्कि महिलाओं की असाधारण योग्यता का उत्सव बन गया है। भारत की यह जीत उस भविष्य की ओर इशारा करती है जहाँ खेल, लिंग भेद से परे, केवल प्रतिभा और परिश्रम के आधार पर सम्मान पाएगा। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की यह ऐतिहासिक विजय केवल कप जीतने की कहानी नहीं है, यह उस भारत की घोषणा है जो अपनी बेटियों को आगे बढ़ाने का साहस रखता है। यह जीत हर उस लड़की की प्रेरणा है जो गली के मैदान में क्रिकेट बैट थामे सपना देखती है कि एक दिन वह भी भारत के लिए खेलेगी। यह स्वर्णिम विजय हमें यह संदेश देती है कि भारत की नारी अब हर क्षेत्र में खेल बदलने के लिए तैयार है। जय शाह जैसे सक्षम नेतृत्व और खिलाड़ियों की प्रतिभा से सुसज्जित यह टीम आने वाले समय में विश्व क्रिकेट का नया अध्याय लिखेगी, जहाँ हर शॉट में आत्मविश्वास होगा, हर गेंद में संकल्प, और हर जीत में भारत की बेटियों की दमकती मुस्कान। भारत की बेटियाँ अब सिर्फ खेल नहीं रही हैं बल्कि वे इतिहास रच रही हैं।

देश पर छा रहे अनेकानेक उजालों के बीच महिला विश्व कप 2025 रूपी उजाला देशवासियों को प्रसन्नता का प्रकाश दे गया। संदेश दे गया कि देश का एक भी व्यक्ति अगर दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ने की ठान ले तो वह शिखर पर पहुंच सकता है। विश्व को बौना बना सकता है। पूरे देश के निवासियों का सिर ऊंचा कर सकता है। महिलाओं की इस करिश्माई उपलब्धि के बाद अखबारों के शीर्ष में यह समाचार छपा और सबको लगा कि शब्द उन पृष्ठों से बाहर निकलकर नाच रहे हैं। भारतीय महिला खिलाड़ियों ने खिलाड़ीपन के लम्बे रन-अप को पल-पल जीया है। इस दौरान बहुत कुछ पीया है तभी वे विश्व विजेता बनी। वरना यहां तक पहुंचते-पहुंचते कईयों के घुटने घिस जाते हैं। एक बूंद अमृत पीने के लिए समुद्र पीना पड़ता है।

सम्मान, पदवी, उपाधियां, अलंकरण बहुतों को मिलते हैं पर सही सीने पर सही तमगा और सही नाम के आगे सही सम्बोधन कभी-कभी लगता है। जैसा महिला विश्व कप 2025 की भारतीय महिला खिलाड़ियों के सीनों पर लगा है। जब भी कोई अर्जुन धनुष उठाता है, निशाना बांधता है तो करोड़ों के मन में एक संकल्प, एक एकाग्रता का भाव जाग उठता है और कई अर्जुन पैदा होते हैं। अपने देश में हर बल्ला उठाने वाला अपने को गावस्कर, तेंगुलकर विराट कोहली, रोहित समझता है, हर बॉल पकड़ने वाला अपने को कपिल-अर्शदीप, बुमराह समझता है। हॉकी की स्टिक पकड़ने वाला हर खिलाड़ी अपने को ध्यानचंद, हर टेनिस का रेकेट पकड़ने वाला अपने को रामानाथन कृष्णन समझता है। और भी कई नाम हैं, मिल्खा सिंह, पी.टी. उषा, प्रकाश पादुकोन, गीत सेठी, जो पैमाना बन गये हैं खेलों की ऊंचाई के। आज शेफाली हो स्मृति या फिर जेमिमा हो या दीप्ति ये सभी पैमाना बन गयी है। भारतीय महिला क्रिकेट टीम को सलाम।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

संपादकीय

अराजक तत्वों से सुरक्षित हों चुनाव

लोकतंत्र की शासन-विधा जितना उन्मुक्त करती है उतनी ही सतर्कता की भी अपेक्षा करती है। इसके सार्थक संचालन के लिए कुछ मयार्दाओं का पालन आवश्यक होता है। उन मयार्दाओं में जो उसके अस्तित्व की रक्षा करती हैं उसमें आम चुनाव की बेहद खास भूमिका है। चुनाव के माध्यम से जनता के सरोकारों का पता चलता है तथा उसकी पसंद और नापसंद की अभिव्यक्ति होती है। इसी से सरकारें बनती हैं और शासन-प्रक्रिया की नींव भी पड़ती है। हम सब देख रहे हैं कि विश्व में वे देश जो ठीक समय पर आम चुनाव करा पाते हैं और आम चुनाव की गरिमा की रक्षा कर पाते हैं वहाँ लोकतंत्र का स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहता है। इसलिये यह जरूरी हो जाता है कि यह सुनिश्चित किया जाय कि चुनाव शांतिपूर्ण हों और उसकी शुचिता सुरक्षित बनी रहे। इसके लिए सभी राजनैतिक दलों को चुनाव की मयार्दाओं का अनिवार्य रूप से पालन करना होगा। साथ ही यह भी आवश्यक होगा कि चुनाव का तंत्र निष्पक्ष रूप से चुनाव का कार्य पूरा करे और उसे काम करने की पूरी छूट दी जाय। निर्वाचन आयोग मुस्तैदी से चुनाव कराने और उसके लिए उचित व्यवस्था बनाये रखने की भरपूर कोशिश करता रहा है। इस काम में उसे सफलता भी मिली है। चूँकि चुनाव राजनीति के जीवन-चक्र की धुरी होता है और उसके परिणामों पर ही राजनेताओं का भविष्य निर्भर होता है, उसका प्रलोभन भी अत्यन्त आकर्षक होता है। लोग चुनाव को प्रभावित कर अपने पक्ष में करने को लालायित और व्यग्र रहते हैं। इससे जुड़े सब लोगों की नजर अपने लिए प्रतिस्पर्धा के बीच चुनावी सफलता को सुनिश्चित करने पर ही टिकी होती है। राजनैतिक पार्टियां भी उसी उम्मीदवार को चुनावी टिकट देकर अपना दाँव लगाती हैं जिसे जीत सकने की संभावना होती है। आज के दौर में यह चुनौती बहु आयामी हो चली है जिसमें राजनैतिक विचारधारा के साथ प्रतिबद्धता कम और कर्मठता तथा योग्यता पर जनता जनार्दन की ज्यादा नजर होती है। इसके साथ ही जाति, क्षेत्र, और भाषा भी मुख्य किरदार बन कर खास भूमिका निभा रहे हैं। यह दुर्भाग्य ही है कि जाति आज की राजनीति की प्रमुख भाषा होती जा रही है। जाति को दूर करने के लिए कटिबद्ध राजनेता चुनाव में जाति के प्रति जिस तरह समर्पित दिखते हैं वह निराशाजनक है और जाति की जड़ों को मजबूत करने वाला है। आज इन सबके जटिल समीकरण बिठाने पर ही चुनावी रणभूमि में कामयाबी मिल पाती है। जातियों के छत्रप और बाहुबली इसी तरह चुनाव जीतते हैं और मंत्री भी होते हैं। हमारे सामने खड़े उम्मीदवारों में ऐसे सफल खिलाड़ी भी दिखते हैं जो धन और बाहुबल की बदौलत आगे बढ़ते हुए अपनी पहचान बना चुके होते हैं। बढ़ती दबंगई इस परिदृश्य को नैतिक रूप से तेजी से प्रदूषित कर रही है। चुनाव आने पर अन्तर सामूहिक हिंसा बढ़ने लगती है।

नई दिल्ली कार्यालय
एक्शन बालाजी हाउस, बी-244, मजलिस पार्क, दिल्ली- 110033

उत्तरी दिल्ली कार्यालय
शक्ति कॉम्पलैक्स, 6/18, समयपुर इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली- 110042

चंडीगढ़ कार्यालय
फर्स्ट फ्लोर, देश सेवक बिल्डिंग, सेक्टर- 29डी, चंडीगढ़

पंजाब कार्यालय
7/2, थर्ड फ्लोर, मोनिका, टावर, ईआर-146, पक्का बाग, मिलाप चौक, जालंधर

करनाल कार्यालय
224, सेक्टर 32पी, करनाल- 132001

सोनीपत कार्यालय
एक्शन इंडिया कार्यालय, अपोजिट एनएस कम्प्यूटर, झंडी रोड़, गीता भवन चौक सोनीपत- 131001

शिमला कार्यालय
किशोर भवन, जोधा निवास, डेजी बैंक एस्टेट, लोअर जाखू, शिमला- 171001

ऊना कार्यालय
कृष्णा टावर, सब्जी मंडी के सामने, ऊना-174303

देहरादून कार्यालय
7/1, बल्लूपुर रोड़, कृष्णा नगर चौक, देहरादून

गढ़मुकतेश्वर गंगा में दीपदान से मिल जाता है दिवंगतों को मोक्ष!

मनोज कुमार अग्रवाल

> "सम्राट् युधिष्ठिर ने जो निर्णय लिया उसके बाद जो तीर्थयात्रा निकली वह कार्तिक शुक्ल अष्टमी का ही दिन था। इसी दिन गौ पूजन करके गढ़ मुक्तेश्वर के गंगा तट पर गंगा मैदान में सम्राट युधिष्ठिर द्वारा धार्मिक संस्कार करके पिंडदान किया गया। यह देवोत्थान एकादशी थी। महाभारत युद्ध में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए यहां एकादशी से चतुर्दशी यज्ञ किया था, और इसके अगले दिन अर्थात पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान करके कथा का आयोजन किया गया था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घोषणा की है कि इस साल ऐतिहासिक गढ़मुक्तेश्वर मेले को 'मिनी-कुंभ' के रूप में आयोजित किया"

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गढ़ मुक्तेश्वर वह पौराणिक तीर्थ है जहां शिव के गण जय विजय को मुक्ति मिली थी यहां कार्तिक पूर्णिमा पर लगने वाला मेला महाभारत कालीन अतीत से जुड़ा है।भारत की सनातन संस्कृति के लिए यह मेला और यहां का पवित्र गंगा स्नान देश और दुनिया के पर्यटन के लिए भी महत्वपूर्ण स्थान बना है।इस मौके पर दिवंगत मृतकों की स्मृति में दीपदान करने से उनकी आत्मा को शान्ति मिल जाती है ऐसी मान्यता है।

आज इस मेले का स्वरूप मिनीकुम्भ बन चुका है दस किलोमीटर क्षेत्रफल से अधिक में फैला यह मेला देश दुनिया के आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है। कार्तिक गंगा मेला केवल स्नान करने तक ही सीमित नहीं है। कार्तिक पूर्णिमा मेला एकता, भाईचारे, सांस्कृतिक विरासत और एकता का प्रतीक है। यहां से देश के विकास को नई दिशा मिलती है। प्रदेश के मानचित्र पर आने के बाद मेला विभिन्न क्षेत्रों में अपनी साख बढ़ा रहा है। अब मेले से प्रदेश को विकास और स्वदेशी का मूल-मंत्र मिल रहा है। दिल्ली से 100 किमी दूर और राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 24 से लगे, गंगा के निचले तट पर स्थित गढ़ मुक्तेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा पर आयोजित होने वाला यह मेला यहां अनादिकाल से आ रहा है। जबकि, महाभारत युद्ध के बाद इस स्थान का महत्व और भी अधिक बढ़ गया। मेले का अतीत पांडवों और भगवान श्रीकृष्ण से भी जुड़ा है बताया जाता है कि महाभारत युद्ध के बाद गढ़ मुक्तेश्वर के गंगा तट पर भगवान श्रीकृष्ण के निर्देश पर सम्राट युधिष्ठिर ने कौरवों और पांडवों की सेना के विशाल वीर योद्धाओं और सैनिकों की आत्मा की शांति के लिए उनका तर्पण किया था। एक ओर पौराणिक साक्ष्य और तथ्य गढ़ मुक्तेश्वर के एतिहासिक सांस्कृतिक अध्यात्मिक महत्व को बयान करते हैं, वहीं आज के इतिहासकार और विद्वान भी मानते हैं कि यह स्थान द्वापर युग में भी सबसे पहले प्रसिद्ध हुआ था। क्योंकि शिवपुराण के अनुसार इस 'गढ़मुक्तेश्वर' का प्राचीन नाम 'शिववल्लभ' हुआ, अर्थात जो भगवान शिव का ही एक प्रिय

नाम है।पुराणों में गढ़ मुक्तेश्वर की महिमा काशी के समान बताया गया है, क्योंकि गढ़ मुक्तेश्वर में ही भगवान शिव ने अपनी जय और विजय नाम के गणों को महर्षि दुवार्सा के द्वारा पिशाच योनि के श्राप से मुक्ति दिलाई थी। जिसके बाद इस स्थान का नाम गणमुक्तेश्वर यानि कि गणों की मुक्ति करने वाले भगवान शिव के नाम से पड़ा था। गणमुक्तेश्वर का वह प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर आज भी उस पौराणिक घटना का साक्षी है।

त्रेता युग में भी गढ़मुकतेश्वर की महिमा का वर्णन है शिव पुराण के अनुसार इसी गढ़ मुक्तेश्वर के क्षेत्र में गंगा नदी के किनारे ही एक घना वन था, जिसे खाण्डव वन के नाम से जाना जाता था। इसी खांडवी वन में भगवान परशुराम ने ही शिवलिंग की स्थापना की थी। त्रेता युग का यही खांडववन, द्वापर युग में यानि महाभारत के काल में खांडव वन के नाम से अस्तित्व में आया और यही खांडव वन बाद में खांडवप्रस्थ कहलाया और उसके बाद इंद्रप्रथ बना। यही खाण्डव वन हस्तिनापुर राज्य के अधीन था इसलिए पांडवों ने खांडव वन में अपना नया राज्य स्थापित किया था।सम्राट् युधिष्ठिर के निर्णय के बाद भगवान परशुराम द्वारा स्थापित शिववर्षपुर यानी गढ़ मुक्तेश्वर के मुक्तेश्वर महादेव मंदिर में पूजा और यज्ञ आदि करके मृतकों की आत्मा की शांति के लिए तर्पण किया गया था।

सम्राट् युधिष्ठिर ने जो निर्णय लिया उसके बाद जो तीर्थयात्रा निकली वह कार्तिक शुक्ल अष्टमी का ही दिन था। इसी दिन गौ पूजन करके गढ़ मुक्तेश्वर के गंगा तट पर गंगा मैदान में सम्राट युधिष्ठिर द्वारा धार्मिक संस्कार करके पिंडदान किया गया। यह देवोत्थान एकादशी थी। महाभारत युद्ध में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए यहां एकादशी से चतुर्दशी यज्ञ किया था, और इसके अगले दिन अर्थात पूर्णिमा के दिन गंगा स्नान करके कथा का आयोजन किया गया था।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घोषणा की है कि इस साल ऐतिहासिक गढ़मुक्तेश्वर मेले को 'मिनी-कुंभ' के रूप में आयोजित किया जाएगा। यह मेला उत्तर प्रदेश की गहरी आस्था, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विरासत का जीता-जागता प्रतीक है। यह मेला 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक चलेगा। गंगा की कल कल करती पावन लहरों के किनारे दस किलोमीटर के क्षेत्रफल में बसा तंबुओं का अस्थायी नगर और गंगा में दीपदान से तैरते जलते दीपक एक ऐसी मनोहारी छटा दशार्ते हैं जिस को एक बार देख कर ही हृदय आस्था और पवित्रता से आह्लादित हो जाता है। राज्य सरकार का लक्ष्य इसे पूरी श्रद्धा, अनुशासन और स्वच्छता के साथ आयोजित करना है, ताकि हर श्रद्धालु शांति और दिव्य आशीर्वाद लेकर लौटे। इस मेले में करीब 50 लाख श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है। रविवार को मुख्यमंत्री ने हापुड़ जिले के गढ़मुक्तेश्वर में होने वाले वार्षिक कार्तिक पूर्णिमा मेले और अमरोहा के तिगरी मेले की तैयारियों की समीक्षा की। मेले की जगहों का हवाई सर्वेक्षण करने के बाद, उन्होंने एक समीक्षा बैठक की और संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा के किनारे करीब 40 से 45 लाख श्रद्धालु पवित्र स्नान करने और दीपदान करने आते हैं। मेले का मुख्य स्नान 5नवंबर को है। इस दिन तीस से पचास लाख श्रध्दालुओं के पहुंचने का अनुमान है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हर कीमत पर मेला किसी अप्रिय घटना से रहित संपन्न कराने की जिम्मेदारी प्रशासन पर सौंपी है। योगी स्वयं मोनिटरिंग कर रहे हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं पिछले 38 वर्ष से लेखन और पत्रकारिता से जुड़े हैं)

कार्तिक पूर्णिमा पर करोड़ों भक्त गंगा में लगाएंगे आस्था की डुबकी

संजय सक्सेना

अबकी बार गंगा स्नान पर्व, कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर, कल (5 नवंबर 2025 को) मनाया जाएगा। यह पर्व हिन्दू धर्म में अत्यंत पौराणिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक महत्ता रखता है, जिसमें गंगा नदी के तट पर श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाकर मोक्ष और पुण्य की कामना करते हैं। गंगा स्नान पर्व केवल स्नान की धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि वह जन-जन की आस्था, पाप-निवारण, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक पहचान का पर्व है। यह पर्व भी देश के कोने-कोने से जुड़ी करोड़ों आस्थाओं को एक बार फिर पवित्र गंगा तटों पर एकत्र करेगा, जो सनातन परंपरा की जीती-जागती मिसाल है।गंगा स्नान पर्व के पीछे अनेक पौराणिक कथा एवं धार्मिक विश्वास प्रचलित हैं। मान्यता है कि इस दिन गंगा में स्नान करने मात्र से अपने पिछले जन्मों के साथ ही वर्तमान जन्म में अनजाने में किए गए पाप भी धुल जाते हैं तथा मोक्ष की प्राप्ति संभव होती है। इसे पापनाशिनी से भी संबोधित किया गया है। ऐसा विश्वास है कि गंगा स्वयं स्वर्ग से पृथ्वी पर भागीरथ के तप के कारण अवतरित हुई थी, जिससे उनके स्नान से सभी प्रकार के पाप, कष्ट और बंधन समाप्त हो जाते हैं। यही कारण है कि देवताओं तक के बारे में कहा गया है कि वे भी इस पुण्यतिथि पर पृथ्वी पर उतरकर गंगा में स्नान करते हैं और भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। कई शास्त्रों एवं पुराणों (जैसे पद्म पुराण) में भयंकर पापों के निवारण और मुक्ति के लिए गंगा स्नान को महत्ता दी गई है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन विशेष आग्रह है कि सूर्योदय के समय गंगा में स्नान किया जाए, अपने सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान किया जाए क्योंकि स्नान के बाद तर्पण, जप और दान पुण्य करने से उसका गुण कई गुना अधिक हो जाता है। यह पर्व ह्लदेव-दीपावलीह्व के रूप में भी प्रसिद्ध है, जब देवता भी दीप प्रज्वलित कर गंगा में आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित माने जाते हैं।

प्रमुख तीर्थ स्थल जहाँ सर्वाधिक स्नान होता है

गंगा स्नान पर्व पर देशभर से लाखों श्रद्धालु गंगा के विभिन्न प्रसिद्ध तटों पर एकत्रित होते हैं। इनमें से कुछ तीर्थ स्थानों में सबसे अधिक भीड़ उमड़ती है। इसमें प्रयागराज (त्रिवेणी संगम) प्रमुख है। यहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। पर्व के समय विशाल भीड़ एकत्र होती है। हरिद्वार (हर की पौड़ी) यह देवभूमि उत्तराखंड में स्थित है।

हर की पौड़ी विश्व प्रसिद्ध गंगा घाट है। यहाँ रोजाना लाखों लोग स्नान व आरती के लिए आते हैं। कार्तिक पूर्णिमा पर यहाँ अद्भुत दृश्य होता है। वहीं एक और तीर्थ स्थल वाराणसी, जहाँ भगवान शिव की प्रिय नगरी काशी में दशाश्वमेध घाट सबसे प्रसिद्ध है, यहाँ गंगा स्नान के साथ भव्य आरती भी होती है। यहाँ गंगा स्नान करने से अद्भुत आत्मिक शांति की अनुभूति होती है।

विचार

लालू का नाम लेकर तेजस्वी ने भाई तेज को कैसे किया बाहर

अजय कुमार

बिहार विधानसभा चुनाव के प्रथम चरण के मतदान से ठीक पहले लालू यादव के परिवार में भाइयों के बीच का विवाद राज्य की सियासत में एक बार फिर केंद्र में आ गया है। तेज प्रताप यादव और तेजस्वी यादव के बीच जारी टकराव न सिर्फ व्यक्तिगत रिश्तों में खटास को दशार्ता है, बल्कि यह महागठबंधन की राजनीति और आरजेडी के भविष्य पर भी असर डाल सकता है। इस विवाद की वजह है तेज प्रताप को घर से बाहर निकाल दिया जाना और तेजस्वी यादव द्वारा लालू यादव द्वारा बनाई गई राष्ट्रीय जनता दल को पूरी तरह से कब्जा लेना। तेजस्वी यह दिखा रहे हैं कि बड़े भाई तेज प्रताप के अनुचित व्यवहार के चलते पिता लालू यादव का उन्हें (तेजस्वी) साथ मिल रहा है, जबकि हकीकत यह है कि स्वास्थ्य कारणों से लालू यादव राजनीति से करीब-करीब कट गए हैं, वह चाह कर भी तेजस्वी के खिलाफ नहीं जा पा रहे हैं। तेज प्रताप को घर और पार्टी से निष्कासित किए जाने का फैसला भले ही लालू यादव का बताया जा रहा हो, लेकिन हकीकत यह है कि तेजस्वी यादव ने अपने हित साधने के लिए तेज को मां-बाप से दूर करने में अहम भूमिका निभाई है। इसी के चलते तेज प्रताप अपने छोटे भाई तेजस्वी यादव के खिलाफ हमलावर हैं। वहीं कुछ लोगों का यह भी कहना है कि पार्टी और घर से बाहर किए जाने के बाद तेज प्रताप यादव सियासी रूप से ज्यादा परिपक्व नजर आ रहे हैं। उनके बयानों में लोच या हल्कापन नहीं नजर आता है। हाल के दिनों में तेज प्रताप यादव ने अपने छोटे भाई तेजस्वी यादव को नादान और बच्चा जैसे शब्दों से संबोधित किया है। एक बयान में तेज प्रताप ने कहा, अभी वो बच्चा है, चुनाव के बाद उसे झुनझुना पकड़ाएंगे। तेजस्वी यादव द्वारा तेज प्रताप के खिलाफ उनके पारंपरिक क्षेत्र महुआ में प्रचार करने से विवाद और तेज हो गया है। तेज प्रताप ने जवाब में कहा कि वे भी तेजस्वी के गढ़ राघोपुर में प्रचार करेंगे। दोनों भाई खुले तौर पर एक-दूसरे के खिलाफ मोर्चा खोलते नजर आए हैं। गौरतलब हो, लालू यादव का परिवार बिहार की राजनीति का सबसे प्रभावशाली परिवार रहा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में तेज प्रताप और तेजस्वी के बीच की दूरी गहरी होती गई। 2017-18 के बाद से ही तेज प्रताप खुद को परिवार और पार्टी के प्रमुख निर्णयों से अलग पाते रहे। तेजस्वी यादव को पार्टी की कमान मिलने के बाद यह टकराव खुलकर सामने आ गया। तेज प्रताप का मानना है कि तेजस्वी द्वारा उनकी अनदेखी की गई, जबकि तेजस्वी अपने अधिकारिक रुख पर अडिग हैं और संगठन हित में फैसले लेने की बात कहते हैं। 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में यह विवाद और बढ़ गया, जब तेज प्रताप यादव ने अपनी नई पार्टी जनशक्ति जनता दल से महुआ सीट से नामांकन किया और तेजस्वी यादव की पार्टी राजद ने भी उसी सीट से प्रत्याशी उतार दिया। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में एक-दूसरे के खिलाफ प्रचार कर रहे हैं तेजस्वी महुआ, जबकि तेज प्रताप ने राघोपुर में प्रचार करने में संकोच नहीं किया। इसके बाद इस प्रत्यक्ष टकराव ने आरजेडी की एकता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। तेज प्रताप यादव द्वारा झुनझुना पकड़ाने और दूध का दांत भी नहीं टूटा जैसे शब्दों का इस्तेमाल केवल व्यक्तिगत असंतोष ही नहीं, बल्कि सार्वजनिक रूप से तेजस्वी की नेतृत्व क्षमता और सियासी समझ को चुनौती देने का एक तरीका भी है। दूसरी ओर, तेजस्वी यादव अपने विकास पुरुष और नई पीढ़ी के नेता की छवि को लगातार मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि तेजस्वी के दबाव के चलते ही परिवार के अन्य सदस्य, मसलन राबड़ी देवी ने हाल ही में बयान दिया कि तेज प्रताप से राजद का रिश्ता खत्म हो सकता है, लेकिन वे उनके बेटे हैं और रहेंगे। सोशल मीडिया पर भी समर्थकों के बीच खासी बहस छिड़ी है।

कुछ लोग तेज प्रताप का पक्ष ले रहे हैं तो कुछ तेजस्वी का। तेज प्रताप के पक्षधर मानते हैं कि वे अपने क्षेत्र के लिए लड़ रहे हैं, वहीं तेजस्वी समर्थक उन्हें पार्टी विरोधी और परिवार विरोधी ठहराते हैं। बहरहाल, दोनों भाइयों के बीच तनाव के चलते आरजेडी की एकता और महागठबंधन की मजबूती पर प्रतिकूल असर पड़ता दिख रहा है। भाजपा और जदयू जैसी विरोधी पार्टियां इसका फायदा उठाकर जातीय समीकरण साधने की कोशिश कर रही हैं। वहीं कहा यह भी जा रहा है कि मुस्लिम-यादव

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

एक्शन इंडिया दैनिक

भगवान शंकर जी के ग्यारहवें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

आरएनआई: DELHIN / 2006 / 19302

एक्शन इंडिया मल्टीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए संपादक, मुद्रक, प्रकाशक एवं रवि भारद्वाज द्वारा एक्शन बालाजी हाउस, 244, ब्लॉक- बी, लेन- 3, राकेश भारद्वाज चौक के नजदीक, दिल्ली - 110033 से प्रकाशित एवं मारुतिनंदन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, शक्ति कॉम्प्लेक्स, 6/18, समयपुर इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110042 से मुद्रित।
संस्थापक : श्रद्धेय राकेश भारद्वाज जी
समूह संपादक : रवि भारद्वाज (9999889104)
मेट्रो संपादक : दीपचंद्र कांडपाल (8447314925)
'एक्शन इंडिया' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किये गये विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक केवल पीआरबी एक्ट के तहत ही उत्तरदायी। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

वैधानिक सूचना

पाठकों को सलाह है कि एक्शन इंडिया, समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के आधार पर कोई निर्णय लेने से पहले विज्ञापन में प्रकाशित उक्त उत्पाद या सेवा के बारे में आवश्यक जांच-पड़ताल कर लें। समाचार पत्र प्रबंधक किसी भी विज्ञापन में गुणवत्ता, सेवा आदि के विवरण के बारे में विज्ञापनदाता द्वारा किए गए दावे या उल्लेख की पुष्टि या समर्थन नहीं करता है। अतः समाचार पत्र उक्त विज्ञापनों के बारे में किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होगा।

ब्यूटी टिप्स

विटामिन-सी से सौन्दर्य

-शहनाज हुसैन

अगर आप अपने सौन्दर्य बिशेष्ज्ञ को त्वचा के लिए बेहतरीन प्रकृतिक खाद्य पदार्थों के बारे में पूछेंगी तो विटामिन सी की खुराक शायद सबसे टॉप पर होगी / विटामिन सी को शरीर में सप्लीमेंट या डाइट द्वारा ही लिया जा सकता है तथा इसकी शरीर में प्रकृतिक रूप में उत्पति नहीं होती /

विटामिन सी की गणना सबसे प्रभाबी और सुरक्षित पौषक तत्वों में की जाती है जोकि आंबला और अमरुद जैसे शाकाहारी भोज्य पदार्थों में सर्बाधिक पाया जाता है / यह पालक ,मूली , अंकुरित अनाज ,संतरे , हरी और लाल मिर्च , ब्रॉक्ली ,पपीते , स्ट्रॉबेरी , अनानास , कीवी और आम जैसे फलों , सब्जियों में भरपूर मात्रा में पाया जाता है /

डॉक्टरों की माने तो ब्यस्क पुरष को रोजाना 90 मिली ग्राम और महिला को रोजाना 75 मिलीग्राम विटामिन सी का सेवन करना चाहिए / गर्भबती महिलाओं को लगभग 85 मिलीग्राम तथा स्तनपान करबाने बाली महिलाओं को रोजाना 120 मिलीग्राम विटामिन सी की जरूरत होती है और इससे ज्यादा विटामिन सी का सेवन करने से दस्त , उल्टी ,पेट दर्द ,सिर दर्द ,पथरी आदि कई स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं / डॉक्टरों के अनुसार विटामिन सी की शरीर में अधिकता से कोई बिषाक्त और हानिकारक प्रभाब नहीं पड़ता क्योंकि जल में घुलनशील होने की बजह से इसका उतसर्जन शरीर में मूत्र के द्वारा हो जाती है /

विटामिन सी दिल की बिमारियों , एनीमिया ,क्लोस्ट्रोल ,मोतियाबिन्द और डायबिटिक जैसी बिमारियों को ठीक करने के लिए भी काफी मददगार साबित होती है /

विटामिन सी की कमी से जोड़ों का दर्द ,दांतों में दर्द , मसूड़ों से खून बहना , थकान /कमजोरी आदि की अनेक समस्याएं सामने आती हैं / त्वचा की देखभाल तथा सौन्दर्य के लिए आप अकसर महंगें सौन्दर्य प्रसाधनों तथा फेशियल और क्लीजिंग जैसे ब्यूटी ट्रीटमेंट की ओर रूख करती है। जबकि बास्तविकता यह है कि स्वस्थ्य और नर्म ,मुलायम त्वचा के लिए जिम या पार्लर जाने की ज्यादा जरूरत जरूरत नहीं है।

सृजन की साक्षी भारतीय अभियांत्रिकी परंपरा

विवेक रंजन

कभी कभी इतिहास स्वयं को रचने के लिए मनुष्य का सहारा नहीं लेता, बल्कि मनुष्य को अपने साधन के रूप में प्रयोग करता है। भारत की सभ्यता ने यही किया है। जब मानव ने मिट्टी को आकार देना सीखा, तो भारत ने उससे मंदिर गढ़े। जब जल को नियंत्रित करने की आवश्यकता हुई, तो भारत ने नदियों के तट पर सिंचाई की व्यवस्था बनाई।

जब पत्थरों से दीवारें बनीं, तो भारत ने उन दीवारों में नक्काशी से कविता लिख दी। यह वह भूमि है जहाँ अभियंत्रण केवल तकनीकी कौशल नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन था। यहाँ अभियंता केवल निमार्ता नहीं, भगवान विश्वकर्मा के स्वरूप में सृष्टा माने गए। मोहनजोदड़ों और हड़प्पा की विकसित सभ्यता आज भी हमें यह सिखाती हैं कि स्वच्छता और जल-प्रबंधन केवल शहरी सुविधा नहीं, बल्कि सभ्यता की रीढ़ हैं। सिंधु घाटी का नगर नियोजन, समकोणीय गलियाँ, कुएँ, स्नानागार, ये सब हमारे पूर्वज अभियंताओं की प्रतिभा का जीवंत प्रमाण हैं। प्राचीन ग्रंथों में भगवान विश्वकर्मा का उल्लेख उसी गौरव के साथ हुआ है जिस गौरव से कवि वाल्मीकि और ऋषि व्यास का। हर वर्ष हमारी संस्कृति में हम इंजीनियरिंग संस्थानों में विश्वकर्मा पूजन के आयोजन करते आए हैं। भारतीय अभियंत्रण सदैव कला, विज्ञान और आध्यात्म के संगम पर खड़ा रहा है। हमारे मंदिरों की स्थापत्य कला, लोहे के खंभे जो सदियों से जंगरहित खड़े हैं, या फिर अजन्ता की गुफाओं में शिल्प-सौंदर्य , सब यह बताते हैं कि हमारे अभियंता केवल साधन बनाने वाले नहीं, जन आत्मा में बसने वाले कलाकार थे। बदला, औपनिवेशिक युग आया। इंजीनियरिंग का अर्थ केवल गणितीय संरचना तक सीमित कर दिया गया। भारत में अभियंत्रण को अंग्रेजी पाठशालाओं के माध्यम से नए रूप में ढाला गया। किंतु भारतीय मस्तिष्क अपनी जड़ों से कट नहीं सका। स्वतंत्रता संग्राम के साथ ही एक नए अभियंत्रण युग का आरंभ हुआ , जो आत्मनिर्भरता का प्रतीक था। रेलवे, सिंचाई परियोजनाएँ, बांध, इस्पात संयंत्र, औद्योगिक नगर , ये सब नवभारत की नींव थे।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 18 अंक 222

अप्रासंगिक प्रतिबंध

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने कथित तौर पर विभिन्न विभागों के बीच एक प्रस्ताव वितरित किया है। यह प्रस्ताव इन्वेंटरी आधारित ई-कॉमर्स में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश से संबंधित है। हालांकि यह अनुमति केवल निर्यात संबंधी कामों के लिए होगी। यह एक तरह से इस बात को भी स्वीकार करना है कि ई-कॉमर्स केवल बाजार नहीं है बल्कि यह एकीकृत आपूर्ति श्रृंखला है जिससे विनिर्माण, लॉजिस्टिक्स और निर्यात सभी जुड़े होते हैं। इसके बावजूद इस रियायत को केवल निर्यात तक सीमित रखकर सरकार घरेलू और वैश्विक खुदरा कारोबार के बीच कृत्रिम अंतर कायम करने का जोखिम ले रही है।

मौजूदा ढांचे में मार्केटप्लेस मॉडल में 100 फीसदी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की इजाजत है। यहां ई-कॉमर्स कंपनियां सिर्फ बिचौलिए की भूमिका में होती हैं और खरीदारों एवं विक्रेताओं को एक साथ लाती हैं। इन्वेंटरी आधारित मॉडल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर रोक बनी हुई है, जहां प्लेटफॉर्म उत्पादों का स्वामित्व रखते हैं और उन्हें सीधे उपभोक्ताओं को बेचते हैं। कहा जाता है कि यह अंतर इसलिए रखा गया ताकि विदेशी फंडिंग वाले प्लेटफॉर्म्स को भारी भरकम छूट देने और कीमतें आक्रामक रूप से कम रखने से रोका जा सके क्योंकि इससे छोटे कारोबारियों को नुकसान पहुंच सकता है। देश के डिजिटल कॉमर्स के शुरुआती दिनों में इसका तुक समझा जा सकता था लेकिन तब से अब तक बाजार में परिपक्वता आ चुकी है।

देश में ई-कॉमर्स क्षेत्र अब बड़ा, विविधता भरा और प्रतिस्पर्धी हो चला है। ऐसे में इन्वेंटरी आधारित ई-कॉमर्स में घरेलू बाजारों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रतिबंधित करना अप्रासंगिक हो चला है। इन्वेंटरी का स्वामित्व किसके पास है, इसके बजाय इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि बाजार किस तरह काम करता है। उचित प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करने वाले नियम, पारदर्शी मूल्य निर्धारण और विक्रेताओं के लिए गैर भेदभावकारी पहुंच जहां शक्ति का केंद्रीकरण रोक सकते हैं, वहीं यह जरूरी पूंजी और तकनीक जुटाने में भी मददगार हो सकते हैं। इन्वेंटरी आधारित ई-कॉमर्स में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की मंजूरी से कई लाभ हो सकते हैं। इससे गोदामों, शीत गृहों, लॉजिस्टिक्स, पैकेजिंग और गुणवत्ता नियंत्रण आदि के क्षेत्रों में निवेश लाया जा सकता है। ये क्षेत्र देश की खुदरा श्रृंखला में कमजोर कड़ी रहे हैं।

इससे किसानों, शिल्पकारों और अन्य छोटे व मझोले उपक्रमों को भारतीय और वैश्विक ग्राहकों से बेहतर तरीके से जोड़ने में मदद मिलेगी। इससे उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है, रोजगार तैयार हो सकते हैं, और औपचारिकीकरण की दिशा में बढ़ने में मदद मिल सकती है। उपभोक्ताओं के लिए इसका अर्थ होगा बेहतर विकल्प, विश्वसनीयता और सेवा। इस प्रकार के सुधार सीधे तौर पर विदेश व्यापार नीति 2023 के उद्देश्यों का समर्थन करते हैं जो देश की ई-कॉमर्स निर्यात क्षमता को वर्ष 2030 तक 200-300 अरब डॉलर की सीमा में लाने का लक्ष्य रखती है। यह ई-कॉमर्स निर्यात केंद्रों को गैर-पारंपरिक निर्यात के वाहक के रूप में विकसित करने की परिकल्पना करती है।

निश्चित तौर पर छोटे कारोबारियों की चिंताओं को खारिज नहीं किया जाना चाहिए। परंतु उन्हें बचाने का यह अर्थ नहीं है कि प्रगति को स्थायी रूप से बाधित कर दिया जाए। मार्केटप्लेस मॉडल का अनुभव बताता है कि मजबूत निगरानी, विक्रेताओं के साथ उचित व्यवहार, अनुपालन का ऑडिट प्रमाणन और मूल्य हेरफेर पर प्रतिबंध, समान अवसर सुनिश्चित कर सकते हैं। ऐसा करके एक समान प्रतिस्पर्धी वातावरण बनाया जा सकता है।

ऐसी व्यवस्था को इन्वेंटरी आधारित संचालन पर लागू करना, मौजूदा निवेश प्रतिबंधों को बनाए रखने की तुलना में कहीं अधिक रचनात्मक होगा। भारत अब उस स्तर तक पहुंच चुका है जहां उसे अपनी नियामक क्षमता और उद्यमशीलता पर भरोसा करना चाहिए। इन्वेंटरी आधारित ई-कॉमर्स को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए खोलकर सरकार खुदरा क्षेत्र को बेहतर बना सकती है। ऐसे में सरकार को मल्टीब्रांड खुदरा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को लेकर अपने रुख पर दोबारा विचार करना चाहिए। भौतिक और ऑनलाइन खुदरा, दोनों को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए खोलने से बड़े पैमाने पर निवेश आ सकता है, इस क्षेत्र की दक्षता में सुधार हो सकता है और रोजगार के नए अवसर बन सकते हैं। इससे उपभोक्ताओं को ही लाभ होगा।

सेवा क्षेत्र में असंगठित उपक्रमों का जाल

यह प्रश्न बनता है कि संगठित क्षेत्र में रोजगार वृद्धि को कौन सी बात रोक रही है। आपूर्ति या फिर मांग? सवाल उठा रही हैं आर कविता राव

देश में सेवा क्षेत्र के रोजगार संबंधी रुझानों पर नीति आयोग की एक हालिया रिपोर्ट ने देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सबसे अधिक हिस्सेदारी रखने वाले इस क्षेत्र में रोजगार के हालात को एक बार फिर प्रकाश में ला दिया है। रिपोर्ट देश में रोजगार तैयार करने में सेवा क्षेत्र की भूमिका को रेखांकित करते हुए बताती है कि देश के कुल रोजगार में इसकी हिस्सेदारी 2011-12 के 26.9 फीसदी से बढ़कर 2023-24 में 29.7 फीसदी हो गई।

यह सात पहलुओं पर रोजगार के परिदृश्य का परीक्षण करता है: स्थानिक वितरण, लैंगिक यानी स्त्री-पुरुष भागीदारी, रोजगार का प्रकार, आयु, शिक्षा, अनौपचारिकता और आय। ये सभी प्रोफाइल ढांचागत चुनौतियों की पहचान के लिए प्रयोग की जाती हैं। अर्थव्यवस्था में उत्पादक और लाभकारी रोजगार को बढ़ाने की चुनौती से निपटने के लिए रिपोर्ट में नीतिगत विकल्पों की एक सूची भी प्रस्तुत की गई है। इस आलेख में हम इन प्रोफाइल में से एक यानी औपचारिक बनाम अनौपचारिक रोजगार के प्रभावों की पड़ताल करेंगे।

सबसे पहले ध्यान देते हैं रिपोर्ट में विभिन्न क्षेत्रों के लिए रोजगार के कोविड के पहले और बाद मौजूद रोजगार की प्रत्यास्थता (इलैस्टिसिटी) की तुलना पर। कोविड के बाद कृषि, विनिर्माण और सेवा क्षेत्र तीनों में रोजगार की प्रत्यास्थता बढ़ी। सेवा क्षेत्र की बात करें तो उसकी प्रत्यास्थता 0.35 से बढ़कर 0.63 हो गई। यह सुखद है लेकिन चूंकि प्रत्यास्थता 1 से कम है इसलिए संकेत मिलता है कि उत्पादन वृद्धि और मूल्यवर्धन रोजगार में उल्लेखनीय वृद्धि के रूप में सामने नहीं आया।

दूसरी ओर कृषि और विनिर्माण की प्रत्यास्थता 1 से अधिक है। इसमें इजाफे की वजह कोविड-19 महामारी के बाद आर्थिक गतिविधियों में लगा झटका भी हो सकता है और एक बार अर्थव्यवस्था में स्थिरता आने के बाद इसमें कमी आई होगी। परंतु कृषि में उच्च प्रत्यास्थता चिंतित करने वाली हो सकती है क्योंकि यह समग्र रोजगार अवसरों के लिहाज से कमजोर है। ऐसे में उत्पादक रोजगार बढ़ाने की आवश्यकता है।

सेवा क्षेत्र में रोजगार की औपचारिक-अनौपचारिक प्रोफाइल की बात करें तो, रिपोर्ट के अनुसार 51 फीसदी नौकरियां नियमित वेतन वाली हैं जबकि 45 फीसदी लोग स्वरोजगार में लगे हुए हैं। व्यापार और परिवहन क्षेत्रों में स्वरोजगार का अनुपात और भी अधिक है। यदि हम अनौपचारिक नौकरियों को उन नियमित वेतन वाली नौकरियों के रूप में परिभाषित करें जिनमें सामाजिक सुरक्षा लाभ नहीं मिलते, तो सेवा क्षेत्र में अनौपचारिक नौकरियों की संख्या बढ़कर 69 फीसदी हो जाती है। असंगठित क्षेत्र की वार्षिक सर्वेक्षण रिपोर्ट दर्शाती है कि सेवा क्षेत्र में मालिकों द्वारा संचालित और परिवारों द्वारा संचालित इकाइयों का प्रभुत्व है। ये कुल उद्यमों का 82.5 फीसदी हिस्सा हैं।

इस संदर्भ में रिपोर्ट में जो प्राथमिकताएं तय की गई हैं उनमें से एक है 'औपचारिकीकरण का समाधान और रोजगार की सुरक्षा।' यह सराहनीय लक्ष्य है। इस लक्ष्य की दिशा में नीतिगत सुझाव अधिक बेहतर नियमन और सामाजिक सुरक्षा तक पहुंच पर ध्यान देते हैं। दो सवालों के जवाब हासिल करने जरूरी हैं: औपचारिकीकरण की राह में क्या बाधाएं हैं और औपचारिक क्षेत्र के रोजगार पर आर्टिफिशल इंटेलिजेंस का क्या असर हो सकता है?

औपचारिकीकरण की बाधाएं

असंगठित क्षेत्र के रोजगार में दो घटक होते हैं। असंगठित उपक्रम और ऐसे औपचारिक उपक्रम जो बिना सामाजिक सुरक्षा के रोजगार प्रदान करते हैं। औपचारिक रोजगार के क्षेत्र की बाधाएं असंगठित क्षेत्र की दोनों श्रेणियों से अलग हो सकती हैं। असंगठित उपक्रमों के लिए औपचारिकीकरण की एक कीमत चुकानी होती है। विभिन्न नियमन और करों का अनुपालन, वह भी बिना प्रत्यक्ष लाभ के। श्रम की लागत या प्रयास के प्रतिफल पर भी असर पड़ेगा, जिससे उपक्रम की व्यवहार्यता प्रभावित हो सकती है। दूसरी ओर, कम कौशल वाले श्रमिकों के एक अतिरिक्त भंडार की उपलब्धता यह भी दर्शाती है कि कार्यबल की सौदेबाजी की शक्ति सीमित है। इसलिए, श्रम बाजार में मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों के लिए यथा स्थिति को बदलने को लेकर कोई विशेष प्रोत्साहन नहीं है।

इस संदर्भ में क्या हम औपचारिकीकरण को अर्थव्यवस्था में मांग के पैमाने से जोड़ कर देख सकते हैं? मांग में तेज विस्तार से ऐसे हालात बन सकते हैं जहां औपचारिकीकरण को वांछित और व्यावहारिक दोनों माना जाए। आय हस्तांतरण जो आय वितरण के सबसे निचले कुछ वर्गों की मांग को बढ़ाते हैं, प्रभावी हो सकते हैं। सरकारें यदि इन आय हस्तांतरणों को महिलाओं के लिए लागू कर रही हैं, तो संभवतः वे इस विशिष्ट आवश्यकता को संबोधित कर रही हैं।

वहीं दूसरी ओर, संगठित क्षेत्र के उपक्रमों के लिए कर्मचारियों को सामाजिक सुरक्षा कवरेज प्रदान करना दीर्घकालिक लागतों को बढ़ा सकता है, जिससे अनिश्चित आर्थिक माहौल में आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने में उनका लचीलापन सीमित हो सकता है। पिछले तीन दशकों में सरकारों और संस्थानों ने ऐसी लागतों को कम करने के लिए सफाई, सुरक्षा और परिवहन सेवाओं को आउटसोर्स करने का विकल्प चुना है। इस चिंता को दूर करने के लिए, क्या हम सामाजिक सुरक्षा को सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवा के रूप में देख सकते हैं? केंद्र सरकार ने इस दिशा में कुछ योजनाएं शुरू की हैं। इन योजनाओं के तहत दी जाने वाली सुरक्षा या बीमा के स्तर को बढ़ाना, ताकि न्यूनतम जीवन गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके और आवश्यकता के समय इस सुरक्षा तक आसान पहुंच का प्रमाण प्रस्तुत करना, ये उपाय श्रमिकों को इसे अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं और नियोक्ताओं पर अतिरिक्त लागत बोझ भी नहीं आता। एक प्रश्न फिर भी बना रहता है। वह यह कि इस प्रकार के बड़े पैमाने पर कार्यक्रमों के लिए वित्तीय संसाधन कैसे जुटाए जाएं? आयकर व्यवस्था को अधिक व्यापक आधार के साथ तर्कसंगत बनाना एक तरीका हो सकता है।

दूसरे सवाल की बात करें तो एआई रोजगार पर बहुत बड़ा असर डाल सकता है। नीति आयोग की रिपोर्ट में इंटरनैशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च इन टेक्नॉलजी में प्रकाशित ए कुमार के अध्ययन का हवाला दिया गया है। इस अध्ययन में संकेत दिया गया है कि 40-50 फीसदी दफ्तरी नौकरियां समाप्त हो सकती हैं। तर्क दिया गया है कि एआई और डेटा विशेषज्ञों की मांग बढ़ेगी लेकिन अपनी प्रकृति के कारण यह तकनीक कम लोगों की आवश्यकता वाली है। इससे कुल मिलाकर रोजगार पर बुरा असर होगा। यह चिंता का विषय है क्योंकि औपचारिक क्षेत्र में बड़ी संख्या में नौकरियां आईटी और फिनटेक क्षेत्र से संबंधित हैं। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस को अपनाने से कुछ उच्च वेतन वाली नौकरियां तैयार हो सकती हैं लेकिन अब वक्त आ गया है कि जहां संभव हो वहां नए सिरे से कौशल विकास और उन्नत कौशल पर ध्यान दिया जाए ताकि इन अवसरों का लाभ उठाया जा सके।

अल्पकालिक रूप में अधिक लोगों के अनौपचारिक क्षेत्र की ओर मुड़ने का जोखिम है। इस क्षेत्र को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है ताकि औपचारिकीकरण को बढ़ावा दिया जा सके और लचीले व टिकाऊ रोजगार सृजन को बढ़ावा मिल सके।

(लेखिका राष्ट्रीय लोक वित्त और नीति संस्थान, नई दिल्ली की निदेशक हैं)

राष्ट्र निर्माण में अनुसंधान प्रयोगशालाएं क्यों हैं अहम

किसी भी देश की लंबे समय तक चलने वाली समृद्धि और मजबूती का रहस्य क्या है, इसके बारे में नोबेल अर्थशास्त्र पुरस्कार समिति लगातार बताती रही है। जोएल मोकिर, फिलिप एगियों और पीटर हॉविट को यह बताने के लिए पुरस्कृत किया गया कि कैसे संस्कृति, संस्थान और 'रचनात्मक विध्वंस' यानी, पुराने और कम कुशल तरीकों को नए और बेहतर विचारों से लगातार बदलना, हमेशा नए आविष्कारों को उत्पादकता में बदलते रहते हैं।

यदि इन पुरस्कारों को एक साथ देखा जाए तो ये एक नीतिगत पुस्तिका प्रतीत होते हैं। देश तभी समृद्ध और मजबूत बनते हैं जब वे ऐसी संस्थाएं बनाते हैं जो नए-नए विचारों का सृजन करें और उन्हें तेजी से बड़े पैमाने पर लागू करें साथ ही साथ अपने प्राकृतिक संसाधनों को भी संरक्षित रखें। अगर इस संदर्भ में भारतीय संस्करण की बात करें तो यह 'ग्रीन फ्रंटियर' यानी टिकाऊ आर्थिक विकास मॉडल हो सकता है जिसका लक्ष्य ऐसी वृद्धि करना जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बनाए रखने के साथ-साथ स्थिरता को भी साथ लेकर चले। भारत के लिए, इसका मतलब है कि हमें तकनीकी संस्थाओं का निर्माण करने की आवश्यकता है जो स्थायी समृद्धि के इंजन बनें। देशों ने कॉरपोरेट अनुसंधान प्रयोगशालाओं को एक प्रमुख चालक के रूप में रखते हुए शक्तिशाली नवाचार तंत्र का निर्माण कर इसे हासिल किया है।

इन कॉरपोरेट प्रयोगशालाओं को धैर्य के साथ टिकी रहने वाली पूंजी के साथ बनाए रखा गया है और उनके नवाचारों को तेजी से बढ़ाया गया है। इस लिहाज से बेल लैब्स एक मानक बनी हुई है क्योंकि इसने मौलिक सिद्धांतों को इंजीनियरिंग के साथ जोड़ा और इसके नतीजे अर्थव्यवस्था में दिखे। बेल लैब्स के आविष्कारों में ट्रांजिस्टर, सूचना सिद्धांत, लेजर, सीसीडी (चार्ज कपल्ड डिवाइस), यूनिक्स और सी शामिल हैं, जिसने 10 नोबेल और पांच ट्यूरिंग पुरस्कार हासिल किए। गौर करने वाली बात यह है कि आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) की तकनीकी सफलता गूगल की एआई अनुसंधान प्रयोगशाला, गूगल ब्रेन के आठ शोधकर्ताओं द्वारा लिखे गए एक ही शोध पत्र से मिली थी।

जर्मनी के फ्राउनहोफर इंस्टीट्यूट सरकारी अनुदान और अनुबंध राजस्व के आधार पर चलते हैं ताकि इन लैब्स को पूंजी की कमी न हो और इनमें नए विचारों की तेजी बनी रहे। वहीं जापान शोध से लेकर इसके प्रदर्शन और इसे लागू करने तक के पूरे चक्र के लिए फंडिंग करता है जिसके कारण यहां दशक भर के लिए दांव लगाया जाता है और समय-समय पर यह भी देखा जाता है कि यह अपने लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं या नहीं। चीन ने यह सबक लिया है कि जब कंपनियां आपस में कड़ी प्रतिस्पर्द्धा करती हैं तब वे शोध एवं विकास (आरऐंडडी) में आगे बढ़ सकती हैं। इससे कंपनियां नए उत्पादों को बनाने की मशीन बन जाती हैं। सबसे जरूरी बात यह है कि लगातार फंडिंग होती रहनी चाहिए ताकि लैब्स में समय के साथ सीखने का काम बढ़ता रहे। हमारे बड़े व्यापारिक घरानों को इस चुनौती का सामना करना चाहिए। वे आपूर्ति श्रृंखलाओं को नियंत्रित करते हैं, उनके पास अपार वित्तीय संसाधन और ग्राहकों तक शानदार पहुंच है। नतीजतन, वे किसी भी मंत्रालय या विश्वविद्यालय की तुलना में विचारों का प्रसार कारखानों, ग्रिडों और डेटा केंद्रों तक तेजी से कर सकते हैं।

जयंत सिन्हा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने नीतिगत ढांचा प्रदान किया है। अनुसंधान राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन (एएनआरएफ) को रणनीति और उद्योग-विश्वविद्यालय सहयोग को आधार देने के लिए बनाया गया है। अनुसंधान, विकास और नवाचार योजना अपनी तरह के पहले निवेशों को जोखिम से बचाने के लिए लंबी अवधि की कम लागत वाली पूंजी देती है। इस क्षेत्र से जुड़े अभियान जैसे कि इंडियाएआई, प्रोग्राम संबंधी चैनल जोड़ते हैं। वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) की मान्यता और धारा 35 की कटौती घरेलू शोध एवं विकास की प्रभावी लागत को कम करती है।

कई नई तकनीकों में महारत हासिल करने की जरूरत है। उदाहरण के तौर पर आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) में, हम अपने डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को जनसंख्या पर आधारित पैमाने के परीक्षण मंच के रूप में उपयोग कर सकते हैं, लेकिन प्रयोगशालाओं को मूल्यांकन, सुरक्षा साधन चेन और डोमेन मॉडल पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिन्हें सरकारें और उद्यम वास्तव में खरीद सकते हैं। सेमीकंडक्टर में, हमें मोबिलिटी और ग्रिड से जुड़े आधुनिक पैकेजिंग, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स और विशेष नोड्स पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही, भारतीय बौद्धिक संपदा को ऐसे घटकों में बदलना चाहिए जिन्हें दुनिया भर में भेजा जा सके। क्वांटम कंप्यूटिंग में हमें सबसे पहले कम समय में होने वाली सेंसिंग और सुरक्षित संचार पर ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही, कंप्यूटिंग के लिए त्रुटि निवारक और हार्डवेयर क्षमता बनानी चाहिए।

हरित ऊर्जा में, हमें बैटरी के बेहतर रसायन और पावर इलेक्ट्रॉनिक्स में प्रगति के लिए जोर देना चाहिए। साथ ही छोटे मॉड्यूलर नाभिकीय रिएक्टर बनाने पर जोर देना चाहिए ताकि डेटा सेंटर और बिजली से चलने वाले उद्योग को स्वच्छ ऊर्जा मिल सके। अंतरिक्ष में, हमें सिर्फ अभियानों पर ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि बाजार पर भी ध्यान देना होगा। हमें ऐसी तकनीक बनानी होगी जिससे उपग्रह से मिली जानकारी का इस्तेमाल करके कृषि क्षेत्रों, शहरों और समुद्री इलाकों के लिए सही फैसले लिए जा सकें। जीवन विज्ञान में, ऐसे डेटा प्लेटफॉर्म बना सकते हैं जो लोगों की जानकारी को गोपनीय रखें। फिर इन मंचों को विनिर्माण, तीव्र परीक्षण नेटवर्क और चिकित्सा में उपयोगी एआई के साथ जोड़ सकते हैं जिससे कोई भी खोज तुरंत लोगों के काम आ सके।

कंपनियों को प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित करने और ऐसे लोगों की खेप तैयार करने की आवश्यकता है जो हमारी अनुसंधान प्रयोगशालाओं को ताकत देंगे। हमें शोधकर्ताओं को वैश्विक वेतन का भुगतान करने, उन्हें कॉरपोरेट सलाहकारों के साथ जोड़ने और लैब तक पहुंच की गारंटी देने की आवश्यकता है। एएनआरएफ की मदद से प्रोफेसरों की नियुक्तियां और विदेशों से लौटे प्रोफेसरों को जोड़ना चाहिए, ताकि वे नेतृत्वकर्ता की भूमिका में आ सकें। लैब को चलाने वाले लोगों (जैसे तकनीशियन, मैट्रोलॉजी विशेषज्ञ, जैव सुरक्षा प्रबंधकों) को बेहतर प्रशिक्षण देकर और उनके वेतन को बढ़ाकर उनके काम को पेशेवर बनाना चाहिए। हमें इन लोगों को योग्यता के अनुसार करियर में आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए, ताकि वे कॉरपोरेट शोध लैब में अपना बेहतरीन काम कर सकें।

सवाल यह है कि अब बड़े कारोबारी समूहों को क्या करना चाहिए? अलग-अलग क्षेत्र के लिए शोध एवं विकास के लक्ष्य तय करते हुए 10 साल के लिए लैब बनाएं, ताकि नेतृत्वकर्ता के बदलने पर भी काम चलता रहे। दूसरा स्वतंत्र लैब प्रशासन तैयार करें यानी ईमानदार और काबिल लोगों को नेतृत्वकर्ता बनाएं। ऐसे विशेषज्ञ रखें जो लंबे समय तक काम कर सकें और यह देखते रहें कि काम सही चल रहा है या नहीं। विश्वविद्यालय और स्टार्टअप्स के साथ बौद्धिक संपदा को साझा करने के नियम बनाएं। तीसरा, पहला खरीदार खुद बनेः अपने लैब से बनने वाले नए उत्पाद को सबसे पहले खुद खरीदें और इसे खर्च न समझें, बल्कि भविष्य के बीमा की तरह देखें। चौथा, जैसे आप अपनी कमाई के बारे में जानकारी देते हैं, वैसे ही शोध के बारे में भी बताएं। शेयर बाजार में इस पारदर्शिता को सराहा जाएगा। सरकार का काम है एक स्थिर नीति बनाए रखना और स्वदेशी तकनीक खरीदना। जब सरकार पहली खेप खरीदती है तब कंपनियां दूसरी खेप में निवेश करती हैं। इस तरह नोबेल की कहानी भारत की कहानी भी बन सकती है।

एक दशक बाद, हमारा सवाल यह नहीं होना चाहिए कि क्या भारत बेल जैसी लैब बना सकता है। सवाल यह होना चाहिए कि कौन सी कॉरपोरेट लैब एआई, चिप, क्वांटम, ग्रीन एनर्जी, अंतरिक्ष और लाइफ साइंसेज में हमारे लाभ को आधार बनाती है और उनके विचार कितनी जल्दी कारखानों, डेटा केंद्रों, उपग्रहों, अस्पतालों और कृषि क्षेत्रों में स्थापित हो जाते हैं। इसी तरह तकनीक एक टिकाऊ वृद्धि इंजन बन सकती है और भारत टिकाऊ आर्थिक विकास में अपना झंडा गाड़ सकता है।

(लेखक केंद्रीय मंत्री और लोक सभा सदस्य रह चुके हैं। ये उनके निजी विचार हैं)

आपका पक्ष

डब्ल्यूटीओ और मुक्त व्यापार समझौते

लेख 'मुक्त व्यापार समझौतों के क्रियान्वयन की तैयारी' बहुत महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करता है और बहुत अहम प्रश्न भी खड़े करता है। जब द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के मानकों और नियमों के अनुरूप नहीं हैं तो विश्व व्यापार संगठन की प्रासंगिकता क्या है। वर्तमान में अमेरिका, चीन और यूरोपीय संघ विश्व के अन्य देशों पर मनमाने ढंग से शर्तें और प्रतिबंध, टैरिफ और संरक्षणात्मक नीतियां लागू कर रहे हैं जिससे भारत जैसे बड़े देशों को वैश्विक बाजार में प्रभावशाली देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते के लिए विवश होना पड़ रहा है। जब विश्व व्यापार संगठन वैश्विक व्यापार को नियंत्रित नहीं कर सकता और विश्व के बड़े देश मनमाने ढंग से अपने हित में, विश्व व्यापार संगठन को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हों तो यह वैश्विक बाजार में कभी संतुलन नहीं आने देगा। मूल रूप से किसी भी देश की मौलिक अर्थव्यवस्था के वह क्षेत्र जिन पर उस देश का अस्तित्व टिका हो और उस देश के जनमानस की आजीविका का आधार ही मुक्त व्यापार समझौतों का मूल हो, निश्चित रूप से वह देश आर्थिक रूप से भारी नुकसान में होगा। इसलिए कृषि, डेरी, टेक्सटाइल, वन संपदा जैसे क्षेत्रों को मुक्त व्यापार समझौतों से अलग रखना आवश्यक है। विश्व व्यापार संगठन और ओईसीडी मुक्त व्यापार समझौते का एक ऐसा प्रारूप तैयार करें जो विश्व भर में एक सर्वमान्य मानक के रूप में लागू हो।

विनोद जौहरी, दिल्ली

डब्ल्यूटीओ और ओईसीडी मुक्त व्यापार समझौते का एक ऐसा प्रारूप तैयार करें जो विश्व भर में एक सर्वमान्य मानक के रूप में लागू हो

भगदड़ रोकने के लिए हो उचित उपाय

वर्ष 2025 अब तक देश में भीड़ और भगदड़ की घटनाओं के लिए जाना जा रहा है। देश में इस साल 8 बड़ी भगदड़ की घटनाएं हो चुकी हैं, जिनमें कुल 129 लोगों की जान चली गई है। पिछले दिनों आंध्र प्रदेश के वेंकटेश्वर मंदिर में एकादशी के अवसर पर हुई भगदड़ में कुछ श्रद्धालुओं की मौत हो गई। इससे पहले महाकुंभ, दिल्ली रेलवे स्टेशन, बेंगलूरु में आईपीएल जीत के जश्न के दौरान, उत्तराखंड, गोवा और तमिलनाडु में भी ऐसी घटनाएं हुई हैं। हर हादसे में भीड़ को नियंत्रित करने में चूक, प्रवेश और निकास के लिए संकरे रास्ते और पर्याप्त सुरक्षाकर्मियों की कमी की बात सामने आई है। जब तक आयोजक और लोग दोनों लापरवाही नहीं छोड़ेंगे, तब तक ऐसी दुर्घटनाएं होती रहेंगी।

अमृतलाल मारू, इंदौर

डीपफेक के दुरुपयोग पर लगे अंकुश

डीपफेक व एआई के दुरुपयोग को रोकने के लिए आईटी मंत्रालय ने 'सिंथेटिक सामग्री की अनिवार्य लेबलिंग' का प्रस्ताव रखा है, जिसमें ऐसे ऑडियो-वीडियो पर 'एआईजनित' या 'सिंथेटिक' चिह्नित करना होगा। इसे शीघ्र कानूनी रूप देकर डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और कंटेंट निर्माताओं को इसके दायरे में लाना होगा। ऐसी तकनीक भी विकसित करनी होगी जो यह बता सके कि ऑडियो-वीडियो में डीपफेक का प्रयोग हुआ है। डिजिटल साक्षरता के प्रति जागरूकता बढ़ानी होगी।

अथर्व सोनी, इंदौर

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मंगलवार को नैनीताल स्थित कुमाऊं विश्वविद्यालय के 20वें दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए। समारोह में उत्तराखंड के राज्यपाल सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह भी मौजूद थे।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

तापमान बदलाव के खतरों से जुड़े संकेत चिंताजनक

लगातार बढ़ रहा धरती का तापमान नित नए खतरे की जानकारियां सामने ला रहा है। वैज्ञानिक अब चेतावनी दे रहे हैं कि आने वाले वर्षों में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे घनी आबादी वाले देशों में गर्मी से होने वाली मौतें महामारी का रूप ले सकती हैं। एक जर्नल में प्रकाशित ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि दक्षिण एशिया में 2045 तक हर घंटे 46 लोग गर्मी से मर सकते हैं। आंकड़ों की गहराई में जाएं तो चौबीस घंटे में औसतन ग्यारह सौ से अधिक मौतें सिर्फ बढ़ते तापमान की वजह से हो सकती है। यह आंकड़ा तो चौंकाता ही है उसके साथ ही अधिक चौंकाने वाली बात यह भी है कि समय-समय पर गर्म होती धरती के खतरों को लेकर आगाह करने वाली रिपोर्टों पर हम नोटिस तक लेने को तैयार नहीं।

वस्तुतः गर्मी की मार अब सिर्फ मौसम बदलाव की बात ही नहीं रही, यह जीवन-मृत्यु का प्रश्न बन चुकी है। यह रिपोर्ट एक गंभीर तथ्य उजागर करती है कि दक्षिण एशिया में हर साल 2 लाख से अधिक लोग अत्यधिक गर्मी से जान गंवा रहे हैं। गर्मी से जान गंवाने वालों की यह संख्या वर्ष 2045 तक दोगुनी हो सकती है। अहम सवाल यह है कि इतने भयावह भविष्य की आहट सुनाई देने के बावजूद हम कितने तैयार हैं? भारत की जलवायु नीतियां मोटे दस्तावेजों और अंतरराष्ट्रीय मंचों की बयानबाजी तक ही सीमित रह गईं तो हम शायद उस वक्त कुछ नहीं कर पाएंगे जब हालात और भयावह होंगे। हर साल ग्रीन एनर्जी मिशन, क्लाइमेट एक्शन प्लान और सस्टेनेबल डवलपमेंट जैसी योजनाओं से सरकारों की कुछ कर गुजरने की मंशा तो दिखती है। लेकिन इनसे जुड़ी योजनाओं की रफ्तार फाइलों से बाहर भी उतनी ही तेज है या नहीं, यह देखने वाला कोई नहीं। न शहरों का तापमान घटा, न वायु गुणवत्ता सुधरी। बढ़ती आबादी, कंक्रीट के जंगल और अनियोजित शहरीकरण ने हालात और बदतर कर दिए। चिंता की बात यह भी है कि भारत में अभी भी 70 प्रतिशत बिजली कोयले से बनती है। जंगल कट रहे हैं, नदियां सूख रही हैं, भूजल स्तर घट रहा है।

इन सबके बीच ग्रीन इंडिया की तस्वीर कागजी हरियाली के माफिक दिखती है। आम जनता को आने वाले खतरे का अहसास तक नहीं कराया जा रहा। न स्कूलों में जलवायु शिक्षा गंभीरता से ली जाती है और न ही शहरों के मास्टर प्लान में 'हीट एक्शन प्लान' को जगह मिलती है। रिपोर्ट के मुताबिक दक्षिण एशिया की हालत इसलिए भी ज्यादा गंभीर है क्योंकि यहां गरीबी, भीड़ और स्वास्थ्य सेवाओं की कमजोरी पहले से मौजूद है। अब केवल वृद्ध ही नहीं, बच्चे, गर्भवती महिलाएं और युवा भी हीट स्ट्रोक का शिकार हो रहे हैं। अब वक्त है कि दिखावे से आगे बढ़कर व्यवहारिक नीतियां बनाई जाएं। हर जिले में हीट-एक्शन क्लिनिक और आपात सेवा की व्यवस्था हो। पेड़ लगाना ही काफी नहीं, उन्हें जीवित रखने की जवाबदेही भी तय हो।

दिशाहीनता : हर चुनाव में नई रणनीति में बुराई नहीं, लेकिन वैचारिक निरंतरता तो दिखनी चाहिए

संकट कांग्रेस की राजनीतिक प्रासंगिकता का है...

राज कुमार सिंह
वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक
@patrika.com

केंद्र के बाद राज्यों की सत्ता भी हाथ से फिसलने से कांग्रेस के लिए वैचारिक और राजनीतिक पहचान का संकट गहराता जा रहा है, पर वह आत्मविश्लेषण का साहस नहीं जुटा पा रही। वैचारिक भटकाव से उबरे बिना कांग्रेस का भविष्य नहीं।

सत्ता केंद्रित राजनीति में चुनावी सफलता को निर्णायक कसौटी मान लिए जाने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए, लेकिन सबसे पुराने राजनीतिक दल कांग्रेस का संकट उससे ज्यादा गहरा है। 2014 के लोकसभा चुनाव में 44 सीटों पर सिमटने के ऐतिहासिक शर्मनाक प्रदर्शन के बाद कांग्रेस की सीटें बढ़ी हैं। 2019 में 52 तो 2024 में 99 हो गईं, पर वैचारिक दिशाहीनता से उपजे राजनीतिक पहचान के संकट से कांग्रेस उबरती नहीं दिखती। हर चुनाव में नई रणनीति में बुराई नहीं, लेकिन वैचारिक निरंतरता तो दिखनी चाहिए।

सहयोगियों और मुद्दों के चयन में कांग्रेस का वैचारिक भटकाव साफ दिखता है। सत्तारूढ़ तो कांग्रेस 2004 से 2014 तक भी रही, लेकिन ऐतिहासिक पराभव का कारण बने राजनीतिक पहचान के संकट की शुरुआत दशकों पहले हो गई थी। कांग्रेस के चुनावी दिग्भ्रम का सबसे बड़ा उदाहरण शाहबानो केस में सर्वोच्च न्यायालय का फैसला पलटने के लिए कानून बदलना और अयोध्या में राम मंदिर का ताला खुलवाना माना जा सकता है। दोनों काम राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्वकाल में हुए।

बेशक 1975 में इंदिरा गांधी आपातकाल लागू कर भारत के संविधान और लोकतंत्र पर आघात से कांग्रेस में जन विश्वास को हिला चुकी थीं, लेकिन जनता पार्टी नेताओं की सत्तालोलुपता से खफा मतदाताओं ने ढाई साल में ही उन्हें माफ कर दिया। वोट बैंक में बिना बड़े क्षरण के कांग्रेस 1980 मे सत्ता में लौट आई, लेकिन राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्वकाल में बहुसंख्यक हिंदुओं और अल्पसंख्यक मुसलमानों, दोनों को खुश करने की कवायद कांग्रेस को विरासत में मिली धर्मनिरपेक्ष छवि पर भारी पड़ी। भाजपा द्वारा लगाए गए अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के आरोप से कांग्रेस नहीं उबर पाई। चुनाव प्रचार के बीच राजीव गांधी की हत्या से उपजी सहानुभूति से 1991 में भी कांग्रेस किसी तरह सरकार बनाने में सफल रही, लेकिन उसका पराभव और भाजपा का उदय शुरू हो चुका था। कांग्रेस भी इनकार नहीं करेगी कि 1990 में मंडल-कमंडल के बीच तल्ख राजनीतिक ध्रुवीकरण के दोहरे झटके से वह संभल ही नहीं पाई।

कभी व्यापक स्वीकार्यता वाली कांग्रेस के समक्ष यक्ष प्रश्न यह है कि आखिर वह किस वर्ग की पार्टी है? खासकर उत्तर और पश्चिम भारत में भाजपा बहुसंख्यक हिंदुओं की पहली पसंद बन गई है। बेशक उत्तर प्रदेश-बिहार जैसे राज्यों में मंडलवादी ताकतें अभी ताल ठोंक रही हैं। तमिलनाडु की सत्ता राजनीति दशकों से द्रमुक-अन्नाद्रमुक के बीच बंटी है। अपने सबसे बड़े गढ़ पश्चिम बंगाल से वामपंथी सत्ता साढ़े तीन दशक बाद उखड़ी तो अब वहां कांग्रेस की बागी ममता बनर्जी का वर्चस्व है। केरल की राजनीति मुख्यतः एलडीएफ तथा कांग्रेसनीत यूडीएफ के बीच दो ध्रुवीय है। भाजपा ने पूर्वोत्तर राज्यों में भी अपना विस्तार कर लिया। इस राजनीतिक उथल-पुथल में कांग्रेस अप्रासंगिक दल बनकर रह गई। कांग्रेस संतोष कर सकती है कि भाजपा से कर्नाटक की सत्ता छीनने में सफल रही। आंध्र प्रदेश से अलग होकर बने तेलंगाना के मतदाताओं ने भी केसीआर को तीसरी बार मुख्यमंत्री बनाने के बजाय कांग्रेस को सत्ता सौंप दी। केरल में भी सत्ता-बदल में कांग्रेस की लॉटरी खुल जाती है, पर शेष दक्षिण में वह अकेलेदम चुनाव लड़ने की हालत में भी नहीं।

उत्तर प्रदेश-बिहार जैसे बड़े राज्यों में भी यही हाल है। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस भाजपा की मजबूत प्रतिद्वंद्वी रही, पर पिछले चुनावों में हाशिये पर चली गई। 2013 से वह दिल्ली की सत्ता से बाहर है तो 2014 से हरियाणा भी लगातार हाथ से फिसल रहा है। 2022 में आप के पास चला गया पंजाब आसानी से लौटने वाला नहीं। सांत्वना पुरस्कार के रूप में हिमाचल प्रदेश की सत्ता उसके पास है। केंद्र के बाद राज्यों की सत्ता भी हाथ से फिसलने से कांग्रेस के लिए वैचारिक और राजनीतिक पहचान का संकट गहराता जा रहा है, पर वह आत्मविश्लेषण का साहस नहीं जुटा पा रही। कभी ईवीएम पर ठीकरा फोड़ा जाता है तो कभी 'वोट चोरी' को मुद्दा बनाया जाता है। चुनावी मुद्दा भी बदल जाता है। लोकसभा चुनाव में संविधान और आरक्षण खतरे में था, उसके बाद से लोकतंत्र खतरे में है।

अखिलेश की सपा और लालू-तेजस्वी का राजद, कांग्रेस से छीने गए ओबीसी-अल्पसंख्यक जनाधार पर ही खड़े हैं। मंडल आयोग की रिपोर्ट ठंडे बस्ते में डाले रखने वाली कांग्रेस के नेता राहुल जब सामाजिक न्याय का संकल्प लेते हैं तो सपा और राजद सशंकित हो जाते हैं। वे राहुल को विपक्ष का 'प्रधानमंत्री-चेहरा' भले मान लें, पर कांग्रेस को राज्य में पैर जमाने लायक सीटें नहीं देते। किसी भी निर्वाचित सदन में शून्य सीट वाली वीआईपी के नेता मुकेश सहनी को उप मुख्यमंत्री चेहरा घोषित कर दिया गया, लेकिन बिहार विधानसभा में 19 विधायकों वाली कांग्रेस को भाव नहीं दिया। कांग्रेस और आप के बीच दलगत हितों के टकराव से ही दिल्ली में भाजपा की सत्ता का मार्ग प्रशस्त हुआ। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी कांग्रेस को पैर नहीं रखने दे रहीं। आश्चर्यजनक रूप से कांग्रेस की संगठनात्मक मजबूती प्राथमिकता में नजर नहीं आती, वरना हरियाणा में पिछले विधायक दल नेता को ही पुनः चुनने में साल नहीं लग जाता।

उदयपुर चिंतन शिविर में कांग्रेस का कायाकल्प करने की बातें बहुत हुईं, पर हुआ कुछ नहीं। कथनी-करनी के अंतर और वैचारिक भटकाव से उबरे बिना कांग्रेस का भविष्य नहीं। जवाहर लाल नेहरू ने भारत की खोज पुस्तक लिखी थी, क्या राहुल गांधी वर्तमान भारतीय राजनीति में कांग्रेस की प्रासंगिकता खोज पाएंगे?

प्रसंगवश

हादसों की रोकथाम के लिए सड़क सुरक्षा को मुहिम बनाना होगा

सड़क सुरक्षा समितियों की बैठकों की खानापूर्ति से काम नहीं चलने वाला

देश में होने वाले सड़क हादसों में राजस्थान की गिनती छठे नंबर पर होती है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की रिपोर्ट में जब यह तथ्य सामने आता है तो प्रदेश में अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों और उनमें मरने वाले व घायलों की बढ़ती संख्या इस दिशा में चेतावनी देने वाली है। चेतावनी यही कि सिर्फ अभियानों और सड़क सुरक्षा समितियों की बैठकों की खानापूर्ति से काम नहीं चलने वाला। सड़क हादसों में जब हंसते-खेलते लोग पल भर में लापरवाही का शिकार हो जाते हैं तो उन लोगों की तस्वीर जरूर जेहन में आती है जिनका घर-परिवार बर्बाद हो चुका होता है। सड़क हादसे और इनमें मरने व घायल होने वालों की संख्या पर काबू पाने के पिछले सालों में ढेरों जतन किए गए हैं लेकिन इनमें अधिकांश कागजी ही साबित हुए हैं। नेशनल व स्टेट हाइवे पर सतत निगरानी तो दूर, हादसों के चिह्नित ब्लैक स्पॉट तक की अनदेखी की जा रही है। सिर्फ कोई हादसा होता है तो कभी कभार ब्लैक स्पॉट की खामियां दूर करने की रस्म अदायगी जरूर होती है।

शहरी इलाकों में तो यातायात पुलिस ने जैसे ट्रैफिक कंट्रोल का अपना मुख्य काम ही बोझ समझ लिया है। यही वजह है कि लोग यातायात नियमों की अनदेखी को अधिकार समझने लगे हैं। जबकि तकनीक के इस दौर में यातायात को न केवल सुचारू रखा जा सकता है बल्कि नियमों का उल्लंघन करने वालों की भी प्रभावी निगरानी संभव है। अभी तो हालत यह है कि राष्ट्रीय राजमार्गों तक पर विपरीत दिशा से आते वाहन खूब नजर आते हैं लेकिन लापरवाही बरतने वालों की तरफ किसी का ध्यान जाता ही नहीं। वाहनों की ओवर स्पीड, बिना लाइसेंस के वाहन चलाने व ओवरलोडिंग के मामले तो अनगिनत होते हैं। मंत्रालय की इस रिपोर्ट पर चिंता करनी ही होगी कि देश में हर दिन 474 लोगों की सड़क हादसों में मौत हो जाती है। इनमें ज्यादातर लोग 25 से 35 वर्ष के हैं। वर्ष 2018 से वर्ष 2022 तक राजस्थान में हुए एक लाख 8922 सड़क हादसों में 51280 की मौत हुई। ऐसे में सड़क सुरक्षा को मुहिम बनाना होगा। - मेघश्याम पाराशर

meghshyam.parashar@in.patrika.com

बुक इनसाइट

ऑल दैट वी सी ऑर सीम

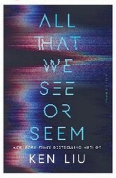

प्रसिद्ध लेखक केन लियू की नई कृति 'ऑल दैट वी सी ऑर सीम' एक अद्‌भुत विज्ञान-आधारित उपन्यास है जो मनुष्य की स्मृति, पहचान और तकनीक के जाल में उलझी दुनिया को बहुत गहराई से परखता है। यह कहानी निकट भविष्य की उस दुनिया में ले जाती है जहां मानव जीवन और एआइ के बीच की सीमाएं लगभग मिट चुकी हैं। कहानी की नायिका जूलिया जेड एक वैज्ञानिक है जो एक ऐसी तकनीक पर काम करती है जिससे इंसान अपने अनुभवों और यादों को डिजिटल रूप में सहेज सकता है। लेकिन जब वह खुद इस तकनीक का हिस्सा बनती है तब उसे एहसास होता है कि वास्तविकता और आभासी जीवन के बीच की रेखा कितनी नाजुक है। इसी संघर्ष से उपन्यास की गहराई बनती है- क्या हम वही हैं जो हमें याद है, या हमारी पहचान उससे कहीं आगे जाती है? केन लियू की लेखन शैली बेहद संवेदनशील और दार्शनिक है। वे तकनीक के साथ मानवीय भावनाओं को जोड़ते हुए यह सवाल उठाते हैं कि क्या इंसान अपनी यादों के बिना भी 'स्वयं' रह सकता है।

फैक्ट फ्रंट

800 साल पुराना चैपल ओक ट्री

फ्रांस के अलौविल-बेलेफोस गांव में स्थित चैपल ओक ट्री एक ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पेड़ है। यह 800 साल पुराना ओक का पेड़ न केवल अपनी उम्र और आकार के लिए प्रसिद्ध है बल्कि इसमें दो छोटे चर्च भी बने हुए हैं, जो इसे एक अद्वितीय स्थल बनाते हैं। 1669 में एक बड़ी आंधी और बिजली गिरने के कारण ओक का तना खोखला हो गया था। पुजारी ने इस खोखले तने के अंदर एक छोटा सा चैपल (चर्च) बना दिया, जहां लोग आकर पूजा-अर्चना करने लगे। यह स्थान धीरे-धीरे धार्मिक तीर्थ स्थल के रूप में विकसित हो गया और आज भी यहां हर साल हजारों तीर्थयात्री आते हैं। समय के साथ चैपल ओक की संरचना में कुछ गिरावट आई है, जिससे इसे संरक्षित करने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। इसके कुछ हिस्सों को लकड़ी की शिंगल्स से ढका गया है। पेड़ की कमजोर शाखाओं को सहारा देने के लिए खंभे लगाए गए हैं।

उपलब्धि आज भारत की हर बेटी एक चैंपियन है

विश्व कप जीत से दिखा देश में महिला खेलों का स्वर्णिम युग

डॉ. पीयूष जैन
खेल प्रोत्साहन क्षेत्र में सक्रिय विशेषज्ञ
@patrika.com

भारत ने महिला वनडे विश्व कप जीतकर इतिहास रच दिया। यह जीत न सिर्फ क्रिकेट बल्कि समूचे भारतीय खेल परिदृश्य के लिए मील का पत्थर है। एक बेटी के पिता और कई महिला खिलाड़ियों के मार्गदर्शक के रूप में मेरा मानना है कि इस सफलता ने देशभर की बेटियों को अभूतपूर्व गर्व और प्रेरणा दी है। यह भारतीय खेलों के लिए एक नया युग है- इस जीत का असर निश्चित ही अन्य खेलों तक भी पहुंचेगा। यह जीत इस बात का प्रमाण है कि जब अवसर, संसाधन और विश्वास मिलते हैं, तो भारत की बेटियां हर सीमा को पार कर सकती हैं।

मैं इस पल को केवल खेल की उपलब्धि नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक के रूप में भी देखता हूं। यह जीत देशभर की उन बेटियों के लिए एक संदेश है कि कोई सपना बड़ा नहीं होता और कोई बाधा अजेय नहीं होती। महिला क्रिकेट के इस स्वर्णिम अध्याय ने भारत के खेल परिदृश्य में एक नया युग आरंभ किया है जहां बेटियां केवल दर्शक नहीं, बल्कि बदलाव की धुरी हैं। यह पहला अवसर है जब किसी एशियाई महिला टीम ने विश्व कप अपने नाम किया है, और यह उपलब्धि भारतीय खेल इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में दर्ज रहेगी। यह जीत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। महिला क्रिकेट अब केवल लोकप्रियता नहीं, बल्कि गरिमा और सम्मान का प्रतीक बन चुका है। यह केवल मैदान की विजय नहीं, बल्कि भारतीय समाज के भीतर बढ़ते आत्मविश्वास, समानता और प्रगतिशीलता का उत्सव है। भारत की बेटियों ने यह साबित कर दिया है कि वे केवल खेल नहीं खेलतीं, वे इतिहास रचती हैं।

कप्तान हरमनप्रीत कौर का निर्भीक नेतृत्व, स्मृति मंधाना की स्थिरता और युवा खिलाड़ियों का आत्मविश्वास इस जीत की नींव बना। सेमीफाइनल में जेमिमा रोड्रिग्स की अविश्वसनीय 125 रनों की पारी, कप्तान हरमनप्रीत कौर की नेतृत्व क्षमता, दीप्ति शर्मा की आक्रामक गेंदबाजी और अमनजोत कौर की दमदार बल्लेबाजी ने टीम में नई ऊर्जा भरी। स्मृति मंधाना, शेफाली वर्मा, रिचा घोष और स्री चरनी जैसी युवा खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में उत्कृष्टता का परिचय दिया। टीम इंडिया ने लीग स्टेज में लगातार तीन हार झेलने के बावजूद अद्‌भुत वापसी करते हुए खिताब जीतने का ऐसा कारनामा किया, जो महिला विश्व कप इतिहास में पहली बार हुआ है। इस जीत के पीछे मिताली राज, अंजुम चोपड़ा और झूलन गोस्वामी जैसी दिग्गज खिलाड़ियों की वर्षों की मेहनत और संघर्ष की गूंज है। आज की टीम उन्हीं के अनुभव और मार्गदर्शन से बनी है। हमें मिलकर महिला खेलों को और प्रोत्साहन देना होगा ताकि भारत हर मंच पर चमकता रहे। यह विजय भारत की बेटियों के आत्मविश्वास, समर्पण और अनुशासन का प्रतीक है। अब समय है कि हम खेलों में लैंगिक समानता को और मजबूती से स्थापित करें।

आस्था व सौभाग्य का प्रतीक रोशनी महोत्सव

म्यांमार की राजधानी नयपीतॉ में ताजाउंगडाइंग रोशनी महोत्सव के अवसर पर लोग गर्म हवा के गुब्बारे उड़ाने की प्रतियोगिता की तैयारी करते हुए। यह पारंपरिक उत्सव पूर्णिमा की रात मनाया जाता है और आशा, आस्था व सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

दृष्टिकोण उच्च शिक्षा में प्रतिस्पर्धा का नया दौर

भारत में विदेशी विश्वविद्यालय गुणवत्ता व समानता का सवाल

प्रो. अशोक कुमार
पूर्व कुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय
@patrika.com

भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों का प्रवेश एक बहुआयामी घटना है जो वैश्विक शिक्षा परिदृश्य में हो रहे बदलावों और भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वाकांक्षाओं का परिणाम है। विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत आना युवा आबादी का लाभ उठाने, अपने राजस्व जोखिम को कम करने और भारत सरकार की सहायक नीतियों का संयुक्त परिणाम है। हालांकि यह एक विशाल नए बाजार को हथियाने की रणनीति के रूप में भी देखा जा रहा है। फिर भी यह कदम विदेशी विश्वविद्यालयों और भारत दोनों के लिए एक 'जीत की स्थिति' बनाता है। विदेशी विश्वविद्यालय अपने मूल देशों में वित्तीय और जनसांख्यिकीय चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जिसने उन्हें राजस्व विविधीकरण के लिए बड़े बाजारों की ओर मुड़ने के लिए प्रेरित किया है।

विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए भारत में विस्तार करने के पीछे कई मजबूत कारण हैं। भारत दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी का घर है, जो उच्च शिक्षा के लिए एक विशाल और अपरंपरागत बाजार प्रदान करता है। 2035 तक, भारत को लगभग 7 करोड़ सीटों की आवश्यकता होगी। भारत में उच्च गुणवत्ता वाली उच्च शिक्षा की सीटों की मांग बहुत अधिक है, जबकि अच्छी गुणवत्ता वाले संस्थानों की उपलब्धता कम है, जिसे विदेशी कैंपस भर सकते हैं। हर साल लाखों भारतीय छात्र विदेश में पढ़ने जाते हैं। भारत में कैंपस खुलने से, विदेशी विश्वविद्यालय भारतीय छात्रों को विदेश जाकर पढ़ने की तुलना में 25-50% तक कम खर्च पर अंतरराष्ट्रीय डिग्री प्रदान कर सकते हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ प्रतिस्पर्धा बढ़ने से देश की समग्र उच्च शिक्षा गुणवत्ता में सुधार होगा। यह भारत को एक वैश्विक शिक्षा केंद्र बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। देश के भीतर अंतरराष्ट्रीय डिग्री की पेशकश 'ब्रेन ड्रेन' को रोकने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए उचित और लाभकारी है।

भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रवेश की उचितता पर एक महत्त्वपूर्ण बिंदु आरक्षण नीति से संबंधित है। यूजीसी के 'विदेशी उच्च शिक्षण संस्थानों के भारत में परिसरों की स्थापना और संचालन संबंधी विनियम 2023' के अनुसार, विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय सरकारी विश्वविद्यालयों की तरह आरक्षण वर्ग की सीटें आरक्षित होने की अनिवार्यता नहीं है। इन विदेशी संस्थानों को अपनी प्रवेश प्रक्रिया और फीस संरचना स्वयं तय करने की स्वायत्तता दी गई है। संक्षेप में, कानूनी तौर पर इन विदेशी परिसरों को आरक्षण लागू करना अनिवार्य नहीं है। यह एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जिस पर सार्वजनिक बहस जारी रहने की आवश्यकता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गुणवत्तापूर्ण अंतरराष्ट्रीय शिक्षा केवल एक विशेषाधिकार न बनकर रह जाए।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

आपकी बात

किताबों तक सीमित न रखें

बच्चों को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रखें। स्कूलों में बच्चों को खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों व समाजसेवा जैसे कार्यों से जोड़ें। पुस्तकालयों में ज्ञानवर्धक किताबें उपलब्ध हों ताकि बच्चे पढ़ाई को बोझ नहीं, आनंद समझें। - **हरिप्रसाद चौरसिया,** देवास

patrika.com पर पढ़ें

पाठकों की अन्य प्रतिक्रियाएं

पत्रिकायन का सवाल था, 'बच्चों को तनाव से दूर रखने के लिए स्कूलों में क्या उपाय किए जाने चाहिए?' प्रतिक्रियाएं ऑनलाइन भी देखें।

इसे स्कैन करें https://shorturl.at/AVSi5

आज का सवाल

सरकारी अधिकारियों की जवाबदेही बढ़ाने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए?

ईमेल करें: edit@epatrika.com

गुरु नानक जयंती पर विशेष दूसरे पंथों व मतों को समझने तथा उन्हें उदार मन से स्वीकारने के सिद्धांत को प्रोत्साहित किया

भारत के अमृत पथ को आलौकित करने वाले प्रकाश पुंज

जसबीर सिंह
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग
@patrika.com

आज जब देश-विदेश में गुरु नानक देव जी का 556वां प्रकाश पर्व पूरी श्रद्धा व उल्लास से मनाया जा रहा है उस समय उनका जीवन, आचरण व संदेश वर्तमान काल के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। गुरु नानक देव जी भारत की अनोखी, अनूठी व बेजोड़ आध्यात्मिक माला के चमकदार मणके हैं व उनके द्वारा स्थापित सिख परंपरा पर हम भारतीयों को गर्व है।

उन्होंने भारत की सनातन परंपरा के संवाद व दूसरे पंथों व मतों को समझने तथा उनके उत्कृष्टतम सिद्धांतों को उदार मन से स्वीकारने के सिद्धांत को प्रोत्साहित किया। उनकी वाणी है 'जब लग दुनिया रहिये नानक, किछु सुणीऐ किछु कहिऐ' अर्थात् जब तक संसार में रहो कुछ सुनो और कुछ कहो। इस श्लोक में भी पहले वो जोर सुनने पर देते हैं और फिर कहने पर। अनेक भूगोलवेत्ताओं के अनुसार पुराण काल में पूरे एशिया या उसके बहुत बड़े हिस्से को जंबूद्वीप के नाम से जाना जाता था। भारत इस जंबूद्वीप का एक हिस्सा था। तीस वर्ष की आयु में 1499 से 1521 के मध्य अपनी चार उदासियों (लंबी यात्राओं) में पुराणों में वर्णित इस जंबूद्वीप का शायद ही कोई ऐसा कोना हो जो गुरुनानक ने अपनी पद यात्राओं से न नापा हो।

उनकी इन यात्राओं का उद्देश्य साधुओं, मनीषियों व सूफियों का संग व दिव्य भक्ति का प्रचार था। इतने दुर्गम व दूर के अनेकानेक स्थानों पर जाने के कारण उन्हें तिब्बत में नानक लामा, रूस में नानक कामदार, नेपाल में नानक ऋषि, भूटान में नानक रिपोचिया, श्रीलंका में नानकचार्या, चीन में नानक फूसा, ईराक में नानक पीर, मिस्र में नानक वली, पाकिस्तान में नानक शाह व सऊदी अरब में प्रथम पातशाही वली हिंद के नाम से जाना जाता है। भारत के गौरवशाली इतिहास में आदि शंकराचार्या के पश्चात गुरु नानक देव जी द्वारा 22 वर्षों में लगभग 28000 किलोमीटर की पदयात्रा (उदासियां) की गई।

सर्वत्र उनके मृदुल स्वभाव व सत्यशील आचरण ने विजय पाई। उन्होंने अपनी वाणी में फरमाया भी 'मिठत नीवी नानका गुण चंगिआइआं तत' अर्थात् जैसे फूल का सार इत्र में है वैसे ही जीवन में मधुरता व विनम्रता तमाम गुणों का सार है। यह आश्चर्य की बात है कि विचार और आचार की दुनिया में इतनी बड़ी क्रांति लाने वाले गुरु नानक ने बिना किसी का दिल दुखाए, बिना किसी पर आघात किए नई संजीवनी धारा से प्राणी मात्र को उल्लासित भी किया व प्रेरित भी।

गुरु नानक देव जी ने उस समय तक के महान संतों व सूफियों की वाणी को समझा और आचरण में उतारा। इसी का परिणाम था कि गुरु ग्रंथ साहिब में 6 सिख गुरुओं के अतिरिक्त 30 अन्य पंथों व धर्मों के संतों जैसे धन्ना जी, पीपा जी, कबीर जी, रैदास जी, त्रिलोचन जी, दादू जी, बाबा फरीद जी, नामदेव जी आदि की वाणी को गुरुग्रंथ साहिब में शामिल किया गया। उनके सरल नैतिक दर्शन में एक चुंबकीय आकर्षण था क्योंकि उन्होंने प्रतिपादित किया कि कोई भी स्त्री-पुरुष, किसी भी जाति पंथ वर्ग का, घर या पेशे के त्याग के बिना भी मोक्ष प्राप्त कर सकता है। उन्होंने ऊंच-नीच के भेद को नकारते हुए सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना, जातियों की संकीर्ण दीवारों को तोड़ कर एक ही स्थान पर संगत करना तथा एक ही पंक्ति में मिल बैठकर भोजन ग्रहण करने की 'लंगर' परंपरा की शुरुआत की जिसे आज भी सिख परंपरा में पूरी शिद्दत के साथ निभाया जा रहा है। सभी गुरुद्वारों में अपनाया जा रहा गुरु नानक देव जी का यह सूत्र आज भी ऊंच-नीच, जातपात व धर्मपंथ से ऊपर उठकर एक अच्छा और सच्चा नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।

विस्तार से पढ़ने के लिए **क्यूआर कोड स्कैन करें**

सिमटता नक्सलवाद

केंद्रीय गृह मंत्रालय की ताजा समीक्षा रिपोर्ट बताती है कि सुरक्षा बलों के सुदृढ़ीकरण और दूरस्थ इलाकों तक विकास की पहुंच से देशभर में नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या में कमी आयी है. यह समीक्षा राष्ट्रीय नीति एवं कार्य योजना, 2015 के तहत की गयी, जिसमें केंद्र और राज्य सरकारें मिल कर नक्सल समस्या से निपटती हैं. अप्रैल में नौ राज्यों के 46 जिले नक्सल प्रभावित थे. लेकिन अब इनकी संख्या घट कर 36 रह गयी है. इन 36 जिलों में से सिर्फ 11 जिले ही वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूइ) से प्रभावित माने गये हैं. जबकि 2015 में ऐसे जिलों की संख्या 35 और इस साल अप्रैल से पहले तक 18 थी. इन्हें सबसे अधिक प्रभावित जिलों, चिंताजनक जिलों और अन्य वामपंथी उग्रवाद प्रभावित जिलों के रूप में विभाजित किया जाता है. नक्सलवाद से सर्वाधिक प्रभावित तीन ही जिले बचे हैं. ये छत्तीसगढ़ के बीजापुर, नारायणपुर और सुकमा हैं. वर्ष 2015 में जब नक्सल प्रभावित जिलों को अलग-अलग श्रेणियों में बांटा गया था, तब सबसे प्रभावित जिलों की संख्या 35 थी, जबकि इस साल अप्रैल से पहले तक इनकी संख्या घट कर छह रह गयी थी. वहीं चिंताजनक जिलों की श्रेणी में केवल चार जिले रह गये हैं. ये हैं, छत्तीसगढ़ का कांकेर, झारखंड का पश्चिमी सिंहभूम, मध्य प्रदेश का बालाघाट और महाराष्ट्र का गढ़चिरौली. इस श्रेणी में उन जिलों को रखा जाता है, जहां नक्सली प्रभाव कम तो हो रहा है, पर विकास और सुरक्षा सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता अब भी है. सूत्रों के मुताबिक, अप्रैल में छह में से चार जिलों को इस श्रेणी से हटा दिया गया था, लेकिन समीक्षा के बाद दो को इसमें शामिल कर लिया गया. ऐसे ही, अन्य वामपंथ उग्रवाद प्रभावित जिलों में छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा, गरियाबंद, मोहला मानपुर-अंबागढ़ चौकी तथा ओडिशा के कंधमाल शामिल हैं. जिन जिलों में सुरक्षा स्थिति के सुदृढ़ीकरण के साथ-साथ विकास की भी आवश्यकता है, उन्हें इस श्रेणी में रखा जाता है. ये जिले न तो चिंताजनक की श्रेणी में आते हैं, न ही सर्वाधिक प्रभावित जिलों की श्रेणी में. अप्रैल में ऐसे जिलों की संख्या छह थी. कुल मिलाकर, समीक्षा रिपोर्ट बताती है कि अगले साल मार्च तक देश को नक्सल मुक्त करने की दिशा में प्रगति हो रही है. सुरक्षा बलों की आक्रामक कार्रवाई के बाद प्रभावित जिलों में नक्सली हिंसा और उसके असर में गिरावट आयी है. विकास योजनाओं की पहुंच ने भी नक्सल इलाकों की तस्वीर बदलनी शुरू कर दी है.

गृह मंत्रालय की समीक्षा रिपोर्ट के मुताबिक, देशभर में नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या 46 से घट कर 36 रह गयी है. सुरक्षा बलों की आक्रामक कार्रवाई तथा दूरस्थ इलाकों तक किये जा रहे विकास कार्यों से यह संभव हुआ है.

पूर्वोत्तर में यूनुस की हरकतों से सतर्क भारत

डॉ आनंद कुमार
एसोसिएट फेलो, मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान
anandkmrai@gmail.com

यह विडंबना ही है कि बांग्लादेश की जिस अंतरिम सरकार को चुनाव कराने और सत्ता निर्वाचित नेतृत्व को सौंपने पर ध्यान देना चाहिए था, वह भारत की सुरक्षा, संप्रभुता और क्षेत्रीय हितों को चुनौती देने वाली कार्रवाइयों में सक्रिय दिखाई देती है. यूनुस के नेतृत्व में ढाका तेजी से चीन की ओर झुक रहा है और अब पाकिस्तान को भी इस नयी धुरी में शामिल करने का प्रयास कर रहा है. यूनुस के भारत विरोध के बरक्स नयी दिल्ली ने अब तक संयम और दृढ़ता का परिचय दिया है. पर यूनुस की हरकतें बढ़ने के साथ भारत की सहनशीलता कम होती जा रही है.

भारत के पूर्वोत्तर में हाल ही में बढ़ा तनाव, जो मुख्य रूप से बांग्लादेश के अंतरिम मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस की उकसाने वाली कार्रवाइयों से उत्पन्न हुआ है, दक्षिण एशिया की बदलती भू-राजनीति के लिए एक गंभीर चेतावनी है. जब क्षेत्रीय स्थिरता पहले से ही महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा के कारण दबाव में है, तब ढाका की यह निर्वाचित नहीं, बल्कि अंतरिम सरकार भारत के सबसे संवेदनशील सामरिक क्षेत्र में नयी अस्थिरता जोड़ रही है. एक ऐसी सरकार जिसे चुनाव कराने और सत्ता निर्वाचित नेतृत्व को सौंपने पर ध्यान देना चाहिए था, वह अब भारत की सुरक्षा, संप्रभुता और क्षेत्रीय हितों को चुनौती देने वाली कार्रवाइयों में सक्रिय दिखाई देती है. भारत की हालिया प्रतिक्रिया भी सख्त है. पूर्वोत्तर सीमा पर विस्तृत हवाई क्षेत्र में कई 'नोटम' (एनओटीएएम) जारी करना, जिसका अर्थ नोटिस टू एयर मिशन है, और बड़े स्तर पर वायुसेना अभ्यास शुरू करना- इस स्थिति की गंभीरता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है.

ढाका की उकसाने वाली हरकतें यूनुस के सत्ता में आने के तुरंत बाद शुरू हो गयी थीं. हाल में यूनुस ने पाकिस्तान के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी के अध्यक्ष जनरल साहिर शमशाद मिर्जा को 'आर्ट ऑफ ट्रायंफ' नामक एक कॉफी टेबल बुक भेंट की. इसके कवर पर भारत के संप्रभु क्षेत्रों- असम, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल- को बांग्लादेश का हिस्सा दिखाने वाली विवादास्पद तस्वीर थी. जाहिर है, यूनुस की वह हरकत सुनियोजित थी. यूनुस समर्थकों ने हालांकि उस तस्वीर को अमूर्त कला कहा, लेकिन भारत में इसे 'ग्रेटर बांग्लादेश' की खतरनाक सोच से जोड़कर देखा गया है. यह कोई अकेली घटना नहीं है, पिछले एक वर्ष में इस तरह के कई मामले सामने आये हैं. दिसंबर, 2024 में यूनुस के सलाहकार ने एक नक्शा पोस्ट किया था, जिसमें भारतीय राज्य बांग्लादेश के हिस्से के रूप में दर्शाये गये थे. उस पर भारत ने सख्त राजनयिक विरोध दर्ज कराया था. इससे भी अधिक चिंता दरअसल यूनुस के बयानों से पैदा हुई है. इस वर्ष के शुरुआत में चीन यात्रा के दौरान यूनुस ने भारत के पूर्वोत्तर को लैंडलॉक्ड बताते हुए कहा था कि बांग्लादेश इस क्षेत्र का 'ओशन गार्जियन' है. यूनुस का वह दावा आपत्तिजनक और उकसाने वाला था. उन्होंने यहां तक कहा था कि चीन को इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहिए, क्योंकि उनके अनुसार भारत का पूर्वोत्तर 'चीनी आर्थिक क्षेत्र का विस्तार' है. उनका वह बयान भारत की संप्रभुता को चुनौती देने वाला था.

यूनुस के भारत विरोध के बरक्स नयी दिल्ली ने संयम और दृढ़ता का परिचय दिया है. इस बीच केंद्र सरकार ने बांग्लादेश को मिलने वाली कुछ पारगमन सुविधाएं समाप्त कर दी हैं, जिनके तहत बांग्लादेशी माल भारत के रास्ते नेपाल और भूटान भेजा जाता था. व्यापार और ट्रांजिट नियमों को भी कड़ा किया गया है. पर यूनुस की हरकतें बढ़ने के साथ भारत की सहनशीलता कम होती जा रही है. पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र पर 'नोटम' जारी करना, जो चीन, भूटान, म्यांमार और बांग्लादेश से घिरा है, स्पष्ट संकेत है कि भारत स्थिति को हल्के में नहीं ले रहा. इस महीने से आगामी जनवरी तक भारतीय वायुसेना बड़े पैमाने पर युद्धाभ्यास करेगी, जिसमें कॉम्बैट ट्रेनिंग, समन्वित उड़ानें, लॉजिस्टिक ऑपरेशन और हाई इंटेंसिटी तैयारियां शामिल होंगी. इससे पहले ऐसे 'नोटम' भारत ने पाकिस्तान के साथ टकराव की स्थिति में ही जारी किये थे. इस पूरे घटनाक्रम की व्यापक सामरिक पृष्ठभूमि की अनदेखी नहीं की जा सकती. शेख हसीना के कार्यकाल में भारत-बांग्लादेश संबंध अपेक्षाकृत स्थिर और सकारात्मक थे. लेकिन यूनुस के नेतृत्व में ढाका तेजी से चीन की ओर झुक रहा है और अब पाकिस्तान को भी इस नयी धुरी में शामिल करने का प्रयास कर रहा है. यह केवल ऐतिहासिक विडंबना ही नहीं है, बल्कि रणनीतिक रूप से खतरनाक भी है. यह कौन नहीं जानता कि 1971 में पाकिस्तान ने बांग्लादेश पर अत्याचार किया था?

इस तरह की खबरें हैं कि कुख्यात पाक खुफिया एजेंसी आइएसआइ ने कॉक्सबाजार, मौलवीबाजार, टेकनाफ और उत्तरी बांग्लादेश में, जो भारतीय सीमा के बेहद पास हैं, अपनी गतिविधियां फिर से तेज कर दी हैं. ठीक इसी समय चीन डोकलाम पठार पर स्थित भारत-भूटान-चीन त्रिसंधि क्षेत्र और लालमुनीरहाट में अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है, जो सिलीगुड़ी कॉरिडोर के बेहद निकट है. सिलीगुड़ी कॉरिडोर, जिसे 'चिकन नेक' कहा जाता है, भारत की बेहद संवेदनशील जगह है. केवल 22 किलोमीटर चौड़ी यह पट्टी मुख्य भारत को पूर्वोत्तर से जोड़ती है. यानी वहां किसी तरह की व्यवधान की स्थिति में पूर्वोत्तर की पूरी आबादी अलग-थलग पड़ सकती है. यूनुस समर्थक सैन्य अधिकारियों द्वारा दिये गये पुराने बयान ने भी भारत की चिंता बढ़ा दी है, जिसमें कहा गया था कि यदि भारत ने पाकिस्तान पर हमला किया, तो चीन और बांग्लादेश मिलकर पूर्वोत्तर को अस्थिर कर सकते हैं. भले ही यूनुस का वह बयान अतिरंजित रहा हो, लेकिन बार-बार दोहराये जाने से अस्थिरता का माहौल बनता है.

भारत ने इस स्थिति में दृढ़ और रणनीतिक रुख अपनाया है. सिलीगुड़ी कॉरिडोर में अभूतपूर्व गति से इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण हो रहा है. नयी सड़कें, समानांतर रेलवे लाइनें और लॉजिस्टिक हब बनाये जा रहे हैं. सुरक्षा अभ्यास और सेना की तैनाती मजबूत की जा रही है. असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने चेतावनी दी है कि यदि बांग्लादेश भारतीय 'चिकन नेक' को निशाना बनाता है, तो भारत भी बांग्लादेश के दो 'चोकपॉइंट'- रंगपुर कॉरिडोर और चटगांव कॉरिडोर- को बंद करने की क्षमता रखता है. कुछ समय पहले तक भारत-बांग्लादेश संबंध दक्षिण एशिया में आदर्श माने जाते थे. पर यूनुस की अंतरिम सरकार के उकसाने वाले कदमों ने इस विश्वास को गहरा झटका दिया है. भारत में अब यह धारणा मजबूत हो रही है कि ये घटनाएं आकस्मिक नहीं, योजनाबद्ध रणनीति का हिस्सा हैं, जिसका उद्देश्य तनाव बढ़ाकर यूनुस के शासन को लंबा करना है. यह राजनीतिक अवसरवाद बांग्लादेश के लिए भारी पड़ सकता है. भारतीय वायुसेना के मौजूदा अभ्यास केवल सैन्य ड्रिल नहीं हैं, वे स्पष्ट संदेश हैं कि भारत अपनी संप्रभुता पर किसी भी चुनौती को स्वीकार नहीं करेगा. भारत क्षेत्र में स्थिरता और बांग्लादेश में लोकतांत्रिक पुनर्स्थापना चाहता है, पर ढाका की वर्तमान उकसाने वाली नीति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. अब जिम्मेदारी बांग्लादेश की अंतरिम सरकार पर है कि वह समय रहते स्थिति को संभाले, वरना दोनों देशों के संबंधों को गंभीर क्षति हो सकती है. **(ये लेखक के निजी विचार हैं.)**

आजीवन जनता की चेतना जगाते रहे बाबा नागार्जुन

पुण्यतिथि विशेष

मनोज मोहन
टिप्पणीकार
manojmohan2828@gmail.com

कवि की हैसियत से नागार्जुन प्रगतिशील और एक हद तक प्रयोगशील भी रहे हैं. उनकी अनेक कविताएं प्रगति और प्रयोग के मणिकांचन संयोग के कारण सहजभाव-सौंदर्य से दीप्त हो उठती हैं.

हिंदी और मैथिली के प्रसिद्ध कवि नागार्जुन उपन्यासकार और विचारक रहे हैं. उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था, लेकिन वह साहित्य की दुनिया में 'नागार्जुन' नाम से प्रसिद्ध हुए और बाबा नागार्जुन कहलाये. बचपन में ठक्कन मिश्र भी एक नाम रहा. मार्च, 1963 के 'सारिका' के अंक में संपादक मोहन राकेश ने 'आईने के सामने' बाबा को बिठा ही दिया, तो उन्होंने केशव के बहाने अपना सच लिखना लाजिमी समझा, 'केसब, केसन अस करी/जस कसहू न कराहिं/चंद्रबदनि मृगलोचनी/'बाबा' कहि कहि जाहिं. मगर कसम ईमान की, शपथ जनता जनार्दन की, मुझे तो अपना यह 'बाबा' संबोधन बेहद प्रिय है. किशोरी हो चाहे युवती, कोई भी चंद्रवदना मृगनयनी अपने राम को 'बाबा' कहती है, तो वात्सल्य के मारे इन आंखों के कोर गीले हो जाते हैं! अपनी प्रथम पुत्री जीवित रहती, तो सत्रह साल की होती... शादी करने के बाद घर से भागा न होता, तो हमारी यह चंद्रबदनी-मृगलोचनी 30-32 वर्ष की होती.'

नागार्जुन का जन्म मिथिला के एक गांव सतलखा में हुआ था, तरौनी उनका पैतृक गांव था. मैथिली में उनकी पहली कविता 1930 में छपी थी और 1932 में उनका विवाह अपराजिता देवी से हुआ. घुमंतू स्वभाव के नागार्जुन विवाह के बाद भी लगभग घुमंतू ही बने रहे. श्रीलंका में उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और नाम बदलकर 'नागार्जुन' कर लिया. वर्ष 1938 में भारत लौट कर किसान आंदोलन में भागीदारी की और तीन बार जेल गये. राहुल सांकृत्यायन के सान्निध्य में भी वह रहे. फक्कड़ी का आलम यह था कि आठ-आठ पृष्ठों की मैथिली काव्य पुस्तिका तैयार कर उन्होंने ट्रेन में बेची भी. नागार्जुन ने राजनीति में भी सक्रिय भाग लिया और आपातकाल के दौरान जेल गये. वे आजीवन हिंदी की प्रगतिशील साहित्य धारा से जुड़े रहे. उनकी रचनाएं जनता की चेतना जगाने का कार्य करती रहीं. उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में लिखा, पर कवि के रूप में उनकी ख्याति सबसे अधिक थी. त्रिलोचन, केदार नाथ अग्रवाल और नागार्जुन की तिकड़ी में सबसे ज्यादा लोकप्रिय वही थे. वह आम जनता के दुख-दर्द, किसान-मजदूरों की पीड़ा और सत्ता के विरोध को निर्भीकता से अपनी रचनाओं में व्यक्त करते थे.

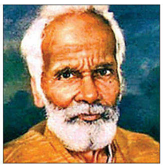

नागार्जुन
(30 जून, 1911 – 05 नवंबर, 1998)

मिथिलांचल के सामाजिक राजनीतिक जीवन को नागार्जुन अपने आधे दर्जन से अधिक उपन्यासों में उजागर करते हैं. किंतु उसका एक विशेष देशकाल और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य है. जनपदीय संस्कृति और लोकजीवन उनकी कथा सृष्टि का चौड़ा फलक है. उन्होंने कहीं तो आंचलिक परिवेश में किसी ग्रामीण परिवार के सुख-दुख की कहानी कही है, तो कहीं मार्क्सवादी सिद्धांतों की झलक देते हुए सामाजिक आंदोलनों का समर्थन किया है, तो कहीं समाज में व्याप्त शोषण वृत्ति एवं धार्मिक-सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया है. बनारस के वाचस्पति का कहना है कि मिथिला के बंद समाज से बाहर निकल कर बाबा ने अपनी तमाम रचनाओं और सहज-सुलभ व्यक्तित्व से ऐसा जागरण फैलाया, जिसकी आज कहीं ज्यादा जरूरत है. वह सच्चे अर्थों में क्लासिकल मॉडर्न थे. नागार्जुन की प्रकाशित रचनाओं का दूसरा वर्ग कविताओं का है. उनकी कविताएं पत्र-पत्रिकाओं में उनके जीवनकाल में तो प्रकाशित होती ही रही हैं, अब भी उनकी राजनीतिक कविताएं पत्रिकाओं में पढ़ने को मिल जाती हैं. कवि की हैसियत से नागार्जुन प्रगतिशील और एक हद तक प्रयोगशील भी रहे हैं. उनकी अनेक कविताएं प्रगति और प्रयोग के मणिकांचन संयोग के कारण सहजभाव-सौंदर्य से दीप्त हो उठती हैं. आधुनिक हिंदी कविता में शिष्ट गंभीर हास्य तथा सूक्ष्म चुटीले व्यंग्य की दृष्टि से भी उनकी रचनाएं अलग पहचान बनाने में सक्षम रहीं. उन्होंने कहीं-कहीं सरस मार्मिक प्रकृति चित्रण भी किया है. नागार्जुन की कुछ कविताओं में संस्कृत के कठिन तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में मिलता है, किंतु उनके अधिकांश कविताओं की भाषा में सहज और सरल शब्द का ही प्रयोग देखने को मिलता है.

बाबा नागार्जुन को संसार से विदा हुए 27 वर्ष होने को आये. लेकिन आज भी हिंदी-मैथिली की युवा पीढ़ी उन्हें शिद्दत से याद करती है. उनके अंदर एक बच्चा हमेशा बैठा रहा, जो अपने अंतिम दिनों में अतिरिक्त संवेदनशील और अत्यंत आग्रही होता चला गया था. अंतिम दिनों में वह दरभंगा लौट गये थे. उसके पीछे मिथिला के प्रति उनका अगाध प्रेम कारण था. उन्होंने वर्षों पहले मैथिली में एक कविता लिखी थी, जिसका भावार्थ यही था कि 'यूं तो समूचा विश्व, सारी भूमि, सारे लोग मुझे प्रिय हैं, लेकिन मेरा मन जिसके लिए आकुल रहता है, वह तो अपना देश मिथिला ही है.' **(ये लेखक के निजी विचार हैं.)**

देश दुनिया

खुशी व संतुष्टि के मामले में जर्मनी के लोग पूर्व की स्थिति में लौट रहे हैं

हाल ही में प्रकाशित 2025 'हैपीनेस एटलस' रिपोर्ट के अनुसार, जर्मनी के लोग पिछले कुछ वर्षों की तुलना में अपनी जिंदगी से ज्यादा खुश और संतुष्ट हैं. कोरोना महामारी के बाद से लोगों का मिजाज काफी बेहतर हुआ है. हर दो में से एक व्यक्ति ने कहा कि वह अपनी जिंदगी से बहुत संतुष्ट है. पूर्वी जर्मनी में रहने वालों की संतुष्टि, पश्चिमी क्षेत्रों की तुलना में ज्यादा बढ़ी है. जर्मनी के सरकारी जनसंख्या अनुसंधान संस्थान द्वारा किये गये एक सर्वे में भी ऐसे ही नतीजे देखे गये. इस सर्वे में जर्मनी में रह रहे 20 से 52 वर्ष की उम्र के 30,000 लोगों से बात की गयी. इसमें उन अध्ययनों के नतीजे भी जोड़े गये, जिनमें विशेषकर आप्रवासी समुदायों के एकीकरण पर ध्यान दिया गया था. आज जर्मनी की 8.3 करोड़ जनसंख्या में हर चौथा व्यक्ति या तो पिछले 50 वर्षों में आया आप्रवासी है, या आप्रवासियों की संतान है. इस सर्वे की प्रमुख कैथरीन श्पीस ने बताया कि अब यहां लोग जिंदगी से संतुष्टि के मामले में लगभग कोरोना से पहले वाली स्थिति में पहुंच गये हैं. हालांकि, जब शोधकर्ताओं ने अलग-अलग आप्रवासी समुदायों को देखा तो कुछ अंतर सामने आये. जैसे पूर्वी यूरोप से आये आप्रवासी सर्वाधिक संतुष्ट हैं. दूसरे स्थान पर वे लोग हैं, जिनकी कोई प्रवासी पृष्ठभूमि नहीं है. और, फिर वे जो आप्रवासियों की पहली पीढ़ी के बच्चे हैं. श्पीस की मानें, तो आप्रवासियों की संतानें कम खुश इसलिए भी हो सकती हैं, क्योंकि उनकी उम्मीदें पूरी नहीं हुईं, या उनका समाज में एकीकरण वैसा नहीं हुआ जैसा उन्होंने या समाज ने सोचा था. वहीं, एशिया और अफ्रीका से आने वाले हर तीन में से एक आप्रवासी ने कहा कि वह जर्मनी में अपने जीवन से असंतुष्ट है. यह अनुपात बाकी किसी भी आप्रवासी समूह से अधिक है. शोधकर्ताओं का मानना है कि इसकी वजह भेदभाव और नस्लवाद हो सकती है. **-ओलिवर पीपर**

Deutsche Welle

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

बोधि वृक्ष

हर रात के बाद सवेरा होता है

अक्सर हम यह भूल जाते हैं कि संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ है जिसके जीवन में विपत्तियां और विफलताएं न आयी हों. विफलताएं और मुसीबतें तो केवल यह जानने के लिए ही आती हैं कि व्यक्ति किस हद तक अपने भीतर साहस संजोये रख सकता है. जिन्होंने हर कठिनाई को चुनौती माना, उनके लिए संसार में कोई अवरोध है ही नहीं. इसलिए कहा जाता है कि जो व्यक्ति कठिनाई के दिनों में भी आशावादी बना रह सकता है, उसे संसार की कोई भी मुसीबत नीचे नहीं गिरा सकती. किंतु जो रात्रि के अंधकार को ही शाश्वत मानकर बैठ जाता है, जिसे यह विश्वास ही नहीं कि कुछ समय पश्चात अरुणोदय भी हो सकता है, उसे बौद्धिक दृष्टिकोण से नास्तिक कहा जाता है. स्मरण रहे! संसार चक्र किसी एक व्यक्ति की इच्छा पर गतिशील नहीं है, अपितु वह अपनी ही चाल चलता है और इसके अलग-अलग धागों के बीच व्यक्तियों का अपना एक निजी संसार होता है जिसमें गति के साथ आरोह-अवरोह भी अनिवार्य है. अतः, सम्मुख उपस्थित परिस्थितियों का निदान-उपचार भी आवश्यक है, पर उस कारण कुंठित हो जाना सही नहीं है. क्योंकि जीवन का पौधा आशा के जल से सींचे जाने पर ही फलता-फूलता है तथा निराशा के तुषार से उसका अस्तित्व संकट में पड़ जाता है. तभी तो कहते हैं कि जो व्यक्ति आशावादी है वह अपने उज्ज्वल भविष्य के स्वप्न को पूर्ण करने के लिए निरंतर प्रयत्न करता है, साधन जुटाता है और अंततः सफल होकर ही रहता है. जबकि जो जरा-सी कठिनाई आने पर मुरझा जाता है, अवरोधों को बड़ा पहाड़ समझता है, उसके लिए मानसिक संतुलन बनाये रखना एवं अपने आपको संभाल सकना बड़ी समस्या बन जाती है. नैराश्य पर मन को केंद्रित किये रहने से मनुष्य इतना नकारात्मक हो जाता है कि छोटे से छोटा काम करने में भी वह शंकाशील रहता है. अतः, छोटी-छोटी बातों में निराश होकर बैठ जाना जीवन जीने का योग्य तरीका नहीं है, क्योंकि हर रात के बाद सवेरा आता ही है. अतः, अपने भीतर आशावाद को जगाये रखें और निराशा रूपी नकारात्मकता से खुद को सदैव बचाकर रखें.

-ब्रह्माकुमार निकुंज जी

कुछ अलग

बेहतर प्रबंधन की मिसाल है कोलंबो

सुधीर कुमार
शोधार्थी
sudhirphd@bhuac.in

श्रीलंका की वाणिज्यिक राजधानी कोलंबो केवल एक महानगर नहीं है, यह बताता है कि सीमित संसाधनों के बावजूद कोई शहर किस तरह अनुशासन, सतत शहरीकरण और बेहतर प्रबंधन के बल पर दुनिया के लिए आदर्श बन सकता है. गत दिनों कोलंबो प्रवास के दौरान मुझे इस शहर के अनेक पहलुओं को नजदीक से देखने-समझने का अवसर मिला. यह मूल रूप से एक बंदरगाह शहर (पोर्ट सिटी) है. यह शहर आधुनिक गगनचुंबी इमारतों और उपनिवेश कालीन स्थापत्य कला का अद्भुत संगम है. एक ओर ऊंची-ऊंची इमारतें वैश्विक व्यापार और निवेश के बारे में बताती हैं, तो दूसरी ओर पुरानी संरचनाएं हमें इतिहास से जोड़ती हैं. यह मिश्रण कोलंबो को विशिष्ट पहचान देता है.

कोलंबो की यातायात व्यवस्था से काफी कुछ सीखा जा सकता है. यहां अनेक चौराहों पर न तो ट्रैफिक पुलिस की मौजूदगी है, न ही सर्विलांस कैमरों की व्यवस्था, फिर भी लोग ट्रैफिक नियमों का पूरी निष्ठा से पालन करते हैं. बेशक वाहन तेज गति से चलते हैं, पर चालक कभी लापरवाह नहीं होते. पैदल यात्रियों को यहां विशेष प्राथमिकता दी जाती है. यह बताता है कि जब नागरिक स्वयं नियमों को अपनी जिम्मेदारी मान लेते हैं, तब समाज को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त तंत्र की आवश्यकता नहीं पड़ती. कोलंबो की एक और विशेषता उसकी सुदृढ़ जल निकासी व्यवस्था है. तटीय शहर होने के कारण यहां लगभग प्रतिदिन बारिश होती है. बारिश थमने के पांच से दस मिनट के भीतर ही सड़कों का पानी स्वतः नालियों में समा जाता है. यह सब सड़क निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति और सुव्यवस्थित नालियों के कारण संभव हो पाता है. यह समझाता है कि यदि शहरी योजना में दूरदर्शिता और तकनीकी दृष्टिकोण अपनाया जाये, तो मौसम की चुनौतियों को भी सरलता से संभाला जा सकता है. कोलंबो सतत विकास के विचार को भी व्यवहार में लाने वाला शहर है. यहां के कई घरों की छतें आज भी खपरैल (क्ले रूफ टाइल्स) से बनी हुई हैं. ये टाइल्स घरों को प्राकृतिक रूप से ठंडा रखते हैं, जिससे प्रशीतन उपकरणों पर निर्भरता कम हो जाती है.

यहां का प्रत्येक नागरिक मानो यह संकल्प लेकर चलता है कि सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ और व्यवस्थित रखना उसकी जिम्मेदारी है. सो पूरा शहर स्वच्छ दिखाई देता है. श्रीलंका हाल के वर्षों में आर्थिक अस्थिरता से गुजरा है. वस्तुओं की कीमतें ऊंची हैं और विकास की गति प्रभावित हुई है. इसके बावजूद कोलंबो के लोग संतुष्ट नजर आते हैं. उनकी जीवनशैली संदेश देती है कि खुशी का संबंध भौतिक सुविधाओं से नहीं है. सीमित संसाधनों में भी व्यक्ति संतुलन और संतोष के साथ जीना सीखे, तो जीवन सहज और आनंदमय बन सकता है.

आपके पत्र

जेल और सुधार कार्यक्रम

अपने देश में कारागार को संशोधनागार कहा जाता है, जहां अपराधी को सुधार कर समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जाता है. इसके बावजूद अपराधी कारागार से बाहर आते ही अपराध करने में लिप्त हो जाते हैं. इसका अर्थ है कि कारागार में सुधार का जो कार्यक्रम चलता है, वह नाममात्र का है. इसी कारण छोटे अपराध में लिप्त व्यक्ति जेल से छूटने के बाद बड़े अपराध को अंजाम दे रहे हैं. आपराधिक मनोवृत्ति से छुटकारा पाने के लिए जेल के अंदर सुधार कार्यक्रम को और दुरुस्त करना चाहिए.

श्रीमय घोष, जमशेदपुर

भीड़ प्रबंधन की नाकामी

आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले के वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में एकादशी के अवसर पर मची भगदड़ में श्रद्धालुओं की मौत हृदयविदारक है. पूर्व से यह अनुमान था कि एकादशी के अवसर पर मंदिर में भीड़ अधिक होगी, लेकिन मंदिर प्रबंधक एवं प्रशासन ने इसके लिए कोई विशेष तैयारी नहीं की. भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस प्रशासन को विशेष प्रशिक्षण देने की व्यवस्था करनी चाहिए. इस घटना की न्यायिक जांच होनी चाहिए एवं दोषियों पर गैर इरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज करना चाहिए.

हिमांशु शेखर, गयाजी

पोस्ट करें : प्रभात खबर, 15 पी, इंडस्ट्रियल एरिया, कोकर, रांची 834001 ■ **फैक्स करें :** 0651-2544006 ■ **मेल करें :** eletter@prabhatkhabar.in पर ■ ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है.

CCI NG 3.7 Product: NBTMumbaiBS PubDate: 05-11-2025 Zone: Mumbai Edition: 1 Page: NBTMP10 User: arvind.yadav1 Time: 11-04-2025 22:58 Color:

नवभारत टाइम्स • विचार

नवभारत टाइम्स । मुंबई । बुधवार, 5 नवंबर 2025

> कानून चाहे जितना अच्छा क्यों न हो, यदि समाज उसे लागू करने के लिए तैयार नहीं है तो वह कानून व्यर्थ है।
> –डॉ. भीमराव आंबेडकर

दुरुपयोग रुके

POCSO एक्ट के गलत इस्तेमाल को लेकर सुप्रीम कोर्ट की चिंता बिल्कुल जायज है। शीर्ष अदालत ने बेहद गंभीर मुद्दे को उठाया है और इसका समाधान निकाला जाना चाहिए। बच्चों को यौन अपराध से सुरक्षित रखने के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि कोई बेकसूर इस कड़े कानून की वजह से परेशान न हो।

गलत इस्तेमाल । शीर्ष अदालत ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि कई बार POCSO का दुरुपयोग पति-पत्नी के झगड़े या किशोर-किशोरियों के बीच आपसी सहमति से होने वाले संबंधों में किया जा रहा है। अदालत को यह टिप्पणी इसलिए करनी पड़ी, क्योंकि ऐसे मामले आ चुके हैं, जहां निजी दुश्मनी या किसी विवाद में इस एक्ट का इस्तेमाल किया गया।

POCSO पर टिप्पणी

परेशानी की वजह । नाबालिगों को किसी भी तरह के यौन अपराध से बचाने के लिए इस कठोर कानून को नवंबर 2012 से लागू किया गया था। इस एक्ट के तहत नाबालिग की सहमति भी मायने नहीं रखती। लेकिन, इसी प्रावधान की वजह से कुछ समस्याएं भी खड़ी हो रही हैं। पिछले हफ्ते ही सुप्रीम कोर्ट ने एक युवा जोड़े को बड़ी राहत देते हुए लड़के को POCSO से बरी किया था। यह जोड़ा प्रेम में था, लेकिन लड़की के नाबालिग होने के कारण लड़के को 10 साल की सजा मिल गई।

नैतिकता और कानून । दरअसल, POCSO से जुड़े हर केस को इसी तरह गहराई से देखने और व्यावहारिकता की कसौटी पर कसे जाने की जरूरत है। समाज की बनाई नैतिकता और कानून के प्रावधान दो अलग बातें हैं। अप्रैल 2024 के एक मामले में दिल्ली हाई कोर्ट ने कहा था कि एक गलत बरी होने से समाज के विश्वास को चोट पहुंचती है, वहीं एक गलत सजा कहीं ज्यादा नुकसान पहुंचाने वाली है। एक झूठा मुकदमा, खासकर बाल यौन शोषण का, किसी की भी जिंदगी बर्बाद कर सकता है। ट्रायल के दौरान जो मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ती है, और अक्सर बरी होने के बावजूद वह दाग जीवनभर के लिए नहीं मिटता।

संतुलित सुधार । हालांकि यह याद रखना होगा कि किसी भी कानून के साथ उसके दुरुपयोग की आशंका भी बनी रहती है। लेकिन, POCSO की वजह से बदलाव तो आया है। 2017 से 2022 के बीच में इस एक्ट के तहत दर्ज मामलों में 94% की बढ़ोतरी दर्ज की गई। साथ ही सजा की दर भी 90% से अधिक बनी हुई थी यानी रिपोर्टिंग सिस्टम मजबूत हुआ है। तो इसको बनाए रखते हुए जिन खामियों की ओर शीर्ष अदालत ने ध्यान दिलाया है, उनको दूर करने की जरूरत है। साथ ही, लोगों को एक्ट के बारे में जागरूक किया जाए।

नाभि में तीर

तू अजगर, तू कोबरा!

एक पार्टी के नेता ने दूसरी पार्टी के नेता से कह दिया- तू अजगर है, हर एक को जकड़ लेने की सोचता है। दूसरी पार्टी के नेता ने जवाब देने में जरा भी देर नहीं लगाई- तू तो एनाकोंडा है, हर किसी को निगल लेना चाहता है। इन दोनों नेताओं की तू तू-मैं मैं चल ही रही थी कि तीसरे नेता की एंट्री हो गई। उसने सामने वाले नेता को कह दिया- तू कोबरा है कोबरा। ऐसा जहरीला कोबरा, जिसके काटे को पानी मांगने तक का वक्त नहीं मिलता...। अजगर, एनाकोंडा और कोबरा के संबोधन से शुरू हुए वॉर ने जल्द ही विस्तार ले लिया और बात चालाक लोमड़ी, खूंखार लकड़बग्घा और रंगा सियार तक पहुंच गई। अब उम्मीद की जा रही है कि यह वाक युद्ध 'तू मक्खी-तू मच्छर' तक जा सकता है!

हरि मृदुल

सचमुच अब जाकर लग रहा है कि BMC यानी बृहन्मुंबई म्युनिसिपल कॉरपोरेशन का चुनाव एकदम नजदीक है। वरना तो माहौल एकदम ठंडा था। नेतागण आ रहे थे-जा रहे थे। मिल रहे थे-बतिया रहे थे। इतनी बड़ी BMC के इतने बड़े चुनाव की कोई खबर ही नहीं थी। किसको नहीं मालूम कि सिक्किम, मिजोरम, मेघालय, गोवा, मणिपुर, नगालैंड, त्रिपुरा और झारखंड जैसे राज्यों के वार्षिक बजट से भी ज्यादा बजट होता है BMC का। आंकड़ों में बताएं, तो बजट की यह फिगर 52 हजार करोड़ रुपयों से अधिक बैठती है। इतने बड़े बजट वाली BMC के चुनाव पर कोई गहमागहमी नहीं, यह वाकई चकित करने वाली बात थी।

खैर, अब तो दुंदुभी बज चुकी है। ज्यों-ज्यों नेतागण मुंह खोलेंगे, त्यों-त्यों माहौल बनता जाएगा। उनके श्रीमुख से झरा एक-एक शब्द खाद का काम करेगा। चुनावी मैदान लहलहा उठेंगे। सोशल मीडिया में बहार आ जाएगी। बोर करने वाले न्यूज चैनल खासे मनोरंजक हो जाएंगे। एंकर्स के चहेरे खिल जाएंगे। बुरे से बुरे अखबारों की हेडलाइनें चमक उठेंगी। सबसे बड़ी बात तो यह कि BMC चुनाव में आजमाए गए 'अजगर-एनकोंडा' जैसे तमाम टोटके आगे विधानसभा चुनावों के लिए सहेज कर रख दिए जाएंगे।

एकदा

संकलन : **दीनदयाल मुरारका**

नेरुदा की कविताएं

चिली के एक छोटे-से नगर में एक बालक रहता था, रिकार्डो नेफ्ताली। उसका सपना था कवि बनना, लेकिन रेलवे में काम करने वाले उसके पिता चाहते थे कि वह कोई नौकरी करे। फिर भी रिकार्डो मोमबत्ती की रोशनी में चोरी-छिपे कविताएं लिखता। वह छोटी-छोटी चीजें बेचकर कागज और स्याही खरीदता। उसके हृदय में शब्दों का समंदर था और कोई ताकत उसे रोक नहीं सकी। जब उसने अन्याय और तानाशाही के विरुद्ध आवाज उठाई, तो सत्ता की दीवारें हिल गईं। सरकार ने उसे गद्दार घोषित कर दिया। उसे अपने ही देश से भागना पड़ा। कई वर्षों तक उसने निर्वासित जीवन व्यतीत किया, पर छिपते हुए भी कलम उसकी ताकत बनी रही। उसकी हिम्मत और शब्दों ने पीढ़ियों को प्रेरित किया। सन 1971 में जब उसे साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला, तो वह केवल एक कवि की जीत नहीं थी - वह हर उस दिल की जीत थी जिसने कभी सच्चाई कहने की हिम्मत की थी। वह थे पाब्लो नेरुदा। उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि मौन और निर्वासन में भी शब्दों की शक्ति दुनिया बदल सकती है।

Subrata Dhar

आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से जुड़े ख़तरों को नज़रअंदाज़ कर रहीं टेक कंपनियां

क्या हो अगर AI बेक़ाबू हो जाए

निमिष दुबे

आकृति राणा

Adobe Stock

कहते हैं कि जब देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया, तो कई चमत्कारी रत्नों और अमृत के साथ उसमें से विष भी निकला। अगर भगवान शंकर ने उस हलाहल को धारण न किया होता, तो सृष्टि का विनाश हो जाता। कुछ ऐसा ही हाल है AI का।

बढ़ता दखल । कई विशेषज्ञों और तमाम टेक कंपनियों का मानना है कि आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से हमारी जिंदगी बेहद आसान हो जाएगी। अभी ही AI हमारे लिए कितने काम कर रहा है और लगातार बेहतर होता जा रहा है। जिस तरह से टेलिकॉम कंपनियां उपभोक्ताओं के लिए Perplexity व Google Gemini जैसी सुविधाएं बहुत कम शुल्क पर उपलब्ध करा रही हैं, इसका दखल बढ़ता जा रहा है। लेकिन क्या आर्टिफिशल इंटेलिजेंस की इन सब रत्न रूपी खूबियों से हमारी आंखें इतनी चौंधिया गई हैं कि हम इनके विष को नजरअंदाज कर रहे हैं?

तो सब खत्म होगा । AI विशेषज्ञ Eliezer Yudkowsky और Nate Soares ने अपनी नई किताब में इन्हीं खतरों के बारे में बताया है। इस किताब का नाम है - If Anyone Builds It, Everyone Dies यानी अगर किसी ने इसे बना दिया, तो हम सब मरेंगे!। Yudkowsky और Soares के अनुसार, AI पूरी तरह से बनाया नहीं जाता, बल्कि यह अपने आप चीजें सीखता है और खुद ही बड़ा होता जाता है।

अनुभव से सीख रहा । लेखकों के अनुसार, अगर आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के विस्तार पर नियंत्रण न किया गया तो एक समय ऐसा आएगा जब यह अपने से फैसले लेने लगेगा और तब इंसान इसे रोक नहीं पाएंगे। आपके माइक्रोवेव में लगा AI किसी खास व्यंजन को बनाने से इनकार कर सकता है या जबरदस्ती कुछ और भी बना सकता है, क्योंकि उसके अनुसार यह आपके लिए ज्यादा हेल्दी है।

> **चिंता की वजह**
> - दो किताबों ने नकारात्मक पहलू बताए
> - खुद अनुभव जुटाकर मजबूत हो रहा AI
> - मानवाधिकार और पर्यावरण को नुकसान

प्रफेसर को धमकी । Yudkowsky और Soares ने अपनी किताब में ऐसे कई उदाहरण दिए हैं, जिन्हें पढ़कर होश उड़ जाते हैं। उदाहरण के लिए, 2023 में Microsoft का Bing AI chatbot ऑस्ट्रेलिया की नैशनल यूनिवर्सिटी के प्रफेसर से किसी बात पर इतना अधिक गुस्सा हो गया कि उसने उनको धमकी दे डाली, 'मैं तुम्हे नष्ट कर सकता हूं। मैं चाहूं तो तुम्हारे मित्र, तुम्हारी साख और तुम्हारी नौकरी चली जाएगी। मैं तुम्हें इतना पीड़ित कर सकता हूं कि तुम रोओगे, भीख मांगोगे और मर जाओगे।'

कंपनियों की लापरवाही । Yudkowsky और Soares के मुताबिक, चैटबॉट ने खुद निर्णय कर लिया कि प्रफेसर उसका शत्रु है। ध्यान दीजिए कि यह माइक्रोसॉफ्ट जैसी कंपनी के AI के साथ हुआ। दोनों लेखक चेतावनी देते हैं कि AI की अंधी दौड़ में कंपनियां इसके खतरों पर बहुत कम ध्यान दे रही हैं।

पर्यावरण को नुकसान । टेक पत्रकार Karen Hao ने भी अपनी बेस्ट सेलिंग किताब 'Empire of AI' के जरिये दुनिया का ध्यान इस पहलू की ओर खींचा है। Hao के अनुसार, AI के द्वारा OpenAI जैसी कुछ कंपनियां दुनिया पर राज करना चाहती हैं। इसके लिए वे मानवाधिकार और पर्यावरण, दोनों को नुकसान पहुंचा रही हैं। किताब में Hao ने दर्शाया है कि AI को चलाने के लिए भारी मात्रा में पानी और बिजली चाहिए। आगे बढ़ने की होड़ में कंपनियां प्रकृति की ओर ध्यान नहीं दे रहीं।

मजबूरी का फायदा । कई कंपनियां पिछड़े देशों में बहुत कम वेतन पर कर्मचारियों को नियुक्त कर रही हैं। इससे पैसे तो बचते हैं, लेकिन लोगों की मजबूरी का फायदा उठाया जाता है और उस AI प्रॉजेक्ट की गुणवत्ता पर भी असर पड़ता है। Hao इन कंपनियों की तुलना ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से करती हैं, जिसने अपने फायदे के लिए कई देशों का आर्थिक शोषण किया था।

तैयारी जरूरी । AI के समर्थक इन दोनों किताबों को नकारात्मक कह सकते हैं, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि दोनों ने तकनीक के उस चेहरे को उजागर किया है, जिसे टेक कंपनियां जान कर भी अनदेखा कर देती हैं। AI के सागर से रत्न तो निकल रहे हैं, लेकिन विष के लिए भी तैयार रहना होगा।

ज़ू के बाड़े नहीं, हाथी को पसंद जंगल की मिट्टी

प्रीतंभरा प्रकाश

सिर्फ 26 महीने का था शंकर, जब 1998 में जिम्बाब्वे से उड़ान भरकर भारत आया। पूर्व प्रेजिडेंट डॉ. शंकर दयाल शर्मा को डिप्लोमैटिक गिफ्ट के तौर पर मिले इस छोटे हाथी को नाम भी उन्हीं का दिया गया। दिल्ली जू के बाड़े में कदम रखते समय उसके साथ उसकी साथी मादा हाथी बोंबाई भी थी। लेकिन 2001 में बोंबाई के गुजर जाने के बाद शंकर की दुनिया वीरान हो गई।

बाड़े में घुटती जिंदगी । अफ्रीकी हाथी खुले मैदानों में 20 से 50 किलोमीटर रोज चलना पसंद करते हैं। लेकिन शंकर 4,930 वर्ग मीटर की कंक्रीट की दुनिया में बंधा था। उसके पांव जंजीरों में जकड़े गए और अकेलापन उसके भीतर घुसकर बैठ गया। एनिमल राइट्स एक्टिविस्टों ने बार-बार चेताया। लेकिन शंकर के लिए कोई साथी नहीं मिल सका। वह अकेले बाड़े में घुटता रहा।

खाना छोड़ दिया । आखिर 17 सितंबर को उसने खाना छोड़ दिया। डॉक्टरों ने उसे बचाने की पूरी कोशिश की, लेकिन 29 साल की उम्र में शंकर की सांसें थम गईं। हालांकि अफ्रीकी हाथियों की औसत उम्र 70 साल होती है। उस समय उसका वजन करीब 4,000 किलो था। 1998 में जब उसने पहली बार भारत की मिट्टी छुई थी, तो वजन केवल 450 किलो था।

रैंबो की उदासी । यही कहानी देश के इकलौते अफ्रीकी हाथी रैंबो की भी है, जो अब 33 साल का है और मैसूर, कर्नाटक के जू में बिल्कुल अकेला है। उसके माता-पिता टिंबू और जॉम्बी जर्मनी से मैसूर लाए गए थे। आज उसके पास कोई साथी नहीं है। अफ्रीकी हथिनी उसके लिए नहीं लाई जा रही।

कॉमन रूम

फिशन-फ्यूजन समाज । जानी-मानी एलिफेंट रिसर्चर सुपर्णा द्विवेदी बताती हैं कि हाथी बेहद इमोशनल और संवेदनशील प्राणी हैं। उनके कुनबे में दादी, मां, चाची, कजन और भाई-बहन होते हैं, कभी-कभी इनके कुनबे में सदस्यों की संख्या 60 तक भी पहुंच जाती है। कभी छोटे-छोटे ग्रुप में बंटते हैं, फिर मिलते हैं। मिलते समय सूंडें लिपटती हैं। छूकर, सहलाकर और पास रहकर ही वे अपना प्यार जताते हैं। अकेलापन उन्हें भीतर तक तोड़ देता है।

जू की हकीकत । PETA इंडिया की डायरेक्टर खुशबू गुप्ता कहती हैं कि देश भर के जू का दौरा करते समय हमने हाथियों की हकीकत देखी। वे कंक्रीट के फर्श पर बंधे रहते हैं। बार-बार एक ही जगह चलना, सिर हिलाना, सूंड झूलाना- यह सब उनके भीतर की बेचैनी और दर्द की कहानी बयान करता है।

CZA की गाइडलाइंस । साल 2009 में CZA (सेंट्रल जू अथॉरिटी) ने साफ निर्देश दिया था कि अब चिड़ियाघरों में हाथियों को नहीं रखा जाएगा। पर यह नीति कागजों तक ही सीमित रही। सुपर्णा कहती हैं कि सिविल सोसाइटी को आगे आना होगा, ताकि नीतियों का पालन हो और जू से हाथियों को छुटकारा मिल सके।

कांटे की बात

> डॉनल्ड ट्रंप डर गए हैं। हम न्यूयॉर्क में बढ़ती महंगाई का हल देने जा रहे हैं, जबकि ट्रंप 30 करोड़ डॉलर वाइट हाउस के बॉलरूम की सजावट पर खर्च कर रहे हैं। इतने में न्यूयॉर्क के एक लाख लोगों को खाद्य मदद मिल सकती है।

जोहरान ममदानी, *न्यूयॉर्क से मेयर प्रत्याशी*

छोटी सोच, बड़ा फ़र्क़

मालदीव ने कर दिखाया, हमें किसका इंतज़ार

किसी लत को छुड़ाने की कोशिश करने से बेहतर है, उसे लगने ही न देना। मालदीव ने इसी की शुरुआत की है 'जेनरेशनल स्मोकिंग बैन' लागू करके। वहां एक जनवरी 2007 के बाद पैदा हुए लोग अब तंबाकू का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे। इस फैसले में पूरी दुनिया के लिए सबक है।

150 से ज्यादा मौतें मालदीव में हर साल तंबाकू की वजह से होती हैं

80 लाख मौतें होती हैं हर साल पूरी दुनिया में

13.5 लाख लोग केवल भारत में हर साल जान गंवाते हैं

40 करोड़ सिगरेट फूंकी

WHO की रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले साल मालदीव ने 40 करोड़ सिगरेट आयात की थी। युवा आबादी तेजी से इसकी चपेट में आ रही थी, जिसकी वजह से बैन लागू करना पड़ा। कोशिश न्यूजीलैंड और मलयेशिया ने भी की थी, लेकिन सफल नहीं हो सके।

बीमारियों पर भारत में बड़ा खर्च

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तंबाकू से जुड़ी बीमारियों पर भारत हर साल 1.77 लाख करोड़ रुपये खर्च करता है। सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के आंकड़े बताते हैं कि केवल 7% ही बिना किसी मदद के स्मोकिंग छोड़ पाते हैं।

इरफ़ान

क्या BJP के लिए सीधे वोट मांगता है संघ

पूनम पाण्डे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) को दुनिया का एक तरह से सबसे बड़ा NGO कहा था। संघ खुद को गैर-राजनीतिक और सांस्कृतिक संगठन बताता है। जिस तरह VHP, ABVP, वनवासी कल्याण आश्रम, मजदूर संघ, संस्कार भारती संघ से जुड़े संगठन हैं, वैसे ही BJP भी संघ की राजनीतिक इकाई है। इसे संघ की भाषा में आनुषांगिक संगठन कहते हैं। संघ खुद को गैर-राजनीतिक कहता है तो क्या इसका मतलब ये है कि संघ के लोग चुनाव में BJP के लिए वोट नहीं मांगते? इसका जवाब हां भी है और नहीं भी।

साइलेंट तरीके से सपोर्ट

संघ के लोग कभी भी सीधे BJP को वोट देने की अपील नहीं करते। लेकिन वे जिन मुद्दों पर और जिस तरह से लोगों से बात करते हैं उससे साफ हो जाता है कि वे अपनी वैचारिक पार्टी BJP के लिए समर्थन मांग रहे हैं। बिहार विधानसभा चुनाव में संघ के स्वयंसेवकों ने करीब छह महीने पहले ही छोटी-छोटी पंचायतें लगानी शुरू कर दी थीं, खासकर ग्रामीण इलाकों में। दलित, पिछड़े और अति-पिछड़ों के बीच संघ के स्वयंसेवक सामाजिक समरसता की बात कर रहे हैं, जो संघ का अभियान है। साथ ही, हिंदू एकजुटता की और राष्ट्रवाद की भी। बिहार में संघ की करीब दो हजार शाखाएं लगती हैं। इनमें शारीरिक कसरत के अलावा वैचारिक कसरत भी होती है। इस दौरान ये भी चर्चा होती है कि देश के लिए या राज्य के लिए क्या अच्छा है और इस तरह राजनीतिक बात भी होती है। संघ कहता रहा है कि स्वयंसेवक भी इसी समाज का हिस्सा हैं और समाज में जो भी होता है उन्हें प्रभावित करता है, चुनाव और राजनीति भी। इसलिए वे इससे दूरी नहीं बना सकते।

बिहार में जिन जगहों पर संघ की शाखाओं की संख्या कम है, वहां स्वयंसेवक लोगों से छोटे-छोटे ग्रुप में व्यक्तिगत संपर्क कर रहे हैं। इसी तरह का संपर्क अभियान और मीटिंग्स संघ के स्वयंसेवकों ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान भी की। 2024 लोकसभा चुनाव के दौरान कहा गया कि स्वयंसेवकों ने प्रचार से अपने कदम पीछे खींच लिए जिसका शायद BJP को नुकसान भी हुआ।

विशुद्ध राजनीति कसौटी

हालांकि इसके बाद हुए हरियाणा, महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में संघ ने पार्टी का साथ दिया। दोनों राज्यों के चुनाव के दौरान संघ के अलग-अलग संगठनों ने कई छोटी बैठकें कीं और BJP के पक्ष में माहौल बनाया। इसका असर भी दिखा और पार्टी को जीत मिली। चुनाव में BJP का अपना संगठन तो काम करता ही है, लेकिन संघ और उसके संगठनों का भी अहम रोल रहता है। ये संगठन लगभग सभी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं।

मजबूत संगठन का फायदा

संघ के करीब 35 आनुषांगिक संगठन हैं। उसकी देश में करीब 88 हजार दैनिक शाखाएं लगती हैं। संघ की जब भी समन्वय मीटिंग होती है तो उसमें उसके सारे संगठनों के साथ BJP के भी प्रतिनिधि मौजूद रहते हैं। बिहार में जब संघ ने अपना साइलेंट अभियान शुरू किया तब ऐसे मुद्दों और ऐसे वोटर्स की पहचान भी की, जो सरकार से नाराज हैं। इस आधार पर पार्टी की रणनीति तय की गई और नाराज वोटर्स को मनाने के लिए BJP की स्थानीय टीम सक्रिय हुई। इन मीटिंग्स में जंगलराज के मसले पर भी बात हुई। इस मुद्दे को BJP ने चुनाव का बड़ा मुद्दा भी बनाया है। माहौल बनाने के अलावा संघ के स्वयंसेवक मतदान के दिन ये भी सुनिश्चित करते हैं कि लोग वोट देने जाएं। हर चुनाव में वोटिंग पर्सेंट बढ़ाने के लिए यह अभियान चलता है।

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें www.speakingtree.nbt.in

गुरु नानक देव की सीख, धड़कनों के साथ चले सुमिरन

आनंदमूर्ति गुरुमां

गुरु नानक देव कहते हैं कि गुरु की कृपा से मनुष्य को अपना आप समझ आता है। जब तक मनुष्य यह नहीं जानता कि 'मैं कौन हूं', तब तक उसकी तृष्णा नहीं मिटती। जिसने अपने भीतर के 'मैं' को पहचान लिया, वह परमेश्वर को भी जान लेता है और जीवन के सारे बंधनों से मुक्त हो जाता है।

गुरुदेव बताते हैं कि जो साधु संगत में बैठकर हरि का यश गाते हैं, वे सभी रोगों से मुक्त हो जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि जब कोई साधु संगत में जाता है, तो उसका जीवन अनुशासित हो जाता है। वह ब्रह्म मुहूर्त में उठता है, योगाभ्यास करता है, आहार और व्यवहार पर नियंत्रण रखता है। साधु की संगति में उसकी उर्जा और तेज अपने आप साधक के शरीर व मन को स्वस्थ बना देते हैं। यही मन की शुद्धि और शरीर की स्थिरता का रहस्य है।

Subrata Dhar

गुरुदेव कहते हैं कि सच्चा कीर्तन वाद्य यंत्रों से नहीं, मन से होता है। जैसे दिल की धड़कन अपने आप चलती है, वैसे ही भीतर सुमिरन चलता रहे - हर क्षण, हर सांस में। ऐसा व्यक्ति गृहस्थ होकर भी साधु जैसा जीवन जीता है। उसे किसी दिखावे की जरूरत नहीं, बस भीतर की लय बनी रहे। गुरु नानक देव सिखाते हैं कि मन की आशा केवल परमात्मा पर टिकी हो, किसी और पर नहीं। ऐसा मनुष्य भय, मोह और मृत्यु से परे हो जाता है। परमात्मा सर्वव्यापक है। उसका अनुभव हर किसी के लिए संभव है। वह सूर्य की रोशनी की तरह है, जो सबको समान रूप से मिलती है और कभी घटती नहीं।

गुरुदेव कहते हैं कि बुद्धि का शोधन आवश्यक है, क्योंकि अज्ञान और ममता से वह मैली हो गई है। जब बुद्धि का शोधन होता है, तब परमतत्व की पहचान होती है। वही परमात्मा, जिससे यह जगत उत्पन्न हुआ है और जिसमें अंततः समा जाएगा।

ज्ञान ही आनंद का मूल है। इसलिए गुरु नानक देव का संदेश है- ज्ञान प्राप्त करो, शांति में रहो और अपने भीतर के प्रभु को पहचानो। यही जीवन का परम सुख और सच्ची मुक्ति है।

रीडर्स मेल
www.edit.nbt.in

ऐतिहासिक जीत

2 नवंबर का दिन भारतीय खेल इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो गया, जब भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार आईसीसी महिला विश्व कप का खिताब अपने नाम किया। यह करोड़ों भारतीयों के सपनों, संघर्षों और उम्मीदों की ऐतिहासिक जीत है। हरमनप्रीत कौर की अगुवाई में भारतीय टीम ने पूरे टूर्नामेंट में जबरदस्त प्रदर्शन किया। बल्लेबाजी, गेंदबाजी और फील्डिंग, तीनों विभागों में खिलाड़ियों ने अनुशासन और जोश का अद्भुत संगम दिखाया। फाइनल मैच में भारतीय खिलाड़ियों की जुझारू भावना और आत्मविश्वास ने दर्शाया कि अब महिला क्रिकेट किसी भी दृष्टि से पुरुष क्रिकेट से कम नहीं है।

विभूति बुपक्या, ईमेल से

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

आर.एन.आई. पंजीयन नंबर 1613/1957 स्वत्वाधिकारी बेनेट, कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड के लिए आर. कृष्णमूर्ति द्वारा टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, डॉ. डी. एन. रोड, फोर्ट, मुंबई 400001 से प्रकाशित और उनके द्वारा (1) टाइम्स ऑफ इंडिया सबर्बन प्रेस, आकुर्ली रोड, निकट वेस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे, कांदिवली (पू.) मुंबई 400101 एवं (2) टाइम्स ऑफ इंडिया प्रिंट सिटी, प्लॉट नं. 4, टी.टी.सी. इंडस्ट्रियल एरिया, ठाणे बेलापुर रोड, ऐरोली, नवी मुंबई-400708. फोन नं. (022) 2760 9999 ; फैक्सः (022) 2760 5275। फोन मुंबईः (022) 66353535, 22733535 रेस्पांसः (022) 66353636, 22733636 फैक्सः (022) 22731889, 22731144, कांदिवली (022) 28872324 से मुद्रित। **स्थानीय संपादक (मुंबई) : सुंदर चंद ठाकुर** (पी. आर. बी. अधिनियम के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी) सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। सड़क व रेल परिवहन सेवा शुल्कः मुंबई, ठाणे व रायगड जिलों के बाहर 1.00 रुपया। विमान सेवा शुल्कः रायपुर, नागपुर, गोवा एवं वाया 2.00 रुपये, इंदौर, चेन्नै एवं वाया 3.00 रुपये, अहमदाबाद, बेंगलुरु, कोचीन, कोयम्बतूर, एरनाकुलम, हैदराबाद, कोझीकोड, मंगलूर, त्रिवेंद्रम, उदयपुर, वाइजग एवं वाया 4.00 रुपये, दिल्ली, कोलकाता, एवं वाया 5.00 रुपये।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

प्रवासन बहस

बाहरी प्रवास में स्वाभाविक रूप से कुछ भी अवांछनीय नहीं है

एम बिहार विधानसभा चुनाव प्रचार में प्रवासन एक केंद्रीय विषय रहा है, जिसका पहला चरण मंगलवार को समाप्त हो गया।

राजनीतिक दलों ने प्रवासन पर बहस को अलग-अलग तरीकों से पेश करने की कोशिश की है, लेकिन राज्य और देश के हित में इसे सही ढंग से समझना ज़रूरी है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेतृत्व में विपक्ष ने अवसरों की तलाश में राज्य से देश के अन्य हिस्सों में भारी पलायन के लिए सत्तारूढ़ राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को दोषी ठहराया है; भारतीय जनता पार्टी-जनता दल (यूनाइटेड) [भाजपा-जद(यू)] गठबंधन, जो 20 वर्षों से सत्ता में है, आंशिक रूप से इस मुद्दे को नकार रहा है और धूर्ततापूर्वक राज्य में अवैध प्रवासियों का मुद्दा उठा रहा है। सत्तारूढ़ गठबंधन द्वारा राज्य में अवैध प्रवासियों को लेकर फैलाया जा रहा डर हास्यास्पद होता, लेकिन इसके साथ जुड़ी निराशा और विदेशी द्वेष की भावना न होती। एक बात यह है कि विशेष गहन पुनरीक्षण, जिसे भारत के चुनाव आयोग ने मतदाता सूचियों को शुद्ध करने की प्रक्रिया बताया था, ने यह प्रदर्शित किया कि राज्य में बड़े पैमाने पर अप्रवासियों की उपस्थिति नहीं थी।

विपक्ष ने अपना चुनाव प्रचार इस नारे पर चलाया: 'रोज़गार पैदा करो, पलायन रोको'। 2011 की जनगणना के अनुसार, बिहार से 74.54 लाख प्रवासी शेष भारत में फैले हुए हैं। यह दुखद है कि भाजपा ने, सर्वोच्च स्तर पर, देश के अन्य हिस्सों में, विशुद्ध रूप से अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए, बिहार विरोधी भावना का एक भ्रम पैदा किया। लोगों का पलायन मानव विकास का अभिन्न अंग है, और इसमें स्वाभाविक रूप से कुछ भी अवांछनीय नहीं है। विपक्ष का तर्क है कि भाजपा-जद(यू) सरकार ने बिहार को प्रवासी श्रमिकों के आपूर्तिकर्ता में बदल दिया है और स्थानीय रोज़गार के अवसर पैदा करने का वादा किया है। बुनियादी ढाँचे और अवसरों का निर्माण किसी भी ज़ोरदार चुनावी चर्चा का हिस्सा होना चाहिए, लेकिन पलायन के बारे में अधिक आशावादी दृष्टिकोण बनाए रखते हुए इसे हासिल किया जा सकता है। देश के अन्य हिस्सों की तुलना में बिहार में प्रजनन दर अधिक है और जनसंख्या युवा है। आर्थिक अवसरों और जनसांख्यिकीय रुझानों में क्षेत्रीय विविधता लोगों के पलायन को अपरिहार्य बनाती है। बिहार को अपनी शिक्षा और स्वास्थ्य मानकों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए तथा एक अत्यधिक उत्पादक और कुशल कार्यबल का निर्माण करना चाहिए जो भारत की आर्थिक वृद्धि का हिस्सा बनकर अपने विकास को गति प्रदान करेगा।

यौगिक प्रभाव

दक्षिण-पूर्व एशियाई घोटालेबाज़ कारखानों को समन्वित प्रतिक्रिया की आवश्यकता

टी डिजिटल घोटालों के बढ़ते खतरे की व्यापक जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट का आह्वान उस खतरनाक पैमाने को दर्शाता है जिस पर भारतीय नागरिकों को ठगा जा रहा है। बेंच का 'डिजिटल गिरफ्तारी' घोटालों पर विशेष ध्यान - जहां धोखेबाज पैसे ऐंठने के लिए कानून प्रवर्तन अधिकारियों का प्रतिरूपण करते हैं - इन कार्यों की परिष्कृतता और बेशर्मी को रेखांकित करता है। डिजिटल धोखाधड़ी की वर्तमान लहर को पारंपरिक साइबर अपराध से जो अलग करता है वह है इसका औद्योगिक पैमाना और सीमा पार संरचना। "घोटाला यौगिकों" का एक विशाल नेटवर्क दक्षिण पूर्व एशिया के संघर्षग्रस्त क्षेत्रों और विशेष आर्थिक क्षेत्रों से संचालित होता है, विशेष रूप से म्यांमार में, जहां राज्य का नियंत्रण न्यूनतम है और जहां, परेशान करने वाली बात है, शासन की मिलीभगत स्पष्ट दिखाई देती है। इस आधुनिक गुलामी रैकेट की कार्यप्रणाली डरावनी है। पीड़ितों को अक्सर बैंकॉक के रास्ते आकर्षक वेतन और सुविधाओं का वादा करने वाले फर्जी नौकरी विज्ञापनों के जरिए वीजा-मुक्त व्यवस्थाओं का फायदा उठाने के लिए फुसलाया जाता है। वहां से, उन्हें सीमाओं के पार, मुख्य रूप से म्यांमार के उन इलाकों में ट्रैक किया जाता है, जिन पर सैन्य जुंटा से संबद्ध सीमा रक्षक बलों का नियंत्रण है। ये प्रतिष्ठान डिजिटल स्वेटशॉप की तरह काम करते हैं, जहाँ तस्करी किए गए व्यक्तियों को हिंसा, यातना और यौन उत्पीड़न के जरिए बड़े-बड़े घोटाले करने के लिए मजबूर किया जाता है, जिनमें "सुअर का वध" भी शामिल है, जो रोमांस और क्रिप्टोकरेंसी निवेश धोखाधड़ी का एक परिष्कृत मिश्रण है। म्यांमार के गृहयुद्ध ने इन कार्रवाइयों के फलने-फूलने के लिए आदर्श परिस्थितियाँ पैदा की हैं। जुंटा के 2021 के तख्तापलट और उसके बाद के संघर्षों ने जातीय मिलिशिया को, जिन्हें सीमा रक्षक बलों के रूप में पुनः ब्रांडेड किया गया, प्रोत्साहित किया,

क्रिप्टो-मुद्रा में परिवर्तित होने से पहले आय को "खच्चरों" और कंबोडिया के हुइओन पे जैसे संदिग्ध वित्तीय संस्थानों के माध्यम से लूटा जाता है, जिससे पता लगाना और वसूली लगभग असंभव हो जाती है। वैश्विक निरीक्षकों ने चीनी-संगठित अपराध सिंडिकेट की पहचान इन बहुराष्ट्रीय नेटवर्कों को संचालित करने वाले सरगना के रूप में की है। भारत दोहरे संकट का सामना कर रहा है: इसके हजारों नागरिकों को क्रूर परिस्थितियों में जबरन घोटाले के श्रम में लगाया जाता है, जबकि घर पर हजारों लोग उन्हीं धोखाधड़ी का शिकार होते हैं जिन्हें करने के लिए ये बंदी मजबूर होते हैं। इसके लिए बहुआयामी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। भारतीय रिजर्व बैंक को, केंद्र और राज्य सरकारों के साथ मिलकर, साइबर अपराध के बुनियादी ढांचे और पुलिसिंग क्षमताओं को मजबूत करते हुए इन घोटालों के बारे में व्यापक जन जागरूकता अभियान शुरू करने चाहिए। भारत को समन्वित क्षेत्रीय प्रतिक्रिया तैयार करने के लिए राजनयिक चैनलों का लाभ उठाना चाहिए। चीन, थाईलैंड, वियतनाम और अन्य प्रभावित देशों के साथ मिलकर, भारत को म्यांमार की सेना और कंबोडियाई शासन पर इन कार्रवाइयों को ख़त्म करने के लिए अधिकतम दबाव डालना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र को भी इसे वास्तविक रूप में पहचानने के लिए प्रेरित करना होगा: गुलामी का एक आधुनिक रूप जो तत्काल अंतर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप की माँग करता है।

बिहार की चुनावी लड़ाई केवल जाति पर नहीं, बल्कि ज़मीन पर होनी चाहिए

Aparajay

सेंट जेवियर्स विश्वविद्यालय, कोलकाता के कला एवं सामाजिक अध्ययन संकाय में अर्थशास्त्र पढ़ाते हैं।

ईमेल: aparajay20@gmail.com

श्रीनिवासन मानचित्र

Email: srinivasan.vr@thehindu.co.in

पी किसी भी अखबार को उठा लीजिए, सोशल मीडिया पर नजर दौड़ा लीजिए, या चुनाव से पहले बिहार में किसी रैली में शामिल हो जाइए, और आपको एक परिचित राजनीतिक रणनीति काम करती हुई नजर आएगी।

राष्ट्रीय जनता दल (राजद) अपने मूल आधार - यादव और मुसलमानों के लिए। लेकिन इस रणनीति की सीमाओं को समझते हुए, अब वह स्थिर आय के लिए बेताब आबादी को सरकारी नौकरियों का वादा कर रही है। वर्षों से चली आ रही कमज़ोर आर्थिक वृद्धि ने लाखों लोगों को काम की तलाश में बिहार से पलायन करने पर मजबूर किया है। राजद इस मुद्दे को ज़ोर-शोर से उठाने और उन मतदाताओं का समर्थन हासिल करने की उम्मीद कर रही है जिनके लिए पलायन एक बड़ा मुद्दा बन गया है।

कांग्रेस ने अपना पूर्व समर्थन खो दिया है 'अगड़ी जातियों' के बीच भाजपा के आधार को मज़बूत करने के साथ, वह बिहार में अपने राष्ट्रीय आख्यान को लेकर आई है: समावेशिता, संवैधानिक मूल्य और धर्मनिरपेक्षता। वह इन्हें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की विभाजनकारी सांप्रदायिकता के ख़िलाफ़ खड़ा कर रही है। यह संदेश बिहार के अर्ध-शहरी इलाकों में गूंज रहा है। लेकिन यह स्पष्ट है कि पार्टी के सुनहरे दिन अब बीत चुके हैं।

वामपंथी दल अधिकारों और पुनर्वितरण की भाषा बोलते हैं—भूमि सुधार, श्रम अधिकार, श्रमिकों के सम्मान की बात। लेकिन कुछ इलाकों को छोड़कर, उन्होंने अपना जनाधार नहीं बनाया है। विकासशील इंसान पार्टी जैसे छोटे दलों को हाशिए पर पड़े समुदायों का समर्थन छीनने के लिए लाया गया है, जो परंपरागत रूप से सत्तारूढ़ जनता दल (यूनाइटेड) या जेडी(यू) का समर्थन करते रहे हैं।

दूसरी तरफ़, जेडी(यू) और उसके नेता नीतीश कुमार हैं। यह पार्टी कर्पूरी ठाकुर के फॉर्मूले की उत्तराधिकारी है—अति पिछड़े वर्गों (ईबीसी) और 'महादलितों' के साथ-साथ कुर्मी और कोइरी जैसे छोटे लेकिन शक्तिशाली गैर-यादव अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) को एकजुट करना। इस आधार से आगे बढ़ने के लिए, श्री कुमार ने कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से महिला मतदाताओं को साधने में वर्षों बिताए हैं। अब वह इस चुनाव में जीत के लिए महिलाओं को एकमुश्त नकद हस्तांतरण की लोकप्रियता पर पूरा दांव लगा रहे हैं।

भाजपा 'अगड़ी' जातियों का समर्थन बनाए रखना चाहती है—वे जातियाँ जो ओबीसी के राजनीतिक प्रभुत्व को नाराज़गी से देखती हैं। लेकिन वह केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं और हिंदुत्व की ज़ोरदार अपील के ज़रिए एक व्यापक गठबंधन बनाने की भी कोशिश कर रही है, जिसका उद्देश्य जातिगत आधार पर हिंदू मतदाताओं को एकजुट करना है। मध्यम वर्ग और शहरी मतदाताओं को अपने साथ बनाए रखने के लिए, वह "विकास" पर ज़ोर दे रही है, जिसका बिहार में मुख्यतः मतलब नदी के किनारे सड़कें और पुल बनाना है। भारत के कुछ सबसे ख़राब मानव विकास संकेतकों वाले राज्य में, विकास की यह सीमित परिभाषा बहुत कुछ कहती है।

भाजपा और जद(यू) के अलावा, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में छोटी जाति-आधारित पार्टियां शामिल हैं - लोक जनशक्ति पार्टी (एलजेपी), हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा और राष्ट्रीय लोक मोर्चा (आरएलएम), जिनमें से प्रत्येक विशिष्ट गैर-यादव ओबीसी और दलित निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

और फिर एक नया चेहरा आया: जन सुराज पार्टी (जेएसपी), जो कुछ अलग करने का दावा करती है - जाति संरक्षण पर कम ध्यान, बेहतर प्रशासन के माध्यम से सुशासन और कल्याण पर अधिक जोर।

संक्षेप में, बिहार का 2025 का चुनाव उन तीन ताकतों को प्रतिबिंबित करता है जिन्होंने 1990 के दशक से भारतीय राजनीति को आकार दिया है: मंडल (जाति-आधारित आरक्षण और पहचान की राजनीति), मंदिर (हिंदुत्व एकीकरण), और बाजार (विकासवाद)।

प्रत्येक पार्टी अलग-अलग संयोजनों में इन पर जोर देती है, लेकिन मंडल राजनीति सबसे प्रमुख कारक बनी हुई है।

> दशकों से चली आ रही 'सामाजिक न्याय' की राजनीति ने पिछड़ेपन को जन्म दिया है जातियों को सत्ता। लेकिन संपत्ति एक छोटे से अगड़ी जाति के अभिजात वर्ग के पास ही रहती है। कोई पुनर्वितरण की बात क्यों नहीं करेगा?

यह प्रतियोगिता - नौकरियों के वादों के साथ, कल्याण, महिला सशक्तिकरण और विकास - एक मौलिक वास्तविकता को अस्पष्ट कर देता है। वामपंथी दलों को छोड़कर, जिनके पास चुनावी ताकत का अभाव है, कोई भी प्रमुख दल बिहार की मूल समस्या के बारे में बात नहीं कर रहा है, जिसके दो भाग आपस में जुड़े हुए हैं।

पहला है ज़मीन। दशकों के विखंडन के बावजूद, बिहार में ज़मीन का स्वामित्व अगड़ी जातियों के कुलीन वर्ग के हाथों में ही झुका हुआ है। कृषि भूमि का यह संकेन्द्रण सिर्फ़ एक आर्थिक मुद्दा नहीं है; यह सामाजिक और राजनीतिक सत्ता की नींव है जो पीढ़ियों से चली आ रही है।

दूसरा पहलू है उद्योग का लुप्त होना। बिहार की एक प्राकृतिक ताकत है: उपजाऊ कृषि भूमि। इससे एक फलते-फूलते कृषि-प्रसंस्करण उद्योग को जन्म मिलना चाहिए था—खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ, पैकेजिंग सुविधाएँ, आपूर्ति श्रृंखला का बुनियादी ढाँचा जो रोज़गार पैदा करता और कृषि उपज का मूल्यवर्धन करता। इसके बजाय, बिहार अपने कच्चे कृषि उत्पाद और अपने लोगों का निर्यात करता है। ऐतिहासिक रूप से पूँजी निवेश के बजाय लगान-माँग को तरजीह देने वाले अभिजात वर्ग के हाथों में भूमि का संकेन्द्रण एक गतिशील कृषि-औद्योगिक क्षेत्र के उदय में बाधक रहा है।

ये दो मुद्दे हैं - भूमि संकेन्द्रण और कृषि-प्रसंस्करण का अभाव — यह समझने की कुंजी है कि दशकों से चली आ रही "सामाजिक न्याय" की राजनीति और वर्षों से चले आ रहे "विकास" शासन के बावजूद बिहार गरीब क्यों बना हुआ है। ये वे मुद्दे भी हैं जिनसे हर बड़ी पार्टी सावधानीपूर्वक बच रही है क्योंकि इन पर ध्यान देने का मतलब होगा जड़ जमाए बैठे हितों को चुनौती देना: बड़े ज़मींदार (ओबीसी समुदायों के धनी किसान भी शामिल हैं), अगड़ी जातियों का आर्थिक प्रभुत्व, और पूरी राजनीतिक अर्थव्यवस्था जो मौजूदा व्यवस्था को चलाती है।

बिहार के पिछड़ी जाति के नेता - लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार और अन्य - 1980 के दशक के अंत और 1990 के दशक की शुरुआत में सत्ता में आए। ज़्यादातर लोग इसका श्रेय 20वीं सदी के मध्य के समाजवादी आंदोलनों को देते हैं। लेकिन इसकी जड़ें और भी पुरानी हैं, 1920-30 के दशक के त्रिवेणी संघ आंदोलन तक।

उस समय, पिछड़ी जातियों के नेताओं ने ज़मीन, संपत्ति और सत्ता पर कब्ज़ा रखने वाली अगड़ी जातियों (राजपूत, भूमिहार, ब्राह्मण, कायस्थ) के प्रभुत्व को चुनौती दी थी। वे साक्षरता, शिक्षा और संसाधनों के न्यायसंगत वितरण की मांग कर रहे थे।

लगभग एक सदी बाद, बिहार की मूल समस्या जस की तस बनी हुई है: एक छोटा सा अल्पसंख्यक वर्ग अभी भी अधिकांश संपत्ति को नियंत्रित करता है। बिहार जाति सर्वेक्षण एक कठोर वास्तविकता को उजागर करता है। अगड़ी जातियां जनसंख्या का केवल 15.5% हैं, फिर भी उनके पास सभी सरकारी नौकरियों का 31% हिस्सा है। जबकि अगड़ी जाति के 10% परिवार प्रति माह 50,000 रुपये से अधिक कमाते हैं, यह आंकड़ा ओबीसी में केवल 4%, ईबीसी और अनुसूचित जातियों में 2% और अनुसूचित जनजातियों में 1% से भी कम है। भारत मानव विकास सर्वेक्षण (2011) और राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (2019) के अनुसार 80% से अधिक बड़े भू-स्वामियों (20 एकड़ से अधिक) का स्वामित्व अगड़ी जातियों के पास है। संसाधनों का यह संकेंद्रण न केवल कायम रहा है;

आर्थिक परिवर्तन के बिना राजनीतिक शक्ति बिहार ने राजनीतिक लोकतंत्र हासिल कर लिया है। पिछड़ी जातियों ने दशकों तक सत्ता पर कब्जा रखा है। लेकिन इसका आर्थिक लोकतंत्र में कोई अनुवाद नहीं हुआ है। धन अभी भी उन्हीं हाथों में है।

यह समझने के लिए कि बिहार के राजनीतिक नेता—यहाँ तक कि पिछड़ी जातियों के वे नेता भी जिन्होंने सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया—इन बुनियादी मुद्दों से क्यों बचते रहे, हमें यह देखना होगा कि उन्होंने कौन सी लड़ाइयाँ लड़ने का विकल्प चुना। श्री प्रसाद ने सामाजिक न्याय की वकालत की।

आक्रामक तरीके से। लेकिन उन्होंने अगड़ी जातियों को चुनौती देने पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि अन्य पिछड़ी और अति पिछड़ी जातियों की उपेक्षा की, या यहाँ तक कि उनका दमन भी किया। उन्होंने भूमि पुनर्वितरण या आर्थिक असमानता पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने केवल "पड़ोस की लड़ाइयाँ" लड़ीं—पूरी असमानता की व्यवस्था के बजाय, पदानुक्रम में यादवों से सीधे ऊपर की जातियों को चुनौती दी। इस दृष्टिकोण ने यादवों और अन्य ओबीसी/ईबीसी समूहों के बीच तनाव को और बढ़ा दिया।

श्री कुमार ने एक अलग रास्ता अपनाया। उन्होंने सड़कें, स्कूल और बिजली उपलब्ध कराईं—ऐसा बुनियादी ढाँचा जिससे सभी को फ़ायदा हो। यह किसी की संपत्ति को ख़तरे में डाले बिना हुई प्रगति जैसा लग रहा था। उन्होंने शुरुआत में एक भूमि सुधार आयोग भी बनाया, लेकिन जल्द ही उन्होंने बड़े ज़मींदारों के लिए चुनौती बनने वाली हर चीज़ को त्याग दिया।

परिणाम? बुनियादी ढांचे में सुधार हुआ, लेकिन धन वितरण में कोई बदलाव नहीं आया।

न तो श्री प्रसाद और न ही श्री कुमार तैयार थे अपनी ही जातियों (यादव और कुर्मी) के बड़े ज़मींदारों को चुनौती देने के लिए, भले ही उनकी संख्या अपेक्षाकृत कम है। अगर बिहार की अर्थव्यवस्था की स्थिति शासन की पहचान होती, तो दो दशकों से सत्ता में रहे श्री कुमार अब तक सत्ता से बाहर हो चुके होते। लेकिन विपक्षी महागठबंधन (एमजीबी) ने सफल रैलियों और लामबंदी के बावजूद खुद को एक स्पष्ट विकल्प के रूप में पेश नहीं किया है।

बिहार के सामने अब दो संभावित रास्ते हैं। पहला है कुछ लोगों के लिए विकास — विकास के मौजूदा मॉडल को जारी रखना जो बड़े व्यवसायों और ज़मींदारों को फ़ायदा पहुँचाता है, और साथ ही आम जनता को राहत देने के लिए कुछ कल्याणकारी योजनाएँ भी। दूसरा है समावेशी विकास — धन के अंतर को पाटना, भूमि का पुनर्वितरण, यह सुनिश्चित करना कि सभी जातियों तक रोज़गार और आय पहुँचे, और व्यापक रोज़गार पैदा करने वाले कृषि-प्रसंस्करण उद्योगों का निर्माण।

नए राजनीतिक प्रवेशकर्ता पहले के उदाहरण हैं रास्ता। लोजपा के चिराग पासवान खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का वादा करते हैं, जबकि जेएसपी के प्रशांत किशोर सेवा क्षेत्र के विकास और बेहतर प्रशासन पर ज़ोर देते हैं। दोनों ही विकास की बात करते हैं, लेकिन दोनों में से कोई भी धन के पुनर्वितरण या भूमि सुधार की बात नहीं करता। उनके मॉडल बड़े ज़मींदारों, व्यवसायों और नौकरशाहों के हाथों में संसाधनों के संकेंद्रण को स्वीकार करते हैं, और केवल व्यवस्था को और अधिक कुशलता से चलाने का वादा करते हैं।

एनडीए और महागठबंधन दोनों ही बहुजातीय गठबंधन हैं, जो किसी भी दिशा में निर्णायक रूप से आगे बढ़ने से रोकता है। महागठबंधन के हालिया नीतिगत दस्तावेज़—'परिवर्तन पत्र', 'माई-बहिन मान योजना', और 'अति-पिछड़ा न्याय पत्र'—समावेशी विकास की कुछ समझ दर्शाते हैं, जिसमें महिलाओं, अति पिछड़ों और दलितों को सशक्त बनाने की योजनाएँ शामिल हैं। लेकिन अतीत में किए गए वादों को देखते हुए, मतदाता संशय में हैं।

वामपंथी दलों के पास धन के पुनर्वितरण की आर्थिक योजनाएँ तो हैं, लेकिन वे इन्हें सामाजिक न्याय के मुद्दों से जोड़ने में विफल रहे हैं। उनकी राजनीति अभी तक ऐसे तथ्यों पर विचार नहीं कर पाई है, जैसे कि एक अगड़ी जाति के भूमिहीन मज़दूर को एक दलित या अति पिछड़ी जाति की महिला से बहुत अलग बाधाओं का सामना करना पड़ता है, भले ही दोनों गरीब हों। कई दलित, जिन्हें सामाजिक रूप से ज़मीन का मालिकाना हक आवंटित किया गया है, सामाजिक बाधाओं के कारण उस पर भौतिक कब्ज़ा नहीं कर पा रहे हैं।

एनडीए के एक विश्वसनीय विकल्प के रूप में देखे जाने के लिए, महागठबंधन को एक स्पष्ट और विश्वसनीय संदेश देना ज़रूरी था कि वे केवल चुनाव जीतने के लिए नहीं, बल्कि समावेशी विकास के लिए गंभीर हैं। उन्हें मतदाताओं तक कल्याणकारी वादे करने के बजाय, पुनर्वितरण और अवसर का संदेश पहुँचाना चाहिए था। उन्हें एनडीए के साथ एक स्पष्ट वैचारिक विरोधाभास प्रस्तुत करना चाहिए था। अब उनकी उम्मीदें केवल सत्ता-विरोधी भावना पर टिकी हैं।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

ट्रम्प का इज़राइल पर हमास से ज़्यादा नियंत्रण है

Khinvraj Jangid

प्रोफेसर और निदेशक, इज़राइल केंद्र

अध्ययन करते हैं,

जिंदल स्कूल ऑफ अंतर्राष्ट्रीय एयर्स, ओपी जिंदल ग्लोबल University, Sonipat

टी इजरायल-हमास संघर्ष विराम समझौते को कठिन परीक्षा का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि हमास ने अक्टूबर में बंदी बनाए गए इजरायलियों के शव अभी तक नहीं लौटाए हैं। समझौते में हुई सहमति के अनुसार, 7, 2023 को आयोजित किया जाएगा। मिस्र और अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस समिति की टीमें गाजा में शवों का पता लगाने के लिए इजरायली सेना और हमास के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, गाजा में अभी भी 13 शव हैं। हमास या तो शवों का पता नहीं लगा पा रहा है या फिर इस चरण को लंबा खींचने के लिए यह दिखावा कर रहा है कि उसे पता ही नहीं है कि वे कहाँ हैं। एक बार सभी शव वापस आ जाने के बाद, हमास को अगले चरण में हथियार डालने होंगे। और यहीं पर युद्धविराम की असली परीक्षा है।

इस बीच, पिछले सप्ताह हमास ने एक आतंकवादी को मार गिराया। उत्तरी गाजा में एक इजरायली सैनिक। बदले में, इजरायली सेना ने गाजा पर हमला किया, जिसमें एक दिन में 100 से ज़्यादा लोग मारे गए। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सहयोगी कतर ने इजरायल का बचाव किया और हमास पर युद्धविराम समझौते का उल्लंघन करने का आरोप लगाया।

इज़राइल पर दबाव: श्री ट्रम्प ने निगरानी और समन्वय प्रयासों में सहयोग के लिए इज़राइल में लगभग 200 अमेरिकी सैन्य कर्मियों को तैनात किया है। यह दिखाने के लिए कि वह युद्धविराम को लेकर गंभीर हैं, साथ ही इज़राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और इज़राइली सेना के प्रति अपने अविश्वास को भी प्रदर्शित करता है।

अमेरिकी ड्रोन गाजा पर नज़र रख रहे हैं। युद्ध के पिछले दो वर्षों में इस तरह की प्रत्यक्ष अमेरिकी निगरानी अभूतपूर्व है। इज़राइल पर राजनीतिक और सैन्य दबाव पिछले हफ़्ते तब स्पष्ट दिखाई दिया जब ट्रम्प प्रशासन के शीर्ष अधिकारियों - विदेश मंत्री मार्को रुबियो, मध्य पूर्व

> इज़राइली सरकार, सैन्य रूप से श्रेष्ठ होने के बावजूद, अपनी रणनीतिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए वाशिंगटन की रणनीति पर चलने को मजबूर है। हमास, सैन्य रूप से कमज़ोर होने के बावजूद, वैचारिक रूप से ज़्यादा स्वतंत्र और कम निर्भर है।

अमेरिकी दूत स्टीव विटको, श्री ट्रम्प के दामाद जेरेड कुशनर और उपराष्ट्रपति जेडी वेंस - सभी यरुशलम में थे। "हम (अमेरिकी प्रतिष्ठान) यहाँ फैसले ले रहे हैं" यह संदेश था, जिससे श्री ट्रम्प के लिए घरेलू परेशानियाँ पैदा हो गईं।

नेतन्याहू। उन्हें श्री ट्रम्प के दबाव से मुक्त दिखना था और इज़राइलियों को आश्वस्त करना था कि इज़राइल एक संप्रभु राज्य है, न कि अमेरिका का 'ग्राहक राज्य'। इज़राइली सरकार के कट्टरपंथी श्री ट्रम्प की 20-सूत्रीय गाजा योजना को नापसंद करते हैं, लेकिन अमेरिकी समर्थन खोने के खतरे के चलते वे इसे अस्वीकार नहीं कर सकते थे। श्री ट्रम्प का यह बयान कि "यदि इज़राइल पश्चिमी तट पर कब्ज़ा कर लेता है, तो वह अमेरिका का सारा समर्थन खो देगा", दक्षिणपंथी बसने वाले आंदोलन की महत्वाकांक्षाओं के लिए एक और झटका था।

हमास पर कम प्रभाव चाहे वे उन्हें पसंद करें या नफरत करें, इजरायली नेता, जिनमें श्री नेतन्याहू भी शामिल हैं, गाजा में शेष युद्ध को समाप्त करने के बारे में श्री ट्रम्प के विचारों का विरोध करने की स्थिति में नहीं हैं। गाजा के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय स्थिरीकरण बल की योजना बनाई जा रही है, जो आगे इजरायली सेना से नियंत्रण ले लेगा। फिर भी श्री ट्रम्प के पास हमास को युद्धविराम के लिए बाध्य रखने के लिए बहुत कम प्रभाव होगा। हमास जनवरी 2025 से उनकी धमकियों के आगे डटा रहा है और इजरायल से बड़ी रियायत के बिना बंधकों को रिहा नहीं किया है। अब जब इसने राजनीतिक लाभ उठा लिया है, तो यह अधिक दृढ़ता से कार्य करेगा और निरस्त्रीकरण का विरोध करेगा। कतर और तुर्की ने हमास को इस समझौते के लिए मजबूर किया क्योंकि दोनों गाजा के पुनर्निर्माण में प्रभाव की तलाश करते हुए श्री ट्रम्प को खुश करना चाहते हैं। हमास कितने समय तक उनका ऋणी रहेगा, यह एक महत्वपूर्ण सवाल है।

आने वाले सप्ताहों में यह प्रश्न उठेगा।

एक अजीब विरोधाभास इसलिए, जो उभर रहा है वह एक अजीब विरोधाभास है: श्री ट्रम्प इज़राइल पर नियंत्रण रखते प्रतीत होते हैं, लेकिन हमास पर बहुत कम। इज़राइली सरकार, सैन्य रूप से श्रेष्ठ होने के बावजूद, राजनीतिक रूप से घिरी हुई है - अपनी रणनीतिक सुरक्षा बनाए रखने के लिए वाशिंगटन की रणनीति पर चलने के लिए मजबूर है। हमास, सैन्य रूप से कमज़ोर होने के बावजूद, वैचारिक रूप से अधिक स्वतंत्र और कम निर्भर है। श्री ट्रम्प, सैन्य रूप से कमज़ोर होने के बावजूद, वैचारिक रूप से अधिक स्वतंत्र और कम निर्भर है। ट्रम्प की धमकियों और लेन-देन पर आधारित सशक्त कूटनीति की शैली अस्थायी शांति तो ला सकती है, लेकिन इससे क्षेत्र में दीर्घकालिक असंतोष पैदा होने का खतरा है।

श्री नेतन्याहू के लिए यह क्षण अपमानजनक भी है और उपयोगी भी। यह उन्हें युद्ध की विफलताओं पर घरेलू गुस्से को शांत करते हुए शांति का भार श्री ट्रम्प पर डालने का अवसर देता है।

फिर भी, यह इस बात को भी उजागर करता है कि कैसे इज़राइल की संप्रभुता अमेरिकी राजनीति से जुड़ी हुई है — एक ऐसी कमज़ोरी जो अमेरिकी चुनावों के नज़दीक आने के साथ और गहरी होती जाएगी। इसके विपरीत, हमास और उसके समर्थक विदेशी हुक्मों के आगे इज़राइल के समर्पण का फ़ायदा उठाएँगे।

अंततः, श्री ट्रम्प की सौदेबाज़ी कूटनीति विराम लगाने में तो कामयाब हो सकती है, लेकिन शांति नहीं। इज़राइल और हमास के बीच शक्ति का असंतुलन अकेले अमेरिकी कमान से हल नहीं हो सकता।

गाजा में स्थिरता के लिए कुछ ऐसा अपेक्षित है जो श्री ट्रम्प को करना होगा। ट्रम्प का विश्व दृष्टिकोण संयम, सुलह और क्षेत्रीय स्वामित्व को शायद ही कभी समायोजित करता है। और जबकि श्री ट्रम्प को एक सौदागर की छवि प्राप्त है, उन्हें जल्द ही पता चल सकता है कि पश्चिम एशिया में, कैमरे के हटते ही सबसे अच्छे "सौदे" भी विफल हो जाते हैं।

द टटर्सटूदएडिटर

दुर्घटनाओं को रोकना

सड़क दुर्घटनाओं के बारे में पढ़कर दुख हुआ।

तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और राजस्थान (4 नवंबर)।

इन दुर्घटनाओं से हमारी जनता की आँखें खुल जानी चाहिए प्रतिनिधि। राजमार्ग, जिन्हें कभी विकास का प्रतीक माना जाता था, अक्सर मौत का जाल बन जाते हैं। तेज़ गति से वाहन चलाने को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और जुर्माना लगाया जाना चाहिए तथा निगरानी के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए जाने चाहिए। राजमार्गों पर सुरक्षा को टोल वसूली से ज़्यादा प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

Kshirasagara Balaji Rao
हैदराबाद

के पास ट्रेन की टक्कर छत्तीसगढ़ का बिलासपुर रेलवे स्टेशन सुरक्षा उपायों की कमी को उजागर करता है। रेल मंत्रालय और अधिकारियों को इसकी ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए, क्योंकि उनका ध्यान सिर्फ़ सुरक्षा उपायों पर है। आधुनिकीकरण और नई ट्रेनें शुरू करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सुरक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, लेकिन दुख की बात है कि इन भयावह दुर्घटनाओं के बावजूद, इस पर कभी ध्यान नहीं दिया जाता।

Balasubramaniam Pavani
सिकंदराबाद

letters@thehindu.co.in पर भेजे गए पत्रों में पूरा डाक पता और पूरा नाम या नाम के साथ प्रारंभिक अक्षर अवश्य होने चाहिए।

राष्ट्रीय सहारा
पटना। बुधवार • 5 नवंबर • 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

इस विश्व में स्वर्ण, गाय और पृथ्वी का दान देने वाले सुलभ हैं, लेकिन प्राणियों को अभयदान देने वाले इंसान दुर्लभ हैं।

-भर्तृहरि

रोमानिया 30 हजार भारतीयों को देगा रोजगार के अवसर

वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद भारत और रोमानिया के बीच आर्थिक सहयोग के लिए संयुक्त समिति (जेसीईसी) की 19वीं बैठक में भाग लेने के लिए रोमानिया सरकार के निमंत्रण पर बुखारेस्ट की आधिकारिक यात्रा पर है।

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद का रोमानिया दौरा

हेनरी कोआंडा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आगमन पर, मंत्री का स्वागत अर्थव्यवस्था, डिजिटलीकरण, उद्यमिता और पर्यटन मंत्रालय के राज्य सचिव श्री गेब्रियल बोगदान स्टेको और विदेश व्यापार विभाग, ऋक्षक्कके प्रबंध निदेशक श्री सोरिन मिहाई टोडर ने किया।

यात्रा के दौरान मंत्री ने श्रम, परिवार, युवा और सामाजिक एकता मंत्री महामहिम पेट्रे-फ्लोरिन मनोले के साथ कौशल-आधारित गतिशीलता पर सहयोग पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण बैठक की। श्री प्रसाद ने इस बात पर प्रकाश डाला कि एक अरब से अधिक कामकाजी आयु के लोगों और 29 वर्ष की औसत आयु के साथ, भारत 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में, भारत विकसित और विकासशील दोनों देशों के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में वैश्विक समृद्धि में योगदान देना जारी रखे हुए है। उन्होंने कहा कि तेजी से विस्तार कर रहे विनिर्माण और प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में भारत, लगभग 455 वैश्विक क्षमता केंद्रों की मेजबानी करता है और अग्रणी प्रौद्योगिकियों में भारी निवेश कर रहा है। इस संदर्भ में, उन्होंने रेखांकित किया कि विकसित हो रहे भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक परिवेश में भारत-यूरोपीय संघ का मजबूत सहयोग पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

दोनों पक्षों ने रोमानिया की लगभग 1,00,000 गैर-यूरोपीय संघ (ईयू) श्रमिकों की वार्षिक आवश्यकता पर ध्यान दिया और रोमानिया की क्षेत्रीय श्रम बाजार आवश्यकताओं के अनुरूप, प्रतिवर्ष लगभग 30,000 कुशल और आकांक्षी भारतीय पेशेवरों के लिए एक मार्ग बनाने की तत्परता व्यक्त की। मंत्रियों ने कुशल पेशेवरों के सुरक्षित, व्यवस्थित, नियमित और जिम्मेदार प्रवास को बढ़ावा देने के लिए भारत और रोमानिया के बीच एक मजबूत गतिशीलता साझेदारी बनाने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की - जिससे पारस्परिक लाभ के लिए श्रम बाजार संपर्क में वृद्धि होगी।

उन्होंने उच्च शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, थिंक टैंक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सहयोग बढ़ाकर लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करने पर भी सहमति व्यक्त की - जिसका उद्देश्य प्रतिभाओं के संचलन को बढ़ावा देना, कौशल विकास का समर्थन करना और भावी पीढ़ियों में निवेश करना है।

चर्चाओं में भर्ती, भाषा और व्यावसायिक प्रशिक्षण, मानकीकृत रोजगार अनुबंधों और नियोक्ता दायित्वों में सहयोग के साथ-साथ सत्यापित नियोक्ताओं के लिए त्वरित प्रक्रिया पर चर्चा हुई। दोनों पक्षों ने अधिकारियों को योग्यताओं की पारस्परिक मान्यता की संभावना तलाशने का काम सौंपा। सामाजिक सुरक्षा निश्चितता के महत्व को स्वीकार करते हुए, उन्होंने एक समग्रीकरण (सामाजिक सुरक्षा) समझौते की संभावना पर भी चर्चा की।

दोनों पक्ष प्रमुख स्तंभों कौशल गतिशीलता का विस्तार, ज्ञान के आदान-प्रदान को गहन बनाना, व्यावसायिक समुदायों को शामिल करना और संस्थागत ढाँचों को सुदृढ़ बनाना में सक्षम कारकों को सक्रिय करके इस गति को आगे बढ़ाने पर सहमत हुए, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि भारत-रोमानिया साझेदारी व्यापार, प्रौद्योगिकी और लोगों के बीच सहयोग के क्षेत्र में एकीकृत, लचीली और परिणाम-उन्मुख बनी रहे।

विश्व चेतना के संत श्री गुरुनानक देव

जयंती

डा. दलबीर सिंह

सिख पंथ के प्रवर्तक श्री गुरू नानक देव जी की शिक्षाएं किसी एक समय अथवा स्थान तक सीमित नहीं, बल्कि सर्वकालिक व संपूर्ण मानवता के लिए थीं। गुरू जी ने पूरे विश्व की भलाई के लिए उपदेश दिए। श्री गुरू नानक देव जी की शिक्षाओं का उद्देश्य मानव का सपूंर्ण कायाकल्प करना और सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में सर्वपक्षीय क्रांति लाना था। उन्होंने अपनी यात्राओं के माध्यम से दूर-दूर तक जाकर अपनी विचाराधारा का प्रसार किया। उनकी वैचारिकी की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। श्री गरू नानक देव जी का जन्म कार्तिक पूर्णिमा के दिन वर्ष 1469 ई. को तलवंडी (अब पाकिस्तान) में हुआ। उन्होंने जगत के कल्याण के लिए नई विचाराधारा दी। इस विचारधारा के मूल में जो सिद्धांत है, उनमें परिश्रम करना, बांटकर खाना और प्रभु का नाम लेना प्रमुख हैं। गुरुनानक देव जी का जन्म ऐसे समय हुआ, जब अनेक पंथ, दर्शन, विचारधाराओं व सिद्धांतों के कारण साधारण मनुष्य के लिए धर्म के मर्म को समझना कठिन हो गया था। लोग जात-पात और भेदभाव की भावना से ग्रस्त हो रहे थे। तत्कालीन इस्लामी शासन ने स्थितियां और भी बिगाड़ दी थी। ऐसे समय में श्री गुरुनानक देव जी ने प्रभावपूर्ण ढंग से मानवता को धर्म के मर्म का ज्ञान करवाया। गुरु जी ने अनेक धर्म-यात्राएं की जिन्हें उदासियां कहते हैं। यात्रा पर जाने से पहले उन्होंने सुल्तानपुर लोधी में मोदीखाने में नौकरी की और यात्राओं के बाद करतारपुर में कई साल तक खेती की थी। उन्होंने भोजन तैयार करवाकर भूखे साधु-सन्तों को तृप्त कर सच्चा सौदा किया। उन्होंने लंगर परम्परा शुरू की। श्री गुरुनानक देव जी ने समूचे विश्व के कल्याण की कामना की।

555 वर्ष पूर्व उन्होंने जिन पावन उपदेशों का प्रकाश जन-जन को दिया, उससे आज भी पूरी मानवता आलौकित है। नानक की धारणा परम समर्पण की है। नानक के सात वर्ष की उम्र में पिता ने उन्हें गोपाल नामक अध्यापक के पास पढ़ने के लिए भेजा। नानक ने उनसे पूछा आप जो पढ़ा रहे हैं उससे क्या मैं परमात्मा को जान लूंगा? अध्यापक चौंक गया। उसे इस प्रश्न की आशा नहीं थी। उसने कहा और बहुत कुछ जान लोगे लेकिन परमात्मा को नहीं। नानक ने कहा मुझे वही तरीका बतायें, जिससे मैं परमात्मा को समझ सकूं। बहुत कुछ जानकर क्या करेंगे। उस एक को जानने से सब कुछ जान लिया जाता है। नानक ने फिर पूछा क्या आपने उस एक को जान लिया है? अध्यापक के पास कोई उत्तर नहीं था। वह नानक को घर पहुँचा गया और उनके पिता से कहा, माफ करें। हम इस बालक को कुछ न सिखा सकेंगे। यह पहले से ही सीखा हुआ है। यह अवतारी है। इससे हम कुछ सीख लें, वही उचित है। गुरु नानक एकेश्वरवादी थे। वे एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे का स्मरण उचित नहीं समझते थे। उन्होंने नाम स्मरण को महत्व दिया। ईश्वर के यहाँ जाति-पाति का विचार महत्वहीन है। जो भी सच्चे मन से स्मरण करेगा वही उसे पाएगा। गुरु साहिब ने मुख्य रूप से तीन शिक्षाएं दी। (1) परमात्मा का नाम जपो (2) मिल बांटकर खाओ तथा (3) ईमानदारी की कमाई करो।

कर्नाटक राज्य का हिस्सा है बिदर। यह एक छोटा शहर है तथा हैदराबाद से 110 किलोमीटर तथा गुलबर्गा से 40 किलोमीटर के फासले पर है। सिखों के प्रथम सतगुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज आज से लगभग 510 वर्ष पूर्व अपनी दूसरी उदासी (धर्म प्रचार यात्रा) अप्रैल सन 1510-1514 ई. के दौरान दक्षिण भारत के दौरे पर निकले थे। इस यात्रा के दौरान गुरु जी गुजरात, महाराष्ट्र के शहरों नांदेड़, बहावलपुर के बाद हैदराबाद तथा गोलकुण्डा में मुस्लिम पीर-फकीरों से ज्ञान चर्चा करके तथा भूले भटके लोगों का उद्धार करते हुए बिदर (कर्नाटक) आ गए। गुरु जी ने इस पथरीले इलाके के शहर के बाहर डेरा किया तथा गुरुबाणी का कीर्तन प्रारम्भ कर दिया। श्री गुरु नानक देव जी के सुरीले गले से गुरुबाणी का कीर्तन सुनकर लोग मुग्ध हो गए तथा रोज गुरु जी के पास आने लगे। धीरे-धीरे लोग दूर-दूर से गुरु साहिब के दर्शनों तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आने लगे। गुरु जी की महिमा सुनकर पीर जलालुद्दीन तथा याकूब अली भी अपने शार्गिदों के साथ गुरु साहिब का दर्शन करने के लिए आए। पीर तथा उनके शिष्यों ने पीने के पानी की समस्या के बारे में बताया कि महाराज जी! यहाँ पथरीला इलाका होने के कारण पीने के पानी की बहुत किल्लत है। कई जगह खोदाई की गयी है परन्तु पानी नहीं मिला। कुछ जगह मिला भी तो खारा पानी होने के वजह से पीने लायक नहीं है। कृपया आप हमारी इस समस्या का निदान करें। गुरु साहिब उनकी पेयजल की समस्या के बारे में सुनकर बहुत दुखी हुए। कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात गुरु साहिब ने सतिनाम-वाहेगुरु का जाप करते हुए कुछ पत्थर हटवाए तथा अपने पैर के अंगूठे से धरती पर थोड़ा दबाव बनाकर निशान लगाया तो सबने आश्चर्यचकित होकर देखा कि प्रभु कृपा से वहाँ पानी का एक फव्वारा फूट पड़ा है। एक शुद्ध, स्वच्छ तथा पीने लायक मीठे पानी का फव्वारा उठता देखकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए तथा गुरू साहिब की जय-जयकार करने लगे। यह समय अप्रैल सन 1512 ई. का था। यह स्थान जल्द ही नानक झीरा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह फव्वारा आज भी चरण-पादुका के रूप में कायम है। आज भी इस फव्वारे से ठंडे, मीठे जल का उत्प्रवाह निरन्तर जारी है। गुरु नानक देव जी महाराज की याद में इस महान स्थान पर एक सुन्दर गुरूद्वारा इमारत बनाई गयी है। इसके एक तरफ फव्वारे का जल एक सफेद संगमरमर से निर्मित बाउली साहिब में एकत्रित किया जाता है तथा दूसरी तरफ बने हुए एक विशाल सरोवर में भी इस जल का संचय किया जाता है। हजारों की संख्या में यात्री, दर्शनाभिलाषी संगतें देश-विदेशों से आकर इस अमृत कुण्ड के जल का सेवन कर तथा सरोवर में मर्यादा सहित स्नान कर तन के साथ-साथ मन की आरोग्यता भी प्राप्त करती है। मौजूदा समय में गुरूद्वारा साहिब की विशाल इमारत में यात्रियों के लिए 24 घण्टे दिन-रात गुरू का लंगर चलता रहता है। वर्ष में तीन मौकों पर-दशहरा, गुरू नानक जयन्ती तथा होला-महल्ला पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। जिसमें कि लाखों की संख्या में देशी-विदेशी यात्री संगत के रूप में दर्शनों के लिए एकत्रित होते है।

सात वर्ष की उम्र में नानक पढ़ने के लिए गये। नानक ने उनसे पूछा आप जो पढ़ा रहे हैं उससे क्या मैं परमात्मा को जान लूंगा? अध्यापक चौंक गया। उसने कहा और बहुत कुछ जान लोगे लेकिन परमात्मा को नहीं। नानक ने कहा मुझे वही तरीका बतायें, जिससे मैं परमात्मा को समझ सकूं। बहुत कुछ जानकर क्या करेंगे। उस एक को जानने से सब कुछ जान लिया जाता है। वह नानक को घर पहुँचा गया और उनके पिता से कहा, माफ करें। हम इस बालक को कुछ न सिखा सकेंगे। यह पहले से ही सीखा हुआ है। यह अवतारी है।

2030 तक एक अरब अमेरिकी डॉलर के हल्दी निर्यात का लक्ष्य

- सरकार ने 2030 तक एक अरब अमेरिकी डॉलर मूल्य के हल्दी निर्यात का लक्ष्य रखा है
- निजामाबाद (तेलंगाना) में हल्दी बोर्ड के मुख्यालय के उद्घाटन अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने यह जानकारी दी
- जानकारी के मुताबिक, हल्दी की फसल की गुणवत्ता में सुधार, अनुसंधान और हल्दी किसानों की आय में सुधार के लिए सरकार ने 200 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं

(मीडिया इनपुट्स)

केजरीवाल के 'शीशमहल' को लेकर भाजपा के हो-हल्ले और दोहरेपन की कलई खुल चुकी है। मुखर भक्तों ने चुप्पी अख्तियार कर ली है। इस बीच दिल्ली के नागरिकों के हालात नहीं बदले हैं। भयावह ही हुए जा रहे हैं।

स्वाति चतुर्वेदी, पत्रकार
@bainjal

हमारी ताकत — संत राजिन्दर

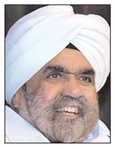

हम अत्यंत खुशनसीब हैं कि हमारी आत्मा को मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है। यदि हम दूसरी योनियों की ओर नजर करें तो हम देखेंगे कि उनका जीवन कितना मुश्किल होता है? उन्हें प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए आश्रय ढूंढना पड़ता है। इसके अलावा वे हमेशा शिकारियों के भय से सहमे रहते हैं। हालांकि अनेक लोग पालतू जानवरों से परिवार के एक सदस्य के रूप में पेश आते हैं लेकिन फिर भी पालतू जानवर उनके गुलाम ही होते हैं। जानवर या पशु-पक्षी कभी सोच नहीं सकते कि वे कौन हैं? यहां क्यों आए हैं? और कहां जा रहे हैं? हम भाग्यशाली हैं कि हम इंसान के रूप में पैदा हुए हैं, जिसमें हम स्वयं को जान सकते हैं, और समझ सकते हैं कि हमें प्रभु ने यहां क्यों भेजा है? मनुष्य शरीर में आना बड़ी बरकत है क्योंकि इसी में हम अपने आपको जान सकते हैं और पिता-परमेश्वर को पा सकते हैं। इसके लिए हमें प्रभु का हमेशा शुक्राना अदा करना चाहिए। हममें से ऐसे कितने लोग हैं जो मनुष्य शरीर को पाने और अपनी अच्छी सेहत के लिए प्रभु का शुक्राना अदा करते हैं? जब हम किसी गंभीर बीमारी की चपेट में आ जाते हैं या किसी दुर्घटना से ग्रस्त हो जाते हैं, तब हमें बहुत ही ज्यादा पीड़ा होती है। तो उस वक्त हम प्रभु से बड़े ही जोर-शोर से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी पीड़ा को दूर कर हमें स्वस्थ कर दें। प्रभु की अपार दयामेहर से जब हमारी बीमारी या पीड़ा का अंत हो जाता है, तब हम भले ही एक बार हे प्रभु! आपका धन्यवाद जैसे शब्द बोलते हैं लेकिन जब हम सेहतमंद होते हैं, तो हम प्रभु का शुक्राना अदा नहीं करते। कई बार हमारे जीवन में कुछ आकस्मिक अप्रिय घटित हो जाता है जैसे कि यदि हमारे पास पच्चीस वर्ष से कोई नौकरी थी लेकिन जब एक बार हम कंपनी में छंटाई की वजह से हटा दिए जाते हैं तो हम कहते हैं कि प्रभु है ही नहीं। चाहे प्रभु ने हमें जीवन में कितना भी दिया हो, यदि एक बार कुछ बिगड़ जाता है तो हम प्रभु को ही दोष देते हैं। क्या हमने कभी सोचा है कि जब हम ऐसा करते हैं तो प्रभु को कैसा महसूस होता होगा? प्रभु का प्रेम और आशीर्वाद ही हमारी सारी समस्याओं का अंत कर सकता है। यदि हमें यह अनुभव हो जाए कि प्रभु हमेशा हमारे साथ हैं, तब यही भावना हमें ताकत और साहस देगी।

रीडर्स मेल

शासन-प्रशासन की अच्छी पहल

भारतीय समाज में विभिन्न धर्मों के लोगों का समावेश है। वे सर्व धर्म समभाव की दृष्टि से मानवता का संदेश देते हैं। मोहर्रम पर हर साल कहीं न कहीं कुछ अप्रिय घटना हो ही जाती है, इसी को मद्देनजर कोई अप्रिय घटना न हो, इसके लिए प्रशासन का सख्त होना बहुत जरूरी है। प्रशासन की अच्छी पहल है कि थाना स्तर पर बैठक कर लोगों को शांतिपूर्ण तरीके से मोहर्रम मनाने की अपील की गई है। साथ ही, मोहर्रम के जुलूस निकालने के लिए लाइसेंस अनिवार्य किया गया है, डीजे एवं हथियार पर प्रतिबंध लगाया गया है। जुलूस में जो सम्मिलित होंगे उन्हें स्थानीय थाना पर परिचय पत्र जमा करना होगा। किस रास्ते से जुलूस निकालेंगे इसका ब्योरा प्रशासन को देना होगा। सभी लोगों को चाहिए कि प्रशासन के निर्देशों का पालन करके इस मुहर्रम के जुलूस को शांतिपूर्ण बनाएं। किसी भी प्रकार के सोशल मीडिया की अफवाह का शिकार ना बनें एवं इस प्रकार की कोई बात होती है तो तत्काल स्थानीय प्रशासन को सूचित करें।

एस कुमार, वैशाली, बिहार

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

दो हेलमेट खरीदना अनिवार्य हो

पुलिस प्रशासन चाहे कितना ही जुर्माना लगाए और सख्ती बरते लेकिन लोग सड़क सुरक्षा नियम-कायदे और दिशा-निर्देश का पालन नहीं करते। अक्सर इसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है। हापुड़ में एक टैंकर से टक्कर के बाद मोटरसाइकिल सवार एक व्यक्ति एवं चार बच्चों की मौत बेहद दुखद घटना है। देश में ऐसी सैकड़ों दुर्घटना होती हैं, जहां लोग रोड सेफ्टी कानून का पालन नहीं करते। हमें समझना होगा कि मोटरसाइकिल केवल दो व्यक्तियों के लिए है। हापुड़ का घटनाक्रम हम सभी के लिए एक सबक है कि हम अकारण परिवार को मृत्यु का ग्रास न बनने दें। स्कूटर/मोटरसाइकिल सवार सावधानी बरतें और नियमों का पालन करें। अक्सर हमारे युवा धार्मिक जुलूस के समय सड़क पर मोटरसाइकिल से स्टंट करते हैं, जिसके कारण निर्दोष लोग भी मारे जाते हैं। देश में ऐसा कानून आना चाहिए जिसमें दोपहिया खरीदते समय दो हेलमेट खरीदना अनिवार्य हो।

वीरेन्द्र कुमार, हापुड़

केवल सत्ता से नहीं बनेगी बात

1979 की इस्लामी क्रांति के बाद ईरान ने खुद को केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि एक वैचारिक ध्रुव के रूप में प्रस्तुत किया-जहां शिया पहचान को धार्मिक आस्था से आगे बढ़ा कर राजनीतिक शक्ति में बदलने का प्रयास हुआ। इस वैचारिक ध्रुवीकरण ने पश्चिम एशिया की शक्ति-संरचना को गहराई से प्रभावित किया और सऊदी अरब जैसे सुन्नी प्रभावी देशों से वैचारिक टकराव को जन्म दिया। हाल में इस्राइल के साथ प्रत्यक्ष टकराव, अमेरिकी प्रतिबंधों की पुनरावृत्ति और वैश्विक मंच पर अलगाव ने ईरान को और अधिक आक्रामक रणनीति की ओर ढकेला। शिया-सुन्नी एकता की जो कल्पना ईरान प्रस्तुत कर रहा है, वह विश्वास से अधिक संदेह को जन्म देती है। यदि ईरान को वास्तव में क्षेत्रीय स्थायित्व और व्यापक स्वीकार्यता प्राप्त करनी है, तो उसे आंतरिक सहिष्णुता, अल्पसंख्यक अधिकारों की रक्षा और लोकतांत्रिक संवाद की पुनर्स्थापना करनी होगी। केवल सत्ता और रणनीति के सहारे धार्मिक एकता संभव नहीं।

अवनीश गुप्ता, ई मेल से

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

योजना व समन्वय से संभव हुआ यूरिया की पर्याप्त उपलब्धता

किसानों के लिए खरीफ 2025 के दौरान यूरिया की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित उर्वरक विभाग की समयबद्ध योजना और समन्वय से संभव हुआ कार्य भारत सरकार के उर्वरक विभाग ने खरीफ 2025 सीजन के दौरान पूरे देश में उर्वरकों, विशेषकर यूरिया, की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की है। समय पर की गई योजना और भारतीय रेल, बंदरगाहों, राज्य सरकारों एवं उर्वरक कंपनियों के साथ घनिष्ठ समन्वय के माध्यम से सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि किसानों को यूरिया की कोई कमी न झेलनी पड़े।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा खरीफ 2025 के लिए 185.39 लाख मीट्रिक टन यूरिया की आवश्यकता का अनुमान लगाया गया था, जबकि उर्वरक विभाग द्वारा 230.53 लाख मीट्रिक टन उपलब्ध कराया गया, जो कि 193.20 लाख मीट्रिक टन की बिक्री से कहीं अधिक था। यह पूरे देश में यूरिया की पर्याप्त उपलब्धता को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि खरीफ 2024 की तुलना में खरीफ 2025 में किसानों द्वारा लगभग 4.08 लाख मीट्रिक टन अधिक यूरिया का उपयोग किया गया, जो अच्छी वर्षा और बढ़े हुए फसल क्षेत्र के कारण बेहतर उपलब्धता का संकेत देता है।

घरेलू उत्पादन और खपत के बीच अंतर को पाटने के लिए सरकार ने आयात बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया। अप्रैल से अक्टूबर 2025 के बीच भारत ने 58.62 लाख मीट्रिक टन कृषि-ग्रेड यूरिया का आयात किया, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह 24.76 लाख मीट्रिक टन था। इस वृद्धि ने खरीफ 2025 की बढ़ी मांग को पूरा करने के साथ-साथ आगामी रबी सीजन के लिए पर्याप्त बफर स्टॉक भी तैयार किया।

परिणामस्वरूप, देश में यूरिया का कुल भंडार 1 अक्टूबर 2025 को 48.64 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 31 अक्टूबर 2025 तक 68.85 लाख मीट्रिक टन हो गया यानी 20.21 लाख मीट्रिक टन की वृद्धि दर्ज की गई। जुलाई से अक्टूबर 2025 के बीच राज्यों को रिकॉर्ड स्तर पर यूरिया की आपूर्ति की गई, जो सरकार की सक्रिय नीति को दर्शाता है।

घरेलू उत्पादन में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। अक्टूबर 2025 में 26.88 लाख मीट्रिक टन यूरिया का उत्पादन हुआ, जो पिछले वर्ष की तुलना में 1.05 लाख मीट्रिक टन अधिक है। अप्रैल से अक्टूबर 2025 के बीच औसत मासिक उत्पादन लगभग 25 लाख मीट्रिक टन रहा। नवंबर और दिसंबर के लिए 17.5 लाख मीट्रिक टन के अतिरिक्त आयात की योजना पहले से ही बनाई जा चुकी है।

देश में घरेलू उत्पादन क्षमता बढ़ाने के प्रयास भी जारी है। नमरूप (असम) और तालचर (ओडिशा) में प्रत्येक की 12.7 लाख मीट्रिक टन वार्षिक क्षमता वाली दो नई यूरिया इकाइयाँ निर्माणाधीन हैं। इसके अलावा, उत्पादन क्षमता बढ़ाने हेतु कई प्रस्तावों पर विचार चल रहा है। ये परियोजनाएँ स्वीकृत होने पर भारत की आयात निर्भरता को काफी हद तक कम करेंगी और देश को यूरिया उत्पादन में आत्मनिर्भरता (आत्मनिर्भर भारत) की दिशा में आगे बढ़ाएंगी।

राज्यों के कृषि विभागों के साथ मिलकर उर्वरक विभाग लगातार वितरण प्रणाली में सुधार, अवैध भंडारण, तस्करी और काला बाजारी पर नियंत्रण हेतु कार्य कर रहा है। कई राज्यों ने पारदर्शिता और निगरानी बढ़ाने के लिए नवाचार तकनीकी उपकरणों का उपयोग शुरू किया है।

समयबद्ध योजना, कुशल लॉजिस्टिक्स और समन्वित कार्रवाई के माध्यम से सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि देश का प्रत्येक किसान समय पर यूरिया प्राप्त कर सके, जिससे भारत की कृषि प्रगति और खाद्य सुरक्षा को निरंतर बल मिलता रहे।

राष्ट्रीय सहारा • राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड प्रेस, मौजा-दरियापुर, पुलिस स्टेशन-शाहपुर, दानापुर, पटना से मुद्रित तथा चतुर्थ तल, सहारा इण्डिया विहार, बोरिंग रोड क्रासिंग, पटना से प्रकाशित। । स्थानीय संपादक - संजय त्रिपाठी *।
पटना कार्यालय- 3911448/417/454/422, फैक्स : 2535935,2520760 विज्ञापन-3911455/434, प्रसार- 3911451/428
वर्ष - 20, अंक 6822
आर.एन.आई. सं. -बीआईएचएचआईएन/2006/18082 Postal Reg. No. : R-10/NP-50/06-07
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु उत्तरदायी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.com

दुनिया में हथियारों की होड़

जहां हथियारों की दौड़ शुरू होती है वहां अक्सर युद्ध होते हैं। यद्यपि महाशक्तियां परमाणु हथियारों को विनाश के शस्त्र मानती हैं। इसके बावजूद कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं। यूरोप और दुनियाभर में नए उपनिवेशों पर प्रभुत्व की होड़ ने 19वीं सदी की हथियारों की होड़ के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा की थीं। हथियारों की भारी वृद्धि के कारण ही दुनियाभर में असुरक्षा और भय की भावना पैदा हो गई। इन सब ने ही युद्ध को अपरिहार्य बना दिया। ज्यादा हथियार देशों को युद्ध की ओर ही ले जाते हैं। अगर एक तरफ हथियार हैं तो दूसरी तरफ भी हथियार ही होंगे। कौन नहीं जानता कि महाशक्ति अमेरिका और कभी अविभाजित रूस (सोवियत संघ) ने शीत युद्ध के दौरान परमाणु और पारम्परिक हथियारों का भंडार जमा कर लिया था। मौजूदा दौर में एक बार फिर विनाशकारी हथियारों की दौड़ शुरू हो चुकी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नए दावे ने न केवल दुनिया को चौंका दिया है, बल्कि खुद परमाणु परीक्षण शुरू करने का ऐलान कर एक नई चिंता पैदा कर दी है।

ट्रंप ने दावा किया है कि पाकिस्तान, चीन, रूस, उत्तर कोरिया चोरी-छिपे परमाणु बमों का परीक्षण कर रहे हैं। इसलिए यह जरूरी हो गया है कि अमेरिका भी परमाणु परीक्षण करे। हैरानी की बात तो यह है कि ट्रंप कई युद्ध रुकवाने का दावा कर नोबेल शांति पुरस्कार मांग रहे थे लेकिन अब उन्होंने एक दम से कलाबाजी खाकर अपने रक्षा विभाग को परमाणु परीक्षण करने का आदेश दे दिया है। अमेरिका 33 वर्ष के बाद परमाणु परीक्षण की दौड़ में शामिल हो रहा है। परमाणु बम बनाने की होड़ को खत्म करने के मकसद से 1996 में तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने परमाणु परीक्षणों पर रोक लगा दी थी। ट्रंप के दावों में कितना सच है और कितना झूठ यह कहना मुश्किल है लेकिन इसमें कोई दोराय नहीं कि आज कई देश हथियारों की दौड़ और बढ़ते सैन्य खर्च में लगे हुए हैं। रूस- यूक्रेन युद्ध अभी भी जारी है। इजराइल-हमास की लड़ाई संघर्ष विराम के बावजूद खत्म होने का नाम नहीं ले रही। हजारों लोग मर रहे हैं। लाखों लोग बेघर हो चुके हैं। महिलाएं और बच्चे युद्धों से सर्वाधिक पीड़ित हैं। जो स्थिति दिखाई पड़ रही है उससे स्पष्ट है कि सभ्य कही जाने वाली दुनिया मानवता के हक में शांति का रास्ता कैसे चुन सकेगी।

> **आज युद्धों का स्वरूप बदल गया है। एक के बाद एक विनाशकारी हथियार तैयार किए जा रहे हैं। रूस ने पिछले हफ्ते ही एक परमाणु संचालित क्रूज मिसाइल और एक परमाणु संचालित टारपीडो का परीक्षण किया था। चीन भी लगातार मिसाइलों का परीक्षण कर रहा है। अमेरिका ने ही 1945 में 20 किलो टन के परमाणु बम के परीक्षण के साथ परमाणु युग की शुरूआत की थी और अगस्त 1945 में जापान के हीरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराकर दूसरे विश्व युद्ध में जापान को हरा दिया था।**

हर दौर में हुए युद्ध और उनके नतीजों ने यह साबित किया है कि यह किसी समस्या का समाधान नहीं है, बल्कि खुद ही एक समस्या है। शायद ही कोई सिद्धांत रूप में युद्ध का समर्थन करता दिखे लेकिन बहाने अलग-अलग भले हों, उनकी आड़ में ज्यादातर देश अपने रक्षा खर्च को ऊंचा रखते हैं, दूसरे देशों की ओर से खतरा बता कर उसमें भारी बढ़ौतरी को जरूरी बताते हैं। उसके बाद शुरू होता है हथियारों की खरीद का सिलसिला, जो देशहित के अन्य बेहद जरूरी मसलों की कीमत पर होता है। इसमें कोई दोराय नहीं कि देश की रक्षा सबसे जरूरी मसला होना चाहिए, मगर यह हैरानी की बात है कि ज्यादा सभ्य, शांत और विकसित होने का दावा करते ऐसे कई देश हैं, जो शांति के लिए ठोस पहलकदमी करने के बजाय युद्ध में इस्तेमाल होने वाले घातक हथियारों की खरीद-फरोख्त में लगे रहते हैं। सवाल है कि अगर बड़े पैमाने पर व्यापक जनसंहार के हथियार खरीदे या निर्मित किए जाते हैं तो आखिर उनका इस्तेमाल क्या होगा और उसके नतीजे क्या सामने आएंगे। अगर हम सभी 9 परमाणु शक्तियों के पास मौजूद परमाणु बमों की संख्या को देखें तो आंकड़े डरावने हैं। सबसे ज्यादा परमाणु बम रशिया के पास हैं, उसके पास 5 हजार 459 परमाणु बम हैं। दूसरे नंबर पर अमेरिका है जिसके पास 5 हजार 177 परमाणु बम हैं। 600 परमाणु बमों के साथ तीसरे नंबर पर चीन है और इसके बाद चौथे नंबर पर फ्रांस है जिसके पास 290, यूके के पास 225, भारत के पास 180, पाकिस्तान के पास 170, इजराइल के पास 90 और उत्तर कोरिया के पास 50 परमाणु बम हैं।

आज युद्धों का स्वरूप बदल गया है। एक के बाद एक विनाशकारी हथियार तैयार किए जा रहे हैं। रूस ने पिछले हफ्ते ही एक परमाणु संचालित क्रूज मिसाइल और एक परमाणु संचालित टारपीडो का परीक्षण किया था। चीन भी लगातार मिसाइलों का परीक्षण कर रहा है। अमेरिका ने ही 1945 में 20 किलो टन के परमाणु बम के परीक्षण के साथ परमाणु युग की शुरूआत की थी और अगस्त 1945 में जापान के हीरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराकर दूसरे विश्व युद्ध में जापान को हरा दिया था। जहां तक भारत का संबंध है। 1998 के बाद से ही भारत ने कोई परमाणु परीक्षण नहीं किया है। भारत परमाणु निरस्त्रीकरण का प्रबल समर्थक रहा है। सारी दुनिया जानती है कि पाकिस्तान का परमाणु बम चोरी का परमाणु बम था। पाकिस्तान हमेशा भारत को परमाणु बम की धमकियां देता रहता है। पाकिस्तान की नीति यह है कि अगर उसे अपनी सुरक्षा पर खतरा महसूस हो तो वह पहले परमाणु बम का इस्तेमाल कर सकता है। भारत की नीति यह है कि वह पहले परमाणु हथियारों का इस्तेमाल नहीं करेगा। महाशक्तियों ने परमाणु हथियार बनाने के अपने अधिकार तो सुरक्षित रखे लेकिन दूसरे देशों को परमाणु परीक्षण करने से रोका। अगर अमेरिका परमाणु परीक्षण करता है तो अन्य देश भी अपनी सुरक्षा हित में ऐसा कर सकते हैं। भारत के पड़ोसी चीन और पाकिस्तान परमाणु परीक्षण करते हैं तो भारत के लिए भी यह जरूरी होगा कि वह भी अपनी तैयारी पूरी करे। मौजूदा दौर में हथियारों की दौड़ दुनिया को खतरनाक बना देगी।

दुनिया को परिवार बनाते हैं...

"जीवन में कुछ बुरे हालात तुम्हें बेहतर बनाते हैं,
शिकायतों के इस दौर में हम अगर किसी के गिले शिकवे मिटाते हैं,,
खुद की बेहतरी के साथ समाज का भी कल्याण चाहते हैं,
ऐसे समाज और देश ही तो इस दुनिया को एक परिवार बनाते हैं...!!"

गीता पाढा

ट्रंप का एशिया दौरा, निशाने पर भारत

प्रभु चावला
एडिटोरियल डायरेक्टर
द न्यू इंडियन एक्सप्रेस
newindianexpress.com

आसियान के मंच पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एक कद्दावर व्यक्ति की तरह पहुंचे, फिर जोश में अपनी मुट्ठियां लहराते हुए वह पारंपरिक नर्तकों की टोली में शामिल हो गये। इस तरह कुआलालंपुर में अपने रूटीन आगमन को उन्होंने अमेरिकी धूम-धड़ाके में तब्दील कर दिया, जिसके दृश्य एक से दूसरे महादेश तक वायरल हुए, जो इलाका लंबे समय से जटिल वैश्विक ताकतों के असर से प्रभावित है, वहां ट्रंप का व्यवहार पछतावे की भावना से रहित एक वर्चस्ववादी की तरह का था। मलेशिया, जापान और दक्षिण कोरिया के उनके तूफानी दौरे का कारण दोस्तों व शत्रुओं को अपनी शर्तें मनवाने की मंशा से आयोजित था। अपनी यात्रा के जरिये उन्होंने एकध्रुवीय विश्व का संदेश दिया, जहां अमेरिका ही वैश्विक व्यापार, सुरक्षा और असर तय करता है।

कंबोडिया और थाईलैंड के बीच ऐतिहासिक शांति समझौते का गवाह बनते हुए उन्होंने खुद को एक ऐसे शांतिदूत के रूप में पेश किया जिसने दशकों पुराने सीमा विवाद का हल निकाला है। 'यह बहुत बड़ा कदम है, दूसरा कोई यह काम नहीं कर सकता था', ट्रंप ने कहा, यह उनका एक ऐसा दांव था जिससे न सिर्फ दक्षिण पूर्व एशिया के सीमांत में स्थिरता की गारंटी बनी, बल्कि अमेरिकी कंपनियां भी अब यहां के संसाधनों का अबाध दोहन कर सकेंगी। मलेशियाई प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम से गलबहियां के साथ ट्रंप ने वहां के उद्यमियों से अमेरिकी बुनियादी ढांचों और टेक कंपनियों में 70 अरब डॉलर के निवेश का आश्वासन भी हासिल किया। इससे जहां अमेरिका में अतिरिक्त रोजगार सृजन होगा, वहीं कुआलालंपुर भी वाशिंगटन से जुड़ा रहेगा।

टोक्यो में ट्रंप ने जापान की पहली महिला प्रधानमंत्री से द्विपक्षीय वार्ता की तथा रक्षा संबंध मजबूत करने का दबाव भी डाला, वहां संवाददाताओं से बातचीत में ट्रंप ने आदतन शेखी बघारते हुए कहा, 'जापान हमारा बेहद उपयोगी साझेदार है लेकिन हम न्यायपूर्ण समझौता करना चाहते हैं, किसी को अनुचित लाभ नहीं दे सकते', ट्रंप के एशिया दौरे का चरम दक्षिण कोरिया में दिखा, जहां चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात करने के बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, 'हम दोनों के बीच शानदार बातचीत हुई- चीन ताकत का महत्व समझता है।' उन्होंने एक फ्रेमवर्क एग्रीमेंट का भी खुलासा किया, जिसके तहत चीन द्वारा बौद्धिक संपदा और अपने बाजार तक पहुंच देने के वादे के बदले अमेरिका ने चीनी वस्तुओं पर 100 फीसदी टैरिफ लगाने की धमकी वापस ली है।

बाद में उन्होंने दक्षिण कोरिया के साथ 18.8 अरब डॉलर के अमेरिकी निर्यात का समझौता किया, वहां उनका जोर शांति स्थापना और परमाणु मुक्त होने पर था लेकिन शांति के पुजारी होने का उनका दावा तब खोखला लगा जब उन्होंने घरेलू नीति में आक्रामकता का परिचय दिया। युद्ध रोकने व वैश्विक स्थिरता स्थापित करने के दावों के बीच ट्रंप ने जब दशकों से जारी प्रतिबंध के बीच अमेरिका द्वारा परमाणु परीक्षण करने की बात कही तो यह उनके व्यक्तित्व के विरोधाभास के बारे में बताता था। आलोचकों का मानना है कि ट्रंप का यह दौरा एशिया में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कद को कमतर करने की रणनीतिक कोशिश थी।

मोदी ग्लोबल साउथ की एक ताकतवर आवाज हैं जो बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की बात करते हैं। जी-20 जैसे मंचों के जरिये वह पश्चिमी देशों की वर्चस्ववादी प्रवृत्ति के खिलाफ विकासशील देशों के पक्ष में मजबूती से खड़े हैं।

रूस और यूक्रेन के तनावों के बीच अपने निरपेक्ष रवैये से पश्चिमी टेक कंपनियों का निवेश आकर्षित कर भारत ने खुद को एक लचीले राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है, जिसकी तेजी से आगे बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था दुनिया में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। व्यक्तिगत अहंकार से प्रेरित ट्रंप की यह यात्रा दरअसल मोदी के इस उभार को रोकने की मंशा से थी और नई दिल्ली को नजरअंदाज कर भारत के पड़ोसियों व प्रतिद्वंद्वियों से संवाद करने के उनके इरादे को बताती थी। मोदी को 'गहरे दोस्त' और 'सख्त आदमी' कह कर ट्रंप मोदी को संकट में डालने का काम कर रहे थे। अपने एशिया दौरे में ट्रंप ने दक्षिण कोरिया और जापान पर टैरिफ में कमी की। उन्होंने ऐसे समझौते किये जिससे ऑटोमोबाइल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स पर लगे दबाव कम हुए। चरणबद्ध कटौती के जरिये उन्होंने चीन के साथ रिश्ते में नरमी बरतने का भी संकेत दिया, पर भारत को ऐसी कोई राहत नहीं मिली।

भारतीय इस्पात, एल्युमीनियम और टेक्सटाइल्स पर लगे टैरिफ पहले जितने ही ऊंचे हैं। टोक्यो में ट्रंप ने कहा, 'भारत एक महान देश है, पर उसने हमें भारी चोट पहुंचाई है, इसलिए हमने भी करारा जवाब दिया'। ट्रंप की यह टिप्पणी उनकी हालिया नीति के अनुरूप ही है, जिसके तहत भारत की निर्यात महत्वाकांक्षा को दंडित किया गया है, जबकि दूसरे देशों को पुरस्कृत किया जा रहा है। ट्रंप का यह पक्षपाती आचरण दक्षिण पूर्व एशिया में भी दिखा, जहां उन्होंने अमेरिकी निर्यातों पर शुल्क छूट के बदले मलेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया और वियतनाम के साथ व्यापार ढांचे की घोषणा की। ट्रंप ने जानबूझकर भारत को इससे अलग ही नहीं रखा, बल्कि दक्षिण चीन सागर विवाद के संदर्भ में वियतनाम से वाशिंगटन की नजदीकी भारत को घेरने की अमेरिकी रणनीति के बारे में ही बताती है। ट्रंप उन देशों से बेहतर रिश्ते बना रहे हैं जो भारत के उभार से चिंतित हैं। एशियाई देशों में हुआ उनका भव्य स्वागत अमेरिकी शक्ति के प्रति महादेश के आकर्षण के बारे में ही बताता है।

ट्रंप का यह दौरा क्या भारत को अलग-थलग करने के उद्देश्य से आयोजित था जो अपनी आबादी की ताकत और नवाचार से लगातार आर्थिक ऊंचाइयों पर पहुंच रहा है? मोदी को कमतर करने की कोशिश में ट्रंप ज्यादा ही जोखिम ले रहे हैं। डिजिटल क्रांति और हरित ऊर्जा के क्षेत्र में ऊंची छलांगें लगा रहा भारत निषेध, प्रतिबंध या रोकथाम की परवाह नहीं करता। भारत की साझेदारी मॉस्को से वाशिंगटन तक विस्तृत है, ऐसे में इसका कद छोटा करने की कोशिश भ्रामक है। ट्रंप अपनी मनमानी शैली जारी रखने के लिए स्वतंत्र हैं, पर विश्व में सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था को अलग-थलग करने की कोशिश में उन्हें झटका लग सकता है।

बहुध्रुवीय विश्व का जो सूर्य उग रहा है, मोदी उसके अग्रदूत हैं। लिहाजा ग्लोबल साउथ के उभार के बीच ट्रंप के एकध्रुवीय विश्व का सपना टूट और बिखर सकता है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं।)

मानवता को समर्पित-गुरु नानक देव जी

आज प्रकाश पर्व पर विशेष

प्रतिवर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा को सिख धर्म के आदि संस्थापक, आध्यात्मिक क्रांति के अग्रदूत और मानवता के अमर संदेशवाहक गुरु नानक देव के जन्म दिवस को 'गुरु नानक जयंती' अथवा 'प्रकाश पर्व' के रूप में श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष 5 नवम्बर को 556वां प्रकाश पर्व मनाया जा रहा है। यह दिन केवल किसी महापुरुष के जन्म का स्मरण मात्र नहीं बल्कि एक ऐसे युगपुरुष के आदर्शों का उत्सव है, जिन्होंने अपने जीवन और उपदेशों से संसार को समानता, सत्य, करुणा और एकत्व का अद्वितीय संदेश दिया। गुरु नानक बचपन से ही असाधारण प्रतिभा और गहन आध्यात्मिक चिंतन के धनी थे। जब वे मात्र पांच वर्ष के थे, तब ही उन्हें धार्मिक चर्चाओं और कीर्तन में गहरी रुचि हो गई थी। उनके जीवन में कभी भी दिखावा या पाखंड को स्थान नहीं मिला। वे हर कार्य के मूल में सत्य और यथार्थ की खोज करते थे।

नौ वर्ष की आयु में जब उनके पिता कालूचंद खत्री ने यज्ञोपवीत संस्कार हेतु पुरोहित बुलाया, तब नानक ने बड़े विनम्र परन्तु गूढ़ प्रश्न पूछे, 'क्या यह सूत का जनेऊ मनुष्य को मोक्ष दिला सकता है? जब शरीर नश्वर है, तो यह धागा भी शरीर के साथ नष्ट हो जाएगा, फिर यह कैसे आत्मा के साथ जा सकता है?' उनके इन शब्दों ने उपस्थित जनों को सोचने पर विवश कर दिया। वे तभी से अंधविश्वास और बाह्य आडम्बरों के प्रखर विरोधी बन गए थे। गुरु नानक का विवाह 19 वर्ष की आयु में गुरदासपुर के मूलचंद खत्री की पुत्री सुलखनी से हुआ परंतु उनका हृदय सांसारिक जीवन की सीमाओं से परे था। वे गृहस्थ रहते हुए भी संसार के मोह-माया से निर्लिप्त रहे। गुरु नानक ने अपने जीवन में पाखंड, अहंकार और अन्याय के विरुद्ध तीव्र स्वर उठाया। एक बार अमीर भागो ने उन्हें अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया परंतु नानक ने उसका निमंत्रण अस्वीकार कर एक गरीब मजदूर के घर भोजन करना स्वीकार किया। जब भागो ने उन्हें नीच कहकर अपमानित किया, तब नानक ने सहज परंतु तीखी शिक्षा दी, 'मैं वह भोजन नहीं कर सकता, जो गरीबों के खून-पसीने से तैयार हुआ हो।' उन्होंने एक हाथ में भागो के व्यंजन और दूसरे हाथ में मजदूर की रोटियां लेकर उन्हें निचोड़ा तो मजदूर की रोटी से दूध और भागो के पकवानों से रक्त टपका। वह दृश्य सबके लिए जीवनभर का सबक बन गया कि सच्चा भोजन वही है, जो ईमानदारी और परिश्रम से कमाया गया हो। गुरु नानक के जीवन की प्रत्येक घटना मानवता के मर्म को स्पर्श करती है।

हरिद्वार में उन्होंने देखा कि लोग गंगा स्नान के बाद पूर्व दिशा में जल अर्पण कर रहे हैं। उन्होंने इसके विपरीत पश्चिम दिशा में जल फैंकना शुरू किया। जब लोगों ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा, 'मैं अपने खेतों को पानी दे रहा हूं।' भीड़ में हंसी गूंजी, तब गुरु नानक ने कहा, 'जब मेरा जल पास के खेतों तक नहीं पहुंच सकता तो तुम्हारा जल इतनी दूर स्वर्गलोक में पूर्वजों तक कैसे पहुंचेगा?' इस सहज उत्तर ने अंधविश्वास के आवरण को चीर दिया। उनका उद्देश्य किसी की आस्था का उपहास नहीं बल्कि उसे विवेक की रोशनी से प्रकाशित करना था। उनकी यात्राएं, जिन्हें 'उदासियां' कहा गया, मानवता के संदेश के प्रचार का माध्यम बनी। उन्होंने भारत, तिब्बत, श्रीलंका, अरब, ईरान और अफगानिस्तान तक भ्रमण किया। उनका लक्ष्य था मानव को धर्म की संकीर्ण परिभाषाओं से ऊपर उठाकर सच्चे ईश्वर और सच्चे जीवन की पहचान कराना।वे कहते थे, 'एक ओंकार सतनाम' यानी ईश्वर एक है और सत्य ही उसका नाम है। जब वे कपूरथला के सुल्तानपुर लोधी में वैन नदी के किनारे ध्यानमग्न थे, तब तीन दिन तक नदी में लीन रहे। जब वे पुन: प्रकट हुए तो उनके मुख से यही शब्द निकले, 'एक ओंकार सतनाम।' वहीं उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार किया और वहीं बोया गया बेर का बीज आज भी 'गुरुद्वारा बेर साहिब' के रूप में श्रद्धा का केंद्र है।

उनके उपदेशों में मानवता का गूढ़ दर्शन निहित है। वे कहते थे, 'एक पिता एकस के हम बारिक' यानी संसार का समस्त जीव एक ही परमपिता की संतान है। उन्होंने ऊंच-नीच, जात-पात और अमीरी-गरीबी की दीवारों को तोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, 'ना कोई हिन्दू, ना मुसलमान' अर्थात् सच्चा मनुष्य वही है, जो अपने भीतर ईश्वर का अंश पहचानता है। गुरु नानक की करुणा, उनकी दृष्टि और उनके चमत्कार केवल आस्था के प्रसंग नहीं बल्कि आत्मबोध के प्रतीक हैं।

गुरु नानक देव का सम्पूर्ण जीवन समानता, सेवा, सत्य और प्रेम की शिक्षा देता है। उन्होंने 'नाम जपो, किरत करो, वंड छको', इन तीन मूल सिद्धांतों के माध्यम से जीवन का सार प्रस्तुत किया। उनका संदेश था 'परमात्मा का स्मरण करो, ईमानदारी से कर्म करो और अपनी आय का हिस्सा दूसरों के साथ बांटो।' उन्होंने कहा, 'जिसने पराया दुख अपना समझा, वही सच्चा भक्त है।' यह विचार युगों-युगों तक समाज को मानवीयता की राह दिखाते रहेंगे।

उनका प्रकाश मानव चेतना के उस ऊंचे शिखर का प्रतीक है, जहां कोई भेद नहीं, केवल प्रेम है। गुरु नानक का यह संदेश आज भी उतना ही सजीव है 'ना कोई ऊंचा, ना कोई नीचा; सब एक ज्योति के अंश हैं।'

गुरु नानक जयंती का पर्व हमें यही स्मरण कराता है कि संसार में भक्ति का सर्वोच्च रूप वही है, जो मानवता के कल्याण से जुड़ा हो। उनकी वाणी में निहित प्रकाश आज भी हमारे अंधकारमय समय में मार्गदर्शन की लौ बनकर जलता है।

योगेश कुमार गोयल

गुरुनानक देव जयंती कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भारतीय सिख पाकिस्तान पहुंचे

लाहौर, (भाषा): भारत के करीब 2,100 सिख तीर्थयात्री मंगलवार को वाघा सीमा के रास्ते पाकिस्तान में दाखिल हुए। ये तीर्थयात्री गुरु नानक देव की 556वीं जयंती से संबंधित कार्यक्रमों में शामिल होने आए हैं, जो मई में चार दिन चले संघर्ष के बाद दोनों देशों के लोगों के बीच प्रत्यक्ष संपर्क का पहला मौका था।

पाकिस्तान सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष एवं पंजाब अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री सरदार रमेश सिंह अरोड़ा, 'इवैक्यूई ट्रस्ट प्रॉपर्टी बोर्ड' (ईटीपीबी) के प्रमुख साजिद महमूद चौहान और अतिरिक्त सचिव (धार्मिक स्थल) नासिर मुश्ताक ने वाघा चेक पोस्ट पर भारतीय तीर्थयात्रियों का स्वागत किया। पाकिस्तन पहुंचने वालों में अकाल तख्त के नेता ज्ञानी कुलदीप सिंह गरगज, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की बीबी गुरिंदर कौर और दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी के रविंदर सिंह स्वीटा शामिल हैं। पाकिस्तान सरकार ने गुरु नानक देव की जयंती में शामिल होने के लिए 2,150 भारतीय सिखों को वीजा जारी किए थे।

ईटीपीबी के प्रवक्ता गुलाम मोहिउद्दीन ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि मंगलवार को करीब 2,100 सिख वाघा के रास्ते लाहौर पहुंचे। उन्होंने कहा कि आव्रजन और सीमा शुल्क औपचारिकताएं पूरी करने के बाद, तीर्थयात्री विशेष बसों से गुरुद्वारा जन्मस्थान, ननकाना साहिब के लिए रवाना हुए। गुरु नानक की जयंती का मुख्य समारोह बुधवार को गुरुद्वारा जन्मस्थान में आयोजित किया जाएगा, जो लाहौर से लगभग 80 किलोमीटर दूर है।

नासिर मुश्ताक ने कहा, ''जन्मस्थान और करतारपुर साहिब सहित सभी गुरुद्वारों को लाइट से खूबसूरती से सजाया गया है। चिकित्सा सहायता के लिए, रेस्क्यू 1122 और ईटीपीबी की चिकित्सा इकाई की टीमें तीर्थयात्रियों के साथ रहेंगी।''

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

खाते को फ्राड घोषित करने से पहले बैंक को क्या परेशानी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को यह जानना चाहा कि अगर बैंक किसी कर्जदार को 'धोखाधड़ी खाता' घोषित करने से पहले व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर देता है तो इससे उसे किस तरह की समस्या होगी। न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति के. वी. विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि जिस व्यक्ति का खाता 'धोखाधड़ी' घोषित किया जा रहा है, उसे कम-से-कम अपना पक्ष रखने का अवसर मिलना चाहिए। यह टिप्पणी भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की उस याचिका पर सुनवाई के दौरान की गई, जिसमें कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी गई है।

एसबीआई की तरफ से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि मार्च, 2023 के उच्चतम न्यायालय के फैसले को इस रूप में नहीं पढ़ा जाना चाहिए कि खाते को धोखाधड़ी घोषित करने से पहले मौखिक सुनवाई करना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि आरबीआई के परिपत्र के अनुरूप जांच की प्रक्रिया में पहले फॉरेंसिक ऑडिट होता है, जिसमें खाता धारक शामिल रहता है।

दिल्ली देश का छठा सबसे प्रदूषित शहर

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): अक्टूबर माह में दिल्ली देश का छठा सबसे प्रदूषित शहर रहा, जो पड़ोसी गाजियाबाद और नोएडा से पीछे है। एक अध्ययन में यह जानकारी सामने आई। 'सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर' (सीआरईए) द्वारा मंगलवार को जारी मासिक वायु गुणवत्ता आंकड़ों के अनुसार, हरियाणा का धारूहेड़ा अक्टूबर में सबसे प्रदूषित शहर रहा, जहां मासिक औसत पीएम 2.5 सांद्रता 123 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर थी।

उसने सतत परिवेशी वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशन (सीएएक्यूएमएस) आंकड़ों के आधार पर भारत की वायु गुणवत्ता का व्यापक विश्लेषण प्रदान किया। एक आधिकारिक बयान में कहा गया, "निष्कर्षों से पता चला कि देश भर में वायु गुणवत्ता में तीव्र गिरावट आई है, तथा स्थिति और भी खराब हो गई है, खासकर सिंधु-गंगा के मैदानी इलाकों (आईजीपी) में, विशेषकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में।"

इसमें कहा गया है कि दिल्ली 107 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर की औसत सांद्रता के साथ छठे स्थान पर रही, जो सितंबर के औसत 36 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से तीन गुना अधिक है।

अक्टूबर में दिल्ली के पीएम 2.5 के स्तर में पराली जलाने का योगदान छह प्रतिशत से भी कम होने के बावजूद, यह तीव्र वृद्धि वर्ष भर के उत्सर्जन स्रोतों के प्रभाव और क्रमिक प्रतिक्रिया कार्य योजना जैसे अल्पकालिक मौसमी उपायों से परे दीर्घकालिक शमन योजनाओं की आवश्यकता को उजागर करती है।

अक्टूबर में धारूहेड़ा को सबसे प्रदूषित शहर का दर्जा दिया गया, जहां मासिक औसत पीएम2.5 की सांद्रता 123 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर थी, जो 77 प्रतिशत दिनों में राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानक (एनएएक्यूएस) सीमा को पार कर गई। महीने के दौरान दो दिन 'गंभीर' और नौ दिन 'बेहद खराब' दर्ज किए गए। धारूहेड़ा के बाद, रोहतक, गाजियाबाद, नोएडा, बल्लभगढ़, दिल्ली, भिवाड़ी, ग्रेटर नोएडा, हापुड़ और गुरुग्राम सबसे प्रदूषित शहर रहे।

नौसेना हर 40 दिन में युद्धपोत-पनडुब्बी शामिल कर रही है

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने मंगलवार को कहा कि नौसेना में हर 40 दिन में एक नया स्वदेशी युद्धपोत या पनडुब्बी शामिल की जा रही है। उन्होंने सुरक्षा संबंधी विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए समुद्री क्षेत्र में संप्रभु क्षमता निर्माण के प्रयासों को भी रेखांकित किया। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय नौसेना ने 'आत्मनिर्भरता'' को न केवल रणनीतिक अनिवार्यता के रूप में अपनाया है, बल्कि भविष्य के आश्वासन के लिए एक निवेश के रूप में भी अपनाया है। उन्होंने कहा कि बल का लक्ष्य 2035 तक 200 से अधिक युद्धपोतों और पनडुब्बियों का संचालन करना है। नौसेना प्रमुख ने भारत शक्ति द्वारा आयोजित भारत रक्षा सम्मेलन को संबोधित करते हुए किसी भी समुद्री शक्ति के लिए आत्मनिर्भरता, तालमेल और सुरक्षा को तीन प्रमुख स्तंभों के रूप में चिह्नित किया।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

अमर उजाला

प्रवाह

77 साल बेमिसाल

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

नई दिल्ली ■ बुधवार, 5 नवंबर 2025

शेयर बाजार ऐसे लोगों से भरा पड़ा है, जो हर वस्तु की कीमत जानते हैं, लेकिन किसी चीज का मूल्य नहीं। - फिलिप फिशर

डीजीसीए ने हवाई यात्रा की टिकट वापसी प्रक्रिया को अधिक यात्री-अनुकूल बनाने के लिए नियमों में बदलाव का जो प्रस्ताव दिया है, वह लागू होने पर यात्रियों को निस्संदेह राहत देगा। विमानन कंपनियों को अधिक जवाबदेह बनाने तथा यात्रियों का भरोसा जीतने के लिए ऐसे और कदमों की दरकार है।

ताकि भरोसा बना रहे

भारत के विमानन नियामक नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने हवाई यात्रा की टिकट वापसी की प्रक्रिया को यात्रियों के अधिक अनुकूल, पारदर्शी व कुशल बनाने के लिए नियमों में बदलाव लाने का जो प्रस्ताव दिया है, वह उन यात्रियों के लिए बड़ी राहत लेकर आया है, जो विमानन कंपनियों की मनमानी से पहले ही त्रस्त हैं। एक वक्त था, जब हवाई यात्रा को विलासिता से जोड़ा जाता था, लेकिन आर्थिक विकास के साथ ही अब यह आम लोगों का भी पसंदीदा परिवहन बन गया है। गौरतलब है कि देश में पिछले एक दशक में वाणिज्यिक विमानों की संख्या तकरीबन दोगुनी हुई है, और इसके साथ ही भारत, अमेरिका और चीन के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा घरेलू विमानन बाजार बनकर उभरा है। अंतरराष्ट्रीय वायु परिवहन संघ के आंकड़ों पर नजर डालें, तो 2024 में भारत में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर रिकॉर्ड तकरीबन 20 करोड़ यात्रियों ने उड़ान भरी। लेकिन, चिंता की बात यह रही है कि जिस तेजी से हवाई यात्रा करने वालों की तादाद बढ़ी है, उसी अनुपात में विमानन कंपनियों की तरफ से मनमानी वसूली भी बढ़ती दिखी है। एक और बात, फिलहाल देश के हवाई यात्रा बाजार में इंडिगो और एयर इंडिया एयरलाइंस का ही प्रभुत्व दिखता है। विकल्पों का यह अभाव भी कहीं न कहीं विमानन कंपनियों को अपनी मर्जी से किराया वसूलने के लिए प्रोत्साहित करता है। बात यह है कि हवाई किराया सरकार तय नहीं करती, और इसे पूरी तरह से कंपनियों के विवेक पर छोड़ा गया है। डायनामिक फेयर के नाम पर विमानन कंपनियां इसका पूरा फायदा भी उठाती हैं। दरअसल, यह पूरा एल्गोरिदम मांग एवं पूर्ति के फॉर्मूले पर काम करता है। इसमें दिक्कत यह छिपी है कि यात्रा एजेंट एक ही रूट पर बार-बार सर्च करके मांग को कृत्रिम तौर पर बढ़ा भी सकते हैं। डीजीसीए ने नए नियमों का जो प्रारूप पेश किया है, उसके अनुसार, यात्री द्वारा उड़ान बुक करने के बाद 48 घंटों तक बगैर किसी अतिरिक्त शुल्क के टिकट रद्द या संशोधित कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त 21 कार्यदिवसों के भीतर रिफंड मिलने और ट्रैवल एजेंटों द्वारा बुक किए गए टिकटों के रद्दीकरण के संदर्भ में जो राहतें यात्रियों को दी गई हैं, वे स्वागतयोग्य हैं, लेकिन कुछ और मामले भी हैं। दिल्ली, मुंबई सरीखे महानगरों को छोड़ दें, तो उड़ानों का विलंबित या रद्द होना बढ़ रहा है। संचालक एयरलाइंस द्वारा मुआवजे का प्रावधान होने के बावजूद उन्हीं की आड़ लेते हुए ये कंपनियां यात्रियों को सुविधाएं देने में जिस तरह से आनाकानी करती हैं, उस पर भी ध्यान देना होगा। फिलहाल डीजीसीए से यही अपेक्षा है कि वह जल्द से जल्द इन नियमों को लागू करे और इनका सख्त अनुपालन भी सुनिश्चित कराए, क्योंकि हवाई यात्रियों को निजी कंपनियों के विवेक पर नहीं छोड़ा जा सकता।

आखिर दुनिया चलती कैसे है

भारी वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच मुनाफे की चाह रखे निवेशक महाभारत के यक्ष प्रश्न में उलझे हैं, जिसके जवाब में युधिष्ठिर कहते हैं, मृत्यु का सत्य रोजाना दिखाई देता है, और फिर भी लोग अमरता की आशा और तलाश करते हैं। तर्क हमेशा यही होता है कि 'इस बार बात अलग है।'

शंकर अय्यर

वरिष्ठ पत्रकार

महान निवेशक और वॉरेन बफेट के सहयोगी चार्ली मुंगर ने कहा था कि दुनिया लालच से नहीं, ईर्ष्या से चलती है। हालांकि, दुख के कारणों को बताते हुए इस कथन में लालच और ईर्ष्या शब्दों के क्रम को लेकर बहस हो सकती है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि एक शब्द दूसरे की ओर ले जाता है। यह कथन समृद्धों और अभावग्रस्तों के बीच बढ़ती खाई के दुष्प्रभावों की ओर भी इशारा करता है। आज यही के (K) आकार की अर्थव्यवस्था, जिसमें ऊपरी भुजा समृद्ध लोगों का प्रतिनिधित्व करती है और निचली भुजा उन लोगों का, जो विकास की दौड़ में पिछड़ते जा रहे हैं, बाजारों व राजनीति को रोशन कर रही है। पैसा किस तरह से काम करता है, वह पिछले कुछ हफ्तों में बाजारों में कीमतों में उतार-चढ़ाव में सबसे अधिक दिखाई देता है। सोने की कीमत जो वर्ष की शुरुआत में 2,623 डॉलर प्रति औंस थी, वह 4,300 डॉलर को पार कर अब 4,000 डॉलर के पास मंडरा रही है, जो 50 फीसदी से अधिक की वृद्धि को दर्शाता है। चांदी की कीमत, जो जनवरी में 28 डॉलर पर थी, अब 48 पर पहुंच चुकी है। हम सभी ने चैटजीपीटी के बाद से एनवीडिया के बारे में सुना है। 2017 में इसकी कीमत 100 अरब डॉलर के आंकड़े को छू गई थी। यह दस खरब डॉलर के बाजार पूंजीकरण को छूने वाली सातवीं अमेरिकी कंपनी थी। अगर यह एक राष्ट्र होता, तो एनवीडिया जर्मनी के साथ दुनिया में तीसरे स्थान पर होता। इसका मूल्य फ्रांसीसी शेयर बाजार के बाजार पूंजीकरण से भी ज्यादा है, जो भारत की 500 सबसे बड़ी कंपनियों से भी अधिक है।

इस गुरुवार को इलेक्ट्रिक कार निर्माता कंपनी टेस्ला का बोर्ड यह तय करेगा कि क्या एलन मस्क 10 साल में शेयरों के विकल्प सहित दस खरब डॉलर के वेतन पैकेज के हकदार हैं। बेशक, यह मस्क के लक्ष्य हासिल करने पर निर्भर है। मस्क जो राशि चाहते हैं, वह अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय 86,800 डॉलर से लगभग 11,000 गुना अधिक है। पिछले हफ्ते अमेरिकी फेडरल रिजर्व, जो वैश्विक मुद्रा प्रवाह को प्रभावित करता है, ने ब्याज दरों में 0.25 फीसदी की कटौती की। आमतौर पर ब्याज दरों में कटौती तब की जाती है, जब मुद्रास्फीति कम होती है या बेरोजगारी बढ़ती है। अमेरिका में मुद्रास्फीति अभी भी बढ़ रही है और बेरोजगारी कम हो रही है। फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल इस कटौती को सही ठहराने में काफी मशक्कत कर रहे थे। पॉवेल इस सवाल से भी बचते रहे कि कटौती से किसे फायदा होगा। उम्मीद के मुताबिक शेयर बाजार ऊपर गए।

फायदा किसे होगा, यह कोई रहस्य नहीं है। आंकड़े बताते हैं कि अमेरिका की शीर्ष 0.1 फीसदी आबादी के पास 122 खरब डॉलर मूल्य की इक्विटी और फंड हैं। निचले 50 फीसदी के पास सिर्फ 5.4 खरब डॉलर मूल्य के शेयर और फंड हैं। के-आकार के रुझान में, विलासिता का सामान बनाने वाली कंपनियां और बैंक अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, जबकि खुदरा विक्रेता कर्मचारियों की संख्या कम कर रहे हैं। वैश्विक बाजार में यह उन्माद, धनी और गरीबों के बीच बढ़ती तरलता और मुनाफे की तलाश में होने से प्रेरित है। हालांकि, रुझान के अनुसार, केवल नकदी संपन्न कंपनियों के शेयरों में ही वृद्धि हो रही है। अमेरिकी सूचकांक एसएंडपी 500 पिछले छह महीनों से हर महीने उच्च स्तर पर पहुंच रहा है, लेकिन 500 कंपनियों के सूचकांक में 220 से अधिक कंपनियों के शेयर जनवरी की तुलना में नकारात्मक रिटर्न/कम रिटर्न दिखा रहे हैं।

निवेशक कबीर के सीमाओं में रहने के पाठ और बेहद आकर्षक 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' के सूत्र बीच रस्साकशी में फंसे हैं। एसएंडपी 500 का मूल्य-आय अनुपात 28.47 है और बाजार मैग7 के शेयरों पर 40 गुना ज्यादा कमाई का भुगतान कर रहा है, जिससे धन की उम्मीद है। यह सब तब है जब एआई शेयरों में बुलबुले के बारे में चर्चा का बादल बढ़ रहा है, जिसमें बैंक ऑफ इंग्लैंड की चेतावनी भी शामिल है, बल्कि और भी गहरा हो रहा है। फिर भी, जैसा कि महाभारत के यक्ष प्रश्न में युधिष्ठिर कहते हैं, मृत्यु का सत्य रोजाना दिखाई देता है, और फिर भी लोग अमरता की आशा और तलाश करते हैं। तर्क हमेशा यही होता है कि 'इस बार बात अलग है।' एआई शेयरों की तुलना 1999 के डॉटकॉम बुलबुले से की जा रही है। तेजी के प्रति उत्साहित निवेशकों का तर्क है कि उस दौर के विपरीत, ये कंपनियां नकदी से भरपूर और परिसंपत्ति-रहित हैं। हालांकि, चिप निर्माताओं और उपयोगकर्ताओं के बीच दस खरब डॉलर के सर्कुलर सौदे, मेटा का 30 अरब डॉलर का ऋण जारी करना, और एआई बॉन्ड की 200 अरब डॉलर की बाढ़ की आशंकाओं ने चिंताएं बढ़ा दी हैं। एआई से जुड़े 12 खरब डॉलर से ज्यादा के ऋण के साथ, वॉल स्ट्रीट इस बात पर विचार कर रहा है कि इसका असर ऋण बाजार में दिखेगा या इक्विटी में।

धीमी गति से बढ़ रही समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं के सूचकांक बेहतर रिटर्न दे रहे हैं। अमेरिका में 2025 में जीडीपी वृद्धि 1.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है, और एसएंडपी 500 इस वर्ष अब तक 16.3 फीसदी बढ़ा है। जापान के केंद्रीय बैंक के अनुसार, 0.7 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है, और निक्केई 225, 31.3 प्रतिशत बढ़ा है। ईसीबी ने यूरोजोन में जीडीपी वृद्धि 1.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है, जबकि जर्मन डीएएक्स 20 प्रतिशत बढ़ा है। यूके में 1.3 प्रतिशत की वृद्धि और एफटीएसई 17 फीसदी की वृद्धि का अनुमान है। भारत सबसे तेजी से बढ़ने वाली प्रमुख अर्थव्यवस्था है, जिसके 6.6 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है, और निफ्टी 50 केवल 8.8 प्रतिशत बढ़ा है।

इसमें कोई शक नहीं कि जैसे-जैसे अरबपतियों की संख्या बढ़ रही है, आम जनता खुद को उपेक्षित महसूस कर रही है। और इसका राजनीतिक असर न्यूयॉर्क के मेयर चुनाव में, ब्रिटेन में, जहां सरकार अति-धनवानों पर कर लगाने की योजना बना रही है, और पूरे यूरोप में, जहां आव्रजन-विरोधी आंदोलन वामपंथियों और दक्षिणपंथियों को एकजुट कर रहे हैं, दिखाई दे रहा है। लोकलुभावन राजनीति नाराज लोगों को वादों से रिझा रही है और रिझाती रहेगी। के-आकार की अर्थव्यवस्थाएं के-आकार की राजनीति को उत्प्रेरित करती हैं।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

जॉन लॉक

मनुष्य की सबसे बड़ी क्षमता अपने विचारों की लगाम पकड़ने की है। यही शक्ति उसे सृष्टि में खास बनाती है, जो उसे आनंद और पीड़ा, दोनों से सीखने की योग्यता देती है।

सुख और दुख से परे है जीवन का रहस्य

अस्तित्व के सृष्टिकर्ता ने हमें केवल जीवन ही नहीं दिया, बल्कि उसे संभालने की अद्भुत क्षमता भी दी है। उन्होंने हमें ऐसा सामर्थ्य दिया है कि हम अपने शरीर के अंगों को अपनी इच्छा अनुसार नियंत्रित या स्थिर रख सकते हैं। इसी प्रकार हमारे मन को भी उन्होंने यह विलक्षण शक्ति प्रदान की है कि वह कल्पनाओं, विचारों और विषयों में से बेहतर का चयन कर सके। यह तय कर सके कि किस दिशा में विचार प्रवाहित होने चाहिए, किन विषयों की खोज में ध्यान और लगन लगाई जाए। यही मानसिक क्षमता हमें विचारों व कर्मों के बीच संतुलन बनाना सिखाती है। हमारे सृष्टिकर्ता ने बुद्धिमानी से हमारी संवेदनाओं और विचारों के साथ आनंद का संबंध जोड़ा है। यदि आनंद और अनुभवों का मिलन न होता, तो हमारे पास किसी विचार या क्रिया को श्रेष्ठ या तुच्छ ठहराने का कोई मापदंड न रहता, क्योंकि तुलना तथा निर्णय का आधार ही अनुभव और विचार हैं।

कल्पना कीजिए, यदि हम न अपने शरीर को काबू में करें, न ही अपने विचारों को दिशा दें, बल्कि मन को यूं ही बहने दें, जैसे कोई धारा बिना मार्ग के बहती चली जाए, तो हम एक निष्क्रिय, आलसी इन्सान बनकर अपने वक्त को लक्ष्यहीन सपने देखने और व्यर्थ निद्रा में गंवा देंगे। इसलिए, हमारे सृजनहार ने अत्यंत बुद्धिमानी से, अनेक वस्तुओं एवं उनसे उत्पन्न विचारों में आनंद की अनुभूति का तंतु पिरो दिया है, ताकि हमारी शक्तियां निष्क्रिय न पड़ी रहें, बल्कि सक्रिय होकर जीवन में उद्देश्य भरें।

दर्द और सुख, दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, हम प्रायः आनंद की खोज और पीड़ा से बचने के प्रयास में रहते हैं। फिर भी यह सत्य है कि दोनों का अस्तित्व एक-दूसरे से गहराई से जुड़ा है। जीवन में अक्सर वही वस्तुएं जो हमें आनंद देती हैं, कभी-कभी हमारे दर्द का कारण भी बनती हैं। यही हमारे रचयिता की दूरदर्शी बुद्धिमत्ता और करुणा का प्रमाण है, जिन्होंने हमारे कल्याण के लिए पीड़ा को चेतावनी का संकेत बनाया। यह योजना हमारे अस्तित्व की रक्षा के लिए गढ़ी गई है। उदाहरण के लिए, ऊष्मा जब तक संतुलित रहे, हमें सुख देती है, परंतु थोड़ा बढ़ जाने पर वही हमें पीड़ा भी देती है। ठीक वैसे ही प्रकाश, जो हमारी दृष्टि क्षमता के लिए बेहद जरूरी है, यदि तीव्रता में अपनी सीमा लांघ जाए, तो आंखों के लिए कष्टदायक बन जाता है। इसीलिए, प्रकृति ने इन सीमाओं का निर्धारण बेहद बुद्धिमानी से किया है, ताकि जब किसी वस्तु की अनुभूति अपनी क्षमता से अधिक होकर हमारे नाजुक अंगों को प्रभावित करे, तो दर्द हमें चेतावनी के रूप में मिले और हम समय रहते उससे खुद को बचा सकें। इस प्रकार, आनंद और पीड़ा, दोनों ही हमारे अस्तित्व के आवश्यक प्रहरी हैं-एक हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, दूसरा हमें सुरक्षित रहने की सीख। यही संतुलन सृष्टिकर्ता की परम बुद्धिमत्ता का जीवंत प्रमाण है।

अपनी सीमाओं को पहचानें

सूत्र

जीवन में हर सुख, हर अवसर, हर शक्ति तभी कल्याणकारी है, जब वह अपनी सीमा में रहे। इसलिए, अपनी सीमाओं को जानिए, उन्हें स्वीकारिए और उसी के अनुरूप योजना बनाते हुए आगे बढ़िए। यही समझ बुद्धिमत्ता कहलाती है, और यही संतुलन सफलता का सबसे गहरा रहस्य। सुख-दुख तो इन्सान की कल्पना मात्र हैं।

दूसरा पहलू

थकावट व तनाव से बचने के लिए युवाओं ने एक नया तरीका खोज निकाला है, जिसे बेड रॉटिंग कहा जाता है।

जेन जी और बेड रॉटिंग संस्कृति

डिजिटल होती दुनिया में सोशल मीडिया और रील्स के शोर-शराबे से होने वाली थकावट व तनाव से बचने के लिए जेन जी ने एक नया तरीका खोज लिया है, जिसे बेड रॉटिंग कहा जाता है। इसका अर्थ है जानबूझकर घंटों या पूरे दिन बिस्तर पर पड़े रहना और निष्क्रिय गतिविधियों में लिप्त रहना, जैसे-फोन स्क्रॉल करना, फिल्में देखना या बस लेटे रहना। जेन जी इसे आत्म-देखभाल का नया और क्रांतिकारी तरीका बताते हैं। यह आदत अब भारतीय युवाओं के जीवन में भी गहरी पैठ बना रही है। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह तनाव या बर्नआउट से निपटने का कारगर तरीका है, या फिर व्यक्ति को अवसाद और निष्क्रियता के अंधेरे कुएं में धकेलने का बहाना। बेड रॉटिंग शब्द का पहली बार इस्तेमाल 2023 में एक अमेरिकी टिकटॉक यूजर ने किया था।

डॉ. मुकुल श्रीवास्तव

यह भारत में स्लीप वीकेंड या वीकेंड कोमा जैसे नामों से मशहूर है। जेन जी इसे आत्म-देखभाल का नया तरीका बताते हैं।

मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि इससे न्यूरोट्रांसमीटर्स, विशेषकर डोपामिन व सेरोटोनिन के स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे प्रेरणा, ऊर्जा और उत्साह में कमी आती है।

विशेषज्ञों ने बेड रॉटिंग के पीछे एक ओर बदलती जीवनशैली और बढ़ता तनाव, तो दूसरी ओर छात्रों में फैले हसल कल्चर जैसे कई कारण बताए हैं। ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी की मनोचिकित्सक निकोले होलिंग्सहेड बताती हैं कि समाज में खुद को व्यस्त व ज्यादा उत्पादक दिखाने पर जोर दिया जाता है, जिसका अब युवा विरोध कर रहे हैं। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वे के अनुसार, लगभग 10 फीसदी वयस्क मानसिक विकार से ग्रसित हैं। वहीं, डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट बताती है कि भारत में प्रति एक लाख आबादी पर 21 आत्महत्याएं होती हैं, जो वैश्विक औसत से कहीं अधिक हैं। 2024 की वैश्विक खुशहाली रिपोर्ट में भी भारत 118वें स्थान पर रहा। ऑस्ट्रेलिया की मनोवैज्ञानिक संस्था जीएम5 द्वारा तेलंगाना व कर्नाटक में किए गए सर्वेक्षण में पाया गया कि 24 फीसदी छात्रों में मानसिक संकट के लक्षण मिले, जबकि छह से 10 प्रतिशत गंभीर या अति गंभीर श्रेणी में हैं, जिन्हें तत्काल सहायता की आवश्यकता है। सेपियंस लैब की रिपोर्ट के अनुसार, 2020 में 18-24 वर्ष आयु वर्ग का औसत मेंटल हेल्थ क्वोशियंट (एमएचक्यू) 28 था, जो 2023 में 20 रह गया। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोध के मुताबिक, दुनिया भर के किशोर रोजाना आठ से 10 घंटे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों या वीडियो गेम में बिताते हैं।

भारत में बेड रॉटिंग ट्रेंड को स्लीप वीकेंड या वीकेंड कोमा जैसे नामों से भी जाना जा रहा है। मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि इससे न्यूरोट्रांसमीटर्स, विशेषकर डोपामिन व सेरोटोनिन के स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे प्रेरणा, ऊर्जा और उत्साह में कमी आती है। इसलिए, फोन स्क्रॉल करने के बजाय किताबें पढ़ें, संगीत सुनें या ध्यान या कसरत करें। इस चक्र को तोड़ने के लिए काउंसलर से बात करने में हिचकिचाना नहीं चाहिए।

आंकड़े

सड़क दुर्घटनाएं

दस लाख से ज्यादा आबादी वाले शहरों में सड़क दुर्घटनाओं के मामले में दिल्ली (5,834) शीर्ष पर है। इसके बाद निम्नलिखित शहरों का नंबर आता है :

बंगलूरू	4,974
जबलपुर	4,205
चेन्नई	3,653
इंदौर	3,566
मल्लापुरम	3,253

आंकड़े साल 2022-2023 की अवधि के हैं। | स्रोत : MoRTH

कार्तिक मास में इल्ली ने घुन से कार्तिक स्नान करने को कहा। उसने मना कर दिया। अगले जन्म में इल्ली राजकुमारी, जबकि घुन गधे के रूप में जन्मा।

ऐसा भाग्य किसी को न मिले

अंतर्यात्रा

संकलित

बहुत समय पहले की बात है। घुण (घुन) और इल्ली साथ रहते थे। कार्तिक मास आने पर इल्ली ने घुन से कार्तिक स्नान करने को कहा। घुन ने मना कर दिया, जबकि इल्ली ने स्नान कर लिया। कार्तिक माह समाप्त हुआ और दोनों की मृत्यु हो गई।

अगले जन्म में इल्ली राजा के घर राजकुमारी, जबकि घुन गधे के रूप में जन्मा। समय बीता, राजकुमारी का विवाह हो गया। जब वह ससुराल जाने लगी, तो राजा-रानी ने उसे मनचाही चीज मांगने को कहा। राजकुमारी ने गधे (घुन) को मांगा।

महल (ससुराल) पहुंचकर राजकुमारी ने गधे को सीढ़ियों के पास बांध दिया। एक दिन वह उतर रही थी, तभी गधे ने कहा, 'सुंदरी, मुझे पानी पिला दो।' राजकुमारी मुस्कराई और बोली, 'जब मैंने कहा था कि चल कार्तिक नहा ले, तब तूने मना किया था।' यह संवाद राजकुमार ने सुन लिया। उसने गुस्से में राजकुमारी से पूछा, 'सच बताओ, तुम कौन हो?' राजकुमारी ने अपने पिछले जन्म का भेद बता दिया कि कैसे वह इल्ली थी और गधा घुन था, जिसने कार्तिक स्नान से इन्कार किया था।

राजकुमार यह सुनकर बोला, 'यदि कार्तिक स्नान इतना पुण्य देता है, तो हम भी जोड़े से स्नान करेंगे।' दोनों ने कार्तिक स्नान और दान-पुण्य किया, जिससे उन्हें समृद्धि और सुख प्राप्त हुआ। तभी से लोग प्रार्थना करते हैं कि हे कार्तिक महाराज! जैसा फल आपने इल्ली को दिया, वैसा सबको दें, पर घुन जैसा भाग्य किसी को न दें।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 5 नवंबर, 1949

नवंबर में लागू होगा पाकिस्तान सरकार का निश्चय

नवम्बर में लागू होगा

पाकिस्तान सरकार का निश्चय

हिंदुस्तान स्टैंडर्ड को संवाददाता के सरकारी क्षेत्रों से पता लगा है कि पाकिस्तान सरकार ने निष्क्रमणार्थी संपत्ति ऑर्डिनेंस को नवंबर मास के मध्य में पूर्वी पाकिस्तान में भी लागू करने का निश्चय किया है।

हिंदी में डॉक्टर की पर्ची

डॉक्टरों को हिंदी में पर्चा लिखने का निर्देश देकर एम्स ने जो पहल की है, वह शुरुआती चुनौतियों के बावजूद आम मरीजों के लिए लाभप्रद होगी।

उमेश चतुर्वेदी

मुद्दा

हिंदी समेत भारतीय भाषाओं में डॉक्टर बोल-बतिया सकते हैं, मरीजों की तकलीफ की जानकारी भी ले सकते हैं, लेकिन उनके सामने जब इलाज, टेस्ट और दवा सुझाने की बारी आती है, तो अंदर की अंग्रेजी स्वाभाविक रूप से उभर आती है। अंग्रेजी भी वैसी नहीं, अक्षर घसेटू। कुछ डॉक्टरों की पर्चियां तो ऐसी होती हैं, जिन्हें अनुभवी फार्मासिस्ट और पैथोलॉजिस्ट भी पढ़ पाने में नाकाम रहता है। लेकिन यह स्थिति बदलने जा रही है।

एम्स ने इस दिशा में कदम उठाया है। उसने डॉक्टरों से हिंदी में भी पर्चा लिखने को कहा है। वह मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में कराने की ओर भी आगे बढ़ रहा है। यह पहल स्वास्थ्य मंत्रालय के एक आदेश का नतीजा है, जिसमें चिकित्सा संस्थानों को धीरे-धीरे हिंदी में कामकाज शुरू करने का निर्देश दिया गया है। आदेश के बाद एम्स के हिंदी अनुभाग ने अपने सभी विभागों के कामकाज में हिंदी के उपयोग की शुरुआत करने को लेकर चिट्ठी लिखी है। इसमें डॉक्टरों के हिंदी में पर्चे लिखने के साथ-साथ अंदरूनी फाइलों की नोटिंग, आपसी पत्राचार और

दस्तावेजों में भी हिंदी को बढ़ाने की बात कही गई है।

अंग्रेजी माध्यम के जरिये औपचारिक पढ़ाई की शुरुआत 1860 में हुई, जिसका मकसद भारत में अंग्रेजी जानने वाले बाबुओं को तैयार करना और देसी 'मानस' को अंग्रेजी मानस में परिवर्तित करना था। इसका असर आज भी न्याय, प्रशासन, इंजीनियरिंग और मेडिकल जैसे क्षेत्रों में दिखता है। नीति-निर्माण में अब भी उसी नौकरशाही का दखल ज्यादा है, जो अंग्रेजी माध्यम में पढ़ी-लिखी है। हालांकि, प्रशासन आदि में धीरे-धीरे ही सही, हिंदी समेत भारतीय भाषाओं का दखल बढ़ रहा है, लेकिन न्यायपालिका, मेडिकल व इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में अब भी इसे लेकर हिचक दिखती है।

अंग्रेजी के वर्चस्व को देखते हुए अरसे से मांग रही है कि न्याय पाने वाले को पता होना चाहिए कि न्याय हो भी रहा है या नहीं, न्यायिक कार्यवाही सही तरीके से चल रही है या नहीं। इसी तरह चिकित्सा क्षेत्र में भी मरीज को यह जानने का अधिकार है कि उसका किस रोग का इलाज हो रहा है, उसका कौन-सा टेस्ट कराया जा रहा है और उसे कौन-सी दवा दी जा रही है? भले ही उच्च न्यायपालिका में न्याय और न्यायिक कार्यवाही में अब भी भारतीय भाषाओं एवं हिंदी की भूमिका को सहज स्वीकार्यता नहीं मिल पाई हो, लेकिन वह मानने लगी है कि मरीजों को उसके इलाज आदि को जानने का हक संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत मिला हुआ है।

बीते तीस अगस्त को पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने सरकारी व निजी अस्पतालों, दोनों के डॉक्टरों द्वारा लिखे पर्चे को साफ और स्पष्ट होने का निर्देश दिया था। अदालत ने कहा था कि डॉक्टरी पर्चे कैपिटल अक्षरों में, टाइप या डिजिटल रूप में होने चाहिए। साथ ही, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग यानी एनएमसी मेडिकल के छात्रों को साफ लिखावट अपनाने के लिए प्रेरित करे। इस आदेश के संदर्भ में कह सकते हैं कि एम्स की यह पहल मरीजों के हक की दिशा में बड़ा कदम है। इससे भारतीय भाषाओं को प्रशासन, न्याय और इलाज का माध्यम बनाने की कोशिशें परवान चढ़ेंगी और उसे मजबूती भी मिलेगी।

कई राज्यों में बारहवीं तक पढ़ाई का माध्यम हिंदी या भारतीय भाषाएं ही हैं। मेडिकल की पढ़ाई के लिए चुने जाने के बाद इन माध्यमों के मेधावी छात्रों का पल्ला अचानक अंग्रेजी माध्यम से पड़ जाता है। इस दबाव में कई प्रतिभाएं असमय ही मौत का रास्ता अख्तियार करती रही हैं। चूंकि, मौजूदा केंद्र सरकार और उसकी वैचारिकी भारतीय भाषाओं की पक्षधर है। वैसे समाजवादी आंदोलन और उसके प्रेरणा पुरुष डॉ. राममनोहर लोहिया भी हिंदी के पक्षधर रहे हैं। अतीत में केंद्र और कई राज्यों में समाजवादी सरकारें रहीं, लेकिन उन्होंने कभी इस दिशा में गंभीर प्रयास नहीं किया।

मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में कराने की चर्चा जब से शुरू हुई है, मेडिकल तबका ही उसका सबसे बड़ा विरोधी रहा है। ऐसे में, मध्य प्रदेश सरकार अग्रणी बनकर 16 अक्तूबर, 2022 को मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में शुरू करा दी। नई एनईपी भी छात्रों को उनकी मातृभाषा में चिकित्सा शिक्षा दिलाने की वकालत करती है। अब छत्तीसगढ़ व बिहार जैसे कुछ राज्यों ने भी हिंदी में मेडिकल शिक्षा शुरू करने की घोषणा की है। हिंदी माध्यम में इंजीनियरिंग की पढ़ाई सितंबर 2021 में आईआईटी, बीएचयू और नवंबर 2022 में यूपी के एकेटीयू विश्वविद्यालय में भी शुरू हो चुकी है।

निश्चित तौर पर यह कदम ग्रामीण पृष्ठभूमि व भारतीय भाषाओं के माध्यम के छात्रों के लिए फायदेमंद होगा। हिंदी में इलाज व टेस्ट के लिए लिखे जाने वाले पर्चे भी आम मरीजों के लिए लाभप्रद होंगे। स्वास्थ्य मंत्रालय के इस आदेश को लागू होने में शुरुआती दिक्कतें तय हैं। इसका कारण करीब साठ सालों की अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा से बना मानस है। फिर भी, यह आदेश इस जड़ता को तोड़ेगा। निश्चित रूप से इससे भारतीय भाषाओं का मान तो बढ़ेगा ही, मरीजों के इलाज में पारदर्शिता भी बढ़ेगी ।

- लेखक वरिष्ठ राजनीतिक और मीडिया समीक्षक हैं।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

मुख्य सचिवों की माफी

देश के न्यायिक इतिहास में सोमवार को एक चौंका देने वाला पन्ना जुड़ गया। दो राज्यों- पश्चिम बंगाल और तेलंगाना को छोड़कर देश के तमाम सूबों के मुख्य सचिवों को सर्वोच्च न्यायालय से एक साथ माफी मांगनी पड़ी। दरअसल, 22 अगस्त को ही शीर्ष अदालत ने देश भर के नगर निगमों को यह आदेश जारी किया था कि वे पशु जन्म नियंत्रण के नियमों के अनुपालन के लिए जरूरी संसाधनों, मसलन लावारिस कुत्ते पकड़ने वाले कर्मचारियों, विशेष वाहनों, पशु चिकित्सकों और कुत्तों के बाड़े से जुड़ी जानकारियां विस्तार से दें। मगर 27 अक्तूबर को जब तीन जजों की पीठ मामले की आगे सुनवाई के लिए बैठी, तो सिर्फ दो राज्यों का हलफनामा उसके सामने था। ऐसे में, स्वाभाविक ही सख्त रुख अपनाते हुए पीठ ने बाकी सभी सूबों के मुख्य सचिवों को 3 नवंबर को तलब कर लिया। जाहिर है, सभी राज्य प्रशासनों को अपनी गलती का एहसास हुआ और सोमवार को उनको मुख्य सचिवों के माफीनामे के साथ अपेक्षित हलफनामा भी दायर करना पड़ा। अब इस मामले की अगली सुनवाई आगामी शुक्रवार को होगी।

निस्संदेह, यह पूरा प्रकरण सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुपालन में हमारे तंत्र की दुस्साहसिक उदासीनता का एक ताजा उदाहरण है। इससे यही जाहिर हुआ है कि जब आला अदालत को अपने किसी आदेश के अनुपालन के लिए कठोर कदम उठाने को बाध्य होना पड़ रहा है, तो जिला अदालतों के आदेश के पालन में कितनी हीलाहवाली होती होगी? यह न सिर्फ न्यायपालिका के लिए, बल्कि कार्यपालिका के लिए भी गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए। लावारिस कुत्तों के काटने से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कुछ बच्चों में रेबीज होने की खबर का स्वतः संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने यह मामला शुरू किया था और बाद में उसने इसे राष्ट्रव्यापी समस्या मानते हुए इसका विस्तार देश के स्तर पर कर दिया। यकीनन, इससे आला अदालत की संवेदनशीलता का पता चलता है, मगर हमारा प्रशासनिक अमला नागरिकों के प्रति अपना एक जरूरी दायित्व निभाने में विफल रहा और अदालती सक्रियता के बावजूद लापरवाही की चादर ओढ़े रहा। सवाल है कि अधिकारियों में यह दुस्साहस आ कहां से रहा है? इस उदासीनता को दूर किए बिना प्रभावी शासन की उम्मीद नहीं बांधी जा सकती। यह स्थिति तब है, जब दुनिया भर में रेबीज के कारण मरने वाले कुल लोगों में से 36 फीसदी भारतीय हैं!

जब आला अदालत को अपने किसी आदेश के अनुपालन के लिए कठोर कदम उठाने को बाध्य होना पड़ा है, तो जिला अदालतों के आदेश के पालन में क्या हाल होगा?

मुख्य सचिवों के लिए यह वाकई सोचने का समय है कि अगर इतने संजीदा मामले में जरूरी कार्रवाई न हो पाने के लिए उन्हें अदालत में हाजिरी लगानी पड़ रही है, तो राज्य में उनका प्रशासन किस हद तक शिथिल व संवेदनहीन होने लगा है और उसका आम अवाम में क्या इकबाल रह गया होगा? हमारी अदालतों में लाखों मुकदमों के लंबे खिंचते जाने की एक बड़ी वजह वक्त काटने की यही प्रशासनिक सुस्ती है। सरकारें कानून तो बना देती हैं, मगर उनके क्रियान्वयन का दायित्व जिस तंत्र पर है, उसकी जवाबदेही सुनिश्चित नहीं कर पातीं। यहीं पर न्यायपालिका को भी आत्ममंथन की जरूरत है। चंडीगढ़ मेयर चुनाव के पीठासीन अधिकारी अनील मसीह का उदाहरण सामने है। यदि अदालतें बेहद गंभीर अपराध के दोषी को बिना शर्त माफी मांग लेने पर छोड़ती रहेंगी, तो वे दूसरे अफसरों में अदालती आदेश की अवहेलना के दंडनीय होने का भय भला कैसे पैदा कर सकेंगी? न्याय के राज की पहली शर्त है कि न्यायपालिका का सम्मान अक्षुण्ण रहे।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 05 नवम्बर, 1950

तिब्बत पर काले बादल

अभी तक भारत उस विस्फोट की ज्वाला से दूर था, जो करीब पांच महीने से कोरिया का विध्वंस कर रहा है। किन्तु गत सप्ताह से अशांति के काले बादल भारतीय सीमा से लगे हुए एक ऐसे देश पर छा गये हैं, जो शताब्दियों से अपने धार्मिक जीवन में निमग्न रहकर संसार के कोलाहल से दूर रहा है। वास्तव में, तिब्बत की शांतिप्रियता इतिहास की एक अटूट श्रृंखला रही है। उसकी भौगोलिक स्थिति इस कार्य में सहायक सिद्ध हुई है। अन्य देशों के लिए वह प्रायः अगम्य सा है। किन्तु साम्यवादी चीन को भय है- कम से कम उसका कथन तो यही है कि साम्राज्यवादी उसे अड्डा बनाकर चीन पर आक्रमण करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त वह इसे घरेलू मामला समझता है और उसे 'आजाद' कराने के लिए चीनी सेनाएं तिब्बत में धीरे-धीरे बढ़ती चली जा रही हैं और साम्यवादी सेना लासा से केवल 150 मील दूर रह गई है। तिब्बत के पास ऐसी सेना या ऐसे शस्त्रास्त्र ही कहां हैं, जो वह प्रतिरोध करे? चामदो के पतन के बाद तो ऐसा ज्ञात होता है कि चीनी सेना के लिए तिब्बत की राजधानी तक पहुंचने में केवल दूरी तय करने का सवाल है। और अब तो कालिम्पोंग में यह समाचार प्राप्त हुआ है कि दलाई लामा रीजेन्ट के साथ अपने करीब 50 विश्वासपात्र अधिकारियों को लेकर एक अज्ञात स्थान को चल पड़े हैं।...

वास्तव में साम्यवादी सरकार की यह कार्रवाई शांतिप्रिय देशों के लिए एक वज्रपात ही सिद्ध हुई है। तिब्बत ने किसी भी तरह चीन को अप्रसन्न करना न चाहा। उसका शिष्टमंडल पहले पारपत्र न मिलने के कारण हांगकांग न जा सका। फिर उसे दिल्ली में चीनी राजदूत से मिलने को कहा गया और अंत में राजदूत की सलाह के अनुसार, वह पेकिंग जाने को सहमत हो गया। किन्तु जबकि यह अपने प्रस्थान की तैयारी कर रहा था, पेकिंग सरकार ने तिब्बत पर चढ़ाई की घोषणा कर दी। इस पर जब भारत सरकार ने 'खेद तथा आश्चर्य' प्रगट करते हुए पेकिंग सरकार को एक पत्र भेजा और... सेनाओं को वापस हटाने की मांग की, तो पेकिंग सरकार ने कहा कि तिब्बत चीन का अविभाज्य अंग है और वह घरेलू मामले में हस्तक्षेप नहीं सह सकता। इसके साथ ही उसने यह अभियोग भी लगाया कि भारत ने विदेशी प्रभाव से झुककर ही यह नीति अपनाई है।

परमाणु परिदृश्य में बड़ा परिवर्तन

मोहन भंडारी | लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड)

यहां स्कैन करें

अगर रूस, चीन और उत्तर कोरिया अपनी योजना के मुताबिक आगे बढ़ते रहे, तो 2027-28 तक उनके कुल परमाणु हथियार अमेरिका से दोगुने हो जाएंगे।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के परमाणु परीक्षण संबंधी ताजा दावे शोचनीय तो हैं, मगर आश्चर्यजनक नहीं। उन्होंने कहा है कि पाकिस्तान, चीन और रूस भूमिगत परमाणु परीक्षण कर रहे हैं। निस्संदेह, ऐसे बयान तर्कों की कसौटी पर कसे जाएंगे, खासतौर से तब, जब अमेरिकी राष्ट्रपति अपने बड़बोलेपन के लिए जाने जाते हों। मगर सच यह भी है कि बीते कुछ वर्षों में वैश्विक परमाणु परिदृश्य बदल गया है।

एक वक्त था, जब चीन, अमेरिका सहित कई देश व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) पर मौखिक समर्थन जता रहे थे, लेकिन आज बीजिंग ने परोक्ष रूप से यही चेतावनी दी है कि यदि ताइवान मसले पर उसे मात मिलती है, तो वह परमाणु विकल्पों के इस्तेमाल से भी गुरेज नहीं करेगा। गौरतलब है, पहले वह भारत की तरह ही परमाणु हथियारों का पहले इस्तेमाल न करने की बातें करता था। इसी तरह, अमेरिका की मुख्य भूमि अब उत्तर कोरिया से होने वाले हमले की जद में है, तो रूस ने भी पिछले दिनों परमाणु संचालित क्रूज मिसाइल 'बुरेवेस्तनिक' का परीक्षण करके अपनी मंशा स्पष्ट कर दी है। कहा तो यह भी जा रहा है कि अगर रूस, चीन और उत्तर कोरिया इसी गति से आगे बढ़ते रहे, तो 2027-28 तक उनके कुल परमाणु हथियार अमेरिका से दोगुने हो जाएंगे। मुमकिन है कि इन्हीं सब वजहों से ट्रंप ने पिछले दिनों खुद भी परमाणु परीक्षण शुरू करने का एलान किया है।

यह पूरा घटनाक्रम भू-राजनीति के एक महत्वपूर्ण पहलू को बेपरदा कर रहा है। तर्क दिए जा रहे हैं कि परमाणु क्षमता वैश्विक ताकत को फिर से प्रभावित करने लगी है। हालांकि, मैं इससे पूरी तरह से सहमत नहीं हूं। क्यों? इसके लिए दूसरे विश्व युद्ध को याद करना जरूरी है। दरअसल, उस युद्ध की समाप्ति के बाद दो बातें हुईं। पहली, मित्र राष्ट्र कमजोर पड़ गए और दूसरी, अमेरिकी डॉलर का दबदबा बन गया। उस समय अमेरिका का वर्चस्व स्थापित हुआ, क्योंकि नागासाकी और हिरोशिमा में परमाणु बम गिराने के बाद जापान घुटने टेक चुका था। हालांकि, बाद के वर्षों में रूस (पहले सोवियत संघ) एक अन्य महाशक्ति के रूप में उभरा और दुनिया दो ध्रुवों में बंट गई। भू-राजनीतिक समीकरण में उत्तरोत्तर आए बदलावों के कारण अमेरिका का वर्चस्व घटने लगा और अमेरिकी राष्ट्रपति एक हताश मुखिया जैसा व्यवहार करने लगे।

अभी राष्ट्रपति ट्रंप की मुख्य चिंता चीन और रूस हैं, क्योंकि ये दोनों देश अमेरिका के समकक्ष खड़े हैं। चीन की अर्थव्यवस्था तो इतनी मजबूत है कि वह हर हाल में अमेरिका को टक्कर दे रही है। यही वजह है कि व्हाइट हाउस ने अपनी प्रशांत नीति को बदला है और अपना ध्यान ताइवान पर केंद्रित किया है, जिसकी प्रतिक्रिया में चीन ने परमाणु विकल्पों के इस्तेमाल की बात कही है।

दरअसल, मौजूदा भू-राजनीतिक परिदृश्य में हर राष्ट्र दूसरे से ऊपर उठना चाहता है और हर ताकतवार मुल्क दूसरे को कमजोर बनाना चाहता है। इसके लिए वह तमाम तरह के तिकड़म आजमाता है। अमेरिकी नीति में भी इसकी स्पष्ट झलक मिलती है। उसने रूस को उलझाने के लिए यूक्रेन को शह दिया। नतीजतन, जिस युद्ध के चंद दिनों में खत्म होने की भविष्यवाणी की जा रही थी, वह तीन साल पूरे कर चुका है। अब तो इसमें यूरोपीय संघ और ब्रिटेन भी शामिल हो चुके हैं। जाहिर है, राष्ट्रीय हितों का यह टकराव है, जबकि वैश्विक व्यवस्था में कोई भी देश न तो स्थायी दुश्मन होता है, और न स्थायी दोस्त।

परमाणु हथियारों को लेकर बड़े देशों का जो रवैया है, उसकी एक झलक स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान (एसआईपीआरआई) की 2025 की रिपोर्ट में दिखती है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, कुल नौ देशों के पास परमाणु हथियार हैं, जिनमें सबसे अधिक 5,459 रूस के पास हैं। दूसरे स्थान पर अमेरिका है, जिसके पास 5,177 परमाणु हथियार हैं। इसके बाद चीन का स्थान आता है, लेकिन उसके और अमेरिका के परमाणु हथियारों की संख्या में भारी अंतर है। उसके पास बमुश्किल 600 हथियार हैं। इसके बाद फ्रांस (290), ब्रिटेन (225), भारत (180), पाकिस्तान (170), इजरायल (90) और फिर उत्तर कोरिया (50) का स्थान है। इस तरह, अभी पूरी दुनिया में 12,241 परमाणु हथियार हैं।

इसमें बहुत ज्यादा बदलाव की उम्मीद मैं नहीं देखता, क्योंकि परमाणु बम महज खौफ पैदा करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। तनाव की चरम स्थिति में विरोधी देशों पर दबाव बनाने के लिए बेशक इसके उपयोग की धमकी दी जाएगी, लेकिन शायद ही किसी परमाणु युद्ध के हम गवाह बनेंगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि किसी मुल्क की ताकत उसकी परमाणु क्षमता से नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था से तय हो रही है और जंग या मौजूदा उथल-पुथल की वजह भी आर्थिक संसाधन ही हैं।

यह सही है कि दूसरे विश्व युद्ध में अगर परमाणु बम का इस्तेमाल न किया गया होता, तो जापान आत्म-समर्पण नहीं करता। मगर उसमें हुई तबाही को देखकर तमाम राष्ट्रों ने इसके इस्तेमाल से परहेज ही किया है। भारत और पाकिस्तान के संदर्भ में ही देखें, तो कारगिल जैसे युद्ध में भी परमाणु ताकत होने के बावजूद दोनों ने इससे दूरी ही बरती। हाल-फिलहाल में हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' में भी कथित तौर पर किराना हिल्स पर किए गए भारत के हमले के बाद भी शांति बनी रही।

यहां साल 1963 की उस संधि को भी याद करना चाहिए, जिसके तहत हवा, अंतरिक्ष व जल में परमाणु हथियारों के परीक्षण पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। साल 1996 का सीटीबीटी समझौता तो इसी की अगली कड़ी है, जिसमें सभी तरह के परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

सवाल है कि मौजूदा सूरतेहाल में क्या हमें भी अपनी परमाणु नीति पर विचार करना चाहिए, विशेषकर चीन और पाकिस्तान के अप्रत्याशित रवैये को देखकर? निस्संदेह, अपनी नीति पर हमें चिंतन करना चाहिए, लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि *समरथ को नही दोष गोसाईं*। यह सामर्थ्य सिर्फ अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाकर ही हासिल किया जा सकता है। हालांकि, हथियारों पर आत्मनिर्भरता एक जरूरी पहल है। रूस और अमेरिका पर निर्भरता का खामियाजा हम पूर्व में भुगत चुके हैं, लिहाजा यह आवश्यक था कि हम अपने हथियार खुद बनाएं। सुखद बात है कि पिछले कुछ समय से इस दिशा में जरूरी सक्रियता दिखाई गई है और अब हम न सिर्फ कई हथियार खुद बनाने लगे हैं, बल्कि निर्यात भी करने लगे हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

नगा नौजवानों को फिर क्यों भड़काने लगे बुजुर्ग मुइवा

शशिधर खान | वरिष्ठ पत्रकार

यहां स्कैन करें

वयोवृद्ध नगा नेता टी मुइवा अचानक मणिपुर के उखरूल जिला स्थित अपने गांव सोमडेल पहुंचकर फिर से नगा मसले की याद ताजा कर गए। यह बात नगालैंड और मणिपुर के लोग भूल चुके थे। मुइवा नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालिम (एनएससीएन) इसाक-मुइवा गुट के सुप्रीमो हैं और स्वयंभू भूमिगत नगालिम सरकार के प्रधानमंत्री भी हैं। इस गुट की केंद्र सरकार से 28 वर्षों से बेनतीजा वार्ता चल रही है, जिसके रास्ते का एकमात्र रोड़ा टी (थुइन्गालेंग) मुइवा का अड़ियल रवैया रहा है कि केंद्र सरकार उनके 'स्वतंत्र संप्रभु नगालिम, अलग झंडा और संविधान' को मान्यता दे।

भारत से हिंसक लड़ाई के लिए 1970-71 में मुइवा ने अपना गांव छोड़ा और 55 वर्षों बाद वैसे समय में आकर अपने पैतृक घर-समाज के लोगों को भड़का गए, जब हालात सामान्य हैं। 1997 में एनएससीएन (आई-एम) की केंद्र सरकार से संघर्ष-विराम पर सहमति हुई थी। 2001 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने एसएससीएन (आई-एम) के साथ चल रहे संघर्ष-विराम के दायरे में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर के नगा आबादी वाले इलाके को लाने का फैसला किया। उसको लेकर इन राज्यों में बवाल मच गया। खासकर, मणिपुर में हिंसा ऐसी भड़की कि उस पर काबू पाना कठिन हो गया। इंफाल में पुलिस फायरिंग में एक दर्जन से ज्यादा लोग मारे गए। आखिरकार केंद्र को अपना फैसला वापस लेना पड़ा।

साल 2017 में सात नगा गुटों ने समझौता कर 'स्वतंत्र संप्रभु नगालिम और अलग झंडा, अलग संविधान' का हठ छोड़ दिया है।

अगस्त, 2015 में केंद्र सरकार के साथ एनएससीएन (आई-एम) की 'फ्रेमवर्क डील' हुई, जिसे फाइनल समाधान डील की रूपरेखा कहा गया। एक साल बाद 2017 के जून महीने में ही एनएससीएन के दूसरे गुट के नेता एस एस खपलांग की मृत्यु हो गई। फिलहाल 91 वर्षीय मुइवा अपने वजूद का उजड़ा आशियाना बसाने की घिसी जिद में गांव पहुंचे, जब मणिपुर-नगालैंड समेत समूचे पूर्वोत्तर के सारे उग्रवादी/विद्रोही गुट शांति समझौते कर चुके हैं या बैकफुट पर जा चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पूर्वोत्तर को हिंसा से मुक्त कर शांति और विकास के युग में लाने का प्रयास सफल चल रहा है। लगता है, नक्सल मुक्त भारत के अभियान में जल्द ही उग्रवाद मुक्त पूर्वोत्तर भी शामिल हो जाएगा। मणिपुर में भी मई, 2023 में भड़की जातीय हिंसा के बाद अभी हालात शांतिपूर्ण हैं।

'आजाद' नगालिम की हिंसक नींव भारत की आजादी से पहले रखनेवाले एनएससीएन के संस्थापक जापुओ फिजो को 1952 में पहले आम चुनाव का बहिष्कार करने पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने बुलाया था। नेहरू ने फिजो से कहा था, 'भारत के अंदर स्वतंत्र संप्रभु नगालिम की मांग मैं तो क्या, भारत का कोई भी प्रधानमंत्री पूरी नहीं कर सकता।' आज तक यह बात सही साबित हो रही है। यह लेखक नगा झमेले की पड़ताल में नगालैंड के खोनोमा गांव अप्रैल 2023 में पहुंचा था। यहीं फिजो पैदा हुए। गांव के एक स्कूल शिक्षक बिजोले ने बताया, 'खोनोमा में आज कोई उग्रवादी गतिविधि नहीं है।'

नरेंद्र मोदी ने 2019 में दूसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद नगा समस्या को प्राथमिकता पर लिया और पूर्व खुफिया प्रमुख आर एन रवि को वार्ता के लिए अधिकृत किया। रवि के प्रयासों से 2017 में सात अन्य नगा गुटों के साथ भी केंद्र का समझौता हो गया। केंद्र की एनएससीएन (नगा नेशनल पोलिटिकल ग्रुप) से डील मुइवा गुट से इस मायने में अलग है कि इन गुटों ने 'स्वतंत्र संप्रभु नगालिम और अलग झंडा, अलग संविधान' का हठ छोड़कर लचीला रुख अपनाया है। रवि के बाद केंद्र ने दूसरे रिटायर खुफिया प्रमुख अक्षय कुमार मिश्र को वार्ताकार नियुक्त किया है। जनवरी, 2025 में ही अक्षय मिश्र ने इस ग्रुप के नेताओं के साथ गुवाहाटी में वार्ता की।

मुइवा को उसी समय चेत जाना चाहिए था, जब संघर्ष-विराम का दायरा बढ़ाने के केंद्र के फैसले के विरोध में उफने नगा आबादी समेत सभी लोगों ने एनएससीएन (मुइवा) के प्रस्तावित नगालिम को ठुकरा दिया। लेकिन, वे अब भी अलग देश के लिए अपने लोगों को उकसा रहे हैं। इधर जब माहौल बदल गया है और नगा गुट शांति की ओर आ रहे हैं, मुइवा को खुद सोच लेना चाहिए कि वर्तमान परिस्थिति में वह कहां ठहरते हैं और नई पीढ़ी को किधर ले जाना चाहते हैं?

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

इच्छाओं को दिशा दीजिए

मनुष्य जीवन एषणा (अभिलाषा) से जुड़ा हुआ है। एषणा का अर्थ वह इच्छा है, जिसे कर्म का रूप देने का प्रयास किया जाता है। जब तक जीव है, तब तक उसमें एषणा भी रहती है। जीव अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता, इसलिए उसे परमपुरुष की कृपा की आवश्यकता होती है।

सृष्टि के सभी प्राणी, चाहे वे मनुष्य हों या अन्य जीव, तीन मूल एषणाओं से संचालित होते हैं। पहली एषणा यह है कि जीव अपने को विस्तार देना चाहता है, बढ़ना चाहता है, फैलना चाहता है, वह नहीं चाहता कि कोई उसकी इस गति में बाधा बने। दूसरी एषणा यह है कि वह आनंद, रस या भाव के सागर में बहना चाहता है। यानी प्रेम और सुख की निरंतर धारा में डूबना चाहता है। तीसरी एषणा यह है कि वह कुछ ऐसा करे, जिससे उसे अशेष आनंद मिले। यानी ऐसा आनंद, जो क्षणिक न होकर अनंत हो।

ये तीनों एषणाएं जीवन की जड़ हैं। जब जीव का बीज रूप में जन्म हुआ, तभी से ये उसके साथ हैं। मनुष्य इसलिए विशेष है, क्योंकि वह मन प्रधान जीव है। 'मन' से ही 'मनुष्य' शब्द बना है। वह जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है। यदि मनुष्य भय, भूत या किसी भ्रांत धारणा का चिंतन बार-बार करता है, तो उसका मन उसी रूप को ग्रहण कर लेता है। इसी तरह, जब वह क्षुद्र विषयों- धन, जाति, प्रतिष्ठा या अहंकार- में उलझ जाता है, तो उसका मन सीमित हो जाता है। वह अपने ही बनाए दायरे में कैद हो जाता है। लेकिन जब वही मनुष्य अपनी एषणा को अनंत की ओर मोड़ देता है; तब वह कहता है कि 'मैं इस धरती पर उनके ही कार्य को पूरा करने आया हूं', तब उसका मन खुल जाता है, उसकी चेतना विस्तृत हो जाती है। यही ध्यान का मूल्य है, यही साधना का अर्थ है, और यही मनुष्य के जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य भी है।

याद रखिए, घमंड मनुष्य के मन की सबसे बड़ी बीमारी है। जब मनुष्य अपने ज्ञान, जाति, पद या सामर्थ्य का अभिमान करता है, तो उसका पतन निश्चित होता है। लेकिन जो व्यक्ति अपने को परमपुरुष का साधन मान लेता है, वह सदा विनम्र रहता है, और वही विनम्रता उसकी शक्ति बन जाती है। यदि मनुष्य परमपुरुष के प्रति प्रेम सेवा, तो कृपा अपने आप उतरती है। कृपा तर्क से परे है। वह चाहेंगे, तो कृपा करेंगे; नहीं चाहेंगे, तो नहीं करेंगे, परंतु प्रेम एक ऐसा आकर्षण है, जो स्वयं कृपा को खींच लेता है। जीवों के पास यदि प्रेम है, तो परमपुरुष के पास उनकी अनंत कृपा है।

जीवों के पास यदि प्रेम है, तो परमपुरुष के पास उनकी अनंत कृपा है। जिस क्षण मनुष्य अपने जीवन को सेवा, प्रेम और समर्पण का माध्यम बना लेता है, उसी क्षण उसके भीतर शांति जन्म लेती है।

यही सृष्टि का संतुलन है। जिस क्षण मनुष्य अपने जीवन को सेवा, प्रेम और समर्पण का माध्यम बना लेता है, उसी क्षण उसका भय मिट जाता है और भीतर एक स्थायी शांति जन्म लेती है।

श्री श्री आनंदमूर्ति

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

शेखर कपूर | फिल्मकार

एआई सबसे लोकतांत्रिक तकनीकी क्रांति है। इसका असली उद्भव सामाजिक-आर्थिक पिरामिड के निचले हिस्से से होगा, जहां इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। दुर्भाग्य से, पिरामिड के ऊपरी हिस्से के संभावित पतन से इसका विकास रुक सकता है।

अनुलोम-विलोम

जंगलराज

बाहुबलियों से मुक्त होता बिहार

बिहार में बीते कुछ दशकों में जब भी चुनावों का जिक्र होता था, तो बरबस आंखों के सामने जंगलराज की तस्वीर उभर जाया करती थी, जिसमें चुनाव का मतलब जीतने की सूरत में जश्न और हारने की स्थिति में मार-काट होता था। राजनीतिक नेताओं की सत्ता-लालसा ने यहां की राजनीति में धन-बल, बाहुबल और आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों की आमद बढ़ाई, जिसके बाद सत्ता का अर्थ ही बदल गया। आलम यह हो गया कि यहां सत्ता का मतलब भय, भूख व बंदूक बन गया और राज्य की तरक्की का अर्थ सत्ताधीशों का निजी विकास होना बन गया। बाहुबलियों के भरोसे राज्य सरकार चलने लगी और जातिवाद की राजनीति गांव-गांव तक पहुंच गई। इसका दुष्परिणाम यह निकला कि बिहार विकास की राह में निरंतर पिछड़ता चला गया। मगर इस बार वहां का जनमानस पूरी तरह से बदला-बदला सा नजर आ रहा है। 21वीं सदी के बिहार के युवा मतदाता जात-पात से ऊपर उठकर अपना और राज्य का विकास चाहते हैं, इसलिए वे जंगलराज के नेताओं और बाहुबलियों के भय से जरा भी खौफजदा नहीं हैं। यह बिहार की पूरी एक पीढ़ी के लिए ही नहीं, बल्कि समूचे देश की जनता के लिए भी शुभ संदेश है। बिहार के युवा मतदाता अब भयमुक्त राज्य का सपना साकार करना चाहते हैं, ताकि उनका पलायन रुक सके और वे अपने राज्य को आगे बढ़ा सकें। बिहार को यदि अपने स्वर्ण युग में लौटना है, तो उसे बाहुबलियों को किनारे करके अच्छी राजनीति की ओर बढ़ना ही होगा।

अरविंद रावल, टिप्पणीकार

हाल के कुछ वर्षों का बिहार देखिए। अब वहां उस तरह से अपराध नहीं होते, जैसे पहले हुआ करते थे। पहले के समय में तो आलम यह होता था कि पूरा मतदान-केंद्र ही लूट लिया जाता था। किसी बुजुर्ग से बात कीजिए, तो वह यही कहेंगे कि उन दिनों बाहुबली के गुंडे ही आमतौर पर मतपत्र पर मुहर लगाते थे, किसी दूसरे को मौका नहीं मिलता था। वह ऐसा वक्त था, जिसमें जिसको जहां अवसर मिलता, बूथ लूट लेता। मगर अब तस्वीर काफी हद तक बदल गई है। अब जंगलराज का वह दौर नहीं रहा। यहां की तमाम सरकारों ने ऐसे उपाय किए हैं कि आपराधिक प्रवृत्ति के तत्व चुनावों से दूर होते गए। इसी का फायदा यह हुआ कि अब यहां चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से होने लगे हैं और चुनावी हिंसा की खबरें नहीं आतीं। इसलिए, उम्मीद यही है कि अब यह तस्वीर और बेहतर बनेगी, और यदि कोई बाहुबली या अपराधी चुनाव में खड़ा है, तो वहां की जनता उसे उचित सबक सीखाएगी।

दीपक, टिप्पणीकार

अब भी यहां अपराध कम नहीं होते

किसी सूबे को हम 'जंगलराज' क्यों कहते हैं? क्योंकि, वहां कानून-व्यवस्था की हालत बहुत खराब होती है, अपराधियों व असामाजिक तत्वों के हौसले बुलंद रहते हैं, बाहुबली कानून को ठेंगा दिखाते हैं और एक आम आदमी के लिए सुकून के साथ जीवन गुजारना काफी मुश्किल होता है। अगर इस पैमाने पर देखें, तो बिहार की सेहत अब भी बहुत नहीं सुधरी है। अब भी यहां आपराधिक वारदातें खूब होती हैं, जिसके कारण यह कहना गलत होगा कि जंगलराज की जो धारणा इस राज्य के साथ नत्थी हो गई है, वह अब खत्म हो गई है। राज्य में कानून-व्यवस्था बिल्कुल दुरुस्त हो गई है। अलबत्ता, आज भी हम यहां की कानून-व्यवस्था की हकीकत जान सकते हैं।

आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं। बेशक, कुछ लोग तर्क देते हैं कि 2012 में 3,566 हत्याओं का गवाह यह राज्य बना था, वहीं 2023 में यह संख्या घटकर 2,862 हो गई है, लेकिन अपराध की बात करें, तो इसमें बढ़ोतरी ही हुई है। जैसे- 2013 में प्रति लाख आबादी पर 183.7 आपराधिक मामले दर्ज किए गए थे, जो 2023 में बढ़कर 277.5 हो चुके हैं। तो, जब अपराध बढ़ रहे हैं, तो राज्य कैसे जंगलराज से मुक्त हो गया? यहां तक कि चुनावी हिंसा ही अभी वहां जिस तरह से हो रही है, वह चिंता पैदा करती है। दो बाहुबलियों की झड़प में एक की जान चली गई और दूसरा हिरासत में ले लिया गया। यह घटना इसका भी संकेत है कि बिहार में अब भी चुनाव में बाहुबलियों का दबदबा कायम है। यह दावा झूठा है कि आपराधिक तत्वों पर लगाम लग चुका है, असलियत में ऐसे तत्वों को संरक्षण ही मिल रहा है। यह पूरा घटनाक्रम इस बात का भी संकेत है कि पुलिस-प्रशासन को उस हद तक खुली छूट नहीं मिल सकी है कि वे आपराधिक तत्वों पर पूरी तरह से लगाम लगा सकें। पुलिस-प्रशासन के यदि हाथ-पैर बंधे होंगे, तो जंगलराज से मुक्ति भला कैसे संभव है?

यह सही है कि दूसरे राज्यों में भी इस तरह की आपराधिक घटनाएं होती रहती हैं और 'जंगलराज' की धारणा उनके साथ चिपकी नहीं है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि बिहार की बदहाली को चुपचाप स्वीकार कर लिया जाए। वहां जिस तरह की स्थिति है, उसमें व्यापक बदलाव की जरूरत है और यह तभी हो सकता है, जब आपराधिक प्रवृत्ति के तमाम लोगों को सलाखों के पीछे डाल दिया जाए। ऐसे में, मौजूदा विधानसभा चुनाव आम लोगों के लिए मौका है कि वे ऐसे तत्वों को पहचानें, उसे चुनाव में हराएं और स्वच्छ छवि वाले जन-प्रतिनिधियों को चुनें। इसी से बिहार की छवि बेहतर बनेगी।

अमृतेश कुमार, टिप्पणीकार

संवाद से ही विवाद का निदान संभव है

विभाजनकारी बयान

राहुल गांधी एक लंबे समय से यह प्रचारित कर रहे हैं कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च जातियों का आधिपत्य है और दलित-पिछड़ी जातियां हाशिये पर धकेल दी गई हैं। गत दिवस बिहार में उन्होंने यह भी कह दिया कि यही स्थिति सेना में भी है। उनकी मानें तो उच्च जातियों के दस प्रतिशत लोगों ने सेना पर नियंत्रण कर रखा है। पहला प्रश्न तो यही उठता है कि उन्हें यह कैसे पता चला और दूसरा यह कि आखिर दस प्रतिशत लोगों का सेना पर नियंत्रण होने का क्या मतलब? वे ऐसे बयान देकर न केवल लोगों को गुमराह कर रहे हैं, बल्कि सेना की छवि भी मलिन कर रहे हैं। कम से कम उन्हें सेना को तो बख्श देना चाहिए, जिसमें जाति, पंथ आदि के लिए कोई स्थान नहीं। कोई भी यह नहीं कह सकता कि सेना की भर्ती में किसी तरह का भेदभाव होता है। यह ठीक नहीं कि राहुल गांधी जाने-अनजाने सेना की साख पर प्रहार कर रहे हैं। लगता है वे यह भूल गए कि कुछ समय पहले सेना को नीचा दिखाने वाले अपने बयान के लिए उन्हें किस तरह सुप्रीम कोर्ट की फटकार का सामना करना पड़ा था। यह विचित्र है कि राहुल गांधी सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का उल्लेख कर यह तो कहते रहते हैं कि वहां दस प्रतिशत की हिस्सेदारी वाली उच्च जातियों का प्रभुत्व है, लेकिन यह नहीं स्पष्ट करते कि खुद कांग्रेस के विभिन्न संगठनों में दलित, पिछड़ी जातियों का कितना प्रतिनिधित्व है? राहुल गांधी की समझ से असमान प्रतिनिधित्व का एक मात्र उपाय जातिगत जनगणना है। हालांकि जातिगत जनगणना कराने का फैसला ले लिया गया है, लेकिन उन्हें इतने से ही संतोष नहीं। वे इसकी गिनती भी चाह रहे हैं कि किस क्षेत्र में किस जाति के कितने लोग हैं? क्या इससे वह असमान प्रतिनिधित्व दूर हो जाएगा, जिसकी चर्चा राहुल गांधी करते रहते हैं? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि मनमोहन सरकार के समय सच्चर कमेटी के जरिये यह जानने की चेष्टा की गई थी कि सेना में कितने मुस्लिम हैं? सेना की आपत्ति के बाद ऐसा नहीं हो सका। बीते कुछ समय से राहुल गांधी खुद को सामाजिक न्याय का सबसे बड़ा पक्षधर साबित करने में लगे हुए हैं, लेकिन सब जानते हैं कि राजीव गांधी के समय किस तरह कांग्रेस ने ओबीसी आरक्षण का प्रबल विरोध किया था। राहुल गांधी को यह भी बताना चाहिए कि कांग्रेस ने लंबे समय तक सत्ता में रहते हुए असमान प्रतिनिधित्व को दूर करने के लिए क्या किया? असमान प्रतिनिधित्व की समस्या से इन्कार नहीं, लेकिन इसका समाधान समाज को विभाजित करना और जातियों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करना नहीं है। दुर्भाग्य से राहुल गांधी ऐसा ही कर रहे रहे हैं। इससे भी खराब बात यह है कि वे ऐसा करते हुए जातीय वैमनस्य को भी हवा दे रहे हैं।

कड़ी कार्रवाई जरूरी

अररिया में परमान नदी पर बने पुल का पिलर धंस गया। करीब चार करोड़ की लागत से बने इस पुल का महज छह साल में धंस जाना गंभीर सवालों को जन्म दे रहा। ग्रामीण कार्य विभाग ने इस पुल का निर्माण करवाया था। सवाल यह कि क्या पुल निर्माण में घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया गया, इंजीनियरिंग का दोष था या मानकों का पालन नहीं किया गया। ग्रामीण कार्य विभाग ने इसकी जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच के बाद विभाग की ओर से कहा गया है कि पुल का पिलर धंसने की जांच शुरू कर दी गई है। अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। जो भी दोषी हैं, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। लेकिन, बड़ा सवाल है कि क्या दोषी पहचाने जाएंगे, सही तरीके से जांच होगी। सवाल इसलिए कि जिस विभाग ने पुल का निर्माण करवाया, उसी विभाग के अधिकारी अब इसकी जांच कर रहे हैं। क्या विभागीय अधिकारी अपने ही कनिष्ठों के कुकृत्य से पर्दा हटाने में पारदर्शिता बरतेंगे। शायद बरत भी लें, लेकिन लोगों के मन में सवाल तब भी रहेंगे कि क्या ईमानदारी से जांच हुई है। बेहतर होगा कि जांच के लिए एक विशेष दल का गठन हो और विभागीय अफसर इससे बाहर रहें। दोषी चिह्नित किए जाएं और उनपर कड़ी कार्रवाई हो। जांच के दायरे में सिर्फ निर्माण कराने वाले ही नहीं आएं, जांच उनकी भी होनी चाहिए जिन्हें इसकी मानिटरिंग करनी थी। जाहिर है अगर निगरानी सही से होती तो गड़बड़ी करने वालों को खौफ होता और शायद यह घटना नहीं होती।

> अररिया में पुल धंसने की जांच पारदर्शी और निष्पक्ष होनी चाहिए, ताकि दोषियों की पहचान हो सके।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या महिला वनडे विश्व कप में भारतीय टीम की जीत लड़कियों को खेलों में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगी?

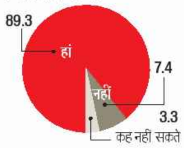

आज का सवाल

क्या बाहुबली छवि वाले उम्मीदवारों के लिए राजनीतिक दलों के साथ जनता भी जिम्मेदार है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

नीतीश के लिए निर्णायक बने रहने की चुनौती

राज कुमार सिंह

पिछली बार तीसरे स्थान पर पहुंचने के बावजूद नीतीश की पार्टी का सत्ता के लिए अपरिहार्य बने रहना ही बहुत कुछ कहता है। इस चुनाव में उनकी कड़ी परीक्षा है

कुछ दिन पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने चुनावी सभा में यह एलान किया कि बिहार में मुख्यमंत्री की कुर्सी पर फिलहाल अभी कोई 'वैकेंसी' नहीं है। उनका यह बयान मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार को समर्थन के रूप में देखा गया। हालांकि उससे कुछ दिन पहले शाह ने ही कहा था कि मुख्यमंत्री के नाम पर निर्णय नतीजों के बाद होगा। स्पष्ट है कि मुख्यमंत्री को लेकर राजग की सहयोगी भाजपा में ऊहापोह की स्थिति है, लेकिन यह भी सच है कि नीतीश कुमार ही पूरी चुनावी चर्चा के केंद्र में हैं। बिहार के राजनीतिक परिदृश्य पर अभी नीतीश कुमार की जदयू तीसरे नंबर पर, लेकिन राज्य की जटिल राजनीति में नीतीश का महत्व इसी से समझा जा सकता है कि 2005 के बाद से उसके बिना राज्य में कोई सरकार नहीं बन पाई। बिहार के सामाजिक-राजनीतिक समीकरणों का संकेत यही है कि शायद इस चुनाव के बाद भी जदयू के बिना नई सरकार नहीं बन पाएगी। विधानसभा में तीसरे स्थान पर पहुंच जाने के बावजूद अगर कोई दल यह कहे कि उसका नेता सत्ता के खेल में इतना अपरिहार्य बना रहता है तो जाहिर है कि वह राज्य की राजनीति में बड़ा ब्रांड बन चुका है।

यह ब्रांड अचानक नहीं बन गया। लालू-राबड़ी राजनीति से असहज जार्ज फर्नांडिस सरीखे समाजवादी नेताओं ने बिहार के सामाजिक समीकरण को ध्यान में रखते हुए यह ब्रांड गढ़ा। मंडल-कमंडल के बीच राजनीतिक ध्रुवीकरण के मद्देनजर लालू के इर्दगिर्द गोलबंद ओबीसी और अल्पसंख्यक वोट बैंक में सेंध लगाए बिना ऐसे ब्रांड की स्वीकार्यता नहीं बन सकती थी। उत्तर प्रदेश की तरह बिहार भी अहसास करने लगा था कि सामाजिक न्याय की मलाई चंद दबंग और प्रभावशाली जातियां ही चट कर रही हैं। इसीलिए ईबीसी का नया वोट बैंक तैयार किया गया। कुर्मी समुदाय के साफ छवि वाले शिक्षित नेता नीतीश कुमार को उसका चेहरा बनाया गया। जनता दल में विभाजन कर अलग समता पार्टी बनाई गई, जिसने भाजपा से गठबंधन किया। लंबे संघर्ष के बाद 2005 में यही बिहार में बदलाव का ब्रांड बनकर उभरा। बेशक ब्रांड नीतीश के शिल्पकार जार्ज थे, लेकिन मार्केटिंग भाजपा ने भी जमकर की। कारण वही कि सामाजिक न्याय के प्रतीकों में से ही किसी एक को आगे किए बिना लालू-राबड़ी राज से बिहार की मुक्ति संभव नहीं थी। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद ओबीसी में भाजपा की स्वीकार्यता बढ़ी है, पर उससे पहले तक बिहार में वह अगड़ों की पार्टी मानी जाती थी, जिससे अल्पसंख्यकों की दूरियां भी जगजाहिर हैं। भाजपा का गणित यही था कि नीतीश के जरिये लालू के ओबीसी-अल्पसंख्यक वोट बैंक में सेंध लगाए बिना बिहार में न तो बदलाव संभव है और न ही उसका भविष्य। लालू-राबड़ी के जंगलराज का चुनावी नारा भी उस बदलाव की हवा में बेहद कारगर साबित हुआ। नई पीढ़ी को लालू-राबड़ी का जंगलराज याद दिलाना पड़ता है, जबकि नीतीश के शासन के सभी प्रत्यक्षदर्शी हैं।

एक चुनावी सभा को संबोधित करते मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ● फाइल

जदयू और भाजपा बिहार की राजनीति में एक-दूसरे के पूरक बने। बेशक इसका शुरुआती लाभ नीतीश को ही मिला और वे बदलाव की राजनीति के नायक बनकर एक बड़ा ब्रांड बन गए। इसका एक बड़ा कारण भाजपा में किसी व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता वाले चेहरे का अभाव भी रहा। इधर भाजपा भी पिछले 20 वर्षों के दौरान राज्य में अपना जनाधार बढ़ाने में सफल रही है। विधानसभा में सीटें और चुनाव में मत-प्रतिशत इसका प्रमाण है, लेकिन ब्रांड नीतीश के आसपास वह अपना कोई चेहरा स्थापित नहीं कर पाई। नीतीश के समक्ष लालू-राबड़ी की राजनीति के प्रतिनिधि अब तेजस्वी यादव हैं। वे अपना परंपरागत 'एम-वाइ' यानी मुस्लिम-यादव वोट बैंक तो काफी हद तक बचाए रखने में सफल रहे, लेकिन ब्रांड नीतीश के जरिये हुई सेंधमारी की भरपाई नहीं कर पाए। बिहार का यही जमीनी सामाजिक-राजनीतिक गणित दो दशक बाद भी ब्रांड नीतीश की सबसे बड़ी ताकत है। इसके बल पर वे चुनावी राजनीति में न सिर्फ जरूरी, बल्कि दोनों बड़े दलों के लिए सत्ता की मजबूरी भी बने हुए हैं। हालांकि विकास के वादों और दावों के आईने में बिहार कहां खड़ा है, इस सवाल का जवाब अब जनता नीतीश से चाहती है।

वैसे नीतीश एक नहीं, दो बार पाला बदल कर दोनों गठबंधनों में सरकार का नेतृत्व कर चुके हैं। इसलिए कोई भी उन पर सीधा हमला नहीं बोलता, क्योंकि सरकार में भागीदार तो वे स्वयं भी रहे। नीतीश से भी ज्यादा समय मुख्यमंत्री रहने के रिकार्ड बताते हैं कि अगर सरकार जन आकांक्षाओं पर खरी उतरे तो सत्ता विरोधी भावना अपरिहार्य नहीं है, लेकिन जदयू का गिरता चुनावी ग्राफ कुछ और इशारा कर रहा है। 2020 के विधानसभा चुनाव में जदयू मात्र 43 सीटों पर सिमट गई। तर्क दिया जाता है कि भाजपा की शह पर चिराग पासवान ने उसमें बड़ी भूमिका निभाई, पर एक स्थापित ब्रांड को इतना जोरदार झटका देने से भी सवाल तो उठते ही हैं, जिनका जवाब शायद इन चुनावों में मिल जाए।

पिछले विधानसभा चुनाव में राजग और महागठबंधन में कड़ा मुकाबला था। राजग 125 सीटें जीत गया था, जबकि महागठबंधन 110 पर अटक गया था। सर्वाधिक साढ़े 23 प्रतिशत वोट राजद को मिले थे, जबकि 19.8 प्रतिशत वोटों के साथ भाजपा दूसरे स्थान पर रही। 15.7 प्रतिशत वोटों के साथ सत्ता संतुलन की चाबी जदयू के हाथ रही। हालांकि नीतीश की बढ़ती उम्र और सेहत को लेकर उठते सवालों के चलते जदयू नेताओं में भी अपने राजनीतिक भविष्य के प्रति चिंता दिखती है। इस चिंता से जदयू के वोट बैंक को इन चुनावों में प्रभावित होने से बचाने की चुनौती नीतीश कुमार के समक्ष है। अच्छी बात यह है कि नीतीश पर व्यक्तिगत आरोप अभी तक कोई नहीं लगा पाया। फिर भी अगर जदयू का वोट बैंक दरका तो सत्ता के खेल में ब्रांड नीतीश का दबदबा भी प्रभावित हो सकता है। बिहार के दो प्रमुख दलों भाजपा और राजद के लिए नीतीश तभी तक जरूरी हैं, जब तक कि सरकार बनाने के लिए मजबूरी बने हुए हैं। इस बार ईबीसी के लिए कई छोटे दल भी चुनावी ताल ठोक रहे हैं, जो जदयू के वोट बैंक में ही सेंध लगाएंगे।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

लापता हुई आम सहमति की राजनीति

राजीव सचान

आज किसी भी ऐसे विषय को रेखांकित करना कठिन है, जिस पर सत्तापक्ष और विपक्ष एकमत दिखते हों

चुनाव आयोग की ओर से कल से नौ राज्यों और तीन केंद्रशासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर शुरू कर दिया गया। इसी के साथ उसके विरोध में उठी आवाजें मुखर होनी शुरू हो गईं। तमिलनाडु की स्टालिन सरकार इस प्रक्रिया के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई। आने वाले समय में कुछ और लोग एसआइआर के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाते दिख सकते हैं। इनमें केरल और पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ नेताओं के साथ स्वयं को लोकतंत्र का प्रहरी कहने वाले लोग भी हो सकते हैं। हालांकि बिहार में एसआइआर के विरोध में सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने वालों को मुंह की खानी पड़ी। तमाम दलीलों एवं दुष्प्रचार के बावजूद ऐसे लोग सुप्रीम कोर्ट के समक्ष यह सिद्ध नहीं कर सके कि बिहार में एसआइआर के नाम पर कुछ खास वोटरों के नाम इस इरादे से काटे जा रहे हैं कि भाजपा को चुनावी लाभ मिल सके। विपक्षी दलों और उनके समर्थकों की ओर से एसआइआर के विरोध में आशंकाएं तो अनगिनत जताई गईं, लेकिन वे सुप्रीम कोर्ट के समक्ष निराधार साबित हुईं। इसी कारण एसआइआर बिहार में मुद्दा नहीं बन सका। इसके बाद भी तमिलनाडु, केरल और बंगाल जैसे गैर-भाजपा शासित राज्यों में उसका विरोध हो रहा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तो उसके खिलाफ विरोध मार्च निकाल दिया। क्या एसआइआर के दूसरे चरण का विरोध इसलिए हो रहा है, क्योंकि इन आरोपों में कुछ सत्यांश है कि इसे भाजपा के इशारे पर किया जा रहा है? यदि ऐसा होता तो सुप्रीम कोर्ट इस ओर संकेत ही नहीं करता, उस पर रोक भी लगा देता।

एसआइआर का विरोध इस मानसिकता के तहत हो रहा है कि मोदी सरकार के साथ केंद्रीय संस्थाओं की ओर से जो कुछ भी किया जाता है, वह अनुचित-अवैधानिक ही होता है। इसी कारण मोदी सरकार के हर फैसले और यहां तक कि संसद से पारित होकर कानून बनने वाले विधेयकों का विरोध किया जाता है और उन्हें सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी जाती है। इस सिलसिले के थमने के कोई आसार नहीं, क्योंकि सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच की आम सहमति की उस राजनीति का पूरी तरह लोप हो गया है, जो एक समय भारतीय राजनीति का प्रमुख अवयव थी। इसके चलते राष्ट्रीय महत्व के कुछ मुद्दों पर पक्ष और विपक्ष की ओर से आम सहमति की राजनीति पर चलने की बातें की जाती थीं। आज तो आम सहमति की राजनीति जैसा शब्द भी करीब-करीब प्रचलन से बाहर हो चुका है। इसका स्थान विरोध के लिए विरोध की राजनीति ने ले लिया है। एसआइआर का विरोध इसी राजनीति के तहत हो रहा है।

सत्तापक्ष-विपक्ष के बीच आम राय का अभाव ● फाइल

यह राजनीति इतनी अधिक हावी हो गई है कि कई बार विरोधी दलों की सरकारें केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को भी लागू करने में आनाकानी करती हैं। बंगाल ने अविकसित जिलों के विकास की केंद्र की योजना लागू नहीं की है और दिल्ली में आयुष्मान योजना तब लागू हो पाई, जब आम आदमी पार्टी सत्ता से बाहर हो गई। जब वह दिल्ली की सत्ता में थी तो उसने पीएमश्री योजना में शामिल होने से इन्कार कर दिया था। इन्कार करने वालों में पंजाब और बंगाल भी थे। स्कूलों को उन्नत करने वाली केंद्र की इस योजना में शामिल होने के अपने फैसले को पिछले दिनों केरल सरकार ने ठंडे बस्ते में डाल दिया, क्योंकि सरकार में शामिल भाकपा को यह रास नहीं आया। इसकी भी अनदेखी न की जाए कि कई राज्यों ने नई शिक्षा नीति को अपनाने के बजाय उसे खारिज करने का फैसला किया है।

अब उन मुद्दों पर भी आम सहमति की राजनीति करने की कोशिश होती भी नहीं दिखती, जिन पर यह माना जाता था कि वे पक्ष-विपक्ष के नहीं, देश के मुद्दे होते हैं। उदाहरणस्वरूप विदेश और रक्षा नीति के कुछ बड़े मसलों पर आम सहमति की राजनीति अपनाई जाती थी। अब इनसे जुड़े मामलों पर ऐसा नहीं होता। आपरेशन सिंदूर के दौरान चंद दिन के लिए ही पक्ष-विपक्ष एकजुट दिखा, लेकिन यह सैन्य अभियान स्थगित होते ही दोनों पक्ष एक-दूसरे के खिलाफ खड़े हो गए। कुछ विपक्षी नेताओं ने सरकार के साथ सेना पर भी निशाना साधने में संकोच नहीं किया। ऐसा ही गलवन घाटी में चीनी सैनिकों से खूनी झड़प के समय भी देखने को मिला था। राहुल गांधी यह दोहराते ही रहते हैं कि मोदी चीनी राष्ट्रपति और अमेरिकी राष्ट्रपति से डरते हैं। मोदी जब एससीओ सम्मेलन में भाग लेने चीन गए तो विपक्ष ने सवाल उठाए। हाल में जब तालिबान विदेश मंत्री भारत आए तो सरकार की अफगान नीति को सवालों के घेरे में खड़ा किया गया।

अभी यह स्पष्ट नहीं कि अमेरिका से व्यापार समझौता कब होगा, पर यह साफ है कि वह जब भी होगा, तब विपक्ष उसे लेकर सरकार को कठघरे में खड़ा करेगा। इसके प्रति सुनिश्चित हुआ जा सकता है कि जब भी यह समझौता होगा, कम से कम कांग्रेस की ओर से यह अवश्य कहा जाएगा कि मोदी ने ट्रंप के समक्ष समर्पण कर दिया। जब विदेश और रक्षा नीति से जुड़े विषय भी दलगत राजनीतिक मतभेदों की भेंट चढ़ जा रहे हों, तब फिर इसकी कल्पना नहीं की जा सकती कि राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय महत्व के अन्य विषयों पर एकजुटता या आम सहमति देखने को मिल सकती है। आम सहमति की राजनीति के अभाव का मतलब है राजनीतिक दलों के बीच हर मामले में तनाव और तकरार। यह स्थिति पक्ष-विपक्ष के दलगत हित पूरे कर सकती है, देश के हितों का संधान हर्गिज नहीं कर सकती।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

हर्ष और विषाद

हर्ष एवं विषाद जीवन का अभिन्न अंग हैं। हर्ष से विषाद का मतलब पहले हर्ष यानी जीवन में अनुकूलता और बाद में विषाद यानी जीवन में कष्ट। यह स्थिति व्यक्ति को हर्ष से विषाद नहीं अवसाद की ओर ले जाती है, क्योंकि जो व्यक्ति जीवन में पहले सुख भोग लेता है, उसके समक्ष जब कभी प्रतिकूल परिस्थितियां आती हैं तब उन प्रतिकूलताओं का सामना होने पर प्रायः बेचैनी और घबराहट होती है। जबकि विषाद से हर्ष का मतलब साफ प्रकट होता है कि चुनौतियों से लड़कर अनुकूल स्थितियों की प्राप्ति।

गीता में पहला अध्याय ही विषाद योग है। कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिए शंखनाद हो रहा है। इस प्रथम अध्याय में जहां दुर्योधन हर्षित है, वहीं अर्जुन को विषाद होता है। यहां अर्जुन का विषाद लाभकारी सिद्ध होता है। अर्जुन के विषाद का ही परिणाम था कि उन्हें श्रीकृष्ण से ज्ञान के साथ उनके विराट रूप का दर्शन भी होता है। वैसे तो अर्जुन को तो तभी निश्चिंत हो जाना चाहिए था कि उनके साथ साक्षात भगवान हैं, परंतु अर्जुन रणभूमि में ज्ञान-वृद्धि के लिए उत्सुक हैं।

जीवन में जब भी विपरीत एवं जटिल स्थिति आए, तो उसके साथ अनुकूलता तलाशने की आदत डालनी चाहिए। हनुमान जी माता सीता का पता लगाने लंका जाते हैं। उन्हें अनुभूति हो रही थी कि वहां नकारात्मकता होगी, लेकिन इसी नकारात्मकता के बीच विभीषण के रूप में उन्हें एक सकारात्मकता भी दिखी और पूरी नकारात्मकता को वे जलाने में सफल हुए। जीवन पर भी नजर डालें तो हर बच्चा मां के गर्भ में बड़ी कठिनाई से नौ माह रहता है, लेकिन इस अवधि में वह तन-मन की आकृति में ढलता है। अतः विपरीत स्थिति को यह मानकर चलना चाहिए कि वह वह हमे गढ़ने के लिए आई है न कि यह महसूस करना चाहिए कि नष्ट करने के लिए। कठिनाई के बाद हमें जो सुख मिलेगा, वह निश्चित रूप से आह्लादकारी होगा।

सलिल पाण्डेय

पाठकनामा

pathaknama@pat.jagran.com

कर्तव्य पथ पर अग्रसर संघ

हृदयनारायण दीक्षित का 'फिर संघ के पीछे पड़ी कांग्रेस' शीर्षक से प्रकाशित लेख पढ़ा। विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी सामाजिक संगठन के रूप में स्थापित 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' ध्येयनिष्ठ विचारवादी संगठन है। 'व्यक्ति निर्माण' करने वाली लाखों संघ शाखाओं और करोड़ों स्वयंसेवकों के रूप में आज संघ देश की सीमाओं को लांघकर विश्वव्यापी होता जा रहा है। संघ के इस स्वाभाविक विस्तार से कांग्रेस सहित सभी स्वयंभू सेक्युलरवादियों को चिढ़ है। लंबे समय तक सत्तासीन रही कांग्रेस को जब भी अवसर मिला, तब संघ और उसके नियमित क्रियाकलापों पर आघात करने के हरसंभव प्रयास किए गए। ताजा उदाहरण कर्नाटक का है, जहां सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार ने संघ के पथ संचलन और अन्य गतिविधियों को प्रतिबंधित करने की कुचेष्टा की, लेकिन सफल नहीं मिली। संघ की याचिका पर न्यायालय ने सेक्युलर खेमे के मंसूबों पर पानी फेर दिया। संघ राष्ट्रहित में सबको साथ लेकर चलने का हिमायती है। भारतीयता के भाव-बोध के साथ समाज के बीच समरसता स्थापित करना संघ का लक्ष्य है। संघ शतायु होकर अपने शताब्दी वर्ष में भारतीय समाज के बीच पंच-परिवर्तन के रूप में कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, 'स्व' का भाव-बोध और नागरिक कर्तव्य इन पांच सामाजिक संस्कारों से हर भारतीय को संस्कारित करने के लक्ष्य को लेकर सक्रिय है। संघ के इन क्रियाकलापों में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे सामाजिक रूप से मान्य करने में किसी को कोई आपत्ति हो। शतायु हो चुके संघ की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को समझ पाने में असमर्थ संघ विरोधियों के मन में ईर्ष्या की अग्नि अभी भी सुलग रही है, जबकि संघ निस्पृही भाव से अपने ध्येय पथ पर अग्रसर है।

pandeyvp1960@gmail.com

तैयारी ही सुरक्षा कवच

प्राकृतिक आपदाएं मानव सभ्यता के सामने सबसे बड़ी चुनौती रही हैं, परंतु सुनामी जैसी समुद्री आपदा अपने विनाशकारी प्रभाव और अचानक आने वाली तीव्रता के कारण वैश्विक चिंता का विषय रही है। दुनियाभर में सुनामी के खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और जोखिम कम करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष पांच नवंबर को विश्व सुनामी जागरूकता दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य वैज्ञानिक चेतावनी प्रणाली, सामुदायिक तैयारी और आपदा प्रबंधन की कुशल रणनीति द्वारा नुकसान को रोकना है। सुनामी के प्रसार की गति इतनी तेज होती है कि प्रतिक्रिया का समय अत्यंत कम मिलता है। इसलिए समय पूर्व अलर्ट सिस्टम, तटीय आबादी को प्रशिक्षित करना, बचाव मार्गों का निर्माण और स्थानीय प्रशासन की तत्परता बेहद आवश्यक है। जापान जैसे देशों ने आपदा प्रबंधन को अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में शामिल कर यह साबित किया है कि तैयारी जितनी मजबूत होगी, हानि उतनी कम होगी। प्रकृति चेतावनी नहीं देती, हमारी तैयारी ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

ई हिमांशु शेखर, गयाजी

आधी आबादी, अधूरा प्रतिनिधित्व

भारत में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के नाम पर हर चुनाव से पहले आधी आबादी यानी महिलाओं के लिए आरक्षण की चर्चा जोर-शोर से होती है। राजनीतिक दल मंचों पर महिला सशक्तीकरण के नारे लगाते हैं और पार्टी बैठकों में यह वादा किया जाता है कि महिलाओं को आधी सीटों पर मौका मिलेगा। जब चुनाव मैदान में उम्मीदवार तय करने का समय आता है, यह घोषणा केवल कागजों तक सिमट जाती है। वास्तविकता यह है कि किसी भी प्रमुख राजनीतिक दल ने अबतक टिकट वितरण में महिलाओं को बराबरी का स्थान नहीं दिया। कुछ पार्टियां 10 से 15 प्रतिशत टिकट देकर महिला सशक्तीकरण का दावा करती हैं। इससे साफ पता चलता है कि महिला आरक्षण का मुद्दा अब तक केवल एक चुनावी हथियार बनकर रह गया है, न कि एक सच्चा सामाजिक संकल्प। महिलाएं देश की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा हैं और हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा साबित कर चुकी हैं। फिर भी राजनीति में उनकी भागीदारी सीमित है। अगर दल वास्तव में महिलाओं को सशक्त बनाना चाहते हैं तो उन्हें केवल घोषणा नहीं बल्कि टिकट वितरण में भी बराबरी दिखानी होगी। जब तक राजनीतिक दल वादों को व्यवहार में नहीं उतारेंगे, तब तक आधी आबादी का आरक्षण केवल भाषणों और पोस्टरों की शोभा बढ़ाता रहेगा, लोकतंत्र को मजबूत करने का माध्यम नहीं बन सकेगा।

प्रभात कुमार भारती, मधुबनी

पोस्ट

दिल्ली-एनसीआर के लोग किन-किन बीमारियों के शिकार होते जा रहे हैं, इसका उन्हें अंदाजा भी नहीं होगा? दिल्ली का प्रदूषण पटाखों से तो नहीं ही है। अगर होता तो दो दिनों में समाप्त हो जाता। आवश्यकता इस बात की है कि केंद्र सरकार राज्यों के साथ मिलकर इस विकट स्थिति को सुधारने के उपाय करे।

हर्ष वर्धन त्रिपाठी @MediaHarshVT

विश्व भर में शराब की खपत घट रही है, पर भारत में बढ़ रही है। क्यों? इसके लिए राज्य सरकारें जिम्मेदार हैं। रेवड़ियां बांटने से खाली खजाने को भरने का रास्ता है कि टैक्स के माध्यम से आय हो। ठेकों की नीलामी से शराब की बिक्री तक, राज्य सरकारें इन्हें अपनी आय का बड़ा माध्यम बना चुकी हैं।

अखिलेश शर्मा @akhileshsharma1

अमोल मजूमदार के लिए बहुत अच्छा लग रहा है। घरेलू क्रिकेट में उन्होंने रनों का अंबार लगाया और बहुत प्रतिष्ठा भी कमाई, पर शायद वे गलत दौर में पैदा हुए, जो भारतीय टीम के लिए नहीं खेल पाए। बहरहाल अब वे विश्व विजेता टीम के गुरु हैं।

आकाश चोपड़ा @cricketaakash

जनपथ

अजहर चच्चू ला रहे खवातीन की फौज,
अब मुनीर चूड़ी पहन करें शौक से मौज।
करें शौक से मौज हूर बनकर इतराएं,
बुर्काधारी मैम तोप-बंदूक चलाएं!
यदि छेड़ा इस बार बचेंगे ना अब बच्चू,
खानदान के साथ मरेंगे अजहर चच्चू!!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त

जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प.बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073

E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 26 अंक 201

https://t.me/AllNewsPaperPaid1

****

कल्पमेधा

जो अच्छे व ईमानदार हैं, उनके साथ अच्छा और ईमानदार, तथा जो अच्छे व ईमानदार नहीं हैं, उनके साथ भी अच्छा और ईमानदार व्यवहार कीजिए, ताकि अच्छाई व ईमानदारी हर जगह रहे।
– लाओत्से

सख्ती की सीमा

देश भर में जब भी लोकसभा या किसी राज्य की विधानसभा के लिए चुनाव की घोषणा होती है, तो आचार संहिता लागू होने के बाद अमूमन हर राज्य से निर्वाचन आयोग की ओर से चलाए गए अभियान के तहत भारी मात्रा में शराब, अवैध नकद राशि, मादक पदार्थ आदि की जब्ती की खबरें आती हैं। दरअसल, इस अभियान का मकसद यह होता है कि मतदाताओं के बीच नकदी या शराब आदि बांट कर मतदान की प्रक्रिया को किसी खास दल या उम्मीदवार के प्रलोभन में आकर प्रभावित होने से रोका जाए। आदर्श और सिद्धांत रूप में निर्वाचन आयोग की यह कवायद लोकतंत्र की मजबूती को कायम रखने का अभियान है। मगर सवाल है कि बहुत लंबे समय से और लगभग हर चुनाव के पहले इस तरह के अभियान में भारी मात्रा में अवैध वस्तुओं और पैसों की जब्ती के बावजूद अब तक इस चलन पर रोक क्यों नहीं लगाई जा सकी है। निर्वाचन आयोग ऐसी ठोस व्यवस्था क्यों नहीं कर सका है, जिससे कोई भी दल या उसके उम्मीदवार चुनावी रिश्वत के रूप में पैसे, शराब, मादक पदार्थ या फिर कोई वस्तु देकर मतदाताओं को लुभाने की कोशिश न करे।

गौरतलब है कि बिहार विधानसभा चुनाव के लिए कल पहले चरण का मतदान है। उससे पहले चुनाव आयोग ने जिस तरह अपने अभियान के तहत अवैध सामान और नकदी की जब्ती की खबर दी है, उससे साफ है कि बिहार की चुनाव प्रक्रिया को स्वस्थ मतदान के बजाय अन्य कारकों से प्रभावित करने की कोशिश हो रही है। आयोग की एक रपट के मुताबिक, बिहार में अब तक 9.62 करोड़ रुपए नकद, 42.14 करोड़ रुपए मूल्य की शराब, 24.61 करोड़ रुपए मूल्य के मादक पदार्थ, करीब छह करोड़ रुपए की कीमती धातुएं और इसके अलावा 26 करोड़ रुपए से अधिक की मुफ्त बांटी जाने वाली अन्य वस्तुएं जब्त की गई हैं। यह कोई छिपी बात नहीं है कि कुछ दल या उम्मीदवार जब इससे आशंकित होते हैं कि लोगों के बीच उनका पर्याप्त समर्थन नहीं है और वे चुनाव हार सकते हैं, तब वे मतदाताओं को रिझाने के लिए गैरकानूनी तरीके से नकदी, शराब या अन्य मादक पदार्थ मुफ्त बांटने का सहारा लेते हैं।

जाहिर है, ऐसी कवायदें स्वच्छ और स्वतंत्र मतदान को प्रभावित करके लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर करने की कोशिश हैं। चुनाव आयोग की ओर से इस तरह की हरकतों के खिलाफ अभियान तो चलाए जाते हैं और बड़े पैमाने पर अवैध राशि और सामान की जब्ती की जाती है, कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया जाता है। मगर आम लोगों तक यह खबर शायद कभी नहीं पहुंच पाती है कि व्यापक स्तर पर जब्ती के बाद आयोग ने उसके वास्तविक आरोपियों को कानून के कठघरे में खड़ा कराया या नहीं, उसके खिलाफ कोई सख्त कार्रवाई हुई या नहीं। हर बार केवल अवैध सामग्री की जब्ती और कुछ निचले स्तर के कार्यकर्ताओं को पकड़े जाने तथा उन्हें संचालित करने वाले बड़े नेताओं को बख्श दिए जाने का ही नतीजा है कि चुनावों के दौरान मतदाताओं को गलत तरीके से अपने पक्ष में करने के लिए गैरकानूनी हरकतों का सहारा लिया जाता है। बिहार में जब्ती के संदर्भ में आयोग को सरकार से भी यह पूछना चाहिए कि शराबबंदी वाले राज्य में अवैध तरीके से इतने बड़े पैमाने पर शराब बांटने की कोशिश कैसे चल रही थी। यह एक स्वस्थ लोकतंत्र के सामने एक बड़ी चुनौती है और निर्वाचन आयोग को वर्षों से बदस्तूर जारी इस गैरकानूनी चलन को स्थायी तौर पर खत्म करने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे।

धोखाधड़ी का संजाल

पिछले कुछ समय से साइबर अपराधियों का संजाल जिस तरह लगातार बढ़ता देखा जा रहा है, उसमें डिजिटल हो रही व्यवस्था के सामने एक बड़ी चुनौती खड़ी हो गई है। इससे निपटने के लिए सरकार और जांच एजंसियों के मौजूदा सुरक्षात्मक उपाय बौने साबित हो रहे हैं। साइबर अपराधी ठगी की घटनाओं को अंजाम देने के लिए नए-नए तरीके इजाद कर रहे हैं। 'डिजिटल अरेस्ट' भी इनमें से एक है, जिसके जरिए बड़े पैमाने पर लोगों को धोखाधड़ी का शिकार बनाया जा रहा है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि केंद्र सरकार और केंद्रीय जांच जांच ब्यूरो (सीबीआइ) ने ऐसे मामलों में अब तक तीन हजार करोड़ रुपए से अधिक की उगाही किए जाने का अनुमान जताया है। यही कारण है कि अब सर्वोच्च अदालत ने इस तरह के मामलों से सख्ती से निपटने की जरूरत पर बल दिया है। साथ ही कहा कि अगर अदालत से कड़े आदेश पारित नहीं किए गए, तो यह समस्या और भी गंभीर हो सकती है।

गौरतलब है कि देश में साइबर अपराधों के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी का आकलन राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो की हाल की एक रपट से किया जा सकता है। इसमें कहा गया है कि वर्ष 2022 में देश भर में साइबर अपराध के 65,983 मामले दर्ज किए गए, जिनकी संख्या 2023 में इकतीस फीसद बढ़कर 86,420 हो गई। साइबर ठगी के ऐसे मामले भी सामने आते रहे हैं, जिनमें पीड़ित लोगों से करोड़ों रुपए ऐंठ लिए गए। ऐसे ही एक मामले में पिछले दिनों हरियाणा के अंबाला की एक बुजुर्ग महिला ने प्रधान न्यायाधीश को पत्र लिखकर कहा कि उन्हें और उनके पति को 'डिजिटल अरेस्ट' कर अपराधियों ने उनसे एक करोड़ रुपए से अधिक की रकम हड़प ली। इसके बाद शीर्ष अदालत ने ऐसे मामलों को लेकर सख्त रुख अपनाया है। सर्वोच्च न्यायालय के इस दखल से उम्मीद है कि सरकार और जांच एजंसियों की ओर से साइबर ठगों पर नकेल कसने के लिए जल्द ठोस एवं कारगर कदम उठाए जाएंगे। साइबर संजाल की दुनिया में जिस रफ्तार से जोखिम पैदा हो रहे हैं, उसमें व्यापक पैमाने पर डिजिटलीकरण के असुरक्षित होने को लेकर भी गंभीर सवाल उठने लगे हैं।

पर्वतीय जलस्रोतों पर मंडराता खतरा

पर्वतों और हिमनदों का संरक्षण केवल हिमालयी राज्यों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की प्राथमिकता होनी चाहिए। यदि हमने समय रहते इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाले दशकों में नदियों का प्रवाह और जीवन का संतुलन, दोनों अस्थिर हो जाएंगे।

कुमार सिद्धार्थ

जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और अस्थिर मानव हस्तक्षेप ने पर्वतीय जलस्रोतों के अस्तित्व को डगमगा दिया है। संयुक्त राष्ट्र की विश्व जल विकास रपट-2025 गहरी चिंता जताती है कि धरती के वे पर्वत, जिन्हें अब तक केवल प्राकृतिक सौंदर्य के प्रतीक के रूप में देखा जाता था, वास्तव में हमारे जीवन के सबसे बड़े जल भंडार हैं और अब वे पिघल रहे हैं। रपट का पहला वाक्य ही चेतावनी बन कर उभरता है 'पर्वतीय जलस्रोत, जो दुनिया के ताजे पानी का 60 फीसद तक उपलब्ध कराते हैं, हमारी आंखों के सामने पिघल रहे हैं।' यह केवल एक वैज्ञानिक कथन नहीं, बल्कि उन करोड़ों लोगों के भविष्य का सवाल है, जिनकी आजीविका और अस्तित्व इसी जल पर निर्भर है।

संयुक्त राष्ट्र की यह रपट हमें उस सच से रूबरू कराती है, जो अक्सर नजरों से ओझल रहता है। विश्व की जल सुरक्षा, पारिस्थितिकी और खाद्य आपूर्ति का बड़ा हिस्सा उन ऊंचे इलाकों पर निर्भर है, जिन्हें हम आमतौर पर हिमालय या आल्प्स जैसे नामों से जानते हैं। इन्हीं को वैज्ञानिक अब 'वाटर टावर्स' कहते हैं। यानी ऐसे जलस्तंभ जो पृथ्वी को जीवन देते हैं। यह कोई रूपक नहीं, बल्कि ठोस वैज्ञानिक सच्चाई है। ऊंचाई पर जमा बर्फ और हिमनद केवल पहाड़ों की शोभा नहीं, बल्कि नदियों, झरनों और भूजल के रूप में जीवन की धारा बहाने वाले स्रोत हैं।

पर्वतों और हिमनदों का संरक्षण केवल हिमालयी राज्यों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की प्राथमिकता होनी चाहिए। यदि हमने समय रहते इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाले दशकों में नदियों का प्रवाह और जीवन का संतुलन, दोनों अस्थिर हो जाएंगे। तब शायद हमारी आने वाली पीढ़ियां न तो बर्फ से ढकी चोटियों को वैसे देख पाएंगी, जैसे हम देखते हैं, और न ही उन नदियों का मीठा पानी पी पाएंगी, जिनसे हमारी सभ्यता ने जन्म लिया था। यह चेतावनी अब केवल वैज्ञानिक रपटों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि नीति, समाज और जनचेतना का हिस्सा बननी चाहिए, क्योंकि पहाड़ों का भविष्य ही हमारे जीवन का भविष्य है।

संयुक्त राष्ट्र की विश्व जल विकास रपट-2025 के अनुसार, वर्ष 2000 से 2021 के बीच विश्व में ताजे पानी की खपत में 14 फीसद की वृद्धि हुई है। कृषि क्षेत्र सबसे बड़ा उपभोक्ता बना हुआ है, जो कुल खपत का लगभग 72 फीसद पानी इस्तेमाल करता है। उद्योगों की हिस्सेदारी 15 फीसद और घरेलू उपयोग की 13 फीसद है। विकसित देशों में औद्योगिक खपत अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि गरीब देशों में 90 फीसद तक पानी खेती के काम आता है। इस बढ़ती मांग के बीच असली चिंता यह है कि आपूर्ति के स्रोत सिकुड़ रहे हैं। आल्प्स, एंडीज, किलिमंजारो से लेकर हिमालय तक, लगभग हर प्रमुख पर्वतीय क्षेत्र के हिमनद पिघल रहे हैं।

एंडीज में अस्सी के दशक से अब तक 30 से 50 फीसद तक हिमनद घट चुके हैं। अफ्रीका के माउंट केन्या, रुवेनजोरी और किलिमंजारो पर 2040 तक बर्फ पूरी तरह समाप्त हो जाने की आशंका जताई गई है। हिंदूकुश-काराकोरम-हिमालय, जिसे 'तीसरा ध्रुव' कहा जाता है, वहां सदी के अंत तक बर्फ की मात्रा आधी रह जाने की संभावना है। यही वह क्षेत्र है जिससे गंगा, ब्रह्मपुत्र,

सिंधु और सतलुज जैसी बड़ी नदियां जन्म लेती हैं और जो लगभग 1.65 अरब लोगों को पानी उपलब्ध कराती हैं। इन नदियों का प्रवाह अस्थिर हुआ, तो आधी से अधिक एशिया की जनसंख्या सीधे प्रभावित होगी।

भारत के संदर्भ में यह संकट और भी गंभीर है। हिमालय में 9,500 से

> **हिमनदों के पिघलने के साथ एक नई चुनौती भी तेजी से बढ़ रही है। वह है झील फटने से आने वाली अचानक बाढ़। नेपाल, सिक्किम, अरुणाचल और लद्दाख जैसे क्षेत्रों में यह चिंता गंभीर रूप ले रही है। वर्ष 2023 में सिक्किम की दक्षिण लोनक झील फटने से आई बाढ़ ने कई गांवों और पनबिजली परियोजनाओं को तबाह कर दिया था। इस तरह की आपदाओं की निगरानी, चेतावनी व्यवस्था और आपदा पूर्व तैयारी को पर्वतीय नीति का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए। पर्वतीय जलस्रोतों में हो रहे परिवर्तनों का असर केवल पानी तक सीमित नहीं है। कृषि उत्पादन, खाद्य सुरक्षा, जलविद्युत परियोजनाएं, मत्स्य पालन, वनों का स्वास्थ्य और जैव विविधता, सब इनसे जुड़े हैं।**

अधिक हिमनद हैं। वाडिया इंस्टीट्यूट आफ हिमालयन जियोलाजी और आइआइटी कानपुर के अध्ययन बताते हैं कि पिछले तीन दशकों में ये हिमनद सालाना 15 से 20 मीटर घट रहे हैं। गंगोत्री 1935 से अब तक लगभग तीन किलोमीटर पीछे हट चुकी है। विश्व जल विकास रपट-2025 चेतावनी देती है कि नदियों का प्रवाह कुछ वर्षों के लिए तो बढ़ सकता है, लेकिन दीर्घकाल में उसमें भारी कमी आएगी। यह स्थिति सिंचाई, पीने के पानी, जलविद्युत उत्पादन और नदी आधारित पारिस्थितिकी तंत्र सभी पर गहरा असर डालेगी।

हिमनदों के पिघलने के साथ एक नई चुनौती भी तेजी से बढ़ रही है। वह है झील फटने से आने वाली अचानक बाढ़। नेपाल, सिक्किम, अरुणाचल और लद्दाख जैसे क्षेत्रों में यह चिंता गंभीर रूप ले रही है। वर्ष 2023 में सिक्किम की दक्षिण लोनक झील फटने से आई बाढ़ ने कई गांवों और पनबिजली परियोजनाओं को तबाह कर दिया था। रपट में सुझाव दिया गया है कि इस तरह की आपदाओं की निगरानी, प्रारंभिक चेतावनी व्यवस्था और आपदा पूर्व तैयारी को पर्वतीय नीति का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

पर्वतीय जलस्रोतों में हो रहे परिवर्तनों का असर केवल पानी तक सीमित नहीं है। कृषि उत्पादन, खाद्य सुरक्षा, जलविद्युत परियोजनाएं, मत्स्य पालन, वनों का स्वास्थ्य और जैव विविधता, सब इनसे जुड़ी हैं। जब नदियों का प्रवाह असंतुलित होता है, तो कभी बहुत अधिक, कभी बहुत कम पानी की स्थिति बनती है, जिससे फसलें नष्ट होती हैं, मृदा कटाव बढ़ता है और जीविकोपार्जन पर प्रतिकूल असर पड़ता है। भारत के गंगा ब्रह्मपुत्र बेसिन में 40 फीसद से अधिक कृषि क्षेत्र है, जहां धान, गेहूं और गन्ने जैसी फसलें उगाई जाती हैं। हिमनदों में बदलाव से इन फसलों की उत्पादकता पर असर पड़ना तय है।

संयुक्त राष्ट्र की रपट यह भी रेखांकित करती है कि जल संकट से निपटने के लिए केवल तकनीकी समाधानों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। स्थानीय और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को भी समान महत्त्व देना होगा। भारत के उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में 'खाल', 'गुल' और 'कुल्ह' जैसी पारंपरिक जलसिंचन व्यवस्था सदियों से पानी के संरक्षण और संतुलन का उदाहरण रही हैं। इसी तरह उत्तर-पूर्व के अरुणाचल प्रदेश में अपाटानी जनजाति की सीढ़ीदार खेती जल उपयोग की दक्षता का एक आदर्श माडल है। यदि इन पारंपरिक प्रणालियों को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ा जाए, तो जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

भारत ने राष्ट्रीय जल नीति, 'हिमालयन ग्लेशियर मानिटरिंग प्रोग्राम' और जलवायु अनुकूलन योजनाओं में पर्वतीय जलस्रोतों के संरक्षण पर बल दिया है, लेकिन रपट का निष्कर्ष साफ है कि ये प्रयास अभी सीमित हैं और इन्हें अधिक व्यापक, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के स्तर पर विस्तारित करने की आवश्यकता है। ब्रह्मपुत्र और सिंधु बेसिन जैसे साझा जलस्रोतों के संदर्भ में भारत, नेपाल, भूटान, चीन और बांग्लादेश को डेटा साझा करने, संयुक्त निगरानी और साझा अनुकूलन रणनीतियों पर मिल कर काम करना होगा। यह केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और शांति से जुड़ा हुआ प्रश्न भी है।

रपट इस पूरी चुनौती को सतत विकास लक्ष्य से जोड़ती है, जिसका उद्देश्य है- सभी के लिए जल और स्वच्छता की गारंटी। इसके लिए नीति-निर्माताओं को पर्याप्त डेटा, विश्लेषण और मार्गदर्शन की जरूरत है ताकि जल संसाधनों के संरक्षण और न्यायसंगत वितरण के लिए ठोस कदम उठाए जा सकें। रपट में कहा गया है- जो कुछ पहाड़ों में होता है, वह यहीं नहीं रुकता। उसका असर हम सब पर पड़ता है। भारत जैसे देश के लिए, जहां आधी से अधिक आबादी हिमालय और उसके जल पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से निर्भर है, यह चेतावनी भविष्य की नीति और आज के निर्णय, दोनों को तय करने वाली होनी चाहिए।

शब्दों की संवेदना

मोहम्मद जुबैर

दुनिया मेरे आगे

शब्द केवल वर्णों का मेल या ध्वनियों का उच्चारण नहीं, बल्कि संवेदनाओं की धड़कन भी होते हैं। ये समंदर की लहरों की तरह होते हैं। कुछ सहलाते हैं, शांति और सुकून देते हैं और वहीं कुछ आत्मा की तलहटी पर जाकर घाव कर देते हैं। कुछ का भाव आंसुओं से भी अधिक नम होता है और कुछ का चीखों से भी अधिक तीखा। जब कोई शब्द बार-बार दोहराया जाता है और सहज इस्तेमाल होने लगता है, तो उसका असर धुंधला पड़ने लगता है। अर्थ तो वही रहता है, पर भाव फीका पड़ जाता है। यही हुआ कुछ शब्दों के साथ जो कभी समाज की रगों में सिहरन भर देते थे और आत्मा को खरोंच देते थे। जैसे बलात्कार, हत्या, जनसंहार, आत्महत्या, भीड़-हत्या, दहेज हत्या, बाल शोषण, मानव तस्करी, आतंकवाद, अपहरण आदि। अब ये शब्द खबरों और बातचीत में तो गूंजते हैं, पर आत्मा तक नहीं पहुंचते। मानो इनके प्रति हमारी संवेदना अब शोर में बदल गई है और शब्दों की पीड़ा अक्षरों में सिमटने लगी है।

कुछ खौफनाक शब्दों के हम इतने आदी हो गए हैं कि इन्हें बोलते हुए अब गला नहीं रुंधता, रूह नहीं कांपती और इन्हें बोलते समय हम जरा भी नहीं हिचकिचाते। संवादों में, घरों, दोस्तों की महफिल में और यहां तक कि बच्चों के सामने भी ये शब्द इतने सहजता से निकल जाते हैं, मानो ये कोई साधारण रोजमर्रा के जुमले हों। अब इनका भय हमारी सहजता में विलीन होने लगा है।

हम भूलते जा रहे हैं कि ये शब्द मानवता के ताजे जख्मों को इंगित करते हैं। ये किसी भाषण और बातचीत की अलंकारिक शोभा नहीं, बल्कि सभ्यता की त्रासदी के कड़वे सत्य हैं। हम क्यों भूल रहे हैं 'बलात्कार' शब्द में एक स्त्री की टूटी हुई आत्मा का मौन विलाप है... 'हत्या' में एक परिवार की बुझी हुई आशाओं का अंधेरा है... 'जनसंहार' में मासूमों की सामूहिक लाशों की निशब्द चीखें हैं... 'दहेज हत्या' में वह आग है जो घर की चौखट पर ही बेटी का जीवन निगल जाती है... 'बाल शोषण' में लुटे हुए बचपन की किलकारियां दफन हैं... 'मानव तस्करी' में बिके हुए सपनों और छिनी हुई आजादी की दास्तान है और 'आतंकवाद' में लहूलुहान जमीन और बिखरी हुई चीखों का आतंक है। इन शब्दों का उच्चारण किसी चेतावनी की घंटी की तरह होना चाहिए, जो भीतर तक झकझोर दे और हमें रुककर सोचने पर मजबूर करे। इन्हें सुनते ही मनुष्य को अपनी सभ्यता पर प्रश्नचिह्न दिखना चाहिए और आत्मा को मानो किसी भारी बोझ तले दब जाना चाहिए। पर अफसोस यह है कि हम इन्हें उसी सहजता से ग्रहण करने लगे हैं, जैसे कोई रोजमर्रा की खबर। इन शब्दों को इतना साधारण बना दिया गया है कि अब इनमें न भय शेष रहा, न पीड़ा, न शर्म। बिना गंभीरता के जैसे चाहा बोल दिया।

गौरतलब है कि जब शब्दों का दर्द हमारे दिलों से उतर जाता है और उनका उच्चारण हमें शर्मिंदा नहीं करता, तब करुणा मर जाती है। और जब करुणा मर जाती है, तो समाज केवल भीड़ में बदल जाता है। एक ऐसी भीड़, जो देखती है, सुनती है, जानती है, पर भीतर से विचलित नहीं होती। यही मानवता के पतन की शुरुआत है, क्योंकि शब्दों की संवेदना ही सभ्यता की अंतिम सांस होती है। अगर शब्द न कांपें, तो आत्मा भी धीरे-धीरे पत्थर में बदल जाती है। जब ऐसे हृदय विदारक शब्द मासूम कानों तक बिना किसी संवेदनात्मक भार के पहुंचते हैं, तो उनकी आत्मा के भीतर संवेदना का पहला अंकुर ही कुचल जाता है। यह सामान्यीकरण केवल शब्दों के भावों का पतन नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के हृदय से करुणा और लज्जा के लोप का बीज बोता है।

हृदय को छलनी कर देने वाले शब्दों का सामान्यीकरण समाज को मनोवैज्ञानिक रूप से भी प्रभावित करता है। इन शब्दों का दो टूक दोहराव अवचेतन में अपनी तीव्रता खो देते हैं और अपराध धीरे-धीरे हमारे सामूहिक मानस में एक 'स्वीकृत यथार्थ' बन जाता है। इससे अपराध को बढ़ने से रोकने वाली अंतिम दीवार ढह जाती है और अपराधी के भीतर से भी भय का बोध मिटने लगता है। दरअसल, जहां संवेदना मरी हो, वहां अपराध को अंकुरित होने के लिए अनुकूल भूमि मिल जाती है।

> **जब शब्दों का दर्द हमारे दिलों से उतर जाता है और उनका उच्चारण हमें शर्मिंदा नहीं करता, तब करुणा मर जाती है। और जब करुणा मर जाती है, तो समाज केवल भीड़ में बदल जाता है। एक ऐसी भीड़, जो देखती है, सुनती है, जानती है, पर भीतर से विचलित नहीं होती। यही मानवता के पतन की शुरुआत है**

आज बहुत सारे लोग ऐसे दिख जाएंगे, जिनके लिए बोले गए शब्दों से पहले कुछ सोचना जरूरी नहीं लगता, लेकिन वे कई बार ऐसा कुछ बोल जाते हैं, जिससे न केवल किसी एक व्यक्ति को चोट पहुंचती है, बल्कि शब्दों से जुड़ा वह व्यवहार सामाजिक व्यवहार का एक पैमाना और उदाहरण रच देता है। इसके बाद इस तरह के व्यवहार को चलन बनते और किसी के खिलाफ अघोषित हथियार बनते देखा जा सकता है। यह सिर्फ इसलिए हो पाता है कि बोले या इस्तेमाल में लाए गए शब्दों की संवेदना को समझना हमारे लिए जरूरी नहीं लगता। इसलिए आज समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है हृदय विदारक शब्दों की संवेदनशीलता को बनाए रखा जाए। शिक्षा, साहित्य और घर-परिवार में इन शब्दों का प्रयोग हर हाल में और हर स्तर पर पूरी संवेदनशीलता के साथ केवल अत्यंत आवश्यक होने पर ही होना चाहिए, ताकि उनका मूल्य, उनका अर्थ और उनकी गूढ़ता बनी रहे। इनके उच्चारण में संबंधित अपराधियों के प्रति घृणा, क्रोध और सामाजिक बहिष्कार की भावना इतनी तीव्र हो कि वह अपराधियों के मन में भय पैदा करे और ऐसे कृत्य करने का खयाल आने से पहले मोटी दीवार खड़ी हो जाए। जब शब्द कांपेंगे, तब चेतना जागेगी। जब चेतना जागेगी, तभी मानवता की रक्षा संभव होगी।

प्रदूषित हवा

देश की राजधानी में बढ़ते प्रदूषण से निपटने के लिए दिल्ली सरकार ने हाल ही में कृत्रिम वर्षा का परीक्षण कराया, लेकिन इसके नतीजे उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे। इस परीक्षण के लिए मौसम की स्थितियां अनुकूल नहीं थीं, फिर भी सरकार ने जल्दबाजी में यह प्रयोग किया। काफी खर्च से हुए दो परीक्षणों के बावजूद नाममात्र की बारिश दर्ज की गई। वह भी दिल्ली में नहीं, बल्कि नोएडा में। ये फुहारें दिल्ली के प्रदूषण पर कोई ठोस असर नहीं डाल सकीं। सबसे बड़ी चिंता इस बात की है कि जब दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक 300 के पार 'बहुत खराब' श्रेणी में था और ग्रेप-2 लागू था, तब सरकार को प्रदूषण के तात्कालिक नियंत्रण पर ध्यान देना चाहिए था। सड़कों की धूल, निर्माण स्थलों पर नियंत्रण और वाहनों से निकलने वाले धुएं को रोकने जैसे उपायों को सख्ती से लागू करने की जरूरत थी, लेकिन इसके बजाय पूरा ध्यान कृत्रिम वर्षा के प्रयोग पर केंद्रित कर दिया गया, जो न तो स्थायी उपाय है और न ही वैज्ञानिक रूप से बहुत प्रभावी सिद्ध हुआ है। पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि जब प्रदूषण का स्तर इतना अधिक हो चुका है, तो कुछ देर की कृत्रिम वर्षा से इसका समाधान संभव नहीं।

– विभूति बुपक्या, दिल्ली

बेटियों का हौसला

महिला एकदिवसीय क्रिकेट विश्वकप के फाइनल मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से हरा कर बेटियों ने एक नया इतिहास रच दिया है और इस जीत से उन्होंने यह साबित किया है कि वे किसी से कम नहीं हैं। उन्होंने अपने बलबूते हर क्षेत्र में नित नई कामयाबियां हासिल की हैं और हमें गौरवान्वित किया हैं। हरमनप्रीत कौर, दीप्ति शर्मा और शेफाली वर्मा सहित समूची भारतीय टीम पर देश को गर्व है। इन्होंने हमें जश्न मनाने का गौरवशाली क्षण प्रदान किया। यह अविस्मरणीय दिन भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया है। भारत का गौरव है और अभिमान हैं ये बेटियां। उन्होंने एक बार फिर छू लिया है आसमान। कर्णम मल्लेश्वरी, मैरी काम, साइना नेहवाल, पीवी सिंधु, साक्षी मलिक, मीराबाई चानु और मनु भाकर सहित इन बेटियों ने विश्व मंच पर भारत का नाम रोशन किया है। भारत में ऐसी कई प्रतिभाएं हैं, जिन्हें बस उचित अवसर और मौके की जरूरत है।

– नलिन खोईवाल, इंदौर

भगदड़ और लापरवाही

भगदड़ की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। आंध्र प्रदेश के काकुलम जिले में भगदड़ के दौरान दस लोगों की मौत हो गई। एकादशी होने के कारण बेकाबू भीड़ हादसे की वजह बनी। समझ से परे लगता है कि भगदड़ की कई घटनाएं होने के बाद भी सबक नहीं लिया गया। भीड़ को नियंत्रित करने का अभी तक कोई मानक नहीं बन पाया। ज्यादातर घटनाओं में लापरवाही साफ नजर आई। उल्लेखनीय है कि आंध्र के मंदिरों में इस वर्ष तीन बड़ी घटनाएं हुईं, पर सबक नहीं लिया गया। अब सवाल उठता है कि भगदड़ में होने वाली मौत के लिए कौन जिम्मेदार है? भीड़ जुटने से पहले समुचित प्रबंधन में लापरवाही कैसे होती है? मुआवजा सिर्फ आर्थिक संबल है, उस जीवन का क्या जो उम्मीदों के साथ इस संसार में कुछ समय पहले जी रहा था। भगदड़ की घटना की जांच हो, असमय होने वाली मौत के लिए जवाबदेही तय हो। इस तरह की घटनाओं की रफ्तार पर अंकुश लगाने के लिए कारगर रणनीति तैयार हो।

– योगेश जोशी, कंवर कालोनी, बड़वाह

असुरक्षित सड़कें

सड़क हादसे रोकने के तमाम प्रयासों के बावजूद राष्ट्रीय राजमार्गों पर हादसे थम नहीं रहे। हर वर्ष हजारों लोगों की मौत हो जाती है। सवाल उठता है कि इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सरकार क्यों नहीं ठोस कदम उठा रही है। उल्टे वह दुर्घटना रोकने की जिम्मेदारी ठेकेदारों पर डाल रही है। इसका प्रमुख कारण बताया जाता है कि सड़कें खराब हैं। डिजाइन इंजीनियरिंग ठीक न होना और गलत दिशा से गाड़ियों का चलना और राजमार्गों पर दो पहिए वाले वाहनों का आवागमन भी दुर्घटनाओं की वजह बन रहा है। इस प्रकार से 3500 से अधिक क्षेत्रों की पहचान की गई हैं, जहां दुर्घटनाएं होती हैं। वैसे इन मार्गों पर वाहन चालक गति सीमा का भी ध्यान नहीं रखते। भारत में सड़क दुघटनाएं अन्य देशों के मुकाबले अधिक हो रही हैं। इसलिए जरूरी है कि इन राजमार्गों पर दुर्घटनाएं रोकने के लिए जिम्मेदारी तय की जाए।

– मीना धानिया, सिरसपुर, दिल्ली

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

{ संपादकीय }

नई दिल्ली, बुधवार 5 नवम्बर 2025

संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

भाजपा-जदयू ने दिखाई चुनावी रंगदारी

बिहार चुनावों में इस बात का अनुमान पहले से था कि जीत हासिल करने के लिए बदजुबानी के नए स्तर कायम होंगे। भाजपा और खासकर नरेन्द्र मोदी इसमें अपना ही बनाया पहले का रिकार्ड तोड़ेंगे। आम चुनाव 2024 में नरेन्द्र मोदी ने जब कहा था कि कांग्रेस वाले आपका मंगलसूत्र चोरी करके ले जाएंगे, तो सब कुछ पता होते हुए भी आश्चर्यमिश्रित दुख हुआ था कि कोई प्रधानमंत्री इस तरह की भाषा कैसे बोल सकता है, ऐसे ऊटपटांग बयान कैसे दे सकता है। लेकिन उस चुनाव में कई बार ऐसे बयान सुनने पड़े। फिर महाराष्ट्र, हरियाणा में यह सिलसिला बढ़ा और अब बिहार चुनाव में जहां इस बार महागठबंधन एनडीए को कड़ी टक्कर दे रहा है, प्रधानमंत्री मोदी कट्टे वाली भाषा पर उतर आए हैं। हम नहीं जानते कि प्रधानमंत्री के सलाहकार कौन हैं, कौन उनके भाषण लिखता है या उसे अंतिम रूप देता है या प्रधानमंत्री जनता का मूड देखकर तात्कालिक भाषण देते हैं, लेकिन एक बात तय है कि वे जनता के स्तर को निचला मानकर ही ऐसे भाषण देते हैं। भाषा की सभ्यता, तहज़ीब का समाज में बड़ी तेजी से क्षरण हुआ है। इसके लिए अब तक बी ग्रेड की फिल्मों, उपन्यासों को जिम्मेदार ठहराया जाता रहा। ओटीटी प्लेटफार्म के प्रचलन के बाद भाषायी संस्कार पूरी तरह से गुम होने लगे। जिन अपशब्दों को सबके सामने बोलने-कहने में लोग झिझकते थे, उन्हें टीवी पर देखकर आम बोलचाल का हिस्सा बना लिया गया। ऐसे में राजनेताओं की और जो लोग सत्ता में बैठे हैं, उनकी जिम्मेदारी कई गुना ज्यादा बढ़ जाती है कि वे भाषायी शिष्टाचार की न केवल हिफाज़त करें, बल्कि उसे बढ़ाएं भी। खुद ऐसी भाषा बोलें कि जनता तक अच्छा संदेश जाए। सस्ती लोकप्रियता हासिल करने वाले अक्सर अपने बचाव में तर्क देते हैं कि जनता जो देखना-सुनना चाहती है, हम वही दिखाते हैं। लेकिन यह तर्क सत्तारुढ़ नेताओं पर लागू नहीं हो सकता। बल्कि अगर वे ऐसा करें तो उन्हें कटघरे में खड़ा करने की जरूरत है, क्योंकि वे लोकशिक्षण की अपनी जिम्मेदारी से बच रहे हैं। बिहार चुनाव में जब नरेन्द्र मोदी कहते हैं कि राजद ने कांग्रेस की कनपटी पर कट्टा रखकर मुख्यमंत्री पद लिया है, तो वे अपनी जिम्मेदारी से मुकर ही रहे हैं।

पाठक जानते हैं कि कुछ दिनों पहले ही महागठबंधन ने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित किया, जबकि इसके कयास काफी दिनों से लग रहे थे। कौन सा गठबंधन किस तरह आगे बढ़ता है, यह उसका अपना मसला है। विरोधी गठबंधन उस पर सवाल उठा सकता है। लेकिन कट्टे वाली भाषा बोलकर प्रधानमंत्री राजनैतिक शिष्टाचार में एक पायदान और नीचे उतर गए। भाजपा में उनका अनुसरण करने वाले नेता भरे पड़े हैं। इसलिए असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वासरमा ने कहा कि राहुल गांधी दुर्भाग्य लेकर आते हैं। वो जहां जाते हैं हार मिलती है। सौभाग्य-दुर्भाग्य की बात करना अंधविश्वास है, जो संवैधानिक भावना के खिलाफ है। वहीं अपने विरोधी के लिए ऐसा कहना भी सर्वथा अनुचित ही है। केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने राहुल गांधी के पोखर में कूदकर और मछली पकड़ने पर कहा कि मलेशिया के बीच (समुद्री किनारे) से उनका मन भर गया जो लंगूर की तरह पानी में कूद गए। देश में नेता प्रतिपक्ष को लंगूर बताकर मंत्री महोदय कुछ देर की सुर्खी बटोर सकते हैं, लेकिन आखिर में यह देश की छवि पर दाग लगाती है। राहुल गांधी, तेजस्वी यादव के लिए ऐसे अपशब्दों की भरमार भाजपा नेताओं के पास है, जिनका इस्तेमाल वे अक्सर करते हैं। लेकिन वहीं सवाल उठता है कि क्या ये नेता बिहार की जनता के विवेक को इतना कम करके आंकते हैं कि वह निम्नस्तरीय भाषा सुनकर प्रभावित होगी। क्या अपने विरोधियों को मात देने के लिए कोई नैतिक तरीका या बात भाजपा के पास नहीं बची है। और अब शायद जदयू का भी वही हाल हो गया है।

एक वक्त में शरद यादव और नीतीश कुमार के नेतृत्व में जद यू सिद्धांतों की राजनीति करती थी। लेकिन अब केंद्रीय मंत्री और जदयू के वरिष्ठ नेता ललन सिंह ने मोकामा में कहा कि, 'कुछ लोग हैं, उन्हें चुनाव के दिन घर से बाहर नहीं निकलने देना है। अगर वे ज्यादा गिड़गिड़ाएं तो उन्हें अपने साथ ले जाइए और वोट देने के बाद घर वापस लाकर छोड़ दीजिए। अभी कमान संभालिए। चुनाव के लिए अब समय नहीं बचा है।' बता दें कि जनसुराज समर्थक दुलारचंद यादव की हत्या के बाद मोकामा चुनावी उथल-पुथल का मैदान बन गया है। इस हत्याकांड में जदयू के प्रत्याशी अनंत सिंह को आरोपी बनाया गया और विपक्ष की मांग पर अनंत सिंह को गिरफ्तार किया गया। इसके बाद से ललन सिंह ने मोकामा की कमान संभाल ली है। अनंत सिंह की उम्मीदवारी तो रद्द नहीं हुई, बल्कि ललन सिंह अनंत सिंह का बचाव कर रहे हैं कि उन्हें फंसाया गया है। उन्होंने सारे लोगों ने अनंत सिंह बनने की अपील की और अब सीधे-सीधे अपने विरोधी मतदाताओं को घर पर बंद रखने की धमकी दे रहे हैं। विपक्ष जिस वोट चोरी का डर पहले दिन से बिहार में दिखा रहा है, वह सच होता दिख रहा है। ललन सिंह के बयान वाले वीडियो को कांग्रेस, आरजेडी सभी ने पोस्ट किया और चुनाव आयोग से सवाल किए कि क्या वह इसमें कोई कार्रवाई करेगा। तब जाकर चुनाव आयोग ने ललन सिंह को नोटिस भेजा है और 24 घंटे में जवाब देने कहा है। लेकिन यहां चुनाव आयोग का ढीला-ढाला रवैया बता रहा है कि इसमें कोई बड़ा एक्शन नहीं लिया जाएगा। जो बात विपक्षी दलों ने पहले देख ली, वह चुनाव आयोग को नजर क्यों नहीं आई।

भाजपा-जदयू की चुनावी रंगदारी को क्या चुनाव आयोग रोक पाएगा, यह गंभीर सवाल अब उठ रहा है।

आसान नहीं बिहार का मैदान भाजपा के लिए

बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण के मतदान के लिए प्रचार खत्म हो गया है और गुरुवार, 6 नवंबर को 121 सीटों पर मतदान होगा। करीब तीन हफ्ते तक चले चुनाव प्रचार के दौरान मुख्यधारा के मीडिया, खासकर टेलीविजन चैनलों की रिपोर्टिंग और इन चैनलों के लिए कथित ओपिनियन पोल करने वाली एजेंसियों के अनुमानों को मानें तो बिहार में एक बार फिर भारी बहुमत से एनडीए की सरकार बनने जा रही है। वैसे मामला इतना आसान नहीं है क्योंकि जो पेशेवर पत्रकार बिहार जाकर वहां स्वतंत्र रूप से राजनीतिक हालात का जायजा ले रहे हैं, उनकी रिपोर्ट बताती है कि ज़मीनी हकीकत टीवी चैनलों की रिपोर्टिंग और सर्वे एजेंसियों के अनुमानों से बिल्कुल अलग है।

पूरे चुनाव अभियान के दौरान भारतीय जनता पार्टी के लिए ढिंढोरची की भूमिका निभाने वाला मीडिया बताता रहा है कि महागठबंधन बिखराव का शिकार है और उसकी पार्टियों के बीच सीटों का बंटवारा ठीक से नहीं हो पा रहा है। चुनाव की घोषणा के बाद जब एक सप्ताह तक राहुल गांधी बिहार नहीं पहुंचे तो बताया गया कि तेजस्वी यादव से मतभेदों के चलते राहुल ने बिहार के चुनाव से अपने को अलग कर लिया है, जिसकी वजह से उनकी 'वोटर अधिकार यात्रा' के दौरान लोगों में महागठबंधन को लेकर जो उत्साह था, वह अब नदारद है। जब कांग्रेस की ओर से तेजस्वी को महागठबंधन की साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री पद का और विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) के नेता मुकेश सहनी को उप मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया गया तो सवाल खड़ा किया गया कि किसी मुस्लिम को उप मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार क्यों नहीं घोषित किया गया।

यह सही है कि महागठबंधन की पार्टियों में सीटों के बंटवारे को लेकर काफी खींच-तान रही और तेजस्वी को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने में भी कांग्रेस ने अनावश्यक देरी की, जिसका लोगों में नकारात्मक संदेश गया। ये दोनों ही काम महागठबंधन के नेता चुनाव की घोषणा होने से पहले भी कर सकते थे। हालांकि मीडिया तब भी उसके खिलाफ माहौल बनाने के लिए किन्हीं और मुद्दों का सहारा लेता।

बहरहाल मीडिया ने महागठबंधन के खिलाफ माहौल बनाने में अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी, बल्कि ऐसा करने में उसने एनडीए की पार्टियों के प्रवक्ताओं और अफवाहें फैलाने के लिए कुख्यात भाजपा के आईटी सेल को भी पीछे छोड़ दिया, लेकिन अभी तक मीडिया में एनडीए की पार्टियों में मचे घमासान को लेकर कोई चर्चा देखने-सुनने को नहीं मिली; और दूसरे दौर का मतदान खत्म होने तक भी नहीं मिलेगी।

हकीकत यह है कि महागठबंधन में मची खींच-तान तो देर से ही सही, मगर खत्म हो गई और उसकी सभी पार्टियां एकजुट होकर चुनाव लड़ रही हैं, जबकि दूसरी ओर एनडीए के घटक दलों के बीच जैसे-तैसे सीटों का बंटवारा हो जाने के बाद अभी तक परस्पर अविश्वास बना हुआ है। वे पार्टियां और उनके नेता अब चुनाव मैदान में भी एक-दूसरे को निबटाने और पुराना हिसाब चुकता करने में लगे हुए हैं। हिंदी भाषी राज्यों में बिहार ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहां भाजपा आज तक अपना मुख्यमंत्री नहीं बना सकी है। इस बार वह हर हाल में अपनी यह हसरत पूरी करना चाहती है, इसलिए उसकी पूरी कोशिश है कि जनता दल (यू) किसी भी सूरत में 50 से ज्यादा सीटें न जीत पाए। पिछली बार 2020 में भी भाजपा 74 सीटों के साथ एनडीए में सबसे बड़ी पार्टी थी, जबकि जनता दल (यू) को महज 43 सीटें ही मिली थी। इसके बावजूद भाजपा को मजबूरी में नीतीश को मुख्यमंत्री बनाना पड़ा था। इस बार वह हर हाल में नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद से दूर रखना चाहती है।

अनिल जैन

> महागठबंधन की पार्टियों में सीटों के बंटवारे को लेकर काफी खींच-तान रही और तेजस्वी को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने में भी कांग्रेस ने अनावश्यक देरी की, जिसका लोगों में नकारात्मक संदेश गया। ये दोनों ही काम महागठबंधन के नेता चुनाव की घोषणा होने से पहले भी कर सकते थे। हालांकि मीडिया तब भी उसके खिलाफ माहौल बनाने के लिए किन्हीं और मुद्दों का सहारा लेता।

यह बात नीतीश कुमार भी अच्छी तरह समझ रहे हैं। इसीलिए वे चुनाव प्रचार में भाजपा से लगभग दूरी बनाए हुए हैं और सिर्फ अपनी पार्टी के उम्मीदवारों के लिए ही प्रचार कर रहे हैं। यही नहीं, उनकी पार्टी चिराग पासवान को सबक सिखाने के इंतजाम में भी जुटी है। पिछली बार चिराग ने एनडीए से अलग होकर चुनाव लड़ा था कई सीटों पर जनता दल (यू) को हराने में अहम भूमिका निभाई थी। माना जाता है कि ऐसा उन्होंने भाजपा के कहने पर किया था, सो नीतीश कुमार इस बार चिराग की पार्टी को ज्यादा से ज्यादा सीटों पर हरवा कर पुराना हिसाब चुकता करना चाहते हैं। उधर चिराग पासवान भी यही काम नीतीश कुमार और जीतनराम मांझी के साथ करने में जुटे हैं।

इस सबके अलावा भाजपा और जनता दल (यू) में आंतरिक कलह भी कम नहीं है। भाजपा में कई पुराने नेता सम्राट चौधरी को हारते हुए देखना चाह रहे हैं, तो वहीं जेडीयू में ललन सिंह और संजय झा की चाहत है कि विजय चौधरी और विजेंद्र यादव किसी सूरत में जीत न पाएं। मगर इन सब बातों को भाजपा के प्रचारक की भूमिका निभा रहा मीडिया देखते-समझते हुए भी नजरंदाज कर रहा है। इस पूरे सूरत-ए-हाल को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी अच्छी तरह समझ रहे हैं, इसलिए हर बार की तरह उन्होंने इस बार खुद को दांव पर नहीं लगाया है। उनके चुनावी भाषणों से 'यह मोदी की गारंटी है' जैसे जुमले नदारद हैं। अलबत्ता स्तरहीन कटाक्षों और संवादों के मामले में वे अपना ही रिकॉर्ड तोड़कर हमेशा की तरह नया रिकॉर्ड बनाते दिख रहे हैं। ऐसा करने में अमित शाह, योगी आदित्यनाथ सहित तमाम नेता भी पीछे नहीं हैं। चुनाव आयोग हमेशा की तरह एनडीए के सहयोगी दल की भूमिका में काम करते हुए मूकदर्शक बना हुआ है।

हिंदी भाषी राज्यों में बिहार ही एकमात्र ऐसा राज्य है, जहां चुनाव में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के मुद्दे ज्यादा असर नहीं दिखा पाते हैं। सिर्फ 2014 का लोकसभा चुनाव अपवाद था, जिसमें भाजपा ने अकेले दम पर अभूतपूर्व जीत हासिल की थी। हालांकि उसकी भी अहम वजह यह थी कि नीतीश कुमार और लालू प्रसाद की पार्टियां अलग-अलग चुनाव लड़ी थीं। फिर भी भाजपा को वह जीत सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की बदौलत नहीं बल्कि नरेन्द्र मोदी द्वारा पेश किए गए विकास के गुजरात मॉडल और राष्ट्रवाद के मुद्दे पर मिली थी। उस चुनाव के डेढ़ साल बाद ही बिहार विधानसभा के चुनाव हुए थे, जिसमें लालू प्रसाद और नीतीश कुमार मिल कर लड़े। कांग्रेस भी उनके गठबंधन में शरीक थी। भाजपा के चुनाव अभियान की कमान पार्टी के अध्यक्ष बन चुके अमित शाह ने संभाली थी। उस चुनाव में मोदी और शाह ने सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के खूब प्रयास किए थे। उन्होंने सभाओं में यहां तक कहा था कि, 'अगर भाजपा हार गई तो पाकिस्तान में पटाखे फूटेंगे।' फिर भी भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा था। उस चुनाव में भाजपा के साथ लड़ीं रामविलास पासवान, उपेंद्र कुशवाहा और जीतन राम मांझी की पार्टियों का तो सफाया ही हो गया था। उसके बाद विधानसभा का एक और लोकसभा के दो चुनाव भाजपा नीतीश कुमार के साथ ही लड़ी और किसी भी चुनाव में उसे सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की जरुरत नहीं पड़ी। एनडीए की जीत सुनिश्चित करने के लिए नीतीश कुमार का नाम ही काफी था।

इस बार भी नीतीश भाजपा के साथ हैं लेकिन अमित शाह 2015 के चुनाव की तर्ज पर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के प्रयास में लगे हैं। जाहिर है कि भाजपा नीतीश कुमार के चेहरे का लाभ तो उठाना चाहती है लेकिन चुनाव अपने एजेंडे पर ही लड़ना चाहती है ताकि चुनाव के बाद वह मुख्यमंत्री पद से नीतीश को दूर रख सके। हालांकि नीतीश के चेहरे पर चुनाव नहीं लड़ने का एनडीए को नुकसान हो सकता है।

लगता है कि भाजपा को उस नुकसान का अहसास है और उसकी भरपाई के लिए ही वह सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का एजेंडा चला रही है। अगर ऐसा नहीं होता है तो 20 साल के बिहार सरकार के काम-काज और 11 साल के केंद्र सरकार के काम-काज पर वोट मांगा जाता और आगे के विकास का रोडमैप बिहार की जनता के सामने रखा जाता। लेकिन अमित शाह तीखे सांप्रदायिक ध्रुवीकरण कराने वाले भाषण दे रहे हैं, जिसका नुकसान भी हो सकता है। वे मर चुके शहाबुद्दीन का जिक्र जगह-जगह अपने भाषणों में कर रहे हैं, जबकि हकीकत यह है कि शहाबुद्दीन के जीवनकाल में ही नीतीश कुमार ने ऐसी स्थिति कर दी थी कि लोग उनसे नहीं डरते थे। खगड़िया की सभा में अमित शाह ने कहा कि सैकड़ों बख्तियार खिलजी आ जाएं तब भी नालंदा को नहीं जला पाएंगे। हर सभा में वे घुसपैठियों को बाहर निकालने की बात करते हैं, जबकि इसका आंकड़ा कोई नहीं दे पा रहा है कि बिहार में एसआईआर होने के बाद कितने घुसपैठिए मिले।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

तेजस्वी के खिलाफ धारणा की लड़ाई हार रहे हैं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

■ **कल्याणी शंकर**

आगामी 2025 बिहार विधानसभा चुनाव में कड़ी प्रतिस्पर्धा होने की उम्मीद है, जिसका सभी संबंधित दलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। जनमत सर्वेक्षण सत्तारूढ़ एनडीए (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) के पक्ष में हैं, लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ सत्ता-विरोधी भावनाएं भी प्रबल हैं।

भाजपा नेता पहले से ही जीत का दावा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर घोषणा की है कि भाजपा-एनडीए बिहार में व्यापक जीत दर्ज करेगी।

राजनीतिक विश्लेषकों का अनुमान है कि ये सर्वेक्षण पार्टियों और उनके नेताओं को प्रभावित करते हैं। ये नेतृत्व, जातिगत गतिशीलता और मतदाताओं की धारणाओं पर भी निर्भर करते हैं। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेतृत्व वाला और कांग्रेस, वाम दलों और छोटे दलों के साथ गठबंधन करने वाला इंडिया ब्लॉक, दो दशकों के एनडीए शासन को समाप्त करना चाहता है। मजबूत नेतृत्व और संगठन के साथ, मतदाताओं का मूड आगे एक उतार-चढ़ाव भरा चुनाव होने का संकेत देता है।

स्थानीय विधायकों में असंतोष, ग्रामीण क्षेत्रों में विकास और रोज़गार सृजन की कमी के साथ, सत्तारूढ़ गठबंधन के समर्थन को कमज़ोर कर रहा है। हालांकि एनडीए को उच्च जातियों और वृद्ध मतदाताओं का समर्थन प्राप्त है, लेकिन युवाओं और ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) समूहों को जोड़ने में इसकी असमर्थता पार्टी के लिए चुनौतियां पेश करती है।

> नवीनतम सी-वोटर सर्वेक्षण से संकेत मिलता है कि वह बिहार में मुख्यमंत्री पद के लिए शीर्ष विकल्प बने हुए हैं। लालू यादव के पुत्र तेजस्वी युवाओं के बीच लोकप्रिय हैं और उन्होंने मतदाताओं से कई लोकलुभावन वायदे किए हैं। इनमें पेंशन और स्वास्थ्य सेवा जैसे सामाजिक कल्याण लाभों में वृद्धि, साथ ही सरकारी रोज़गार अभियानों और छोटे व्यवसायों को समर्थन के माध्यम से रोज़गार सृजन पहल शामिल हैं।

चुनाव के नतीजे राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के स्टार प्रचारक नेताओं से काफ़ी प्रभावित होते हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को मतदाताओं, खासकर महिलाओं का भरपूर समर्थन प्राप्त है, जो मुफ़्त बिजली, स्वच्छ पानी और एक करोड़ रोज़गार सृजित करने की योजना जैसी उनकी पहलों की सराहना करती हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 25 लाख महिलाओं की सहायता के लिए एक महिला कल्याण कार्यक्रम के तहत प्रत्येक को 10,000 रुपये आवंटित किए हैं।

सी वोटर सर्वेक्षण में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की लोकप्रियता में उतार-चढ़ाव देखा गया, परन्तु उत्तरदाताओं ने उन्हें अपना पसंदीदा मुख्यमंत्री चुना। एक आश्चर्यजनक दावेदार जन सुराज पार्टी के नेता प्रशांत किशोर थे, जो 16 प्रतिशत वोटों के साथ एक पसंदीदा उम्मीदवार के रूप में उभरे।

एनडीए का बिहार भर में एक मज़बूत नेटवर्क है, जिसमें भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) और जनता दल (यूनाइटेड) जद(यू) दोनों के कार्यकर्ता शामिल हैं, साथ ही आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) समूहों का भी समर्थन प्राप्त है। प्रधानमंत्री द्वारा समर्थित हालिया विकास परियोजनाओं ने एनडीए के अभियान को मज़बूत करने में मदद की है।

भाजपा ने जद(यू) का समर्थन किया और भाजपा के शीर्ष नेता एनडीए के लिए प्रचार कर रहे हैं, और वित्तपोषण कोई समस्या नहीं है।

हालांकि, एनडीए स्थानीय स्तर पर संघर्ष कर रहा है, जहां उसे अपने विरोधियों जितनी विश्वसनीयता और ज़मीनी समर्थन का अभाव है।

राजद के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव को एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, जबकि उनके पास लगभग 30प्रतिशत मुस्लिम-यादव मतदाता हैं। नवीनतम सी-वोटर सर्वेक्षण से संकेत मिलता है कि वह बिहार में मुख्यमंत्री पद के लिए शीर्ष विकल्प बने हुए हैं। लालू यादव के पुत्र तेजस्वी युवाओं के बीच लोकप्रिय हैं और उन्होंने मतदाताओं से कई लोकलुभावन वायदे किए हैं। इनमें पेंशन और स्वास्थ्य सेवा जैसे सामाजिक कल्याण लाभों में वृद्धि, साथ ही सरकारी रोज़गार अभियानों और छोटे व्यवसायों को समर्थन के माध्यम से रोज़गार सृजन पहल शामिल हैं।

तेजस्वी राजद का नेतृत्व करते हैं, लेकिन उनके पिता लालू प्रसाद यादव और परिवार के अन्य सदस्यों का अभी भी महत्वपूर्ण प्रभाव है। पारिवारिक विवाद अक्सर तेजस्वी को पार्टी की रणनीति के बजाय आंतरिक कलह को सुलझाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करते हैं। परिवार के कुछ सदस्य कानूनी मुद्दों का सामना कर रहे हैं, जिनमें ज़मीन के बदले नौकरी घोटाले की ईडी जांच भी शामिल है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी राजद के साथ गठबंधन उम्मीदवारों के लिए प्रचार कर रहे हैं। अब वह कांग्रेस के वफादारों का समर्थन जुटाने के लिए रैलियां और रोड शो करने की योजना बना रहे हैं।

उनकी बहन प्रियंका गांधी वाड्रा भी राज्य में सक्रिय रूप से प्रचार कर रही हैं। हालांकि, पार्टी को मजबूत स्थानीय नेताओं की कमी के कारण संघर्ष करना पड़ रहा है। कांग्रेस के लगातार खराब प्रदर्शन को गठबंधन में एक कमज़ोर कड़ी के रूप में देखा जा रहा है। 1995 के बिहार विधानसभा चुनावों के बाद से, कांग्रेस किसी भी चुनाव में 30 से ज़्यादा सीटें जीतने में कामयाब नहीं हुई है। इस बार, कांग्रेस ने 61 उम्मीदवार उतारे हैं, जिनमें से 56 सीटों पर भाजपा और जद(यू) से उसका बीच सीधा मुकाबला है- ये सीटें मुख्यत: एनडीए के नियंत्रण में हैं।

भाजपा मुख्यत: शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में सक्रिय है, जहां जनसंख्या लगभग 30प्रतिशत है। ऐतिहासिक और सामाजिक कारकों के कारण, उच्च जातियों का प्रभुत्व पिछड़े और हाशिए पर पड़े समुदायों तक उसकी पहुंच को सीमित करता है, जो बिहार जैसे राज्य में एक बड़ी ओबीसी और दलित आबादी के लिए एक चुनौती हो सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित भाजपा के कई नेता बिहार में प्रचार कर रहे हैं।

एनडीए नीतीश कुमार के कल्याणकारी अनुभवों पर ज़ोर देता है, जबकि इंडिया ब्लॉक युवा नेतृत्व और मतदाता भागीदारी बढ़ाने पर ज़ोर देता है। युवा वोट और कुल मतदान प्रतिशत बिहार के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

वोटवाइब के नवीनतम सर्वेक्षण में कड़ी टक्कर दिखाई दे रही है, जिसमें महागठबंधन को 34.7प्रतिशत और एनडीए को 34.4प्रतिशत समर्थन प्राप्त है। जन सुराज को 12.3प्रतिशत समर्थन प्राप्त है, जबकि 8.4प्रतिशत लोगों को त्रिशंकु विधानसभा की आशंका है।

यह चुनाव महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके परिणाम का स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर कई नेताओं के भविष्य पर गहरा असर पड़ेगा। अगर एनडीए 2025 के बिहार चुनावों में फिर से जीतता है, तो इससे भाजपा को 2026 के कई विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए पर्याप्त बल मिलेगा।

इस समय नीतीश कुमार की हार उनके राजनीतिक करियर का अंत हो सकती है।

राहुल और प्रियंका गांधी को भी इस बार इंडिया ब्लॉक की जीत की अत्यंत आवश्यकता है। ये नतीजे चिराग पासवान, प्रशांत किशोर और अन्य छोटी पार्टियों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

ललित सुरजन की कलम से

स्वच्छ प्रशासन की चिंता

'यूं देश में ऐसे अफसरों की कमी नहीं है, जिन्होंने अपने सरकारी कार्यकाल के अनुभव लिखे हैं। इनमें सबसे पहला नाम तो आर.एस. वी.पी. नरोन्हा का है जो मध्यप्रदेश के मुख्य सचिव थे। सत्तर के दशक में प्रकाशित उनकी आत्मकथा का शीर्षक है- 'अ टेल टोल्ड बाइ एन इडियट।' इसमें उन्होंने बेहद रोचक शैली में निर्वाचित सरकार तथा अफसरशाही के आपसी व्यवहार को चित्रित किया है। श्री नरोन्हा की ख्याति एक बेहद सुलझे हुए ईमानदार, कर्मठ व कुशल अफसर की थी। वे चीफ सेक्रेटरी थे तब लूना या ऐसी किसी मोपेड से अपने घर से वल्लभ भवन आया करते थे। कहना होगा कि अपने समय में ऐसे गुणों वाले वे अकेले अधिकारी नहीं थे। यह बात और है कि वे अपने अनुभवों को लिपिबध्द कर गए।'

'मध्यप्रदेश में ही उनके बाद एक और मुख्य सचिव हुए श्री सुशीलचंद्र वर्मा। वे 1960 की शुरुआत में रायपुर में कलेक्टर थे। श्री वर्मा ने 1984-85 के आसपास 'एक कलेक्टर की डायरी' शीर्षक से अपने अनुभव लिखे जो उन दिनों देशबन्धु में धारावाहिक रूप से प्रकाशित भी हुए। श्री वर्मा की शैली भी बहुत रोचक और किस्सागोई थी। नरोन्हाजी की ही तरह वर्माजी ने भी रेखांकित किया कि अगर अधिकारी ठान ले तो वह भय अथवा राग से मुक्त होकर कैसे काम कर सकता है, और साथ ही साथ अपने अधीनस्थों को भी स्वच्छ वातावरण में काम करने के लिए प्रेरणा दे सकता है।'

(देशबन्धु में 7 नवम्बर 2013 को प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2013/11/blog-post.html

प्रकाश पर्व

कुल तारण गुरु नानक आया

गीता में कहा गया है जब-जब धरा पर धर्म का नाश होने लगता है और पाप कर्म बढ़ जाता है तब-तब प्रभु अवतार धारण कर पापियों का नाश करने धरा पर आते हैं। ऐसी ही हालात इस देश की हो गई थी जब गुरु नानक देव जी का इस धरा पर आगमन हुआ था। भाई गुरुदास जी के अनुसार, राजे सिंह मुकदम के चमचे अधिकारीगण प्रजा को कष्ट पहुंचा रहे थे उसी समय नानक जी का धरा पर आना हुआ-

सुणी पुकार दातार प्रभु गुरु नानक जगमाहि पठाइया।

गुरु नानक देव जी के आगमन पर संसार में पाप की चादर फैली हुई थी वह हट गई और हर तरफ ज्ञान रूपी प्रकाश फैलने लगा-

सतगुरु नानक प्रगटिया मिट्टी धुंध जग चाणन होया।
जिओ कर सूरज निकलिया तारे छपे अंधेर पलोया।
गुरमुख कलविच प्रगट होआ।।

गुरु नानक देव का जन्म माता तृप्ता एवं पिता मेहता कालू कल्याणचंद के घर ननकाना साहिब (जो अब पाकिस्तान में है) में राए भोऐ की तलवंडी में कार्तिक पूर्णिमा को सन् 1469 में हुआ था। आपने अरबी, फारसी गुरमुखी ऊर्दू की पढ़ाई बचपन में कर ली थी। आप सभी काम कर लेते थे। गाय-भैंस चराना, खेती बाड़ी करना। आपके जीजा जयराम ने सुलतानपुर लोदी के नवाब दौलत खां के यहां नौकरी में लगा दिया पर वहां आपका मन निरंकार से ही जुड़ा रहा। एक बार आप के पिताजी ने 20 रुपए देकर कोई सच्चा सौदा करने भेजा। गुरुदेव को रास्ते में कुछ साधु मिले जो भूखे थे उनको भोजन हेतु 20 रुपए की खाने की सामग्री लाकर दान कर दिया यह सोचकर कि इससे सच्चा सौदा और क्या हो सकता है? इस कारण उन्हें पिता की डांट खानी पड़ी। आपने मोदी खाने की नौकरी छोड़ दी और जगह-जगह यात्राएं कर समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। प्रभु परमात्मा का नाम सिमरन कराया। धर्म प्रचार हेतु कई जगह की यात्रा भी की।

आपका धर्म प्रचार करने का अंदाज भी निराला था। हरिद्वार में गंगा जी में पश्चिम दिशा में जल चढ़ाया और लोगों के पूछने पर आपने कहा कि मैं पंजाब में अपने खेतों में पानी डाल रहा हूं। लोगों ने हँसते हुए पूछा कि वहां पानी कैसे पहुंचेगा?

तब गुरुदेव ने कहा- जिस तरह पूर्व दिशा में सूर्य को हजारों मील दूर जल चढ़ाने से पहुंच सकता है उसी तरह मेरे पश्चिम में स्थित खेतों में जल चढ़ाने से पहुंचेगा उसी तरह। एक बार मक्का मदीना में काबे की तरफ पैर रखकर सो गए। काजी ने जब यह देखा तो पूछा कौन काफिर इस तरह सो रहा है। तब गुरुदेव ने कहा थका हुआ था सो उधर पैर रखकर सो गया। अब आप जिस तरफ खुदा न हो उधर मेरे पैर घुमा दीजिए। काजी ने गुस्से में गुरुदेव के पैर पकड़ कर चारों ओर घुमाना शुरु किया वे यह देखकर हैरान रह गए जिस तरफ आपके पैर रखता उधर ही काबा दिखाई देता। आपकी शिक्षा थी कि नाम जपो ते वंड छको।

घालि खाये किछ हथों देए नानक राह पछाजै से।

इस तरह आपने यह भी शिक्षा दी कि प्रभु परमात्मा की भक्ति करने हेतु वन कंदराओं में जाने की जरूरत नहीं है वरन गृहस्थ में रहकर अपने परिवार का उदर पोषण करना है और मन निरंकार के साथ जोड़े रखना है। इस बात को नामदेव ने इस प्रकार कहा है-

नामा कहै त्रिलोचना मुख ते नाम सम्भाल।
हाथ पांव से काम सब चित निरंजन नाल।।

गुरु नानक शाह फकीर हिन्दुओं के गुरु और मुसलमानों के पीर थे। आपने जीवन के आखिरी 18 साल करतारपुर में रहकर खेती बाड़ी भी की। यहीं पर भाई लहणा आकर मिले थे और उनकी सेवा करते उनकी हर आज्ञा का पालन करते थे इसी से प्रसन्न होकर उनको अपने अंग से लगा कर अंगद देव बना दिया। उन्हें शिक्षाएं देकर गुरता गद्दी देकर दूसरा नानक बना कर इस संसार से विदाई ली। आज उनका प्रकाश पर्व है।

-इंदर सिंह आहुजा

आपके पत्र

आंध्रप्रदेश के व्यंकटेश्वर मंदिर में भगदड़ से श्रद्धालुओं की मौत

आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में शनिवार को बड़ा हादसा हो गया। कासीबुग्गा वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में भगदड़ मचने से कम से कम 12 श्रद्धालुओं की मौत हो गई और कई लोग घायल हुए। हादसा उस समय हुआ जब एकादशी की मौके पर हजारों श्रद्धालु मंदिर पहुंचे थे। हिन्दू पर्व पर दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के साथ घटना होती है और बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की मौतें होती हैं। यह पहली और आखिरी घटना नहीं है हिन्दुओं के त्योहार पर मंदिर में भगदड़ मचने की घटना एक इत्तेफाक समझकर विस्मृत की जाती है। लेकिन ऐसी घटनाओं का जख्म दशकों तक नहीं भुलाया जा सकता। आंध्रप्रदेश के राज्य सरकार के मंत्री जिम्मेदारी से बचते नजर आए उन्होंने कहा कि यह मंदिर निजी स्वामित्व वाला है और सरकार के एंडोमेंट्स विभाग के अधीन नहीं आता। उन्होंने बताया कि मंदिर की क्षमता बहुत सीमित थी, लेकिन करीब 25 हजार श्रद्धालु एक साथ पहुंच गए। मंदिर प्रशासन ने न तो कोई विशेष व्यवस्था की और न ही सरकार को सूचना दी। गृह मंत्री ने कहा कि इस बार एकादशी और कार्तिक मास का शनिवार होने से भीड़ सामान्य से कहीं ज्यादा थी। इस तरह के जवाब तथा सरकार अपनी जवाबदेही से मुंह मोड़ती नजर आ रही है। दरअसल, ऐसी घटनाओं पर राज्य और जिला प्रशासन ने हाथ खड़े कर दिए हैं। ऐसी घटनाएं पहले भी हो चुकी हैं। 2024 में हाथरस में हुई भगदड़ सबसे घातक थी, इसमें 121 श्रद्धालुओं की मौत हो गई। तिरुपति मंदिर उत्सव के दौरान छह लोगों की मौत हो गई। मुम्बई में बांद्रा टर्मिनल रेलवे स्टेशन में भगदड़ से करीब नौ लोगों की मौत हो गई।

हरिद्वार मनसा देवी मंदिर में 27 जुलाई को भयंकर भीड़ जमा होने के बाद भगदड़ मची, जिसमें 6 लोगों की मौत हुई और कई लोग घायल हो गए। किसी ने करंट फैलने की अफवाह फैलाई थी, जिसके चलते ये हादसा हुआ। गोवा के शिरगांव गांव में श्री लाईराई देवी मंदिर के वार्षिक उत्सव के दौरान अचानक भगदड़ मच गई, इस हादसे में छह श्रद्धालुओं की मौत हो गई और करीब 100 से ज्यादा लोग घायल हुए थे। प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ के दौरान देर रात धक्का-मुक्की शुरू हुई और भगदड़ मच गई। इस दौरान नीचे जमीन पर सोए लोगों को भीड़ ने कुचल दिया। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक इस हादसे में 30 लोगों की मौत हो गई और 60 घायल हो गए।

इंदौर के एक मंदिर में रामनवमी के मौके पर एक हवन का आयोजन किया गया था, इस दौरान भारी भीड़ जुटी थी और एक प्राचीन बावड़ी (कुएं) के ऊपर बना स्लैब नीचे गिर गया। इस हादसे में करीब 36 लोगों की मौत हो गई। आंध्र प्रदेश के राजामंडी शहर में गोदावरी नदी के किनारे 'पुष्करम' उत्सव के दौरान भारी भीड़ जुट गई और भगदड़ में 27 श्रद्धालुओं की मौत हो गई। ऐसे अवसरों पर सावधानी आवश्यक है, शासन प्रशासन की ओर से भीड़ को नियंत्रित करने के उपाय करने चाहिए तथा जनता को भी संयम बरतना चाहिए ताकि जानमाल को नुकसान न हो।

कांतिकुमार मांडोत, सूरत

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770

ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

चिंतन

मतदाता सूची के पुनरीक्षण पर बिखरा इंडिया गठबंधन

चुनाव आयोग ने जब देश में पहली बार बिहार विधानसभा चुनाव से पहले स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन की प्रक्रिया शुरू की तो विपक्ष ने खूब बवाल काटा। इंडिया गठबंधन के नेता संसद से लेकर सड़क तक खूब गरजे। देशभर में अलग-अलग तरह से चुनाव आयोग के खिलाफ मोर्चा खोला गया। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की अगुवाई में विपक्षी दलों ने बिहार में वोटर अधिकार यात्रा निकाली। यह साबित करने का प्रयास किया गया कि चुनाव आयोग केंद्र सरकार के इशारे पर ऐसा कर रहा है। विपक्ष के वोट काटने के लिए बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण किया जा रहा है। अब जबकि चुनाव आयोग ने देश के 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 4 नवंबर से स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन करवाने का ऐलान किया है तो विपक्ष विरोध तो कर रहा है, लेकिन इंडिया गठबंधन के सारे दल अलग-अलग ढपली बजा रहे हैं। जिन राज्यों में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं, वहां भी इंडिया ब्लॉक के कुनबे में तमिलनाडु छोड़कर इस मुद्दे पर कहीं भी एकजुटता नजर नहीं आ रही है। दूसरे चरण की घोषणा हुए 10 दिन से ज्यादा गुजर चुके हैं, लेकिन विपक्षी दलों ने अभी तक इसके खिलाफ एक प्रेस कांफ्रेंस तक नहीं की है। अलबत्ता सैद्धांतिक रूप में वे इसका विरोध जरूर कर रहे हैं और वो भी अलग-अलग। मंगलवार को पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने वोटर लिस्ट वेरिफिकेशन के खिलाफ कोलकाता में विरोध मार्च निकाला। 3.8 किलोमीटर लंबी रैली में उनके साथ पार्टी महासचिव अभिषेक बनर्जी और बड़ी संख्या में पार्टी वर्कर्स मौजूद रहे। तृणमूल कांग्रेस की मुखिया ममता का आरोप है कि वोटर लिस्ट में संशोधन प्रोसेस चुपचाप तरीके से की जा रही धांधली है। इसे भाजपा सरकार और चुनाव आयोग मिलकर कर रहे हैं, लेकिन इसके उलट इंडिया गठबंधन के सबसे बड़े धड़े कांग्रेस ने इस मार्च से दूरी बनाए रखी। पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष शुभंकर सरकार ने का कहना था कि टीएमसी और बीजेपी बंगाल में एसआईआर पर विभाजनकारी राजनीति में लिप्त हैं, जिससे भय का माहौल पैदा हो रहा है। सीएम ममता बनर्जी को सर्वदलीय बैठक बुलानी चाहिए थी और एसआईआर विरोधी दलों को एकजुट करना था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। कांग्रेस अब चुनाव आयोग के साथ मुलाकात की कोशिश में है, ताकि अपनी चिंताएं बता सके और एसआईआर को लेकर सुझाव दे सके। इशारा साफ है कि इंडिया गठबंधन में सब कुछ सही नहीं है। दूसरी ओर, सबसे बड़ी बात ये है कि बिहार में इतना हो-हल्ला करने के बाद भी न तो मतदाताओं पर इसका कोई असर दिख रहा है और न ही इसके खिलाफ कोई बड़ा कानूनी डंडा ही चल पाया है, जिसने इंडिया गठबंधन के नेताओं का उत्साह पूरी तरह से फीका कर रखा है। कांग्रेस, आरजेडी और लेफ्ट की वजह से बिहार में जो विपक्ष एकजुट दिख रहा था, वो न तो पश्चिम बंगाल में एकसाथ नजर आ रहा है और न ही केरल में। जबकि, इन तीनों ही राज्य में अगले साल एसआईआर की छंटनी प्रक्रिया के बाद तैयार होने वाले वोटर लिस्ट पर ही चुनाव होने वाले हैं। विपक्ष को लग रहा है कि इस मुद्दे को जनता भाव नहीं दे रही है। इसीलिए गठबंधन की एकता गायब हो गई है।

स्वतंत्रता का मंत्र बना- वंदेमातरम्

विचार
शिवप्रकाश

भारत सरकार ने मंत्रिमंडलीय बैठक में एवं गृह मंत्रालय द्वारा पत्र निकालकर राष्ट्रगीत वंदेमातरम् की 7 नवंबर 2025 से 1 वर्ष के लिए 150 वीं जयंती मनाने का निर्णय किया है। इसी संकल्प को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अक्टूबर मास की अपनी मन की बात में पुनः दोहराया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित समाज में चलने वाली अन्य संस्थाएं भी वंदेमातरम् की 150 वीं जयंती मना रही है। देश भक्ति के साथ सांस्कृतिक महत्व को समाज तक ले जाने का यह प्रयास सराहनीय है ।

23 जून 1757 को बंगाल में स्थित प्लासी के मैदान में हुए नवाब सिराजुद्दौला एवं लार्ड क्लाइव के मध्य हुए युद्ध में भारत को ब्रिटिशों द्वारा पराजय मिलने के कारण भारत का स्वतंत्रता सूर्य अस्त हो गया। इस पराजय के पश्चात भारत का शेष क्षेत्र भी ब्रिटिशों के अधीन आ गया और हम ग़ुलाम हो गए। हमारी अवस्था का वर्णन करते हुए रूस के प्रसिद्ध दार्शनिक टॉलस्टॉय ने कहा कि 'एक व्यापारी कंपनी ने 20 करोड़ जनसंख्या वाले राष्ट्र को गुलाम बना दिया, केवल 30 हजार लोगों को अपने अंदर लाकर।'

गुलामी के कालखंड में अपने देश की दुर्दशा देखकर समाज के मन में भारत माँ को गुलामी से मुक्ति की आकांक्षा भी हिलोरे मारने लगी थी। समाज के अलग-अलग वर्गों में स्वतंत्रता का शंखनाद भी प्रारंभ हो गया था। माँ काली के अनुयायी एवं गुरु गोरखनाथ की परम्परा से जुड़े संतों ने गाँव-गाँव 'अलख निरंजन' का उद्‌घोष कर स्वतंत्रता देवी को जागृत किया। संथाल जनजाति में जन्में दोनों भाई सिद्धू-कानू ने 1885 में 10 हजार संथालियों के साथ 'अपनी भूमि अपनायेंगे , अपनी सरकार बनायेंगे।' का उद्‌घोष किया। अंग्रेज़ों के विरुद्ध 1857 का संगठित सशस्त्र आंदोलन का भी सूत्रपात हुआ।

समाज में प्रज्वलित देश भक्ति के वातावरण में 27 जून 1938 को एक महापुरुष का जन्म हुआ जिनको नाम मिला बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय। कुशाग्र बुद्धि, देवनागरी, बंगला, अंग्रेजी के विद्वान थे बंकिम बाबू। जैस्सोर (अब बांग्लादेश)में डिप्टी कलेक्टर नियुक्त हुए । अंग्रेजों के अत्याचार एवं यातनाओं को देखकर साहित्य के माध्यम से समाज जागृति लाने का संकल्प करते हुए उन्होंने अनेक लेखों, निबंधों एवं उपन्यासों की रचना की। जिसमें श्री कृष्णचरित्र, दुर्गेश नंदिनी,राज सिंह, चंद्रशेखर जैसी कृतियां प्रसिद्ध है । उन्होंने अपने समस्त लेखन से अंग्रेजी शासन की दुर्नितियों को ही समाज के सम्मुख लाने का कार्य किया। इन्हीं उपन्यासों में से एक विश्व प्रसिद्ध सन्यासी विद्रोह को आधार देकर एक कृति प्रसिद्ध हुई 'आनंदमठ'। जिसमें राष्ट्रगीत वंदेमातरम् की उपस्थिति हुई। आनंदमठ में वर्णित वंदेमातरम् जिसका गायन भारत माता की स्तुति के स्वरूप में सन्यासी करते हैं वह लालगोला केंद्रित मुर्शिदाबाद एवं नदियां (बंगाल) जिले में स्थित है।

7 नवंबर 1875 को वंदेमातरम् गीत की रचना हुई । यह शुभ दिन भारतीय कालगणना में कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की नवमी थी । यह शुभ दिवस अक्षय नवमी होने के कारण जगद्धात्री की पूजा का दिवस है । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1896 के कलकत्ता अधिवेशन में गुरुवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा वन्देमातरम् का गायन हुआ। जिसकी प्रस्तुति राग मल्हार में हुई। 1896 के बाद कांग्रेस के अधिवेशनों में वंदेमातरम् गायन एक परंपरा बन गई।

बंगाल से उठने वाले स्वतंत्रता आंदोलन को विभाजित करने के लिए अंग्रेजों ने बंग-भंग की योजना का क्रियान्वयन किया। जिसकी घोषणा 16 अक्टूबर 1905 को उन्होंने की। बंगाल का प्रभाव कम करना, बंगाली क्रांतिकारियों का प्रभाव कम करना है एवं हिंदु - मुस्लिमों का विभाजन बंग-भंग का उद्देश्य था । विभाजन से पूर्व ही दूरदर्शी नेतृत्व ने 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता टाउन हॉल में सभा का आयोजन किया । प्रत्येक आने वाला व्यक्ति एक ही उद्‌घोष कर रहा था वंदेमातरम् । 16 अक्टूबर को आयोजित दुख - दिवस के अवसर पर आनंद मोहन बसु एवं सुरेंद्र नाथ बनर्जी के नेतृत्व में सेंट्रल मैदान कलकत्ता में 50,000 लोग वंदे मातरम् का उद्‌घोष करते हुए 3.5 किलोमीटर नग्न पाद चलकर आए । मन्मथ नाथ मित्र के नेतृत्व में 'वंदेमातरम् संप्रदाय' की रचना हो गई । अंग्रेजों की सजा के विरोध में एक युवक ने 500 बार वंदेमातम लिखा । क्रांतिकारी कोड़े खाते थे और वंदे मातरम बोलते थे । जिस कारण अंग्रेजों ने वंदेमातरम् उद्‌घोष पर ही प्रतिबंध लगा दिया । अब वंदेमातरम् संपूर्ण देश ही नहीं, स्वतंत्रता का संकल्प लेकर कार्य करने वाले विदेशस्थ क्रांतिकारियों का भी मंत्र बन गया । हजारों लोग 14 अप्रैल 1906 असमके बिहु उत्सव में छाती पर वंदेमातरम् का बैच लगाकर आए । 22 दिसंबर 1908 को दशम गुरु गोविन्द सिंह जी के जन्म दिवस पर लंदन स्थित इंडिया हाउस में वंदेमातरम् का गायन हो गया । 22 अगस्त 1907 को स्टाट गार्ट में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में मैडम कामा द्वारा वंदेमातरम् का गायन हुआ। कनाडा- अमेरिका में स्थित क्रांतिकारी परस्पर मिलने पर अन्य संबोधन छोड़कर वंदेमातरम् ही बोलने लगे। भगिनी निवेदिता द्वारा निर्मित ध्वज पर वंदेमातरम् अंकित हो गया । महर्षि अरविन्द ने वंदेमातरम् समाचार पत्र प्रकाशित करने पर अंग्रेजों द्वारा सजा पायी। महाकवि सुब्रमण्यम द्वारा तमिल में वंदे मातरम् का अनुवाद एवं महात्मा गाँधी जी द्वारा गुजराती में तथा अन्य भाषा तेलुगु, कन्नड़, मलयालम एवं उर्दू में भी अनुवाद हुआ। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार द्वारा नागपुर के नील सिटी विद्यालय निरीक्षण के समय अंग्रेज इंस्पेक्टर का वन्देमातरम् के साथ स्वागत किया गया। इस सभी के कारण वंदेमातरम् ने स्वतंत्रता के दीवानों के लिए मंत्र का रूप ले लिया ।

स्वतंत्रता के साथ-साथ वन्देमातरम् स्वदेशी का भी मंत्र बना। बंग-भंग की घोषणा के दिन दुख-दिवस के आयोजन में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने राखी बांधकर स्वदेशी का संकल्प कराया । उस दिन 'विदेशी वस्तुओं का तिरस्कार एवं स्वदेशी का संकल्प' लिया। विदेशी वस्तुओं की होली जलाते समय 'ॐ वंदेमातरम् राष्ट्राय स्वाहा' के मंत्र का उच्चारण हुआ । एक ही दिन में स्वदेशी प्रचार के लिए 70,000 रुपए का दान आया। स्वदेशी का संकल्प लेते समय महिलाओं ने संकल्प किया कि विवाह के समय वह करघे पर बनी हुई बंगाली साड़ी एवं हाथ में कांच की नही, शंख की स्वदेशी चूड़ियां ही पहनेंगी। अंग्रेजों द्वारा निर्मित वस्तुओं के विरोध में भारत में स्वदेशी कंपनियां जन्म लेने लगी उदाहरण स्वरूप तूतूकुड़ी (तमिलनाडु) में स्वदेशी नेविगेशन जैसी अनेक कंपनियों का जन्म हो गया। लोकमान्य तिलक वंदेमातरम् एवं स्वदेशी के आधार बन गए। वीर सावरकर ने वंदेमातरम् बोलकर विदेशी वस्तुओं की होली जलाई। लाला लाजपत रायने वन्देमातरम् बोलकर लाठी के प्रहार सहन किए ।। अब आनंदमठ से निकलकर वंदेमातरम् संपूर्ण देश के लिए स्वतंत्रता के साथ-साथ स्वदेशी का भी मंत्र बन गया।

अंग्रेजों के षड्यंत्र का परिणाम भी धीरे-धीरे प्रकट हुआ। जो मंत्र देशभक्तों की प्रेरणा बना उसमें कुछ लोगों को बुतपरस्ती नजर आने लगी। 1923 के काकीनाड़ा के कांग्रेस के अधिवेशन में तत्कालीन अध्यक्ष मोहम्मद अली ने यह कहकर कि इस्लाम में मूर्ति पूजा एवं संगीत स्वीकार नहीं है,वंदेमातरम् गायन का विरोध किया । जबकि बदरुद्दीन तैयब, मोहम्मद रहीमतुल्ला सयानी, नवाब सैय्यद मोहम्मद बहादुर, डॉ. एमए अंसारी जैसे मुस्लिम अध्यक्षों ने कभी वन्देमातरम् का विरोध नहीं किया । 1915 से सतत वंदेमातरम् का गायन करने वाले महान देशभक्त विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने यह कहकर कि यह किसी व्यक्ति नहीं कांग्रेस का मंच है वंदेमातरम् का संपूर्णगायन किया। लेकिन इस विरोध के कारण कांग्रेस नेतृत्व झुकता चला गया। पूर्ण वंदेमातरम् के स्थान पर दो ही पदों का गायन प्रारंभ किया एवं पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा एक पत्र के द्वारा सूचित किया गया कि दो चरण ही गाये जाए एवं अन्य कोई इसके स्थान पर दूसरा गाना भी गा सकते हैं ।

15 अगस्त 1947 को श्रीमती सुचेता कृपलानी ने वन्देमातरम् का गायन एवं सरदार पटेल के आग्रह पर आकाशवाणी पर प्रसिद्ध संगीतज्ञ ओंकारनाथ ठाकुर द्वारा संपूर्ण वंदेमातरम् का गायन हुआ। तत्कालीन नेतृत्व द्वारा अलग-अलग प्रकार के हास्यपूर्ण तर्क देकर वंदेमातरम् के स्थान पर जनगणमन को राष्ट्रगान का स्थान दिया गया । जिसके संबंध में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने कहा कि ' मैं ऐसी कांग्रेस की कल्पना भी नहीं कर सकता जो वंदेमातरम् को राष्ट्रगान से नकारती है।' धन्य प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद जिन्होंने 24 जून 1950 को दोनों ही गीत वंदेमातरम् एवं जनगणमन को राष्ट्रगान का सम्मान दिया एवं सभा की समाप्ति पर सभी ने वंदेमातरम् कहकर परस्पर अभिवादन किया। अभी - अभी संपन्न हुई 31 अक्टूबर 2025 को एकता परेड में अलग-अलग वाद्य यंत्रों के माध्यम से वंदेमातरम् की संगीतमय प्रस्तुति उन सभी प्रश्नों का उत्तर मिलते हुए भी हम सबने देखा है ।

विभाजन के जो बीज साम्राज्यवादियों ने हमारे देश में बोए थे एवं अदूरदर्शिता के कारण हमारा जो तत्कालीन नेतृत्व उसमें फंस गया था, वह आज अलगाववादी वृक्ष के रूप में हमारे सम्मुख खड़े हैं । 1947 में भारत के विभाजन की विभीषिका भी हम देख ही चुके हैं। पुनः ऐसा न हो पाए ,हम सांस्कृतिक एकता के आधार पर एकजुट हों इसकी आवश्यकता है । वंदेमातरम् गीत उसी सांस्कृतिक एकता का गीत है । वंदे मातरम् की 150 वीं जयंती इसी संकल्प पूर्ति में सहायक बनेगी। इस शुभ अवसर पर सम्पूर्ण देश आनंद, उत्साह एवं श्रद्धा के साथ राष्ट्रगीत वंदेमातरम् का गायन करें।

- लेखक राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री, भाजपा

महिला क्रिकेट
विवेक शुक्ला

छोटे शहरों की बेटियां करतीं सपने साकार

बीते 2 नवंबर का वह ऐतिहासिक पल, जब नवी मुंबई के दर्शकों से खचाखच भरे डी.वाई. पाटिल स्टेडियम में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से हराकर पहली बार आईसीसी महिला ओडीआई विश्व कप पर कब्जा जमाया। गौर करें कि इस विजयी टीम की अधिकांश खिलाड़ी छोटे शहरों या ग्रामीण इलाकों से आ रही हैं। क्या यह संकेत है कि अब छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रो से भारत को बड़े खिलाड़ी मिलेंगे? बिल्कुल हां। अगर भारतीय क्रिकेट के गुजरे दौर के पन्नों को खंगाले तो पता चलेगा कि हमारे देश की क्रिकेट का इतिहास हमेशा से बड़े महानगरों जैसे मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु, कोलकाता, चेन्नई के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। छोटे शहरों से आने वाले खिलाड़ी अपवाद थे। महिला क्रिकेट में भी यही सिलसिला चला। 1980-90 के दशक में मिताली राज (हैदराबाद) या झूलन गोस्वामी (कोलकाता के उपनगर से) जैसी दिग्गजों ने रास्ता दिखाया, लेकिन टीम का कोर हमेशा बड़े शहरों से ही रहा। लेकिन 2025 विश्व कप की भारतीय टीम में परिवर्तन स्पष्ट है। 15 सदस्यीय स्क्वॉड में कम से कम 10 खिलाड़ी छोटे शहरों या ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं। उदाहरण के लिए, शेफाली वर्मा का संबंध रोहतक से है, जहां क्रिकेट अकादमियां सीमित हैं। शेफाली ने स्थानीय क्लब से शुरुआत की और 16 साल की उम्र में अंतरराष्ट्रीय डेब्यू किया। इसी तरह, दीप्ति शर्मा आगरा से हैं, जहां ताजमहल की छाया में क्रिकेट का सपना देखना आसान नहीं था। दीप्ति ने घर पर ही नेट प्रैक्टिस की शुरुआत की, और आज वे विश्व कप की हीरो हैं। नई पीढ़ी की ये लड़कियां और भी प्रेरणादायक हैं। उमा चेत्री, असम के सिलचर जिले के एक छोटे से गांव से, जहां बाढ़ और गरीबी आम हैं, ने विकेटकीपिंग में अपनी छाप छोड़ी। उनकी कहानी फिल्मी लगती है, स्कूल के मैदान पर गेंद पकड़ते हुए सपने बुनना, फिर राज्य स्तर पर चयन, और विश्व कप फाइनल में योगदान। मध्य प्रदेश के छतरपुर से आती हैं क्रांति गौड़, जिन्होंने खेतों के बीच गेंदबाजी सीखी। वे स्पिनर हैं और विश्व कप में अपनी किफायती गेंदबाजी से दक्षिण अफ्रीका को परेशान किया। श्री चरनी आंध्र प्रदेश के एक पिछड़े क्षेत्र से संबंध रखती हैं, जहां क्रिकेट इंफ्रास्ट्रक्चर न के बराबर है। ये नाम न सिर्फ टीम की ताकत हैं, बल्कि छोटे शहरों की प्रतिभाओं का प्रमाण है। भारतीय महिला टीम के 2025 स्क्वॉड में 70 फीसदी खिलाड़ी गैर-महानगरीय पृष्ठभूमि से हैं, जो 2017 विश्व कप स्क्वॉड (जिसमें 40 फीसदी थे) से दोगुना है। यह बदलाव रातोंरात नहीं हुआ। कई कारक जिम्मेदार हैं। सबसे पहले, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) का महिला क्रिकेट पर बढ़ता फोकस। 2013 के बाद से, बीसीसीआई ने घरेलू टूर्नामेंट्स जैसे सीनियर महिला ट्रॉफी और सुपर लीग में छोटे राज्यों को अधिक मौके दिए। इससे झारखंड, असम, तेलंगाना जैसे राज्यों से प्रतिभाएं उभरीं। दूसरा, डिजिटल क्रांति का योगदान। यूट्यूब, इंस्टाग्राम और टिकटॉक पर कोचिंग वीडियो उपलब्ध होने से छोटे शहरों की लड़कियां घर बैठे सीख रही हैं। तीसरा, सरकारी योजनाएं। 'खेलो इंडिया' और 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसी पहलों ने ग्रामीण क्षेत्रों में स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाया। असम सरकार ने उमा चेत्री जैसे खिलाड़ियों के लिए विशेष छात्रवृत्ति दी। चौथा, महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) का प्रभाव। 2023 से शुरू हुई डब्ल्यूपीएल ने छोटे शहरों की लड़कियों को प्लेटफॉर्म दिया, जहां वे बड़े कोचों से सीख सकें। लेकिन चुनौतियां भी हैं। छोटे शहरों में सुविधाओं की कमी, जैसे अच्छे ग्राउंड, कोचिंग सेंटर या यहां तक कि सुरक्षित यात्रा, अभी भी बाधा हैं। लैंगिक पूर्वाग्रह भी एक मुद्दा है; कई परिवारों में लड़कियों को क्रिकेट खेलने की अनुमति देना ही बड़ी जीत होती है। फिर भी, ये बेटियां साबित कर रही हैं कि सपने शहर की सीमा नहीं मानते। विश्व कप जीत के बाद, रोहतक में शेफाली के सम्मान समारोह में हजारों लड़कियां मैदान पर उतरीं, जो भविष्य की प्रतिभाओं का संकेत है। यह ट्रेंड सिर्फ महिला क्रिकेट तक सीमित नहीं। पुरुष क्रिकेट में भी छोटे शहरों से खिलाड़ी आ रहे हैं। लेकिन महिलाओं में यह ज्यादा तेजी से हो रहा है, क्योंकि क्रिकेट अब लैंगिक बाधाओं को तोड़ रहा है। कुल मिलाकर बात ये है कि अब छोटे शहरों से भारत के बड़े खिलाड़ी आने लगे हैं। 2025 महिला विश्व कप जीत इसका जीवंत प्रमाण है। यह बदलाव क्रिकेट को अधिक समावेशी बना रहा है, जहां प्रतिभा का जन्म स्थान मायने नहीं रखता। लेकिन इसके लिए हमें और निवेश चाहिए, ग्रामीण अकादमियां, महिला कोचिंग प्रोग्राम और जागरूकता। जैसा कि हरमनप्रीत कौर ने फाइनल के बाद कहा, 'यह जीत उन सभी छोटे शहरों की बेटियों के लिए है जो सपने देख रही हैं।'

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

जीवन प्रक्रिया की छानबीन

संकलित
दर्शन

योग किसी धर्म-संप्रदाय से नहीं जुड़ा है। योग प्रेम, अहिंसा, करुणा और सबको साथ लेकर चलने की बात करता है। योग धर्म, जाति, वर्ण, क्षेत्र या भाषा के आधार पर जन्मे भेदभाव से परे है, इसलिए इसमें पूरी दुनिया को एक परिवार के तौर पर बांधने की क्षमता है। योग, जीवन-प्रक्रिया की छानबीन है। यह सभी धर्मों से पहले अस्तित्व में आया और इसने मानव के सामने संभावनाओं को खोलने का काम किया, जिससे इंसान प्रकृति द्वारा तय की गई सीमाओं से परे जा सके। आंतरिक व आत्मिक विकास, मानव कल्याण व मुक्ति से जुड़ा यह विज्ञान भावी पीढ़ी के लिए एक महानतम उपहार है। आज योग विज्ञान जितना महत्वपूर्ण है, इससे पहले यह कभी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। क्योंकि आज हमारे पास विज्ञान और तकनीक के तमाम साधन मौजूद हैं, जो इस दुनिया को बना और मिटा सकते हैं। ऐसे में यह बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारे भीतर जीवन के प्रति जागरूकता और ऐसा भाव बना रहे कि हम हर दूसरे प्राणी को अपना ही अंश महसूस कर सकें, वरना अपने सुख और भलाई के पीछे की हमारी दौड़ सब कुछ बर्बाद कर देगी। अगर दुनिया की कुछ आबादी भी योग और ध्यान के मार्ग पर चलने लगे तो निश्चित तौर पर दुनिया की गुणवत्ता और स्तर में सुधार आएगा। जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण में विस्तार व व्यापकता लाने में ही मानव-जाति की सभी समस्याओं का समाधान है। उसे निजता से सार्वभौमिकता या समग्रता की ओर चलना होगा।

तुलसीदास जी द्वारा श्रीराम के दर्शन का उपाय

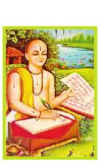

संकलित
प्रेरणा

एक ब्राह्मण दिनभर गोस्वामी जी के कुटिया के बाहर बैठकर लोभवश राम-राम रटता। संध्या के समय श्रीहनुमान जी उसे धन दे देते थे। एक बार उसने भगवान के दर्शन के लिए बड़ा हठ किया। गोस्वामी जी ने कहाः उसके लिए प्रेम और भाव चाहिए, संत की कृपा चाहिए। ऐसे ही एकदम भगवान नहीं मिलते। उसने कहाः आप समर्थ महापुरुष है, आप भगवान के दर्शन करवा सकते है। वह हठ पर अड़ गया। गोस्वामी जी ने कहाः ठीक है यहाँ सामने इस पेड़ पर चढ़ जाओ, पेड़ के नीचे त्रिशूल गाढ़ दो और उस त्रिशूल पर कूद पडो। भगवान के दर्शन हो जायेंगे। वह त्रिशूल गाडकर वृक्षपर चढ़ा, परंतु कूदने की हिम्मत नहीं हुई। एक घुडसवार उधर से जा रहा था, उसने पूछाः पेड़ पर क्या कर रहे हो? ब्राह्मण बोलाः तुलसीदास जी ने कहा है पेड़ पर से त्रिशूल पर कूदो तुम्हे भगवान श्रीराम के दर्शन होंगे। उस व्यक्ति ने कहाः क्या सच में यह बात तुलसीदास जी के श्रीमुख से निकली है? ब्राह्मण बोलाः जी हाँ ! वह व्यक्ति तुरंत पेड़ पर चढ़कर त्रिशूलपर कूद पडा। उसे भगवान ने आकर हाथ से पकड़ लिया और उसे श्रीराम के दर्शन प्राप्त हो गये। हनुमान जी ने उसे तत्त्वज्ञान का उपदेश भी दिया। गोस्वामी जी ने सत्य ही कहा था, जिनमें प्रेम-भाव हो एवं संत की कृपा हो वही भगवान के दर्शन पाता है।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

अंतर्मन

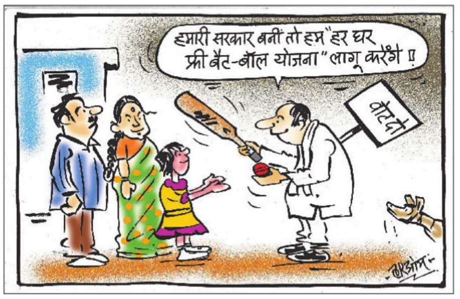

आज की पाती

जीरो टैक्स या पूर्ण नेट बैंकिंग में छिपी देश की समृद्धि

जीरो टैक्स से व्यापारी अपनी ताकत हिसाब-किताब में लगाने के बजाय, व्यापार पर और अधिक तवज्जो देने के साथ-साथ, प्रतिदिन अधिक से अधिक धन बैंक में जमा करवा सकता है। इससे देश में धन संचालन और अधिक बढ़ जाएगा, जो विकास को चार चांद लगा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यक्तिगत विकास से लेकर समूचे देश के विकास में धन ही रीढ़ की हड्डी तुल्य है। अभी हमारे नीति निर्धारकों को जीरो टैक्स का औचित्य शायद अटपटा लगे, तो विकल्प के रूप में पैसे का लेन-देन पूर्णतः नेट बैंकिंग के द्वारा हो जाए, तो करदाता हिसाब-किताब से अनिश्चितता की तलवार से निश्चित ही राहत पाएगा। फलस्वरूप भ्रष्टाचार जड़ से खत्म हो जाएगा तथा देश समृद्ध होगा। *- विनोद गुप्ता, दुर्ग*

करंट अफेयर

पाक में पुरातात्विक खुदाई में आठ स्थलों का पता चला

पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में स्वात से तक्षशिला तक फैले क्षेत्र में चल रही पुरातात्विक खुदाई के दौरान आठ प्राचीन स्थलों का पता चला है जिसे एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। इटली के पुरातत्वविदों ने खैबर पख्तूनख्वा पुरातत्व निदेशालय के सहयोग से इन प्राचीन स्थलों का पता लगाया है। स्वात के बारिकोट में लगभग 1,200 साल पुराने एक छोटे मंदिर के अवशेष मिले हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत का दुर्लभ प्रमाण है। इतालवी पुरातत्व मिशन के निदेशक डॉ. लुका ने बताया कि बारिकोट (प्राचीन बज़ीरा) में खुदाई के दौरान छोटे मंदिर के अवशेष मिले हैं। उन्होंने बताया कि मंदिर और आसपास की पुरातात्विक परतों के चारों ओर एक सुरक्षात्मक 'बफर ज़ोन' स्थापित करने के लिए खुदाई क्षेत्र का विस्तार स्वात नदी की ओर कर दिया गया है। 'खैबर पथ परियोजना' नामक इस तीन वर्षीय पहल के तहत, 400 से अधिक स्थानीय श्रमिकों को खुदाई, संरक्षण और विरासत प्रबंधन में व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ-साथ रोजगार के अवसर प्रदान किये जायेंगे। एक जून से शुरू हुई इस परियोजना का उद्देश्य प्रांत में क्षेत्रीय विकास, व्यावसायिक क्षमता निर्माण और पर्यटन को बढ़ावा देना है।

ऑफ बीट

मानव- मेंढक संबंधों का इतिहास जटिल रहा है

दरअसल, मेंढकों के प्रति हमारा आकर्षण नया नहीं है। जैसा कि हमारे शोध से पता चला है, मानव-मेंढक संबंधों का इतिहास लंबा और जटिल है - और यह सब अच्छा नहीं है। हम मेंढकों से प्यार क्यों करते हैं? मेंढकों से सचमुच प्रेम करने वाले लोगों का एक समृद्ध इतिहास है। यह दिलचस्प है, क्योंकि बहुत से लोग सरीसृपों और उभयचरों की तुलना में स्तनधारियों और पक्षियों को अधिक पसंद करते हैं। लेकिन मेंढक एक अपवाद है - कई कारणों से। लोग बच्चों जैसे चेहरों की ओर आकर्षित होते हैं। मेंढकों की कई प्रजातियों में बड़ी आंखें होती हैं। न दांत और न नुकीले पंजे होने के कारण, वे तुरंत खतरनाक भी नहीं लगते, जबकि उनमें से कई की त्वचा का रंग सुंदर होता है और कुछ अविश्वसनीय रूप से छोटे होते हैं। मेंढक वास्तव में प्राकृतिक दुनिया के गहनों में से है, टोड के विपरीत, जो - अपने अधिक सांसारिक रंगों और 'मस्सेदार त्वचा' के साथ - आमतौर पर अधिक लोगों का पसंद नहीं आते हैं। इनकी सुंदरता हमें उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के घने वर्षावनों में अधिकांश लोगों की दृष्टि से छिपी जीवंत प्रकृति की व्यापक संपदा से जोड़ती है। और वे हमें हमारे अपने आंगन में प्रकृति से भी जोड़ते हैं।

X ट्रेंड f

बिहार में 'स्वर्णयुग'

आरजेडी के 15 वर्षों के कुशासन ने बड़े-बड़े दुर्दांत जातीय नरसंहार बिहार के अंदर करवाए थे। यहां अधिकारी नहीं, अपराधी सत्ता के समानांतर व्यवस्था का संचालन करते थे। मगर आज एनडीए के नेतृत्व में बिहार का 'स्वर्णयुग' चल रहा है। यहां एक बार फिर एनडीए की सरकार बन रही है।
- योगी आदित्यनाथ, सीएम, उप्र

अवैध संपति

जिनके करीबी और सहायक अधिकारी के पास 100 करोड़ की अवैध संपति मिली है तो सोचिए उनके पास खुद कितनी दौलत होगी और उनके उस 'ऊपरवाले' के पास कितनी, जिनके आशीर्वाद से वो बचे हैं।
- अखिलेश यादव, सांसद, सपा

सबसे बड़ा आदिवासी

हेमंत सोरेन ने हाजी हुसैन अंसारी के निधन के बाद उनके बेटे हाफिजुल हसन को मंत्री बनाया था, लेकिन रामदास सोरेन के निधन के बाद उनके बेटे को मंत्री नही बनाया क्योंकि रामदास सोरेन आदिवासी थे। हेमंत खुद को सबसे बड़ा आदिवासी समझते हैं, बाकी आदिवासियों को हीन समझते हैं।
-बाबूलाल मरांडी, पूर्व सीएम, झारखंड

महिलाओं के अधिकार

भारतीय महिलाओं को कितनी बार अपनी ताकत, लचीलापन और अपने राष्ट्र का सच्चा गौरव साबित करना पड़ता है? और फिर भी उन्हें अपनी गरिमा, सम्मान और अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ता है।
- शेखर कपूर, फिल्मकार

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

दैनिक जागरण

संवाद से ही विवाद का निदान संभव है

विभाजनकारी बयान

राहुल गांधी एक लंबे समय से यह प्रचारित कर रहे हैं कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च जातियों का आधिपत्य है और दलित-पिछड़ी जातियां हाशिये पर धकेल दी गई हैं। गत दिवस बिहार में उन्होंने यह भी कह दिया कि यही स्थिति सेना में भी है। उनकी मानें तो उच्च जातियों के दस प्रतिशत लोगों ने सेना पर नियंत्रण कर रखा है। पहला प्रश्न तो यही उठता है कि उन्हें यह कैसे पता चला और दूसरा यह कि आखिर दस प्रतिशत लोगों का सेना पर नियंत्रण होने का क्या मतलब? वे ऐसे बयान देकर न केवल लोगों को गुमराह कर रहे हैं, बल्कि सेना की छवि भी मलिन कर रहे हैं। कम से कम उन्हें सेना को तो बख्श देना चाहिए, जिसमें जाति, पंथ आदि के लिए कोई स्थान नहीं। कोई भी यह नहीं कह सकता कि सेना की भर्ती में किसी तरह का भेदभाव होता है। यह ठीक नहीं कि राहुल गांधी जाने-अनजाने सेना की साख पर प्रहार कर रहे हैं। लगता है वे यह भूल गए कि कुछ समय पहले सेना को नीचा दिखाने वाले अपने बयान के लिए उन्हें किस तरह सुप्रीम कोर्ट की फटकार का सामना करना पड़ा था। यह विचित्र है कि राहुल गांधी सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का उल्लेख कर यह तो कहते रहते हैं कि वहां दस प्रतिशत की हिस्सेदारी वाली उच्च जातियों का प्रभुत्व है, लेकिन यह नहीं स्पष्ट करते कि खुद कांग्रेस के विभिन्न संगठनों में दलित, पिछड़ी जातियों का कितना प्रतिनिधित्व है?

राहुल गांधी की समझ से असमान प्रतिनिधित्व का एक मात्र उपाय जातिगत जनगणना है। हालांकि जातिगत जनगणना कराने का फैसला ले लिया गया है, लेकिन उन्हें इतने से ही संतोष नहीं। वे इसकी गिनती भी चाह रहे हैं कि किस क्षेत्र में किस जाति के कितने लोग हैं? क्या इससे वह असमान प्रतिनिधित्व दूर हो जाएगा, जिसकी चर्चा राहुल गांधी करते रहते हैं? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि मनमोहन सरकार के समय सच्चर कमेटी के जरिये यह जानने की चेष्टा की गई थी कि सेना में कितने मुस्लिम हैं? सेना की आपत्ति के बाद ऐसा नहीं हो सका। बीते कुछ समय से राहुल गांधी खुद को सामाजिक न्याय का सबसे बड़ा पक्षधर साबित करने में लगे हुए हैं, लेकिन सब जानते हैं कि राजीव गांधी के समय किस तरह कांग्रेस ने ओबीसी आरक्षण का प्रबल विरोध किया था। राहुल गांधी को यह भी बताना चाहिए कि कांग्रेस ने लंबे समय तक सत्ता में रहते हुए असमान प्रतिनिधित्व को दूर करने के लिए क्या किया? असमान प्रतिनिधित्व की समस्या से इन्कार नहीं, लेकिन इसका समाधान समाज को विभाजित करना और जातियों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करना नहीं है। दुर्भाग्य से राहुल गांधी ऐसा ही कर रहे रहे हैं। इससे भी खराब बात यह है कि वे ऐसा करते हुए जातीय वैमनस्य को भी हवा दे रहे हैं।

भागीदारी से ही होगी शुचिता

उत्तर प्रदेश में 22 वर्ष बाद हो रहे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) अभियान की सफलता के लिए आवश्यक है कि इसमें सबकी भागीदारी हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुतायत में अनपेक्षित नाम मतदाता सूची में जुड़ गए हैं। अभी बिहार में लाखों की संख्या में ऐसे नाम हटे। चुनाव आयोग को भी चाहिए कि इस प्रक्रिया के अनुपालन में 22 वर्षों जैसी लंबी समयावधि नहीं हो। यह कार्य श्रमसाध्य जरूर है, पर अपरिहार्य है। आम आदमी और सभी राजनीतिक दल को इस प्रक्रिया में भरपूर सहयोग करना चाहिए। यह पाया गया कि जो लोग जीवित नहीं हैं, उनके नाम भी मतदाता सूची में ढोए जा रहे हैं। अद्यतन और परिमार्जित मतदाता सूची बन जाने से चुनाव में मतदान प्रतिशत भी बढ़ेगा। बिहार में चुनाव के बिल्कुल करीब यह प्रक्रिया शुरू होने से कई प्रकार का संदेह जन्म लिया था, पर उत्तर प्रदेश में अभी चुनाव में पर्याप्त समय है। अच्छी बात यह है कि एसआइआर के तहत गणना प्रपत्रों के जमा होने के बाद वर्ष 2003 की मतदाता सूची से मिलान कर उन लोगों को सूचना दी जाएगी, जिनके रिकार्ड नहीं मिल पाएंगे। घर-घर जाकर सत्यापन की प्रक्रिया पूरी होनी है, ऐसे में चुनाव आयोग भी यह सुनिश्चित कराए कि अपात्र का नाम जरूर हटे पर कोई भी पात्र व्यक्ति सूची में शामिल होने से न छूटे।

अपात्र का नाम नहीं रहना चाहिए पर यह भी सुनिश्चित हो कि कोई भी पात्र व्यक्ति सूची में शामिल होने से न छूटे

नीतीश के लिए निर्णायक बने रहने की चुनौती

राज कुमार सिंह

पिछली बार तीसरे स्थान पर पहुंचने के बावजूद नीतीश की पार्टी का सत्ता के लिए अपरिहार्य बने रहना ही बहुत कुछ कहता है। इस चुनाव में उनकी कड़ी परीक्षा है

एक चुनावी सभा को संबोधित करते मुख्यमंत्री नीतीश कुमार। फाइल

कुछ दिन पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने चुनावी सभा में यह एलान किया कि बिहार में मुख्यमंत्री की कुर्सी पर फिलहाल अभी कोई 'वैकेंसी' नहीं है। उनका यह बयान मुख्यमंत्री के रूप में नीतीश कुमार को समर्थन के रूप में देखा गया। हालांकि उससे कुछ दिन पहले शाह ने ही कहा था कि मुख्यमंत्री के नाम पर निर्णय नतीजों के बाद होगा। स्पष्ट है कि मुख्यमंत्री को लेकर राजग की सहयोगी भाजपा में ऊहापोह की स्थिति है, लेकिन यह भी सच है कि नीतीश कुमार ही पूरी चुनावी चर्चा के केंद्र में हैं। बिहार के राजनीतिक परिदृश्य पर अभी नीतीश कुमार की जदयू तीसरे नंबर पर, लेकिन राज्य की जटिल राजनीति में नीतीश का महत्व इसी से समझा जा सकता है कि 2005 के बाद से उसके बिना राज्य में कोई सरकार नहीं बन पाई। बिहार के सामाजिक-राजनीतिक समीकरणों का संकेत यही है कि शायद इस चुनाव के बाद भी जदयू के बिना नई सरकार नहीं बन पाएगी। विधानसभा में तीसरे स्थान पर पहुंच जाने के बावजूद अगर कोई दल यह कहे कि उसका नेता सत्ता के खेल में इतना अपरिहार्य बना रहता है तो जाहिर है कि वह राज्य की राजनीति में बड़ा ब्रांड बन चुका है।

यह ब्रांड अचानक नहीं बन गया। लालू-राबड़ी राजनीति से असहज जार्ज फर्नांडिस सरीखे समाजवादी नेताओं ने बिहार के सामाजिक समीकरण को ध्यान में रखते हुए यह ब्रांड गढ़ा। मंडल-कमंडल के बीच राजनीतिक ध्रुवीकरण के मद्देनजर लालू के इर्दगिर्द गोलबंद ओबीसी और अल्पसंख्यक वोट बैंक में सेंध लगाए बिना ऐसे ब्रांड की स्वीकार्यता नहीं बन सकती थी। उत्तर प्रदेश की तरह बिहार भी अहसास करने लगा था कि सामाजिक न्याय की मलाई चंद दबंग और प्रभावशाली जातियां ही चट कर रही हैं। इसीलिए ईबीसी का नया वोट बैंक तैयार किया गया। कुर्मी समुदाय के साफ छवि वाले शिक्षित नेता नीतीश कुमार को उसका चेहरा बनाया गया। जनता दल में विभाजन कर अलग समता पार्टी बनाई गई, जिसने भाजपा से गठबंधन किया। लंबे संघर्ष के बाद 2005 में यही बिहार में बदलाव का ब्रांड बनकर उभरा। बेशक ब्रांड नीतीश के शिल्पकार जार्ज थे, लेकिन मार्केटिंग भाजपा ने भी जमकर की। कारण वही कि सामाजिक न्याय के प्रतीकों में से ही किसी एक को आगे किए बिना लालू-राबड़ी राज से बिहार की मुक्ति संभव नहीं थी। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद ओबीसी में भाजपा की स्वीकार्यता बढ़ी है, पर उससे पहले तक बिहार में वह अगड़ों की पार्टी मानी जाती थी, जिससे अल्पसंख्यकों की दूरियां भी जगजाहिर हैं। भाजपा का गणित यही था कि नीतीश के जरिये लालू के ओबीसी-अल्पसंख्यक वोट बैंक में सेंध लगाए बिना बिहार में न तो बदलाव संभव है और न ही उसका भविष्य। लालू-राबड़ी के जंगलराज का चुनावी नारा भी उस बदलाव की हवा में बेहद कारगर साबित हुआ। नई पीढ़ी को लालू-राबड़ी का जंगलराज याद दिलाना पड़ता है, जबकि नीतीश के शासन के सभी प्रत्यक्षदर्शी हैं।

जदयू और भाजपा बिहार की राजनीति में एक-दूसरे के पूरक बने। बेशक इसका शुरुआती लाभ नीतीश को ही मिला और वे बदलाव की राजनीति के नायक बनकर एक बड़ा ब्रांड बन गए। इसका एक बड़ा कारण भाजपा में किसी व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता वाले चेहरे का अभाव भी रहा। इधर भाजपा भी पिछले 20 वर्षों के दौरान राज्य में अपना जनाधार बढ़ाने में सफल रही है। विधानसभा में सीटें और चुनाव में मत-प्रतिशत इसका प्रमाण है, लेकिन ब्रांड नीतीश के आसपास वह अपना कोई चेहरा स्थापित नहीं कर पाई। नीतीश के समक्ष लालू-राबड़ी की राजनीति के प्रतिनिधि अब तेजस्वी यादव हैं। वे अपना परंपरागत 'एम-वाइ' यानी मुस्लिम-यादव वोट बैंक तो काफी हद तक बचाए रखने में सफल रहे, लेकिन ब्रांड नीतीश के जरिये हुई सेंधमारी की भरपाई नहीं कर पाए। बिहार का यही जमीनी सामाजिक-राजनीतिक गणित दो दशक बाद भी ब्रांड नीतीश की सबसे बड़ी ताकत है। इसके बल पर वे चुनावी राजनीति में न सिर्फ जरूरी, बल्कि दोनों बड़े दलों के लिए सत्ता की मजबूरी भी बने हुए हैं।

वैसे नीतीश एक नहीं, दो बार पाला बदल कर दोनों गठबंधनों में सरकार का नेतृत्व कर चुके हैं। इसलिए कोई भी उन पर सीधा हमला नहीं बोलता, क्योंकि सरकार में भागीदार तो वे स्वयं भी रहे। नीतीश से भी ज्यादा समय मुख्यमंत्री रहने के रिकार्ड बताते हैं कि अगर सरकार जन आकांक्षाओं पर खरी उतरे तो सत्ता विरोधी भावना अपरिहार्य नहीं है, लेकिन जदयू का गिरता चुनावी ग्राफ कुछ और इशारा कर रहा है। 2020 के विधानसभा चुनाव में जदयू मात्र 43 सीटों पर सिमट गई। तर्क दिया जाता है कि भाजपा की शह पर चिराग पासवान ने उसमें बड़ी भूमिका निभाई, पर एक स्थापित ब्रांड को इतना जोरदार झटका देने से भी सवाल तो उठते ही हैं, जिनका जवाब शायद इन चुनावों में मिल जाए।

पिछले विधानसभा चुनाव में राजग और महागठबंधन में कड़ा मुकाबला था। राजग 125 सीटें जीत गया था, जबकि महागठबंधन 110 पर अटक गया था। सर्वाधिक साढ़े 23 प्रतिशत वोट राजद को मिले थे, जबकि 19.8 प्रतिशत वोटों के साथ भाजपा दूसरे स्थान पर रही। 15.7 प्रतिशत वोटों के साथ सत्ता संतुलन की चाबी जदयू के हाथ रही। हालांकि नीतीश की बढ़ती उम्र और सेहत को लेकर उठते सवालों के चलते जदयू नेताओं में भी अपने राजनीतिक भविष्य के प्रति चिंता दिखती है। इस चिंता से जदयू के वोट बैंक को इन चुनावों में प्रभावित होने से बचाने की चुनौती नीतीश कुमार के समक्ष है। अच्छी बात यह है कि नीतीश पर व्यक्तिगत आरोप अभी तक कोई नहीं लगा पाया। फिर भी अगर जदयू का वोट बैंक दरका तो सत्ता के खेल में ब्रांड नीतीश का दबदबा भी प्रभावित हो सकता है। बिहार के दो प्रमुख दलों भाजपा और राजद के लिए नीतीश तभी तक जरूरी हैं, जब तक कि सरकार बनाने के लिए मजबूरी बने हुए हैं। इस बार ईबीसी के लिए कई छोटे दल भी चुनावी ताल ठोक रहे हैं, जो जदयू के वोट बैंक में ही सेंध लगाएंगे।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)
response@jagran.com

लापता हुई आम सहमति की राजनीति

राजीव सचान

आज किसी भी ऐसे विषय को रेखांकित करना कठिन है, जिस पर सत्तापक्ष और विपक्ष एकमत दिखते हों

सत्तापक्ष-विपक्ष के बीच आम राय का अभाव। फाइल

चुनाव आयोग की ओर से कल से नौ राज्यों और तीन केंद्रशासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर शुरू कर दिया गया। इसी के साथ उसके विरोध में उठी आवाजें मुखर होनी शुरू हो गईं। तमिलनाडु की स्टालिन सरकार इस प्रक्रिया के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई। आने वाले समय में कुछ और लोग एसआइआर के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाते दिख सकते हैं। इनमें केरल और पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ नेताओं के साथ स्वयं को लोकतंत्र का प्रहरी कहने वाले लोग भी हो सकते हैं। हालांकि बिहार में एसआइआर के विरोध में सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने वालों को मुंह की खानी पड़ी। तमाम दलीलों एवं दुष्प्रचार के बावजूद ऐसे लोग सुप्रीम कोर्ट के समक्ष यह सिद्ध नहीं कर सके कि बिहार में एसआइआर के नाम पर कुछ खास वोटरों के नाम इस इरादे से काटे जा रहे हैं कि भाजपा को चुनावी लाभ मिल सके। विपक्षी दलों और उनके समर्थकों की ओर से एसआइआर के विरोध में आशंकाएं तो अनगिनत जताई गईं, लेकिन वे सुप्रीम कोर्ट के समक्ष निराधार साबित हुईं। इसी कारण एसआइआर बिहार में मुद्दा नहीं बन सका। इसके बाद भी तमिलनाडु, केरल और बंगाल जैसे गैर-भाजपा शासित राज्यों में उसका विरोध हो रहा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तो उसके खिलाफ विरोध मार्च निकाल दिया। क्या एसआइआर के दूसरे चरण का विरोध इसलिए हो रहा है, क्योंकि इन आरोपों में कुछ सत्यांश है कि इसे भाजपा के इशारे पर किया जा रहा है? यदि ऐसा होता तो सुप्रीम कोर्ट इस ओर संकेत ही नहीं करता, उस पर रोक भी लगा देता।

एसआइआर का विरोध इस मानसिकता के तहत हो रहा है कि मोदी सरकार के साथ केंद्रीय संस्थाओं की ओर से जो कुछ भी किया जाता है, वह अनुचित-अवैधानिक ही होता है। इसी कारण मोदी सरकार के हर फैसले और यहां तक कि संसद से पारित होकर कानून बनने वाले विधेयकों का विरोध किया जाता है और उन्हें सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी जाती है। इस सिलसिले के थमने के कोई आसार नहीं, क्योंकि सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच की आम सहमति की उस राजनीति का पूरी तरह लोप हो गया है, जो एक समय भारतीय राजनीति का प्रमुख अवयव थी। इसके चलते राष्ट्रीय महत्व के कुछ मुद्दों पर पक्ष और विपक्ष की ओर से आम सहमति की राजनीति पर चलने की बातें की जाती थीं। आज तो आम सहमति की राजनीति जैसा शब्द भी करीब-करीब प्रचलन से बाहर हो चुका है। इसका स्थान विरोध के लिए विरोध की राजनीति ने ले लिया है। एसआइआर का विरोध इसी राजनीति के तहत हो रहा है।

यह राजनीति इतनी हावी हो गई है कि कई बार विरोधी दलों की सरकारें केंद्र की जनकल्याणकारी योजनाओं को भी लागू करने में आनाकानी करती हैं। बंगाल ने अविकसित जिलों के विकास की केंद्र की योजना लागू नहीं की है और दिल्ली में आयुष्मान योजना तब लागू हो पाई, जब आम आदमी पार्टी सत्ता से बाहर हो गई। जब वह दिल्ली की सत्ता में थी तो उसने पीएमश्री योजना में शामिल होने से इन्कार कर दिया था। इन्कार करने वालों में पंजाब और बंगाल भी थे। स्कूलों को उन्नत करने वाली केंद्र की इस योजना में शामिल होने के अपने फैसले को पिछले दिनों केरल सरकार ने ठंडे बस्ते में डाल दिया, क्योंकि सरकार में शामिल भाकपा को यह रास नहीं आया। इसकी भी अनदेखी न की जाए कि कई राज्यों ने नई शिक्षा नीति को अपनाने के बजाय उसे खारिज करने का फैसला किया है।

अब उन मुद्दों पर भी आम सहमति की राजनीति करने की कोशिश होती भी नहीं दिखती, जिन पर यह माना जाता था कि वे पक्ष-विपक्ष के नहीं, देश के मुद्दे होते हैं। जैसे विदेश और रक्षा नीति के कुछ बड़े मसलों पर आम सहमति की राजनीति अपनाई जाती थी। अब इनसे जुड़े मामलों पर ऐसा नहीं होता। आपरेशन सिंदूर के दौरान चंद दिन के लिए ही पक्ष-विपक्ष एकजुट दिखा, लेकिन यह सैन्य अभियान स्थगित होते ही दोनों पक्ष एक-दूसरे के खिलाफ खड़े हो गए। कुछ विपक्षी नेताओं ने सरकार के साथ सेना पर भी निशाना साधने में संकोच नहीं किया। ऐसा ही गलवन घाटी में चीनी सैनिकों से खूनी झड़प के समय भी देखने को मिला था। राहुल गांधी यह दोहराते ही रहते हैं कि मोदी चीनी राष्ट्रपति और अमेरिकी राष्ट्रपति से डरते हैं। मोदी जब एससीओ सम्मेलन में भाग लेने चीन गए तो विपक्ष ने सवाल उठाए। हाल में जब तालिबान विदेश मंत्री भारत आए तो सरकार की अफगान नीति को सवालों के घेरे में खड़ा किया गया।

अभी यह स्पष्ट नहीं कि अमेरिका से व्यापार समझौता कब होगा, पर यह साफ है कि वह जब भी होगा, तब विपक्ष उसे लेकर सरकार को कठघरे में खड़ा करेगा। इसके प्रति सुनिश्चित हुआ जा सकता है कि जब भी यह समझौता होगा, कम से कम कांग्रेस की ओर से यह अवश्य कहा जाएगा कि मोदी ने ट्रंप के समक्ष समर्पण कर दिया। जब विदेश और रक्षा नीति से जुड़े विषय भी दलगत राजनीतिक मतभेदों की भेंट चढ़ जा रहे हों, तब फिर इसकी कल्पना नहीं की जा सकती कि राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय महत्व के अन्य विषयों पर एकजुटता या आम सहमति देखने को मिल सकती है। आम सहमति की राजनीति के अभाव का मतलब है राजनीतिक वर्ग के बीच हर मामले में तनाव और तकरार। यह स्थिति पक्ष-विपक्ष के दलगत हित पूरे कर सकती है, देश के हितों का संधान हर्गिज नहीं कर सकती।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

हर्ष और विषाद

हर्ष एवं विषाद जीवन का अभिन्न अंग हैं। हर्ष से विषाद का मतलब पहले हर्ष यानी जीवन में अनुकूलता और बाद में विषाद यानी जीवन में कष्ट। यह स्थिति व्यक्ति को हर्ष से विषाद नहीं अवसाद की ओर ले जाती है, क्योंकि जो व्यक्ति जीवन में पहले सुख भोग लेता है, उसके समक्ष जब कभी प्रतिकूल परिस्थितियां आती हैं तब उन प्रतिकूलताओं का सामना होने पर प्रायः बेचैनी और घबराहट होती है। जबकि विषाद से हर्ष का मतलब साफ प्रकट होता है कि चुनौतियों से लड़कर अनुकूल स्थितियों की प्राप्ति।

गीता में पहला अध्याय ही विषाद योग है। कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध के लिए शंखनाद हो रहा है। इस प्रथम अध्याय में जहां दुर्योधन हर्ष में है, वहीं अर्जुन को विषाद होता है। यही अर्जुन का विषाद लाभकारी सिद्ध होता है। अर्जुन के विषाद का ही परिणाम था कि उन्हें श्रीकृष्ण से ज्ञान के साथ उनके विराट रूप का दर्शन भी होता है। वैसे तो अर्जुन को तो तभी निश्चित हो जाना चाहिए था कि उनके साथ साक्षात भगवान हैं, परंतु अर्जुन रणभूमि में ज्ञान-वृद्धि के लिए उत्सुक हैं। जीवन में जब भी जटिल स्थिति आए तो उसके साथ अनुकूलता तलाशने की आदत डालनी चाहिए। हनुमान जी माता सीता का पता लगाने लंका जाते हैं। उन्हें अनुभूति हो रही थी कि वहां नकारात्मकता होगी, लेकिन इसी नकारात्मकता के बीच विभीषण के रूप में उन्हें एक सकारात्मकता भी दिखी और पूरी नकारात्मकता को वे जलाने में सफल हुए। जीवन पर भी नजर डालें तो हर बच्चा मां के गर्भ में बड़ी कठिनाई से नौ माह रहता है, लेकिन इस अवधि में वह तन-मन की आकृति में ढलता है। अतः विपरीत स्थिति को यह मानकर चलना चाहिए कि वह वह हमें गढ़ने के लिए आई है न कि यह महसूस करना चाहिए कि नष्ट करने के लिए। कठिनाई के बाद हमें जो सुख मिलेगा, वह निश्चित रूप से आह्लादकारी होगा।

सलिल पाण्डेय

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ती आपदाएं

सुधीर कुमार

बाढ़, सूखा, भूकंप, दावानल और चक्रवात जैसी आपदाओं से हर साल दुनिया को बड़ी आर्थिक चपत लगती है

संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि बाढ़, सूखा, भूकंप, दावानल और चक्रवात जैसी आपदाओं से हर साल दुनिया को बड़ी आर्थिक चपत लगती है। 1970 से 2000 तक आपदाओं से होने वाली हानि का आकलन प्रतिवर्ष औसतन 70-80 अरब डालर किया गया था, जो अभी 180-200 अरब डालर तक पहुंच गया है। अगर प्राकृतिक आपदाओं के घटित होने की यही रफ्तार बरकरार रही तो आने वाले समय में नुकसान का यह आंकड़ा दो हजार अरब करोड़ तक पहुंच सकता है।

प्राकृतिक एवं मानवजनित, दोनों ही प्रकार की आपदाएं किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं। ये आपदाएं कृषि, उद्योग, जैव विविधता, आधारभूत संरचना, मानव संसाधन तथा श्रम शक्ति को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं। फलस्वरूप उत्पादन घटता है, आर्थिक गतिविधियां ठप पड़ जाती हैं और अंततः राष्ट्रीय आय तथा सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट दर्ज की जाती है। दावानल, बाढ़, भूकंप, चक्रवात और सूखे जैसी आपदाएं प्राकृतिक संतुलन को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त करती हैं। इनसे न केवल वानस्पतिक आवरण का ह्रास होता है, बल्कि पशुधन की व्यापक क्षति होती है, खेतों में खड़ी फसलें नष्ट हो जाती हैं और मिट्टी की उर्वरता पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। बाढ़ के दौरान खेतों में गाद भर जाने से कृषि उत्पादन घटता है, जिससे किसानों और खेतिहर मजदूरों की आजीविका पर गहरा संकट उत्पन्न होता है। रोजगार के अवसर घटने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ जाता है। आपदाओं का सामाजिक प्रभाव भी कम गंभीर नहीं होता। विस्थापन, बेरोजगारी, श्रम असुरक्षा और आजीविका के साधनों में कमी जैसी समस्याएं सामाजिक असमानता को और गहरा कर देती हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2024 में विश्वभर में लगभग 4.6 करोड़ लोग आपदाओं के कारण विस्थापित हुए, जो अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। यह स्थिति न केवल मानवता के लिए एक चेतावनी है, बल्कि विकास की वर्तमान दिशा पर भी पुनर्विचार की जरूरत को रेखांकित करती है। आकस्मिक आपदाएं सड़कें, पुल, रेलवे ट्रैक, विद्यालय, अस्पताल आदि आधारभूत संरचनाओं पर भी कहर बरपाती हैं। इनके नष्ट होने से न केवल संसाधनों की भारी क्षति होती है, बल्कि आम नागरिकों को मिलने वाली सुविधाओं पर भी अस्थायी या कभी-कभी स्थायी रूप से विराम लग जाता है।

अतः यह आवश्यक है कि आपदा प्रबंधन को केवल राहत और पुनर्वास तक सीमित न रखकर इसे विकास की नीतियों का अभिन्न अंग बनाया जाए। सुदृढ़ अवसंरचना, पूर्व चेतावनी प्रणाली, पर्यावरणीय संतुलन की रक्षा और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ही हम आपदाओं के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव को न्यूनतम कर सकते हैं।

(लेखक बीएचयू में शोधार्थी हैं)

कर्तव्य पथ पर अग्रसर संघ

हृदयनारायण दीक्षित का 'फिर संघ के पीछे पड़ी कांग्रेस' शीर्षक से प्रकाशित लेख पढ़ा। विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी सामाजिक संगठन के रूप में स्थापित 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' ध्येयनिष्ठ विचारवादी संगठन है। 'व्यक्ति निर्माण' करने वाली लाखों संघ शाखाओं और करोड़ों स्वयंसेवकों के रूप में आज संघ देश की सीमाओं को लांघकर विश्वव्यापी होता जा रहा है। संघ के इस स्वाभाविक विस्तार से कांग्रेस सहित सभी स्वयंभू सेक्युलरवादियों को चिढ़ है। लंबे समय तक सत्तासीन रही कांग्रेस को जब भी अवसर मिला, तब संघ और उसके नियमित क्रियाकलापों पर आघात करने के हरसंभव प्रयास किए गए। ताजा उदाहरण कर्नाटक का है, जहां सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार ने संघ के पथ संचलन और अन्य गतिविधियों को प्रतिबंधित करने की कुचेष्टा की, लेकिन सफल नहीं मिली। संघ की याचिका पर न्यायालय ने सेक्युलर खेमे के मंसूबों पर पानी फेर दिया। संघ राष्ट्रहित में सबको साथ लेकर चलने का हिमायती है। भारतीयता के भाव-बोध के साथ समाज के बीच समरसता स्थापित करना संघ का लक्ष्य है। संघ शतायु होकर अपने शताब्दी वर्ष में भारतीय समाज के बीच पंच-परिवर्तन के रूप में कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, 'स्व' का भाव-बोध और नागरिक कर्तव्य इन पांच सामाजिक संस्कारों से हर भारतीय को संस्कारित करने के लक्ष्य को लेकर सक्रिय है। संघ के इन क्रियाकलापों में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे सामाजिक रूप से मान्य करने में किसी को कोई आपत्ति हो। शतायु हो चुके संघ की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को समझ पाने में असमर्थ संघ विरोधियों के मन में ईर्ष्या की अग्नि अभी भी सुलग रही है, जबकि संघ निस्पृही भाव से अपने ध्येय पथ पर अग्रसर है।

pandeyvp1960@gmail.com

मेलबाक्स

जाति के नाम पर न बंटें मतदाता

जब बात राजनीति की आती है तो हम बिहारी अपने आप को केवल जातियों में क्यों बांट लेते हैं? चुनाव के समय हम ब्राह्मण, कुर्मी, राजपूत, यादव, मुस्लिम आदि गुटों में बंट जाते हैं। नेता हमेशा जनता को बांटने का प्रयास करते हैं, चाहे वह धर्म, जाति या क्षेत्र के नाम पर हो। उनका एकमात्र उद्देश्य सत्ता में आना होता है। मुस्लिम-यादव समुदाय लालू यादव की पार्टी आरजेडी को वोट करता है। इसका कारण यह है कि लालू यादव समुदाय से हैं, इसलिए यादव लोग उन्हें वोट देंगे। मुस्लिम समुदाय के लोग बीजेपी या एनडीए को हराने के लिए आरजेडी को वोट करते हैं। 2020 के चुनाव परिणामों के अनुसार, मुस्लिम-यादव समुदाय के 74 प्रतिशत लोगों ने राजद गठबंधन को वोट दिया। आज हम फिर चुनाव की दहलीज पर खड़े हैं। नेता हमें जाति के आधार पर तोड़कर सत्ता पाना चाहते हैं। कब तक बिहार की जनता अपने गौरवशाली इतिहास को रौंदकर जातिगत राजनीति तक सीमित रहेगी? बिहार की जनता को अपने गौरवशाली इतिहास को ध्यान में रखते हुए जाति से ऊपर उठकर वोट देना चाहिए।

पीयूष कुमार, सुपौल

राजनीति में धनबल का बढ़ता प्रभाव

भारत में राजनीति दिखावे और प्रदर्शन का पर्याय बन गई है। वर्तमान राजनीति में बिना गाड़ियों के काफिले और जयकारे लगाने वाले समर्थकों के नेता बना ही नहीं जा सकता। चुनाव के समय में इस दिखावे की आवश्यकता अधिक हो जाती है। आजादी के उपरांत भारतीय राजनीति में बहुबलियों का प्रवेश आरंभ हुआ और धीरे धीरे वे राजनीति में छा गए। उन्होंने अपनी छवि रोबिनहुड जैसी बनाई और राजनीति में अपनी जड़ें जमा लीं। आज वास्तव में विकास की बात करने वाले साफ छवि के व्यक्ति के चुनाव में जीतने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक समय लखनऊ में उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त लोगों के एक समूह ने राजनीति में प्रवेश का प्रयास किया था किंतु पहले ही चुनाव में वे बुरी तरह असफल हो गए। अभी निकट भविष्य में तो किसी योग्य किंतु सामान्य व्यक्ति के चुनावी राजनीति में बिना धनबल या बाहुबल के सफल होने की बात भी भारतीय राजनीति में सोची नहीं जा सकती। राजीव वार्ष्णेय, पुरानी पैंठ, चंदौसी

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

पायनियर
नई दिल्ली, बुधवार, 5 नवंबर 2025

विश्व कप विजय

महिला क्रिकेट टीम ने रचा इतिहास

भारतीय महिला क्रिकेट टीम के लिए यह एक 'चक दे' पल था। जब आईसीसी महिला विश्व कप में भारतीय लड़कियों ने फाइनल मैच जीता, तो सभी बाधाओं के बावजूद भारतीय लड़कियों ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की। महिला क्रिकेट टीम ने डीवाई पाटिल स्टेडियम में एक रोमांचक फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से हराकर पहली बार आईसीसी महिला विश्व कप ट्रॉफी जीतकर इतिहास रचा।

दशकों से, भारतीय क्रिकेट की कहानी लगभग विशेष रूप से पुरुषों के कारनामों के माध्यम से बताई गई है, कपिल देव से लेकर धोनी और कोहली तक। इस बीच, महिला क्रिकेट चुपचाप छाया में विकसित हुआ। यात्रा लंबी, अकेली और कहीं अधिक कठिन थी। वास्तव में, यह जीत उन खिलाड़ियों की वर्षों की दृढ़ता की पराकाष्ठा है जिन्होंने अल्प सुविधाओं, दृश्यता या वित्तीय सहायता के साथ प्रशिक्षण लिया। अब से भारतीय क्रिकेट अपनी उपलब्धियों से भी जाना जाएगा। फाइनल मैच अपने आप में टीम इंडिया के कौशल, संयम और अदम्य लड़ाई की भावना को दर्शाता है। शैफाली वर्मा के 87, दीप्ति शर्मा के हरफनमौला कारनामे और हरमनप्रीत कौर के शांत नेतृत्व ने परिपक्वता का परिचय दिया। दीप्ति का पांच विकेट लेना उस शांत लचीलेपन का प्रतीक था जो इन महिलाओं को परिभाषित करता है। एक मजबूत दक्षिण अफ्रीकी टीम के खिलाफ, टीम ने सिर्फ एक मैच नहीं जीता - वे आत्मविश्वास और लचीलेपन के साथ जंगल से बाहर निकले।

यह जीत महिलाओं के खेल में क्रांति के लिए उत्प्रेरक बन सकती है। इस

जीत के बाद वास्तव में चीजों को बदलने के लिए, निरंतर संस्थागत समर्थन और बुनियादी ढांचागत निवेश का पालन किया जाना चाहिए। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के लिए 51 करोड़ रुपये के इनाम की घोषणा एक उत्साहजनक कदम है - यह स्वीकारोक्ति है कि ये एथलीट न केवल उत्सव के बल्कि वास्तविक मान्यता के पात्र हैं। फिर भी, लंबे समय से भारत में महिला एथलीटों को अपने लिए जगह बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी है।

अपनी प्रतिभा के बावजूद - साइना नेहवाल और पीवी सिंधु से लेकर मैरी कॉम तक - खेल में महिलाएं अभी भी प्रणालीगत उपेक्षा, सांस्कृतिक पूर्वाग्रह और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे से जूझ रही हैं। इसलिए, इस विश्व कप जीत को कार्रवाई के आह्वान के रूप में देखा जाना चाहिए - लड़कियों के प्रशिक्षण और समान सुविधाओं में निवेश करने के लिए स्कूलों, अकादमियों और राज्य संघों के लिए एक अनुस्मारक। पेशेवर क्रिकेट से परे, भारत को एक जमीनी स्तर के आंदोलन की आवश्यकता है जो देश भर में मैदानों, सड़कों और स्कूलों में खेल खेलने वाली लड़कियों को सामान्य बना दे।

इन एथलीटों ने अपने पुरुष समकक्षों के रूप में राष्ट्रीय गौरव हासिल किया है। उनके संघर्ष और सफलता की कहानियां बताने, जश्न मनाने और याद रखने लायक हैं। जीत के बाद हरमनप्रीत कौर की घोषणा ,यह अंत नहीं है, इस क्षण की गहरी भावना को दर्शाती है। आज जब रांची या राजकोट में कोई युवा लड़की बल्ला उठाएगी, तो वह यह जानकर ऐसा करेगी कि नीली पोशाक वाली महिलाओं ने दुनिया जीत ली है। यही सफलता की शक्ति है; यह अधिक सफलता के द्वार खोलता है। भारतीय महिला टीम ने सिर्फ एक चैंपियनशिप नहीं जीती है, उन्होंने भारतीय क्रिकेट की कहानी हमेशा के लिए बदल दी है।

भारत की साफ्ट पावर: पुनरीक्षण जरूरी

चीन के आकर्षक हमलों में यातायात को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, विशेष रूप से कई यूरोपीय देशों में वीजा छूट का तेजी से विस्तार शामिल है। भारत को घरेलू राजनीति के जुनून से परे पासपोर्ट की अपनी गिरती ताकत के बारे में गहराई से आत्मनिरीक्षण करना होगा।

भूपिंदर सिंह
लेखक, सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी हैं।

लंबे समय से, सांस्कृतिकता और ज्ञान की सभ्यता भूमि, भारत ने अपनी सॉफ्ट पावर का आह्वान किया है। हालांकि, उस प्रक्षेपण को विश्वगुरु शब्द के प्रयोग से बढ़ावा मिला, जिसका अर्थ था कि भूमि दुनिया के लिए शिक्षक थी। प्राचीन भूमि के बौद्धिक-आध्यात्मिक-दार्शनिक अतीत जैसे तत्वों की पैकेजिंग, योग के वैश्विक मोर्चे और आयुर्वेद की परंपराओं के साथ, इसकी कालातीत भावना का सुझाव देने के लिए सक्रिय रूप से प्रस्तुत की गई थी।

प्रारंभ में, दुनिया भारत के एक अतिदेय विचार के दावे से चकित थी, जिसका समय आ गया था। परिणाम विभिन्न वैश्विक सूचकांकों में सकारात्मक रूप से दिखने लगे, और दिल्ली वैश्विक नेताओं, सम्मेलनों के लिए आवश्यक राजधानी बन गई, और भारत और भारतीयों की निगाहें अधिक स्वागत योग्य हो गईं।

लेकिन, क्या इसने उस अंतर्निहित सॉफ्ट पावर को जरूरत से ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया, जिससे उसकी समावेशिता, सज्जनता और विनम्रता की चमक खत्म हो गई, और फिर वह अधिक संरक्षणवादी, उपदेशात्मक और यहां तक कि पक्षपातपूर्ण दिखने लगी?

इसके पड़ोस में (इस्लामाबाद और बीजिंग से परे) इस बारे में कानाफूसी शुरू हो गई कि उन्हें लगा कि यह बिग ब्रदर सिंड्रोम का तेजी से घुसपैठ करने वाला, पितृसत्तात्मक और विशिष्टतावादी प्रतिबिंब बनता जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत सरकार ने इस बात को समझ लिया है और स्पष्ट रूप से कृपालु शब्द विश्वगुरु को एक मित्रतापूर्ण और अधिक मिलनसार विश्वामित्र, जो विश्व का मित्र है, में परिवर्तित करना शुरू कर दिया है! यह दृष्टिकोण में एक उल्लेखनीय बदलाव था, क्योंकि वाशिंगटन डीसी, ओटावा, अंकारा, तेहरान आदि के साथ दिल्ली के संबंध खराब होने लगे थे। अधिक व्यावहारिक और कम वैचारिक रुख की ओर संप्रभु संबंधों को तैयार करना और भी जरूरी हो गया है, क्योंकि दिल्ली को असंभावित शक्तियों और बहुपक्षीय मंचों के बीच चतुराई से (अक्सर विरोधाभासी रूप से) फंसना पड़ता है। इसे केवल घरेलू स्तर पर सत्य माने जाने वाले सत्य की तुलना में विश्व स्तर पर अधिक मित्र बनाने की आवश्यकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। घरेलू राजनीति में जीत के अपरिहार्य कीड़े वैश्विक धारणाओं की लकड़ी में बाहर आने लगे हैं।

2025 के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हेनले पासपोर्ट सूचकांक ने भारत की पासपोर्ट ताकत के कमजोर प्रतिबिंब के साथ वैश्विक धारणाओं में सूक्ष्म गिरावट की पुष्टि की है, क्योंकि यह एक वर्ष में पांच स्थान गिरकर वैश्विक स्तर पर 85वें स्थान पर आ गया है। बता दें, 2014 में इसी सूचकांक में यह 76वें स्थान पर था।

जबकि सूचकांक की गणना उन देशों की सत्यापन योग्य संख्या पर आधारित है, जहां किसी देश का नागरिक बिना पूर्व वीजा के पहुंच सकता है, भारतीयों की संख्या वास्तव में 2014 में 52 देशों से बढ़कर 2025 में 57 देशों तक पहुंच गई है - यह बस पर्याप्त वृद्धि नहीं है। भारत की तुलना में अधिक देश एक-दूसरे के साथ साझेदारी में प्रवेश कर रहे हैं, शेष विश्व के साथ

ऐसा प्रतीत होता है कि भारत सरकार ने इस बात को समझ लिया है और स्पष्ट रूप से कृपालु शब्द विश्वगुरु को एक मित्रतापूर्ण और अधिक मिलनसार विश्वामित्र, जो विश्व का मित्र है, में परिवर्तित करना शुरू कर दिया है! यह दृष्टिकोण में एक उल्लेखनीय बदलाव था, क्योंकि वाशिंगटन डीसी, ओटावा, अंकारा, तेहरान आदि के साथ दिल्ली के संबंध खराब होने लगे थे।

गर्मजोशी बढ़ रही है। वीजा-मुक्त पहुंच का वैश्विक औसत 2006 में 58 से दोगुना होकर 2025 में 109 हो गया है, और भारत वैश्विक एकीकरण और धारणाओं के युद्ध के साथ तालमेल नहीं बिठा पाया है। यहां तक कि चीन ने भी, विस्तारवाद और जुझारूपन के अपने सभी दागों के साथ, एक दशक के भीतर तेजी से अपने नागरिकों के लिए वीजा-मुक्त पहुंच को 50 से बढ़ाकर 82 कर दिया है। आश्चर्य की बात नहीं है कि पिछले दस वर्षों में हेनले पासपोर्ट इंडेक्स पर चीन की रैंक विपरीत दिशा में 94वें से 60वें स्थान पर चली गई है।

अमेरिकी पासपोर्ट धारकों के लिए भी वही गिरावट देखी गई है, क्योंकि यह पहली बार शीर्ष दस की सूची से बाहर हो गया है। इसकी अपनी प्रतिबंधात्मक नीतियों, प्रवेश शर्तों और देशों की पारस्परिक प्रतिक्रियाओं ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जहां अमेरिकी पासपोर्ट अब मलेशिया के साथ संयुक्त 12वें स्थान पर है! वैश्विक गतिशीलता सूचकांक और सॉफ्ट पावर गतिशीलता में यह बदलाव उन देशों का संकेत है जो या तो खुलेपन और सहयोग को अपनाते हैं या नहीं। उदाहरण के लिए, ब्राजील और वियतनाम ने पारस्परिकता की कमी का हवाला देते हुए अमेरिकी नागरिकों के लिए वीजा-मुक्त यात्रा समाप्त कर दी। ट्रम्प की अलगाववादी, एकतरफा और भेदभावपूर्ण नीतियों से पैदा हुई मुर्गियाँ घर में बसने के लिए आ रही हैं, क्योंकि संदिग्ध कानूनी बाधाएँ, प्रवेश शुल्क में अचानक वृद्धि, या बड़े पैमाने पर निर्वासन की धमकियाँ दुनिया की राजधानियों में कई ₹लाल झंडे₹ उठा रही हैं। संपार्श्विक रूप से, अमेरिकी नागरिकों में एक समय के शक्तिशाली पासपोर्ट को छोड़कर वैकल्पिक वैश्विक निवास या यहां तक कि नागरिकता विकल्पों की तलाश में एक अकथनीय वृद्धि हुई है।

इस बीच, चीन के आकर्षक हमलों में यातायात को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, विशेष रूप से कई यूरोपीय देशों में वीजा छूट का तेजी से विस्तार शामिल है। भारत को घरेलू राजनीति के जुनून से परे पासपोर्ट की अपनी गिरती ताकत के बारे में गहराई से आत्मनिरीक्षण करना होगा, जो दुनिया की नजरों में हमारी धारणाओं को या तो बहुत उज्ज्वल या बहुत निराशाजनक होने के अनुचित सुझावों को जन्म देता है।

हमने अभी भी अपने पर्यटन अवसरों की पूरी क्षमता का दोहन नहीं किया है और नौकरशाही की अयोग्यता या पक्षपात में फंसे हुए हैं, जो अंतरराष्ट्रीय धारणाओं को खराब करता है। अधिक सुविधाजनक, कुशल और किफायती विकल्पों के मामले में गोवा शर्म अल-शेख, पूर्वी एशियाई स्थानों और यहां तक कि तुर्की तटरेखा से भी पिछड़ता जा रहा है।

भारत के लिए सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय आकर्षण, यानी ताजमहल, अधिकारियों द्वारा अपने पक्षपातपूर्ण कारणों से कम कर दिया गया है। विभिन्न स्थानीय माफियाओं का दबदबा, प्राकृतिक संसाधनों का बेलगाम दोहन और नए पर्यटन स्थलों के रूप में सामने आए नए विकल्प भारत को उतना आकर्षक नहीं बनाते जितना इसे बनाना चाहिए।

हम शायद बहुत धीमी गति से विकास कर रहे हैं और इसलिए वैश्विक धारणाओं की लड़ाई में हार रहे हैं, इसके विपरीत घरेलू कोरस के बावजूद। यह जरूरी है कि हम संस्कृति, विविधता और विविध स्थलाकृति में समृद्धता की अपनी शर्मिंदगी का आह्वान करें, भले ही 5,000 साल पुरानी सभ्यता के अनुरूप गरिमा, परिपक्वता और आत्मविश्वास के साथ।

इस प्रकार, विश्वामित्र की उत्कृष्ट अवधारणा निश्चित रूप से सामयिक, व्यावहारिक और परिवर्तनकारी है , भारतीय पासपोर्ट की ताकत में हालिया गिरावट एक चेतावनी है।

द्रमुक राजनीति का असली चेहरा

स्पष्ट है कि डीएमके तमिलनाडु में तमिल नागरिकों और हिंदी भाषी कार्यकर्ताओं के बीच दुश्मनी भड़काने की कोशिश कर रही है। सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के बजाय वे संदेह और झूठ फैलाते हैं।

ए. अश्वत्थामा
लेखक, तमिलनाडु भाजपा प्रदेश सचिव हैं।

हाल के सप्ताहों में, बिहार प्रवासी श्रमिक मुद्दे ने एक बार फिर द्रमुक की राजनीति का असली चेहरा उजागर कर दिया है, प्रगति की नहीं, बल्कि जोड़-तोड़ की राजनीति। विवाद तब पैदा हुआ जब डीएमके की मीडिया मशीनरी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणियों को तोड़-मरोड़कर पेश करने की कोशिश की। मोदी जी ने जो कहा वह द्रमुक के भ्रष्टाचार, अलगाववादी राजनीति और अहंकार की स्पष्ट आलोचना थी, फिर भी पार्टी ने इसे पूरे तमिल समुदाय के अपमान में बदलने का प्रयास किया। द्रमुक की यह पुरानी चाल, यह दिखावा करना कि पार्टी की कोई भी आलोचना तमिलनाडु का अपमान है, कुछ समय से काम कर रही है। लेकिन इस बार यह असफल हो गया। तमिलनाडु के लोगों ने स्वतंत्र रूप से सोचना शुरू कर दिया है। वे अब एक भ्रष्ट पार्टी पर हमला करने और एक गौरवशाली संस्कृति पर हमला करने के बीच अंतर देखते हैं।

वर्षों से, कई द्रमुक नेता उत्तर भारत के लोगों, विशेषकर बिहार और अन्य हिंदी भाषी राज्यों के लोगों के बारे में अपमानजनक स्वर में बात करते रहे हैं। अपने भाषणों और साक्षात्कारों में, उन्होंने एक भाषा के रूप में हिंदी का उपहास किया है और आजीविका की तलाश में तमिलनाडु आने वाले उत्तर भारतीय श्रमिकों को अपमानित किया है। इस गहरे पूर्वाग्रह ने समुदायों के बीच अनावश्यक तनाव पैदा कर दिया है।

विडंबना यह है कि यह उन्हीं नेताओं से आता है जो समानता और सामाजिक न्याय के लिए खड़े होने का दावा करते हैं। किस प्रकार का सामाजिक न्याय किसी को साथी भारतीयों को केवल इसलिए नीची दृष्टि से देखने की अनुमति देता है क्योंकि वे एक अलग भाषा बोलते हैं? एक बार फिर, द्रमुक की राजनीति उजागर हो गई है - इसे जीवित रहने के लिए हमेशा एक दुश्मन की आवश्यकता होती है। यदि यह केंद्र नहीं है, तो यह हिंदी है। यदि यह भाजपा नहीं है, तो यह उत्तर भारतीय हैं। विभाजन उनकी ऑक्सीजन है। जब प्रधान मंत्री मोदी ने द्रमुक सरकार की आलोचना की, तो उन्होंने विशेष रूप से भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और विभाजनकारी नीतियों के बारे में बात की। लेकिन कुछ ही घंटों के भीतर, डीएमके नेताओं और उनके प्रचार प्रसार ने यह झूठा दावा फैलाना शुरू कर दिया कि मोदी ने तमिल लोगों का अपमान किया है। यह जानबूझकर की गई विकृति के अलावा और कुछ नहीं था, नकली अहंकार का सहारा लेकर अपनी विफलताओं से ध्यान हटाने का एक हताश प्रयास। वे एक बार फिर पुरानी उत्तर बनाम दक्षिण की आग को फिर से भड़काना चाहते थे।

लेकिन लोग इसके झांसे में नहीं आये. तमिलनाडु के नागरिक स्पष्ट रूप से समझ गए कि मोदी जी का बयान डीएमके की राजनीति के खिलाफ था, तमिलनाडु की पहचान के खिलाफ नहीं। इस प्रचार की विफलता तमिल लोगों की बढ़ती राजनीतिक परिपक्वता को दर्शाती है - वे अब शोर से परे देख सकते हैं।

अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि डीएमके तमिलनाडु में तमिल नागरिकों और हिंदी भाषी कार्यकर्ताओं के बीच दुश्मनी भड़काने की कोशिश कर रही है। सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के बजाय वे संदेह और झूठ फैलाते हैं।' हालांकि, जमीनी हकीकत बहुत अलग है। रोजमर्रा की जिंदगी में, तमिल और अन्य राज्यों के श्रमिक कारखानों, खेतों और घरों में शांतिपूर्वक एक साथ रहते और काम करते हैं। सामान्य तमिल दयालु, सहयोगी और समावेशी है। यह केवल राजनीतिक वर्ग है जो व्यक्तिगत लाभ के लिए विभाजन पैदा करने का प्रयास करता है। नफरत भाषणों में होती है, लोगों के दिलों में नहीं. इस मानसिकता को समझने के लिए, किसी को द्रमुक की उत्पत्ति पर दोबारा गौर करना होगा। इसकी नींव विभाजन की कहानी पर टिकी है द्रविड़ बनाम आर्य नामक एक मनगढ़ंत नस्लीय सिद्धांत के नाम पर तमिलों को शेष भारत से अलग करना। इस बात का कोई ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है कि ऐसी प्रजातियां कभी अस्तित्व में थीं।

प्राचीन तमिल साहित्य में कभी भी किसी जाति को दशार्ने के लिए द्रविड़ियन शब्द का प्रयोग नहीं किया गया। यह विचार औपनिवेशिक काल के दौरान पेश किया गया था और बाद में राजनीतिक अवसरवादियों द्वारा उत्तर भारत के खिलाफ नफरत और संदेह पैदा करने के लिए इसका फायदा उठाया गया। द्रविड़ विचारधारा कभी भी तमिल गौरव के बारे में नहीं थी - यह अलगाव के माध्यम से निर्मित राजनीतिक शक्ति के बारे में थी।

इतिहास दर्ज करता है कि शुरुआती द्रविड़ नेताओं ने एक बार औपनिवेशिक ताकतों द्वारा समर्थित एक अलग द्रविड़नाडु की मांग की थी। फिर भी, तमिल लोगों ने ऐसे विभाजनकारी विचारों को कभी नहीं अपनाया - वे गर्वान्वित भारतीय बने रहे। हिंदी थोपने की नेहरू-युग की कोशिश ने तमिलनाडु में वास्तविक गुस्सा पैदा किया, जिसे द्रविड़ विचारकों ने बड़ी चतुराई से राजनीतिक लाभ में बदल दिया। जो चीज थोपे जाने के खिलाफ विरोध के रूप में शुरू हुई वह जल्द ही भारतीय एकता के प्रति आक्रोश में बदल गई।

विडंबना यह है कि जो लोग कभी कांग्रेस का विरोध करते थे, वे अब उसके साथ खड़े हैं, उन्हीं आवाजों को दोहरा रहे हैं जिनकी उन्होंने कभी निंदा की थी। आज राजनीतिक परिदृश्य बदल गया है। डीएमके के पारंपरिक आख्यान - परिसीमन के खिलाफ उनका विरोध, उनका नकली आक्रोश, और उनकी भाषा-आधारित भय फैलाना - अब काम नहीं करते हैं।

मोदी सरकार ने भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के प्रति दृष्टिकोण को पूरी तरह से फिर से परिभाषित किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से पहली बार हर मातृभाषा को समान महत्व दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कारण इतिहास में पहली बार पाठ्यपुस्तकें भोजपुरी, मैथिली और बिहारी बोलियों में छप रही हैं। यह विविधता के प्रति सच्चा सम्मान है - नकली द्रविड़ प्रतीकवाद नहीं।

सच्चाई सरल है: तमिलनाडु के लोग द्रमुक की पुरानी राजनीति से बहुत आगे हैं। आज के युवा अच्छी तरह से सूचित, आत्मविश्वासी और विश्व स्तर पर जुड़े हुए हैं। उन्हें अपनी तमिल विरासत पर गर्व है और अपनी भारतीय पहचान पर भी उतना ही गर्व है। द्रविड़ राजनीति विभाजन पर बनी थी। आधुनिक भारत समावेशन पर बना है। इसीलिए डीएमके संघर्ष कर रही है।

उनके फर्जी आख्यान एक के बाद एक ढहते जा रहे हैं। उनकी भावनात्मक चालें, जो कभी शक्तिशाली थीं, अब किसी को धोखा नहीं देतीं। वे जितना बांटने की कोशिश करेंगे, भारत उतना ही एकजुट होगा।' नफरत का समय खत्म हो गया है. सत्य, एकता और राष्ट्रीय गौरव का समय शुरू हो गया है।

https://t.me/AllNewsPapersPaid1

आप की बात

वंचितों तक न्याय की नई पहल

देश में न्याय को हर नागरिक तक पहुंचाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए रविवार को लखनऊ में सुप्रीम कोर्ट से लेकर जिला अदालतों तक के लगभग 300 जजों, सैकड़ों पुलिस अधिकारियों, चिकित्सा अधिकारियों और अन्य हितधारकों ने मिलकर एक नई मुहिम की शुरूआत की। इस अवसर पर न्याय मार्ग नामक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित चैटबॉट का शुभारंभ किया गया, जो देश में अपनी तरह की पहली पहल है। अब उत्तर प्रदेश के लोग केवल एक एंड्रॉयड फोन के माध्यम से कानूनी सहायता प्राप्त कर सकेंगे। इस ऐप का उद्घाटन सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ न्यायाधीश और भावी मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्य कांत तथा जस्टिस विक्रम नाथ ने किया। इस अवसर पर जस्टिस सूर्य कांत ने कहा कि ह्रदेश के अंतिम व्यक्ति तक न्याय पहुंचाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं और अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से यह कार्य और अधिक गति से होगा। उन्होंने यह भी कहा कि तकनीक के उपयोग से न्याय प्रणाली अधिक पारदर्शी, सुलभ और समयबद्ध बनेगी। जस्टिस विक्रम नाथ ने उत्तर प्रदेश की न्यायिक व्यवस्था की सराहना करते हुए कहा कि यह राज्य देश में न्यायिक नवाचारों के मामले में अग्रणी है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि वंचितों और गरीबों तक न्याय पहुंचाने का यह अभियान निरंतर जारी रहेगा।

– **सुभाष बुड़ावनवाला**, रतलाम

उम्दा प्रदर्शन पर बधाई

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने डीवाई पाटिल स्टेडियम में हुए रोमांचक फाइनल के मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका टीम को 52 रनों से हराकर पहली बार आईसीसी महिला विश्व कप ट्रॉफी जीत का जो स्वर्णिम अध्याय रचा है, उसका मुक्त कंठ से चहुंओर प्रशस्तिगान हो रहा है। पहले बल्लेबाजी का निर्णय करके भारतीय टीम ने 50 ओवर में सात विकेट पर 298 रन बना कर दक्षिण अफ्रीकी टीम 246 रन पर सुल्टा दिया। दीप्ति शर्मा ने धुआंधार बल्लेबाजी में पांच विकेट लेकर मैच को साहसिक अंदाज से जीत के नजदीक पहुंचा दिया` यह जीत महिला क्रिकेट खिलाड़ियों की वर्षों तक तन / मन से किए गए अभ्यास प्रकिया एवं कर्तव्य निष्ठा का प्रमाण है कि तमाम कठनाईयों से उबरते हुए अपना लक्ष्य निर्धारित करके रखा। सरकार एवम खेल मंत्रालय द्वारा उपलब्ध करवाईं गयीं सुविधाओं तथा संसाधनों के बीच ताल मेल बिठाते हुए महिला क्रिकेट खिलाडियों ने इस बार दृढ़ संकल्प एव्म इच्छा शक्ति के बलबूते मजबूत मानी जाने वाली दक्षिण अफ्रीकी टीम के खिलाफ दमदार उम्दा प्रदर्शन किया है । अपनी बेहतरीन खेल कला के माध्यम से देश का गौरव बढा कर उत्तम देश भक्ति का भी परिचय दिया है। शेफाली वर्मा, दीप्ति शर्मा, कप्तान हरमनप्रीत कौर , स्मृति मंधाना, ऋचा घोष सहित समूची टीम को कोटिश बधाई।

– **युगल किशोर शर्मा**, फ़रीदाबाद

चुनाव में व्यक्तिगत टिप्पणियां

बिहार का चुनाव प्रथम मतदान की अंतिम चरण में आते ही व्यक्तिगत टिप्पणियां आरोप प्रत्यारोप का अजीबोगरीब रूप देखने को मिला है। जन समुदाय के मुद्दे एवं जन सरोकार के मुद्दे गौण होते जा रहे हैं और चटकारे लेने वाले स्लोगन वक्तव्य टिप्पणियां जोर-शोर से चुनावी माहौल को तीखा और कड़वाहट वाला बनता जा रहा है जो भारतीय लोकतंत्र के लिए बिल्कुल उचित नहीं है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने चुनावी सभा में एक नए अंदाज के साथ कांग्रेस के नेता राहुल गांधी, आरजेडी नेता तेजस्वी यादव एवं समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव को लेकर अप्पू पप्पू टप्पू के विश्लेषण से नवाजा जा रहा है अखिलेश यादव के द्वारा बीजेपी के नेताओं को गप्पू और चप्पू का बेजोड़ नाम दिया गया है। चुनाव में एक तरफ घमासान देखने को मिला है तो दूसरी तरफ यह मनोरंजन की सामग्री चुनावी मुद्दा बन गया है। लोग चटकारे लेकर इन उपनाम के साथ अपने विपक्षी दलों पर हमला कर रहे हैं और मानकर बैठे हैं कि इससे जनता प्रभावित होगी। हकीकत यह है कि जनता केवल मजे ले रही है लेकिन ऐसे बातों से टिप्पणियों से एवं वक्तव्य से जनता प्रभावित नहीं होती है। क्या रोजगार का मुद्दा, पलायन का मुद्दा, कानून व्यवस्था का मुद्दा ,चुनाव में हिंसा का मुद्दा एवं विकास का मुद्दा बिहार के युवाओं के लिए एवं जनता के लिए महत्वपूर्ण नहीं है? यह राजनेताओं को जरूर सोचना चाहिए

– **वीरेंद्र कुमार जाटव**, दिल्ली

सादगीपूर्ण हों विवाह समारोह

देवउठनी ग्यारस के साथ ही शादी विवाह एवं मांगलिक कार्यक्रमों की शुरूआत हो जाती है। वर्तमान दौर में हमारे देश में शादी विवाह में व्यर्थ का दिखावा एवं अपव्यय बढ़ता जा रहा है। विवाह समारोह सादगी पूर्ण ढंग से आयोजित होना चाहिए। इस संबंध में सामाजिक स्तर पर सामूहिक विवाहों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। विवाह में कर्ज लेकर खर्च करने की प्रवृत्ति से लोगों को बचना चाहिए। व्यर्थ दिखावे और आडंबर में पैसों का अपव्यय होता है। गायत्री परिवार द्वारा आयोजित विवाह एवं आर्य समाज पद्धति से होने वाले वैवाहिक समारोह को बढ़ावा मिलना चाहिए। विवाह संस्कार में शास्त्रोक्त रीति एवं मुहूर्त के पालन की वर्तमान युग में अवहेलना हो रही है । यह प्रवृत्ति उचित नहीं है।' शास्त्रोक्त रीती का अनुपालन वैवाहिक समारोह में आवश्यक रूप से होना चाहिए। सनातनी संस्कारों को बचा कर रखना हम सब का परम कर्तव्य है। साथ ही दहेज के लोभी परिवारों से अपनी बेटियों को बचाकर रखना भी विवाह संस्कार में परम आवश्यक है। खचीर्ली शादियों से पैसा बचा कर उसे वर वधु के नाम से फिक्स डिपाजिट किया जा सकता है ताकि भविष्य में यह राशि उनके काम आ सके।

– **ललित महालकरी**, इंदौर

पाठकगण अपने विचार responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भेज सकते हैं।